रामचरित-मानस के उपमान

(प्रयाग विश्वविद्यालय की डी० फिल० उपाधि के लिये प्रस्तुत शोध प्रबन्ध)

निर्देशक

उमाशंकर शुक्ल एम० ए०

हिन्दी-विभाग

प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग

शोध छात्रा

श्रीमती लीला ओझा

-: भूमिका :-

सन् १९५८-५९ में, जब मैं एम० ए० (फायनल) की छात्रा थी, उसी समय में हिन्दी में अनुसन्धान करने का निश्चय कर चुकी थी । उन दिनों मेरे पूज्य पिता डा० उदयनारायण तिवारी, भारत के वरिष्ठ-भाषाशास्त्र-अनुसन्धित्सु के रूप में अमरीका के कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय (बर्कले) में थे । मैंने जब अनुसन्धान के विषय के सम्बन्ध में उनसे लिखकर पूछा तो उन्होंने ' तुलसीदासकृत रामचरित मानस के उपमानों का अध्ययन ' विषय पर कार्य करने का परामर्श दिया । जब वे अमरीका से लौटे तो मैं एम० ए० (हिन्दी) में उत्तीर्ण हो चुकी थी । जब अनुसंधान के विषय को चुनने का प्रश्न आया तो मैंने "रामचरितमानस के उपमान" विषय को रिसर्च डिग्री कमेटी के सामने रखा । कमेटी के सदस्यों को यह विषय पसन्द आया और इस प्रकार मुझे नवम्बर ' ५९ को इस विषय पर अनुसन्धान करने की आज्ञा मिल गयी । मैंने अपने निर्देशक पं० उमाशंकर शुक्ल के परामर्श से रामचरितमानस के उपमानों को चिटों पर एकत्र करना आरम्भ कर दिया । सर्व प्रथम: उपमान-उपमेय के चिट तैयार किये गये ; किन्तु एक वर्ष कार्य करने के पश्चात यह अनुभव हुआ कि उपमेय-उपमान के चिट तैयार करना भी कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है । उपर्युक्त सम्पूर्ण सामग्री एकत्र करने के पश्चात् उसका अध्ययन एवं वर्गीकरण भी आवश्यक था । इसी अध्ययन के परिणामस्वरूप यह निबन्ध तैयार हुआ है । इसमें निम्नलिखित अध्याय हैं।

(१) अलंकारों का साहित्य में प्रयोग, उनकी परम्परा तथा उनका महत्व :

इस अध्याय में,अलंकार - प्रयोग की प्राचीन परम्परा का निरूपण, आचार्य भामह कृत काव्यालंकार, उद्भट के काव्यालंकारसार संग्रह आदि आलंकारिक आचार्यों द्वारा अलंकारों के महत्व का प्रतिपादन, रीति, वक्रोक्ति एवं ध्वनि सम्प्रदायों के आचार्यों द्वारा अलंकारों के महत्व का निरूपण एवं उपमानों के अध्ययन का महत्व आदि की विवेचना की गई है ।

(२) रामचरित मानस में प्रयुक्त उपमानों का साहित्यिक अध्ययन :

इस अध्याय में उपमानों के स्त्रोत, उपमानों का वर्गीकरण, उपमानों की दिशाएं एवं उपमान वाचकों का गठनात्मक अध्ययन सम्बन्धी विवेचन प्रस्तुत किया गया है ।

(३) उपमानों का पर्यायपरक एवं आवृत्तिपरक अध्ययन :

इस अध्याय में उपमानों के विविध पर्याय रूपों तथा उनकी आवृत्तियों का गणनामूलक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है ।

(४) उपमेय-उपमान :

इसमें जिन जिन उपमेयों के जो जो उपमान रामचरित मानस में प्रयुक्त किये गये हैं उनकी तालिका प्रस्तुत की गयी है ।

(५) उपमान-उपमेय :

इस अध्याय में रामचरित मानस में प्रयुक्त उपमानों के साथ जो - जो उपमेय आये हैं उनकी तालिका प्रस्तुत की गई है ।

वास्तव में किसी कवि द्वारा प्रयुक्त उपमानों के अध्ययन से किसी जाति के साहित्यिक रस बोध के साथ साथ उसके सांस्कृतिक धरातल का पता चलता है । भाषाशास्त्र की दृष्टि से विवरणात्मक तथा वस्तुपरक अध्ययन होने से साहित्य सम्बन्धी और नवीन तथ्य सहज में ही पाठकों के सामने आ जाते हैं । इस अभि-निबन्ध के समग्र रूप से अध्ययन और मनन के पश्चात् मैंने जो कुछ ऊपर कहा है उसकी सत्यता स्वत: प्रमाणित हो जायगी ।

मैं अपने निर्देशक पं० उमाशंकर शुक्ल की अत्यधिक आभारी हूं जिन्होंने समय समय पर परामर्श देकर इस अभिनिबन्ध को अधिक से अधिक वैज्ञानिक बनाने में मेरी सहायता की ।

संकेत

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में जो अंक प्रयुक्त किये गए हैं उनका संबन्ध डॉ माता प्रसाद गुप्त द्वारा हिन्दुस्तानी एकेडेमी से प्रकाशित " रामचरितमानस " से है। पहला अंक कांड द्योतक है। यथा :-

१ बाल कांड

२ अयोध्या कांड

३ अरण्य कांड

४ किष्किन्धा कांड

५ सुन्दर कांड

६ लंका कांड

७ उत्तर कांड

इसके बाद वाला अंक रामचरित मानस की पंक्तियों को तथा अन्तिम अंक पृष्ठों को द्योतित करता है। इस प्रकार १।१०।२५ से तात्पर्य बाल कांड के २५ वें पृष्ठ की १० वीं पंक्ति से होगा।

विषयानुक्रमणिका

२.४२. उपमान वाचकों का वितरण -

(१) इव (२) जथा (३) जनु (४) जस (५) जिमि (६) जैसा (७) जैसी (८) जैसे (९) ज्यों (१०) तिमि (११) नाई (१२) मनहुं (१३) सम (१४) समान (१५) सरिसा - सरिस (१६) सी (१७) से (१८) सो

३. रामचरितमानस में प्रयुक्त उपमानों का पर्यायवाची अध्ययन

(१) कामधेनुवाची (२) फरसावाची (३) भृंगीवाची
(४) मछलीवाची (५) यमुनावाची (६) अंधकारवाची
(७) कौवावाची (८) पपीहावाची (९) दुष्टवाची
(१०) मायावाची (११) मणिवाची (१२) सरोवरवाची
(१३) शिववाची (१४) अमृतवाची (१५) मधुवाची
(१६) नदीवाची (१७) भीलवाची (१८) भ्रमरवाची
(१९) मृगवाची (२०) आकाशवाची (२१) कल्पवृक्षवाची
(२२) गंगावाची (२३) चकोरवाची (२४) जलवाची
(२५) नेत्रवाची (२६) हंसवाची (२७) कामदेववाची
(२८) कालवाची (२९) अग्निवाची (३०) पर्वतवाची
(३१) सागरवाची (३२) हाथीवाची (३३) बादलवाची
(३४) सर्पवाची (३५) चन्द्रमावाची (३६) सूर्यवाची
(३७) कमलवाची

४. परिशिष्ट

रामचरितमानस के उपमेयों एवं उपमानों की तालिका

उपमेय : उपमान

उपमान : उपमेय

१. अलंकारों का साहित्य में प्रयोग उनकी परम्परा तथा उनका महत्व :

१.१. अलंकारों का प्रयोग तथा उनकी परम्परा :

काव्य-ग्रंथों में अलंकार-प्रयोग की बहुत प्राचीन परम्परा है । 'काव्य मीमांसा' में राजशेखर ने अलंकारों के प्रयोगों के आरंभिक रूपों पर प्रकाश डाला है।[१] अलंकार-प्रयोग के ऐतिहासिक स्वरूप की विवेचना आचार्य वात्स्यायन कृत 'कामसूत्र' में भी उपलब्ध है ।[२] किन्तु इन वर्णनों से अलंकार-प्रयोग के आदि स्रोत का पता नहीं चलता । अनेक आचार्यों ने नाट्यशास्त्रकार भरतमुनि को अलंकारशास्त्र का प्रथम मीमांसक माना है ।

अलंकारों के प्रयोग का स्पष्ट इतिहास न होने पर भी इतना तो निर्विवाद सत्य है कि वैदिक काल में अलंकारों का प्रयोग आरम्भ हो चुका था। पंडित बलदेव उपाध्याय का मत है कि 'वैदिक साहित्य में अलंकार शास्त्र का कहीं भी निर्देश नहीं मिलता और न वेद के षडङ्गों में ही अलंकार शास्त्र की गणना है,परन्तु इस शास्त्र के मूलभूत अलंकार - उपमा, रूपक, अतिशयोक्ति आदि के - अत्यन्त सुन्दर उदाहरण हमें वैदिक संहिताओं और उपनिषदों में उपलब्ध होते हैं । अलंकारों में उपमा तो अत्यन्त प्राचीन है। इसका सम्बन्ध कविता के प्रथम आविर्भाव से ही है । आर्यों की प्राचीनतम कविता ऋग्वेद में उपनिबद्ध है ।[३]' यह स्पष्ट है कि वेदों में अलंकारों का प्रयोग आरम्भ हो गया था ।[४] 'उपमा' एवं 'उपमान' जैसे अलंकारिक शब्दों के प्रयोग भी वैदिक मंत्रों में उपलब्ध होते हैं । 'निघण्टु' में भी

---

१. काव्य मीमांसा : राजशेखर : पृष्ठ १ .
२. कामसूत्र : वात्स्यायन (१।१।१३, १७) .
३. भारतीय साहित्य शास्त्र (प्रथम खण्ड) ? बलदेव उपाध्याय :
४. दे० ऋग्वेद १।१२४।७ एवं १।१६४।२० सं० २००७ : पृष्ठ १३ .

'उपमा' एवं 'उपमान' जैसे अलंकारिक शब्दों के प्रयोग हुए हैं। 'निघण्टु' के श्लोकों में प्रयुक्त 'इदमिव', 'इदं', 'यथा', एवं 'तद्वत्' आदि उपमान-वाचक भी अलंकार-प्रयोग की परम्परा का ही संकेत देते हैं।

काव्यशास्त्र में "उपमा" को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अलंकार माना गया है। निरुक्त में 'अलंकार' की स्पष्ट परिभाषा नहीं दी गई है किन्तु इस ग्रंथ में 'यास्क' ने 'अलंकरिष्णु' शब्द का प्रयोग किया है। इससे अलंकार - प्रयोग का आभास मिलता है। 'यास्क' द्वारा प्रतिपादित सूत्रों के मीमांसक 'गार्ग्य' ने 'उपमा' की शास्त्रीय व्याख्या की है और उन्होंने 'उपमान' को उपमेय से श्रेष्ठ बतलाया है। पं० बलदेव उपाध्याय ने यास्क की उपमा विषयक शास्त्रीयता की विवेचना करते हुए अपना मत व्यक्त किया है कि 'यास्क ने पांच प्रकार की उपमा का वर्णन अपने ग्रंथ में किया है। उपमा के द्योतक निपात 'इव', 'यथा', 'न', 'चित्', 'नु' और 'आ' हैं।[१] यास्क के मतानुसार उपमा के विविध रूपों में 'कर्मोपमा', 'भूतोपमा', 'सिद्धोपमा', 'अर्थोपमा' और 'लुप्तोपमा' की गणना की जा सकती है। वास्तव में वेदों में उपमा के प्रयोगशील रूपों के दर्शन तो होते हैं किन्तु उपमा की शास्त्रीयता का विवेचन ऋग्वेद तथा अन्यान्य वेदों में उपलब्ध नहीं होता।

पाणिनि ने अष्टाध्यायी में 'उपमालंकार' की तात्त्विकता का पूर्ण विवेचन किया है। इस ग्रंथ में उपमा, उपमान, उपमित तथा सामान्य आदि अलंकारिक शब्दों के प्रयोग भी किये गये हैं। पाणिनि के व्याकरणशास्त्र में 'कृत्, तद्धित, समासान्त प्रत्ययों, समास के विधान तथा स्वर के ऊपर सादृश्य के कारण जो व्यापक प्रभाव पड़ता है उसका सूत्रों में स्पष्ट उल्लेख है।[२] परवर्ती आचार्य कात्यायन एवं शान्तनव ने पाणिनि के मत का ही समर्थन किया है। महर्षि पतंजलि ने 'महाभाष्य' में पाणिनि द्वारा निर्दिष्ट 'उपमान' की तात्त्विकता की व्याख्या की है। अतएव यह स्पष्ट है कि पाणिनिकाल में तथा परवर्ती युग में विद्वानों ने उपमा, उपमान और उपमेय की शास्त्रीयता का विशद विवेचन किया है।

---

१. भारतीय साहित्यशास्त्र : पं० बलदेव उपाध्याय : सं० २००७ : पृष्ठ १७.
२. भारतीय साहित्य शास्त्र : पं० बलदेव उपाध्याय : सं० २००७ : पृष्ठ १७.
३. महाभाष्य (पाणिनि पर) २।१।५५.

अलंकारशास्त्र पर व्याकरण के नियमों का प्रभाव भी पड़ा है। पाणिनि ने स्वयं 'उपमालंकार' की तात्त्विकता पर व्याकरण के सिद्धान्तों का आरोपण किया है। उपमा का 'श्रौती' एवं 'आर्थी' रूपों में विभाजन पाणिनि के अष्टाध्यायी में प्रस्तुत सूत्रों के आधार पर ही किया गया है। आगे चलकर भरत मुनि के नाट्यशास्त्र, भामह के काव्यालंकार, रुद्रट के काव्यालंकार, वामन के काव्यालंकार तथा दण्डी के काव्यादर्श में पाणिनि द्वारा प्रतिपादित अलंकार-विषयक व्याकरणीय विवेचना-पद्धति के ही दर्शन होते हैं।

वेदान्त सूत्र में 'उपमा' तथा 'रूपक' के उल्लेख[1] एवं अश्वघोष कृत 'बुद्ध चरित' में 'उपमा' 'रूपक', 'यथा संख्य' 'उल्लेख' और अनुप्रास आदि के प्रयोग मिलते हैं। परवर्तीकाल में काव्यशास्त्रियों ने उपमान एवं उपमेय की तात्त्विकता की विवेचना करते हुए अलंकारिक प्रयोगों के निर्देश दिये हैं।

१.२. अलंकारों के महत्त्व का प्रतिपादन :

प्राचीन काल में अलंकार शब्द व्यापक एवं गम्भीर अर्थ में प्रयोग हुआ था तथा उसी आधार पर संस्कृत आलोचना-शास्त्र 'अलंकारशास्त्र' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस व्यापक एवं गम्भीर अर्थ में अलंकार शब्द का लक्ष्य है, एक मानव के हृदय की अनिर्वचनीय रसानुभूति दूसरे के हृदय में संक्रमित कर देने का समग्र कौशल। हमारे जीवन की रसानुभूतियां केवल सूक्ष्म, सुकुमार एवं अनन्त - वैचित्र्यशील ही नहीं होतीं, बल्कि हृदय के गहन अंतराल में बहुत बार अनिर्वचनीय 'चित्स्पन्दन-रूपिणी होती है।'[2] इसी अनिर्वचनीय को वचनीय करने की चेष्टा ही हमारी साहित्य-चेष्टा, या दूसरे शब्दों में कहें तो सम्पूर्ण कला चेष्टा है। 'साधारण शब्दों द्वारा अप्रकाश्य होने के कारण हमारा रसोद्दीप्त या रसाप्लुत चित्-स्पन्दन अनिर्वचनीय है। इस अनिर्वचनीय को वचनीय करने के लिए प्रयोजन होता है असाधारण भाषा का।'[3]

---

१. वेदान्तसूत्र (३-२-१८).

२. उपमा कालिदासस्य - डा० शशिभूषण दास गुप्त - पृ० ४, १९६२

३. उपमा कालिदासस्य : डा० शशिभूषणदास गुप्त - सं० १९६२ : पृष्ठ ४, ५.

इस असाधारण भाषा के विविध प्रयोगों को ही `अलंकार` की संज्ञा दी जाती है।

प्राचीनकाल में आंतरिक भावों अथवा विचारों के अभिव्यक्तीकरण का एकमात्र साधन काव्य ही था । काव्याभिव्यंजना में आंतरिक अनुभूतियों की सरलतम अभिव्यक्ति समाविष्ट रहती थी । अभिव्यंजित भावों के व्यापक प्रसारण एवं प्रभावशीलता के लिए प्राय: आलंकारिक भाषा का प्रयोग होता था । इससे आंतरिक भावों अथवा विचारों का प्रभाव अधिक व्यापक एवं प्रभविष्णु हो जाता था । हृदयस्थित भावों एवं अनुभूतियों के प्रकटीकरण के लिये सालंकार भाषा का प्रयोग आवश्यक होता है । अलंकाररहित भाषा, न तो अन्तर्लोक को ही प्रकट कर सकती है और न आंतरिक भावों का समुचित प्रसारण ही कर सकती है । रचनाकार की काव्यानुभूति, स्वानुरूप वर्ण-चित्र आदि का अभिव्यक्तीकरण आलंकारिक भाषा के द्वारा ही सम्भव है ।

प्राचीन काव्यशास्त्रियों ने काव्य की आत्मा का विवेचन करते हुए `अलंकार` के महत्व पर पूर्ण प्रकाश डाला है । इन काव्यशास्त्रियों में आचार्य भामह, आचार्य उद्भट, आचार्य दण्डी, आचार्य रुद्रट एवं आचार्य वामन आदि आलंकारिकों की विशेष गणना की जा सकती है । इन आलंकारिकों ने अलंकार-निरूपण करते हुए उपमा, उपमान और उपमेय आदि की भी विशद विवेचना की है इससे `उपमान` की शास्त्रीयता का आभास तो होता ही है, साथ ही उपमानों के महत्व पर भी पूर्ण प्रकाश पड़ता है ।

आचार्य भामह कृत `काव्यालंकार` में `उपमान-निरूपण` :

आचार्य भामह ने अलंकारों की शास्त्रीयता का निरूपण करते हुए `उपमालंकार` की विशद विवेचना की है।[1] `यथा` एवं `इव` शब्दों के प्रयोगों से उद्भूत सादृश्यमूलक अलंकार अथवा उपमालंकार का निरूपण भी भामह ने किया है। इसी प्रसंग में इन्होंने `उपमान` की व्याख्या भी की है। भामह ने उपमानों की आयोजना को अनिवार्य बतलाया है तथा उपमानाधिक्य दोष का निरूपण `रामशर्मण:` के आधार पर किया है। `बालबोधिनी` में `साधारणधर्मवत्वेन प्रसिद्ध: पदार्थ: उपमानम्, तद्भक्त्या वर्णनीय: पदार्थ: उपमेयम्` के द्वारा `उपमान` और `उपमेय` की शास्त्रीय व्याख्या की गई है।[2] आचार्य भामह ने उपमानाधिक्य को काव्यालंकार-दोष नहीं माना है। प्रस्तुत श्लोक भामह के `उपमानाधिक्य दोष` विषयक दृष्टिकोण को और भी अधिक स्पष्ट करता है :-

> `आधिक्यमुपमानानां न्याय्यं नाधिकता भवेत् ।
> गोक्षीर कुन्दहलिनां विशुद्धया सदृशं यश: ।।६१।।`[3]

भामह का मत है कि उपमानाधिक्य सादृश्य प्रतिपादक विशेषण तथाउपमान की अनेकता के कारण होता है। अतएव इन गुणों के कारण उपमान की अधिकता को दोष नहीं माना जा सकता। `उपमा` के अनिवार्य तत्वों में उपमान की गणना की जाती है। यदि उपमान-नियोजन समर्थ न हुआ तो उसका परिणाम यह होता है कि उपमान योजना एवं उपमालंकार का प्रयोग ही दूषित हो जाता है।

भामह का यह भी मत है कि `उपमान` के द्वारा ही उपमा की निष्पत्ति होती है। उपमान चाहे एक हो अथवा अनेक, उपमा की निष्पत्ति ,

---

१. यथेवशब्दो सादृश्यमाहतुर्व्यतिरेकिणो: ।
   दूर्वाकाण्डमिव श्यामं तन्वी श्यामालता यथा ।।
   : काव्यालंकार : भामह (भाष्यकार- देवेन्द्रनाथ शर्मा)।।३१।।पृष्ठ ४२ : १९६२

२. बाल बोधिनी : पृष्ठ ५४५

३. भामह विरचित काव्यालंकार (भाष्यकार - देवेन्द्रनाथ शर्मा) पृष्ठ ५५: १९६२

उपमान के माध्यम से ही होती है। उनका मत है कि सादृश्य एक उपमान से भी स्पष्टरूप से व्यक्त हो जाता है - यथा,

> "एतेनैवोपमानेन ननु सादृश्यमुच्यते ।
> उक्तार्थस्य प्रयोगो हि गुरुमर्थं न पुष्यति ।।६२।।"[1]

स्पष्ट है कि भामह ने "उपमान" के प्रयोगाधिक्य को दोष नहीं माना है तथा उपमा की सफल आयोजना के लिये उपमानों की अधिकाधिक आयोजना का अप्रत्यक्ष रूप से निर्देश किया है। भामह के उपमान-आयोजना की विवेचना करते हुए पं० देवेन्द्र नाथ शर्मा ने अपना अभिमत व्यक्त किया है कि भामह ने उपमान की अनेकता विषयक समस्या का समाधान नहीं किया । "समाधान में कहा जा सकता है कि अनेक उपमान स्थूलतः एक धर्म के प्रतिपादक होकर भी छाया में परस्पर भिन्न होते हैं और एक ही धर्म के विभिन्न पक्षों को उद्भासित करते हैं[2]।" उपर्युक्त व्याख्या से यह तथ्य तो उद्घाटित होता ही है कि अलंकारशास्त्र में "उपमा" नामक अलंकार की विशद विवेचना हुई है तथा "उपमान" का उल्लेखनीय महत्व है । भामह द्वारा निर्दिष्ट सूत्रों के द्वारा इस तथ्य का आभास भी होता है कि सादृश्य विधान के लिए उपमेय तथा उपमान का प्रकृतिः भिन्न होना अनिवार्य है।

भामह के काव्यालंकार के आधार पर संस्कृत में अलंकारशास्त्र की रचना कारिका, कारिकावृत्ति तथा सूत्रवृत्ति की पद्धतियों पर हुई है । भामह कृत काव्यालंकार को कारिका के अंतर्गत माना जा सकता है । इसी पद्धति में दण्डी ने "काव्यादर्श", रुद्रट ने "काव्यालंकार", उद्भट ने "काव्यालंकारसारसंग्रह" तथा जयदेव ने "चन्द्रालोक" की रचना की है। कारिकावृत्ति की पद्धति का अनुसरण करने वाले काव्यशास्त्रियों में ध्वन्यालोक के रचयिता आनन्दवर्धन, वक्रोक्ति जीवित के लेखक आचार्य कुन्तक, सरस्वतीकण्ठाभरण के प्रणेता भोज, काव्यप्रकाश के रचनाकार आचार्य मम्मट एवं साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ की गणना की जा सकती है।

---

१. भामह विरचित काव्यालंकार (भाष्यकार-देवेन्द्रनाथ शर्मा) पृष्ठ ५५: १९६२ .
२. भामह विरचित काव्यालंकार (भाष्यकार - देवेन्द्रनाथ शर्मा) पृष्ठ ५५: १९६२ .

सूत्र-वृत्ति पद्धति का अनुसरण करते हुए आचार्य वामन ने काव्यालंकार सूत्र, हेमचन्द्र ने काव्यानुशासन एवं आचार्य जगन्नाथ ने रस गंगाधर नामक अलंकार-ग्रंथों की रचना की है। अलंकारशास्त्र की स्वस्थ परम्परा के दर्शन इन्हीं ग्रंथों में होते हैं।

टीकाकार उद्भट के 'काव्यालंकार सार संग्रह' में अलंकार निरूपण :

आचार्य भामह के आलंकारिक नियमों के आधार पर ही आचार्य उद्भट ने 'काव्यालंकार सार' में 'उपमा' का विवेचन किया है। आचार्य उद्भट भी सादृश्य विधान को ही आवश्यक मानते हैं। 'काव्यालंकार-सार' के छठें अध्याय में उपमान और उपमेय का विवेचन किया गया है। आचार्य वामन ने 'उपमा' की शास्त्रीयता का विवेचन अधिक विशद रूप से किया है। काव्यालंकार सूत्र में उपमा की परिभाषा इस रूप में दी गई है :-

'उपमानेनोपमेयस्य गुणलेशतः साम्यमुपमा। ४.२.१।' [१]

स्पष्ट है कि उपमान के साथ उपमेय का साम्य ही उपमालंकार की सृष्टि करता है। संस्कृत काव्यशास्त्रियों की दृष्टि में 'उपमान' का महत्व कम न था। अतएव 'उपमान' के शास्त्रीय रूप को पूर्णतः स्पष्ट करने एवं उसके आलंकारिक महत्व के प्रतिपादन के लिए आचार्य वामन ने अधिक शास्त्रीय रूप में विचार किया है। आचार्य वामन भी 'उपमित' अर्थात् 'सादृश्य' को आवश्यक मानते हैं। सादृश्यविधान की शास्त्रीयता पर आचार्य वामन का दृष्टिकोण निम्नलिखित सूत्र में अभिव्यक्त हुआ है :-

'उपमीयते सादृश्यमानीयते येनोत्कृष्ट गुणेनान्यत्
तदुपमानम्। यदुपमीयते न्यूनगुणं तदुपमेयम्।
उपमानेनोपमेयस्य गुणलेशतः साम्यं यदसावुपमेति।' [२]

---

१. काव्यालंकारसूत्र (भाष्यकार - आचार्य विश्वेश्वर) पृष्ठ १८५ : १९५४.
२. काव्यालंकारसूत्र (भाष्यकार - आचार्य विश्वेश्वर) पृष्ठ १८६ : १९५४.

इसी प्रसंग में 'उपमित' अथवा सादृश्यविधान के साथ 'उपमान' एवं उपमेय की भी व्याख्या की गई है। आचार्य वामन के मतानुसार उत्कृष्ट और न्यून गुण से उत्पन्न सादृश्यविधान को ही 'उपमान' की संज्ञा दी जा सकती है। वास्तव में 'उपमान' और उपमेय दोनों ही अन्योन्याश्रित हैं। दोनों की आयोजना एक साथ होती है तथा आलंकारिक-सौन्दर्य-सृष्टि के दोनों ही तत्व एक दूसरे के पूरक हैं। आचार्य वामन ने सूत्रकार द्वारा प्रतिपादित - गुणबाहुल्यतश्च कल्पित की व्याख्या भी की है। सूत्रकार ने गुणबाहुल्य से उपमा की सृष्टि मानी है। 'गुणबाहुल्य' ही 'उपमान' का धर्म है। आचार्य वामन ने इस सूत्र की व्याख्या इस प्रकार की है :-

> 'गुण बाहुल्यस्योत्कर्षापकर्षकल्पनाभ्याम् । तथा
> उद्गमेत्तरुणतरुणीरमणोपमर्द- मुग्नोन्नतिस्तननिवेशनिर्भं हिमांशोः । १.
> बिम्बं कठोरबिस काण्डकडारगौरैर्विष्णोः पदं प्रथम मग्रकरैर्व्यनक्ति ।।१।।'

इस प्रकार 'गुण बाहुल्य' और उत्कर्ष - अपकर्ष की कल्पना के आधार पर उपमान के शास्त्रीय रूप की विवेचना की गई है। अपने मत की पुष्टि के लिए आचार्य वामन ने 'चंद्रबिम्ब' (उपमेय) और 'हूण तरुणी' का स्तन (उपमान) आदि का उदाहरण भी प्रस्तुत किया है। प्राचीन काव्यशास्त्रियों में आचार्य वामन की सूत्र-व्याख्या अधिक स्पष्ट है। उन्होंने 'उपमान' के तात्विक महत्व को स्वीकार किया है और उसकी प्रामाणिक व्याख्या भी की है। अन्य काव्य - शास्त्रियों के समान आचार्य वामन ने भी 'उपमा' के आवश्यक एवं अनिवार्य तत्वों में उपमेय, उपमान, साधारणधर्म और वाचक का निर्देश किया है।

प्राचीन काव्यशास्त्रियों में आचार्य रुद्रट, आचार्य दण्डी एवं जयदेव ने भी उपमालंकार की विवेचना करते हुए 'उपमान' के तात्विक स्वरूप का निरूपण किया है तथा उसके आलंकारिक महत्व का प्रतिपादन किया है। अलंकार विधान में उपमालंकार का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है और 'उपमान' का समृद्ध रूप ही 'उपमा' को समृद्धि प्रदान करता है।

---

१. काव्यालंकार सूत्र (भाष्यकार - आचार्य विश्वेश्वर) : पृष्ठ १८८ : १९५४.

रीति वक्रोक्ति एवं ध्वनि सम्प्रदायों के आचार्यों द्वारा अलंकारों के महत्व का निरूपण :

अलंकारशास्त्र के विशद अध्ययन के लिए अलंकार एवं रीति सम्प्रदायों का ही विशेष महत्व है। अनेक काव्यशास्त्रियों ने रीति एवं ध्वनि तत्वों का उद्भव 'अलंकार' के द्वारा ही माना है। रीति एवं ध्वनि सम्प्रदाय के आचार्यों ने काव्य में अलंकार के सन्निवेश की महत्ता प्रतिपादित की है।

रीतिमत के प्रधान प्रतिपादक आचार्य वामन द्वारा अलंकारों की महत्ता का प्रतिपादन :

आचार्य वामन ने 'काव्यं ग्राह्यमलङ्कारात्' तथा 'सौन्दर्यमलङ्कारः' आदि सूत्रों में अलंकारों के महत्व को स्वीकार किया है। इन्होंने सब अलंकारों को उपमा पर ही आधारित माना है। यही कारण है कि उन्होंने अलंकारों को 'उपमा प्रपंच' के नाम से अभिहित किया है।

वक्रोक्ति सम्प्रदाय और अलंकार का महत्व :

प्राचीन संस्कृत काव्यशास्त्र में 'वक्रोक्ति' शब्द का प्रयोग अत्यन्त प्राचीन है। वास्तव में रीति सम्प्रदाय के विरोध में तथा उसकी शास्त्रीय मान्यताओं को दबाकर वक्रोक्ति सम्प्रदाय का जन्म हुआ है। इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य कुन्तक माने जाते हैं। आचार्य कुन्तक ने 'वक्रोक्ति जीवितम्' नामक ग्रंथ की रचना की थी। कुन्तक ने काव्य में वक्रोक्ति की अनिवार्यता को स्वीकार किया है। आचार्य भामह ने भी काव्य में 'वक्रोक्ति' का होना स्वीकार किया है। भामह की इस धारणा का अनुमान निम्नलिखित सूत्र से किया जा सकता है :-

> 'सैषा सर्वत्र वक्रोक्तिरनयार्थो विभाव्यते।
> यत्नोऽस्यां कविना कार्यः कोऽलङ्कारोऽनया विना ॥'[1]

---

1. काव्यालंकार - भामह ॥२॥८५॥

आचार्य दण्डी ने भी ' वक्रोक्ति ' के महत्व को स्वीकार किया है। यद्यपि वे ' वक्रोक्ति ' को काव्य की आत्मा नहीं मानते तथापि इसका महत्व उनकी दृष्टि में कम न था । आचार्य दण्डी के वक्रोक्ति विषयक विचारों का अनुमान निम्नलिखित सूत्र से किया जा सकता है :-

' भिन्नं द्विधा स्वभावोक्ति - वक्रोक्तिश्चेति वाङ्मयम् [१] ।। '

इस उद्धरण से वक्रोक्ति की महत्ता पर पूर्ण प्रकाश पड़ता है । अनेक आचार्यों ने तो वक्रोक्ति को एक विशिष्ट अलंकार ही मान लिया है । आचार्य कुन्तक ने भी ' वक्रोक्ति जीवितम् ' में अलंकार के महत्व पर प्रकाश डाला है । वास्तव में कुन्तक अभिधावादी आचार्य थे । ' वक्रोक्ति जीवितम् ' के तृतीय उन्मेष में उन्होंने ' वाक्यवक्रता ' का विशद विवेचन किया है । इसी ' वाक्यवक्रता ' से उन्होंने अलंकारों की विवेचना की है। प्राचीन संस्कृत काव्यशास्त्रीय परंपराओं का अध्ययन करने से ऐसा प्रतीत होता है कि रसवादियों को छोड़कर अन्य सम्प्रदायवादियों में ध्वनि एवं वक्रोक्ति सम्प्रदाय के अनुयायियों ने भी काव्य में अलंकार की अनिवार्यता प्रतिपादित की है ।

ध्वनिवादी आचार्यों द्वारा अलंकारों की महत्ता पर प्रतिपादन :

' अलंकार और ध्वनि ' की मीमांसा करते हुए पं० बलदेव उपाध्याय ने अपना अभिमत व्यक्त किया है कि ' रुय्यक की स्पष्ट समीक्षा है कि भामह तथा उद्भट प्रभृति अलंकारवादी आचार्यों ने प्रतीयमान (व्यंग्य) अर्थ को वाच्य का सहायक मानकर उसे अलंकार के भीतर ही अंतर्भुक्त किया है । [२] ' अलंकार सर्वस्व ' में इस संदर्भ की विशद विवेचना की गई है । ३. अलंकारवादी रुद्रट को व्यंग्य का सिद्धान्त सर्वथा मान्य था तथा काव्य में प्रतीयमान अर्थ की विवेचना करने के लिए उन्होंने ' भाव ' नामक नव एक नवीन अलंकार की कल्पना की थी ।

---

१. काव्यादर्श - दण्डी ।।२।।३६३।।
२. भारतीय साहित्यशास्त्र : पं० बलदेव उपाध्याय : पृष्ठ २७ :सं० २००७ .
३. अलंकार सर्वस्व : रुय्यक : पृष्ठ ३ .

ध्वनिवादी आचार्य मम्मट के -

'काव्यप्रकाश' में अलंकारों के महत्व का प्रतिपादन :

आचार्य मम्मट ने 'काव्यप्रकाश' के नवम् एवं दशम् उल्लास में अलंकार के विषय में विचार किया है। इस ग्रंथ में शब्दालंकारों एवं अर्थालंकारों की अलग अलग विशद विवेचना की गई है। अलंकारों के शास्त्रीय रूप की मीमांसा करते हुए आचार्य मम्मट ने 'अलंकार का लक्षण,' 'अलंकारों के विभाजक तत्व,' 'अलंकारों की संख्या' आदि की विवेचना की है। अलंकार के तात्त्विक स्वरूप का विवेचन करते हुए आचार्य मम्मट ने लिखा है कि -

'उपकुर्वन्ति तं सन्तं येऽङ्गद्वारेण जातुचित् ।
हारादिवदलङ्कारास्तेऽनुप्रासोपमादयः ॥' [१]

इस सूत्र में अलंकारों के तात्त्विक स्वरूप की विवेचना करते हुए उनके लक्षणों पर विचार किया गया है। साहित्यदर्पणकार ने भी अलंकार के स्वरूप का विवेचन इसी प्रकार किया है -

'शब्दार्थयोरस्थिराः ये धर्माश्शोभातिशायिनः ।
रसादीनुपकुर्वन्तोऽलङ्कारास्तेऽङ्गदादिवत् ॥' [२]

ध्वनिवादी सम्प्रदाय के अनुयायी अलंकारों को काव्य का अस्थिर धर्म मानते हैं। अन्य सम्प्रदायवादी इस सिद्धान्त को स्वीकार करने के पक्ष में नहीं हैं। अलंकार सम्प्रदायवादी अलंकार को काव्य का स्थिर धर्म मानते हैं।

काव्य प्रकाश में अलंकारों के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। काव्य प्रकाश में ६१ अर्थालंकारों की विवेचना हुई है। इसमें उपमालंकार भी है। इस ग्रंथ में सूत्र - १२५ में 'उपमा' का लक्षण इस प्रकार दिया है -

'साधर्म्यमुपमा भेदे ।' [३]

---

१. काव्यप्रकाश : आचार्य मम्मट ॥ सूत्र ८८ ॥

२. साहित्य दर्पण: आचार्य विश्वनाथ । १०।।१।।

३. काव्यप्रकाश : आचार्य मम्मट ॥ सूत्र-१२५।।भाष्यकार-आचार्य विश्वेश्वर.

इस सूत्र का विश्लेषण काव्यप्रकाश में इस प्रकार किया गया है -

> "उपमानोपमेययोरेव न तु कार्यकारणादिकयोः
> साधर्म्यं भवतीति तयोरेव समानेन धर्मेण सम्बन्ध उपमा।"[1]

स्पष्ट है कि उपमा में "उपमान" और "उपमेय" का साधर्म्य होता है। कार्यकारण का समान धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं होता। अतएव उपमान और उपमेय का समानधर्म से सम्बन्ध ही उपमा है। काव्यप्रकाश के रचयिता ने "उपमा" के अनिवार्य अंगों में उपमान, उपमेय, साधारण धर्म और उपमावाचक "इव" आदि का निर्देश किया है।

आचार्य मम्मट ने उपमालंकार की विवेचना करते हुए उपमान एवं उपमेय आदि की व्याख्या करने के लिए आलंकारिक उदाहरण भी प्रस्तुत किये हैं। इस प्रसंग में "पूर्णोपमा" का एक उद्धरण प्रस्तुत है जिससे "उपमान" के तात्विक रूप का अनुमान किया जा सकता है -

> "तेन तुल्यं मुखमिति स्यादावुपमेये एव
> तत्तुल्यमस्य इत्यादौ चोपमाने एव इदं च तच्च
> तुल्यमित्युभयत्रापि तुल्यादिशब्दानां विश्रान्तिरिति
> साम्यपर्यालोचनया तुल्यताप्रतीतिरिति -
> साधर्म्यस्यार्थत्वात्तुल्यादिशब्दोपादाने आर्थी,
> तद्वत् "तेन तुल्यं क्रिया चेद्वतिरि"त्यनेन विहितस्यवतेः स्थितौ।"[2]

उपर्युक्त उद्धरण में "तेन तुल्यं मुखम्" उपमेय तथा "तत्तुल्यमस्य" में उपमान है। इस प्रकार ध्वनिवादी आचार्यों ने भी अलंकार के महत्व का प्रतिपादन किया है।

---

1. काव्यप्रकाश - आचार्य मम्मट ।।मीमांसा-सूत्र-१२५।।भाष्यकार- आचार्य विश्वेश्वर
2. काव्यप्रकाश - आचार्य मम्मट (भाष्यकार - डा० सत्यव्रतसिंह) पृष्ठ ४४६.

१.३. उपमानों के अध्ययन का महत्व :

प्राचीन काव्यशास्त्रियों ने ` उपमान ` का महत्व स्वीकार किया है। कुछ विद्वानों का विचार है, कि ` उपमानों ` का प्रयोग उस समय से आरम्भ होता है जब कोई जाति सभ्यता एवं ज्ञान के शिखर पर पहुँच जाती है। इस प्रकार उपमानों का प्रयोग जाति की कलात्मकता एवं कतिपय अंशों में कृत्रिमता को घोतित करती है। किन्तु इस प्रकार के विचारों को सर्वमान्य एवं प्रामाणिक नहीं माना जा सकता। प्राचीनकाल में भी तुलना के लिये उपमानों का प्रयोग होता था। किसी वस्तु को सजीव रूप में प्रस्तुत करने के लिए ऐसे आलंकारिक उपकरणों का संचयन किया जाता था कि उस वस्तु विशेष का यथार्थ सौन्दर्य अभिव्यक्त हो सके। इसी दृष्टि को ध्यान में रखकर प्राचीन काव्यशास्त्रियों ने ` साधर्म्यविधान ` की कल्पना की थी। वर्तमान युग में भी इस आलंकारिक उपकरण का उतना ही महत्व है जितना प्राचीन काल में था।

` साधर्म्यविधान ` की कल्पना सीमित नहीं है अपितु लोक जीवन एवं सांस्कृतिक परम्पराओं में भी उसे व्यापकता एवं मान्यता मिली है। भारत के किसी अंचल के लोकगीत एवं लोकगाथाएं इस तथ्य का प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। लोक काव्य में साधर्म्य विधान पूर्णतः समरस हो गया था। आंतरिक भावों की अभिव्यक्ति एवं वस्तुविशेष के यथार्थरूप के चित्रण के लिए अनजाने ही ऐसे उपमानों की आयोजना हो जाती थी जो आंतरिक भावनाओं के सौन्दर्य की अभिव्यक्ति तो करते ही थे, साथ ही तुलनात्मक विधि द्वारा किसी भी वस्तुविशेष का यथार्थ चित्रण भी प्रस्तुत करते थे।

वैदिक काल में तो अलंकारों के प्रयोग का प्रचलन था। वैदिक संस्कार में मंत्रों में अलंकार का प्रयोग किया गया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि मंत्रों में अधिक शक्ति एवं प्रभविष्णुता आ गई है। वास्तव में अलंकार का प्रयोग परम्परापालन सा हो गया था। जिस अभिव्यंजना में अलंकार का अभाव होता था, उसमें न तो वेगशीलता ही अधिक होती थी और न उसका प्रभाव ही पूर्ण रूप से पड़ता था। अलंकारों में उपमा, रूपक और यमक अलंकार का प्रयोग सर्वाधिक होता है। प्राचीन काव्य में आंतरिक भावों को प्रभावशाली करने एवं उसके काव्यात्मक

माधुर्य को बढ़ाने के लिए उपमालंकार का प्रयोग ही अधिक हुआ है । वैदिक काल में शैलीगत अलंकारों के रूप में उपमा का प्रयोग हुआ है । श्री जे० गोंडा ने भी इस तथ्य को स्वीकार करते हुए लिखा है कि " मेरे मत में यह विचार व्यक्त करने के लिए पर्याप्त प्रमाण हैं कि प्राचीनतम भारतीय साहित्य में उपमा अलंकार शैलीगत ही है और इसके द्वारा कथन को प्रभावशाली बनाया जा सकता है । वास्तव में कथन को प्रभावशाली बनाने के लिए ही उपमान का प्रयोग आरम्भ में किया गया होगा ।" १. आरम्भ में संस्कृताचार्यों ने " उपमा " के महत्व का प्रतिपादन नहीं किया । किन्तु काव्यशास्त्रियों ने उपमा के महत्व को समझा था और भरत मुनि, आचार्य मम्मट, आचार्य वामन, आचार्य दण्डी, आचार्य विश्वनाथ एवं पंडितराज जगन्नाथ ने उपमा के शास्त्रीय रूप की विशद विवेचना भी की।

काव्यशास्त्रियों ने उपमालंकार की गणना अर्थालंकार के अंतर्गत की है । पश्चिमी आचार्यों एवं काव्य मर्मज्ञों ने सभ्यता एवं संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में उपमा की शास्त्रीयता का विवेचन किया है। पश्चिमी विद्वान आर्नेल्ड हीरज़ेल ने सर्व प्रथम ऋग्वेद के सूत्रों में निबद्ध उपमाओं का अध्ययन किया था । श्रीमती रीजडेविड्स ने भी पालि साहित्य के उपमानों का अध्ययन किया है । आपका मत है कि उपमानों के अध्ययन - अनुशीलन से किसी भी जाति विशेष की सभ्यता एवं संस्कृति का अध्ययन किया जा सकता है । मानवीय जीवन ने जिस रूप में विकास किया है, उसका अध्ययन भी उपमानों के अध्ययन के द्वारा किया जा सकता है ।

मानव जिस समाज में रहता है, उस समाज की सभ्यता एवं संस्कृति का प्रभाव उसके जीवन के प्रत्येक विधान पर पड़ता है । उसकी नैतिक एवं सामाजिक वृत्तियों का विकास भी समाज की सांस्कृतिक परम्पराओं के आधार पर होता है । अतएव यह निश्चित है कि सभ्यता एवं संस्कृति मानव जीवन के प्रत्येक विधान को प्रभावित करती है और यही सांस्कृतिक परम्पराएं साहित्य के विविध रूपों में अभिव्यक्त होने लगती हैं । उपमानों के माध्यम से उन सांस्कृतिक मूल्यों एवं परम्पराओं का अध्ययन सहज रूप से किया जा सकता है ।

---

१. Remarks on similes in Sanskrit literature : by J. Gonda : Page : 38.

पश्चिमी विद्वान ओल्डेनबर्ग ने भी ऋग्वेद के उपमानों का व्याकरण सम्बन्धी अध्ययन किया था। ओल्डेनबर्ग के अध्ययन-अनुशीलन की प्रणाली 'धार्मिक इतिहास' की थी अतएव वे सांस्कृतिक परम्पराओं का दिग्दर्शन नहीं करा सके। इस सम्बन्ध में यह उल्लेखनीय है कि उपमानों के अध्ययन के द्वारा 'धार्मिक परम्पराओं' का अनुशीलन तो किया ही जा सकता है, साथही सांस्कृतिक एवं साहित्यिक मूल्यों का सर्वेक्षण भी किया जा सकता है।

'उपमानों' के अध्ययन एवं अनुशीलन से इस तथ्य का भी आभास होता है कि जब अभिव्यक्ति अस्पष्ट होती है तब उपमानों के माध्यम से उसे स्पष्टतर एवं स्पष्टतम बनाया जा सकता है। उपमानों के प्रयोग से काव्याभिव्यंजना में अधिक स्पष्टता एवं बोधगम्यता आ जाती है और सामान्य पाठक भी गूढ़ से गूढ़ विचारों एवं भावों को सहजरूप में आत्मसात कर सकता है।

'उपमानों के प्रयोग' का ऐतिहासिक सर्वेक्षण करने पर यह प्रमाणित होता है कि अति प्राचीन काल अथवा आदि काल में मनुष्यजाति सामान्य रूप से वाग्विस्तार पसन्द करती थी। यही कारण है कि लोक गीतों एवं लोक कथाओं में प्राय: पुनरुक्ति के दर्शन होते हैं। प्राचीनकाल में मनुष्य प्राय: व्याख्यात्मक शब्दों एवं उदाहरणों का भी प्रयोग करते थे। उनके लिए प्रत्यक्ष एवं चित्रात्मक रूपों का मूल्य अधिक होता था। 'उपमान' इन चित्रात्मक रूपों को अधिक प्रभावोत्पादक बनाने में सहायक सिद्ध होते हैं। परवर्तीकाल में संस्कृत तथा हिन्दी काव्य में भी उपमानों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया गया है। इससे अभिव्यंजना में स्पष्टता, बोधगम्यता एवं सहज चित्रात्मकता आ गई है।

'उपमानों' का प्रयोग मनोवैज्ञानिक कारणों से भी किया जाता है। कभी कभी व्यक्ति की विशिष्ट मनोदशा का चित्रण करने के लिए उपमान का आश्रय लिया जाता है। राग और विराग, विरह और संयोग एवं दु:ख तथा सुख की भावदशाओं का चित्रण उपमानों के माध्यम से अधिक सहज एवं सजीव हो उठता है। ऐसे समय में जिन भावदशाओं का चित्रण किया जाता है, उनके प्रति रचनाकार सचेत होता है और वह ऐसे उपमानों की आयोजना करता है जो उन विशिष्ट भावदशाओं को यथार्थ रूप में प्रकट कर सकें।

उपमान-प्रयोग संस्कृति एवं सभ्यता की जातिगत एवं समाजगत विशिष्टताओं पर भी आश्रित रहता है। किसी विशिष्ट सांस्कृतिक परम्परा के चित्रण के लिए विशिष्ट उपमानों का प्रयोग किया जाता है। इससे उस विशिष्ट समाज की सांस्कृतिक परम्पराओं का पूर्ण बोध होता है

कभी कभी उपमान एवं उपमेय को बिम्ब प्रतिबिम्ब रूप में व्यक्त किया जाता है। ऐसे समय उपमान और उपमेय में धर्म-साम्य होता है तथा इनका साधर्म्यविधान एक ही होता है। संस्कृत काव्य में उपमान-प्रयोग का उद्देश्य यही था। हिन्दी कवियों ने भी इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर उपमानों की आयोजना की है तथा काव्याभिव्यंजन को शिल्पगत अलंकृति प्रदान की है।

उपमानों का क्षेत्र अधिक व्यापक है। 'साधर्म्य विधान' अथवा 'सादृश्य विधान' के द्वारा रचनाकार सम्पूर्ण सृष्टि को कल्पना का मनोरम परिक्षेत्र मान लेता है और वह दृश्य सत्य से ही अनेक रूपों में उपमानों का संचयन करता है। इन उपमानों के प्रयोग द्वारा कवि अपनी कल्पना को साकार रूप प्रदान करता है और उनका प्रयोग इस रूप में करता है कि वे सार्वजनीन एवं अधिक व्यापक हो सकें। इस प्रकार साधर्म्यविधान अथवा सादृश्य विधान कीप्रक्रिया व्यापक हो जातीहै। भावग्रहण एवं भाव प्रकाशन में इन उपमानों का प्रयोग अधिकाधिक होने लगता है। परिणामत: ये उपमान रूढ़ हो जाते हैं। भावों के अनत्व के आधार पर उपमानों का चयन किया जाता है। डा० ब्रम्हानन्द शर्मा ने उपमानों के क्षेत्र का निरूपण करते हुए अपना मत प्रतिपादित किया है कि "कतिपय उपमान कविपरम्परानुसार किसी अर्थ में रूढ़ हो जाते हैं। इनके श्रवणमात्र से पाठक को अभीष्ट अर्थ की अनुभूति हो जाती है। कवि अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए इनका आश्रय लेता है। कमल, कोकिल स्वर आदि क्रमश: मुख, मधुर संगीत आदि के उपमान के अर्थ में रूढ़ हो गये हैं। इनके प्रयोग से पाठक को मुख के सौन्दर्य तथा संगीत के माधुर्य की अनुभूति सहज ही हो जाती है। अत: उक्त भावों की अभिव्यक्ति के लिए कवि बिना प्रयत्न केही इनका चयन कर लेता है। इस प्रकार की रूढ़ियां कवि की भावाभिव्यक्ति तथा पाठक की भावनुभूति में सरलता लाती हैं।"[1]

---

१. संस्कृत साहित्य में सादृश्यमूलक अलंकारों का विकास : डा० ब्रम्हानन्द शर्मा: पृष्ठ ११७ : १९६४.

कभी कभी अनेक प्रकार के भावों का उदय एक साथ होता है और उनकी अभिव्यक्ति भी संश्लिष्ट रूपों में होती है। ऐसी स्थिति में ऐसे उपमानों का चयन किया जाता है जिनमें सम्पूर्ण भावों को अभिव्यक्त करने की क्षमता होती है। पारस्परिक सम्बन्धों के निदर्शन केलिए भी उपमानों का प्रयोग किया जाता है। उपमान संसृति के सम्पूर्ण उपकरणों को अधिक घने एवं संश्लिष्ट रूप में प्रकट करते हैं। इसी संश्लिष्टता के कारण भावों में एकसूत्रता और उपमानों में संश्लिष्टता आ जाती है।

इस प्रकार, काव्य में उपमान-योजना का अत्यधिक महत्व है। काव्य में भावाभिव्यंजना के अवसर पर उपमानों के द्वारा ही भावों को प्रभविष्णु और काव्यवस्तु को सरलीकृत कर सर्वग्राह्य बनाया जाता है। उपमान का लक्ष्य ही साधारण धर्म की प्रतीति कराना होता है। अतएव इनके प्रयोग से काव्य में सहज स्वाभाविकता आ जाती है। संस्कृत काव्य में उपमानों की अत्यधिक सुन्दर एवं प्रांजल आयोजना हुई है। हिन्दी के भक्तिकाल के कवियों ने भी भावाभिव्यंजना को अधिक व्यापक एवं प्रभविष्णु बनाने के लिए उपमानों का प्रयोग किया है। वास्तव में उपमान ही काव्याभिव्यंजना की अलंकृति, सादृश्य योजना का विधान एवं साधर्म्य विधान का परिवेश है।

२. रामचरितमानस में प्रयुक्त उपमानों का साहित्यिक अध्ययन .

२. १. उपमानों के स्रोत :

अभिव्यक्ति को रमणीय तथा सबल बनाने के लिए उपमानों का प्रयोग किया जाता है । उदाहरणार्थ यदि मुख का चन्द्र से साम्य दिखलाया जाय तो चन्द्र मुख का उपमान है । जब कविगण परम्परागत उपमानों का काव्य में प्रयोग करते हैं तो ये रूढ़ हो जाते हैं किन्तु जब वे नूतन उपमानों की खोज कर, अप्रस्तुत विधान करते हैं, तो ये उपमान ' मौलिक ' या ' अरूढ़ ' होते हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने अपने रामचरित मानस में दोनों प्रकार के उपमानों का प्रयोग किया है। तुलसी की अलंकार योजना के ये ही दो मुख्य स्रोत हैं - अर्थात् :-

(१) रूढ़िगत उपमान - जिनका परम्परा से प्रयोग होता आया था ।

(२) अरूढ़िगत - जिनका तुलसी ने स्वयं मौलिक ढंग से प्रयोग किया है । यथा लोक भाषा, लोक मुहावरों एवं जन जीवन एवं प्रकृति से गृहीत शब्दों का मौलिक रूप में उपमान के रूप में प्रयोग किया है ।

(१) रूढ़िगत उपमान :- मुख के लिए चन्द्र और कमल, आंखों के लिए खंजन, दांतों के लिए मोती, अनार, बिजली और कुन्दकली, नासिका के लिए शुक, बालों के लिए सर्प और मेघ, जंघाओं के लिए कदली स्तम्भ आदि उपमान काव्य में रूढ़ से बन गए हैं । इसके अतिरिक्त वेग के लिए पवन एवं तेज, प्रताप एवं कान्ति के लिए सूर्य का प्रयोग भी परम्परागत है । इन्हीं परम्परागत उपमानों का तुलसी साहित्य में भी प्रयोग हुआ है । यथा :

मुख के लिए चन्द्र एवं कमल का प्रयोग :

मए मगन देखत मुख सोभा, जनु चकोर पूरन ससि लोभा ।। १।२०।२०४.

सिय मुख ससि भए नयन चकोरा - १।६।२२४ .

रामचंद्र मुख चंद चकोरा - २।१६।२२७ .

मुख सरोज मकरंद छबि, करइ मधुप इव पान । १।१२।११५ .

गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी - १।३।१२८.

प्रभु मुख कमल बिलोकत रहहीं । - ७।४।५०४ .

आंखों के लिए खंजन का प्रयोग :

खंजन मंजु तिरीछे नयननि ।
निज पति कहेउ तिन्हहिं सिय सयननि ।। २।११५।२२८.

दांतों के लिए मोती, अनार, बिजली का प्रयोग :

कुंद कली दाड़िम दामिनी । कमल सरद ससि अहि भामिनी ।
३।१७।३४२.
आदि ।

तुलसी ने अनेक ऐसे उपमानों का प्रयोग किया है जो ` नाना पुराण निगमागम` में प्रयुक्त हुए हैं । कहीं कहीं तो ये उपमान अनूदित रूप में आए हैं उदाहरण स्वरूप रामचरित मानस में ` वर्षा ` एवं शरद् वर्णन श्रीमद्भागवत से अनूदित किये गये हैं । इन वर्णनों में अप्रस्तुत रूप में प्राय: वही उपमान आए हैं जो श्रीमद्भागवत में आए हैं ।

यथा :-

वर्षा वर्णन :

बरषा काल मेघ नभ छाए, गरजत लागत परम सुहाए
रा० मा० ३।६।३६१ .

तत: प्रावर्तत प्रावृट् सर्वसत्वसमुद्भवा ।
विद्योतमान परिधि विस्फूर्जित नभस्तला ।।
श्रीमद्० भा० १०।२०।३

- - -

लछिमन देखु मोरगन, नाचत बारिद पेखि ।
गृही बिरति रत हरष जस बिष्नु भगत कहुं देखि ।।
रामचरित० ३।७-८।३६१

मेघागमोत्सवा हृष्टा: प्रत्यनन्दञ्छिखण्डिन: ।
गृहेषु तप्ता निर्विण्णा यथाच्युत जनागमे ।।
श्री मद्० भा० १०।२०।२० .

- - -

घन घमंड नभ गर्जत घोरा । प्रियाहीन डरपत मन मोरा

रा० मा० ३।१३।३६१

तडित्वन्तो महामेघाश्चराश्वसनवेपिताः ।
प्रीणनं जीवनं ह्यस्य मुमुचुः करुणा इव ॥

श्रीमद्० भा० १०।२०।६

- - - -

दामिनि दमक रहन घन माहीं । खल कै प्रीति जथा थिर नाहीं

रा० मा० ३।१०।३६१

मेघेषु
लोकबन्धुषु ^ विद्युतश्चल सौहृदाः
स्थैर्यं न चक्रुः कामिन्यः पुरुषेषु गुणिष्विव

श्रीमद्० भा० १०।२०।१७ .

- - - -

बरषहिं जलद भूमि निअराए । जथा नवहिं बुध बिद्या पाए

रा० मा० ३।११।३६१

व्यमुञ्चन वायुभिर्नुन्नाः भूतेभ्योऽथामृतं घनाः ।
यथाऽऽशिषो विश्पतयः काले काले द्विजेरिताः ॥

श्रीमद्० भा० १०।२०।२४

- - - -

बुंद अघात सहहिं गिरि कैसे, खल के बचन सन्त सह जैसे ।

रा० मा० ३।१२।३६१

गिरयो वर्षधाराभिर्हन्यमाना न विव्यथुः ।
अभिभूयमाना व्यसनैर्यथा धोक्षजचेतसः ॥

श्रीमद्० भा० १०।२०।१५

छुद्र नदी भरी चली तोराई । जस थोरेहु धन खल इतराई ।।

रा० मा० : ३।१३।३६२

आसन्नुत्पथवाहिन्यः क्षुद्रनद्योऽनुशुष्यतीः
पुंसो यथा स्वतंत्रस्य देहद्रविणसम्पदः ।।

श्रीमद्० भा० १०।२०।१०

- - - -

सरिता जल जलनिधि महुं जाई । होइ अचल जिमि जिव हरि पाई ।।

रा० मा० : ३।१६।३६२

सरिद्भिः सङ्गतः सिन्धुश्चक्षुभे श्वसनोर्मिमान् ।
अपक्वयोगिनाश्चित्तं कामाक्तं गुणयुग्यथा ।।

श्रीमद्० भा० : १०।२०।१४

- - - -

हरित भुमि तृन संकुल समुझि परहिं नहिं पंथ ।
जिमि पाखंड बाद तें गुप्त होहिं सदग्रंथ ।।

रा० मा० : ३।१७-१८।३६२

मार्गा बभूवुः सन्दिग्धास्तृणैश्छन्ना ह्यसंस्कृताः ।
नाभ्यस्यमानाः श्रुतयो द्विजैः कालहता इव ।।

श्रीमद्० भा० : १०।२०।१६

- - - -

दादुर धुनि चहुं दिसा सुहाई । बेद पढ़हिं जनु बटु समुदाई ।

रा० मा० : ३।२३।३६१

श्रुत्वा पर्जन्यनिनदं मण्डूका व्यसृजन गिरः ।
तुष्णीं शयानाः प्राग् यद्वद् ब्राह्मणा नियमात्यये ।।

श्रीमद्० भा० : १०।२०।६

- - - -

ससि सम्पन्न सोह महि कैसी । उपकारी के संपति जैसी ।।

रा० मा० : ३।१।३६२

तप: कृशा देवमीढा आसीद्वर्षीयसी मही।
यथैव काम्यतपसस्तनु: सम्प्राप्य तत्फलम् ।।

श्रीमद्० भा० १०।२०।७

- - - -

निसि तम घन खद्योत बिराजा । जनु दम्भिन्ह कर मिला समाजा ।।

रा० मा० ३। २। ३६२

निशामुखेषु खद्योतास्तमसा भान्ति न ग्रहा : ।
यथा पापेन पाखण्डा न हि वेदा: कलौ युगे ।।

श्रीमद्० भा० १०।२०।८

- - - -

इसी प्रकार ' शरद वर्णन ' की कुछ पंक्तियां भी प्रस्तुत की जा सकती हैं :-

रस रस सूख सरित सर पानी । ममता त्याग करहिं जिमि ग्यानी ।

रा० मा० ३।१७।३६२

जल संकोच बिकल भई मीना । अबुध कुटुंबी जिमि धनहीना ।
बिनु घन निर्मल सोह अकासा । हरिजन इव परिहरि सब आसा ।।

रा० मा० ३।२०।३६२

शनै: शनैर्जहु: पङ्कं स्थलान्यामं च वीरुध:
यथाहं ममतां धीरा: शरीरादिष्वनात्मसु : ।। श्रीमद्० भा० १०।२०।३६
गाधवारि चरास्तापमविन्दन् शरदर्कजम् ।
यथा दरिद्र: कृपण: कुटुम्ब्यविजितेन्द्रिय: ।। श्रीमद्० भा० १०।२०।३८

सर्वस्वं जलदा हित्वा विरेजु: शुभ्रवर्चस: ।
यथा त्यक्तैषणा: शान्ता: मुनयो मुक्तकिल्विषा: ।।

श्रीमद्० भा० १०।२०।३५

(२) अरूढ़ि या मौलिक उपमान :

जहां तुलसीदास ने रूढ़िगत उपमानों से उपमेय की श्रीवृद्धि की है, वहीं अनुभव एवं प्रत्यक्ष दर्शन के सहारे, परम्परामुक्त या मौलिक उपमानों का भी उन्होंने प्रयोग किया है। कतिपय उदाहरण देखिये -

फलका फलकत पायन्ह कैसें। पंकज कोस ओस कन जैसें।।
२।८।२६६

यहां पैरों के छिल जाने से बीच बीच में निकले हुए फफोलों का सादृश्य कमल कोष में पड़े ओस कणों से दिखाया है जो अत्यंत स्वाभाविक होने के साथ ही मौलिक भी है।

गोस्वामी जी ने अपने अलंकार विधान को लोक जीवन एवं प्राकृतिक दृश्यों से भी चुना है। यथा :-

घायल बीर बिराजहिं कैसे। कुसमित किंसुक के तरु जैसे।
६।५।४३४

यहां घायल वीरों की उपमा ढाक के फूलों से दी गयी है।

तुलसीदास जी ने लोक मुहावरों को भी उपमान रूप में प्रयोग कर अपनी लोक संस्कृति के प्रति आस्था के साथ-साथ मौलिकता का भी परिचय दिया है। जब वनवास से पूर्व रामचन्द्र जी दशरथ से मिले थे, तब बड़ी देर तक वे उन्हें देखते ही रह गए थे और बहुत सी बातें सोचते जाते थे। तुलसीदास जी ने मन की दशा की तुलना 'पीपल के पत्ते के डोलने' से की है
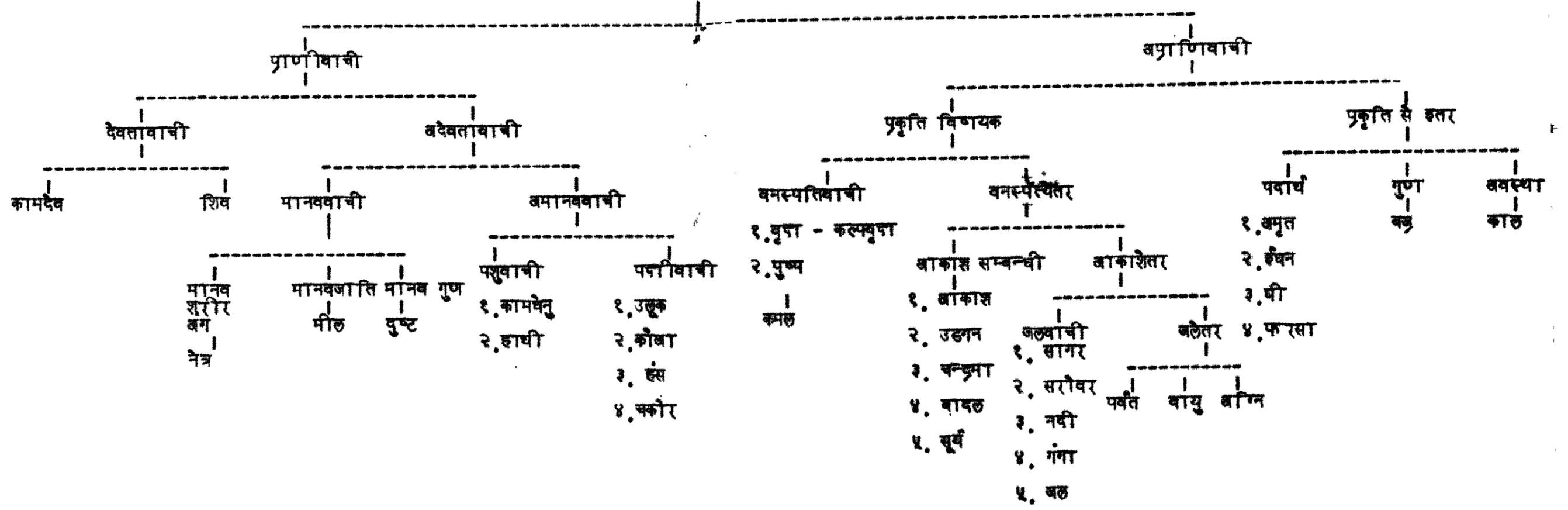
अस मन गुनइ राउ नहिं बोला। पीपर पात सरिस मनु डोला।।
२।१०।१६८

नीचे रामचरितमानस में प्रयुक्त कतिपय अकृत्रिम उपमानों की तालिका
प्रस्तुत की जा रही है :-

उपमान		उपमान	
माखी	१। ८।४	हुलसी	१।११।२०
बवां	१। ३।८२	अरुनारी	१। ३।९९
बाज	१।११।१३२	चबेना	२। ३।१५२
उकठ कुकाठु	२।११।१८७	छुरी	२। ७।१८८
लावा	२।१२।१९१	तरुतालु	२।१४।१९१
डाबर	२।११।२०४	ओरे	२।१६।२४१
गेरुपनारे	२। ६।२४४	ओसकन	२। ८।२६६
सुबेलि	२।१९।२८३	गंग गौरि	२। १।२८४ एवं २। २।२८४
जुवारिहि	२।१५।२८९	पनसफल	३।१०।३२६
अंकुस	३। १।३३८	ताबी	३।१२।३४७
पन्चर जुवा	३।१३।३४७	धनहीना	४।२०।३६१
संतोषा	४।१५।३६२	नारी	४। ३।३६२
सड़सिन्ह	६।१५।४१६	मेढुकन्हि	६। ४।४१७
मूलक	६।२१।४१७	टिटिभसगुन	६। ३।४२७
कुसुमित किंसुक	६। ५।४३४	मेघ बरुथा	६। ६।४४४
मघामेघ	६। २।४४६	घनघटा	६।१८।४५७
बनसी	६।१७।४५८	रायमुनि	६।२१।४७१
मसक	७। ९।५०७	हरहा हैं	७। ८।५११
लवन	७। १।५३५	अंब	७।१२।५४३
अहीर	७। २।५५८	नहरुवा	७।१७।५६२
डमरुवा	७।१७।५६२		

२.२ रामचरितमानस के उपमानों का वर्गीकरण

- प्राणिवाची
  - देवतावाची
    - कामदेव
    - शिव
  - अदेवतावाची
    - मानववाची
      - मानव शरीर अंग
        - नेत्र
      - मानवजाति
        - भील
      - मानव गुण
        - दुष्ट
    - अमानववाची
      - पशुवाची
        - १.कामधेनु
        - २.हाथी
      - पक्षिवाची
        - १.उलूक
        - २.कौवा
        - ३.हंस
        - ४.चकोर
- अप्राणिवाची
  - प्रकृति विषयक
    - वनस्पतिवाची
      - १.वृक्ष - कल्पवृक्ष
      - २.पुष्प
        - कमल
    - वनस्पतीतर
      - आकाश सम्बन्धी
        - १. आकाश
        - २. उडगन
        - ३. चन्द्रमा
        - ४. बादल
        - ५. सूर्य
      - आकाशेतर
        - जलवाची
          - १. सागर
          - २. सरोवर
          - ३. नदी
          - ४. गंगा
          - ५. जल
        - जलेतर
          - पर्वत
          - वायु
          - अग्नि
  - प्रकृति से इतर
    - पदार्थ
      - १.अमृत
      - २.ईंधन
      - ३.घी
      - ४.फरसा
    - गुण
      - बल
    - अवस्था
      - काल

२. ३ रामचरितमानस में उपमानों की दिशाएं

रामचरितमानस में " भावभेद " और " रस भेद अपारा " के साथ सा " आखर अरथ अलंकृति नाना " का भी योग है । मानस के अलंकारों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये स्वाभाविक सौन्दर्य के उत्कर्ष में सहायक होते हैं तथा ये वर्ण्य भाव, कार्य विषय और अर्थ के सौष्ठव की अभिवृद्धि करते हैं । गो० तुलसी दास जी की अलंकार योजना अत्यंत स्वाभाविक और औचित्यपूर्ण है । उन्होंने उपमानों का प्रयोग कहीं उपमेय से साम्य दिखलाने के लिए ; कहीं विरोध दिखाकर चमत्कार पूर्ण प्रकाशन करने के लिए तथा कहीं कार्य-कारण-सम्बन्ध के स्पष्टीकरण के लिए किया है इस प्रकार तुलसीदास जी के उपमानों के प्रयोग की विभिन्न दिशाएं रही हैं । नीचे इसकी विवेचना की जा रही है । यहां यह उल्लेखनीय है कि तुलसी ने उपमानों का प्रयोग मुख्यतया उपमा, उत्प्रेक्षा एवं रूपक अलंकारों के रूप में किया है :-

(१) उपमा :

जहां कवि, अपने भावों को स्पष्ट करने या उसे उत्कर्ष प्रदान करने के लिए दो भिन्न भिन्न पदार्थों के मध्य सादृश्य , सामर्थ्य और प्रभाव साम्य की आयोजना करता है, वहां उपमा अलंकार देखा जाता है । यह अलंकार ही प्राय: अन्य सभी अलंकारों का मूल है । संस्कृत के आचार्य राजशेखर उपमा को अलंकार समुदाय का सर्वश्रेष्ठ रत्न मानते हैं ।[१]

आचार्य रुय्यक का मत है कि उपमा ही अनेक अलंकारों के मूल में होती है और वही विभिन्न स्थितियों में विभिन्न अलंकारों की संज्ञा से विभूषित की जाती है ।[२] अति प्राचीन भारतीय लेखक भी इस अलंकार से परिचित थे । वामन ने अपने

---

१. " अलंकार शिरोरत्नम्! "

२. उपमेव च प्रकार वैचित्र्येण अनेकालंकार बीज भूतेति प्रथमं निर्दिष्टा ।

'काव्यालंकार सूत्र' में कहा है कि प्रशंसा निन्दा या स्तुति तथा वास्तविक स्थिति को स्पष्ट करने के लिए उपमालंकार का प्रयोग होता है ।

तुलसी के 'रामचरित्र मानस' में उपमा का अत्यन्त मर्यादित रूप मिलता है । उन्होंने उपमा और उत्प्रेक्षा का भली-भांति सोच समझ कर प्रयोग कि है। रूप सादृश्य के आधार पर प्रस्तुत उपमायें रामचरित मानस में बार बार आयीं हैं ।

यथा :-

'बहुरि बदन बिधु अंचल ढांकी ।
प्रभु तन चितई भौंह करि बांकी ।।'
(बदन के लिए बिधु)
'कुंद कली दाड़िम दामिनी ।
सरद कमल ससि अहि भामिनी ।।'
(दातों के लिए 'कुंदकली,' 'दाड़िम' और 'दामिनि')

साधर्म्य के आधार पर उपमा की आयोजना सूक्ष्म दृष्टि और कर्म-कुशलता की अपेक्षा रखती है । इसमें प्रस्तुत के लिए अप्रस्तुत का विधान गुण के आधार पर किया जाता है । गोस्वामी तुलसीदास इस प्रकार के विधान में अत्यंत दक्ष हैं । इस सम्बन्ध में कुछ चुने हुए उदाहरण नीचे दिये जाते हैं :-

(१) 'मन मलीन तन सुन्दर कैसे ।
विष रस भरा कनक घट जैसे ।।'

इसमें 'मन की मलीनता' और 'विष' के, समान धर्मी होने की बात कही गई है जो अत्यन्त सटीक है ।

(२) 'जोगवहि प्रभु सिय लखनहि कैसे ।
पलक बिलोचन गोलक जैसे ।।'

यहां 'पलक' और 'रामचन्द्र जी' के गुणों की समानता है ।

(३) " विधि केहि भाँति धरहुं उर धीरा ।
सिरस सुमन कन बेंधिय हीरा ।।"

इसमें " सिरस " पुष्प की कोमलता से राम की कोमलता का साम्य दृष्टव्य है ।

(४) " प्रभु अपने नीचहुं आदरहीं ।
अगिनि धूम गिरि सिर तृनधरहीं ।।"

इन पंक्तियों में राम की उदारता व्यंजित हुई है । अग्नि के साथ धुआं और पर्वत के ऊपर तृन की अनिवार्यता में सन्देह नहीं है । दोनों के ही धर्म में यहां समानता देखी जा सकती है । साधर्म्य के आधार पर उचित उपमान प्रस्तुत करने की तुलसी की पटुता इन कुछ उदाहरणों से ही स्पष्ट हो जाती है । कहने की आवश्यकता नहीं कि इस प्रकार के उत्कृष्ट साधर्म्य के उदाहरण हिन्दी साहित्य में अन्यत्र अल्प मात्रा ही में मिल सकते हैं ।

प्रभाव-साम्य के आधार पर प्रयुक्त उपमाएं भी रामचरित मानस में मिलती हैं । किन्तु इनकी मात्रा बहुत कम है । इस प्रकार की उपमाओं की आयोजना में प्रस्तुत और अप्रस्तुत के प्रभाव की समानता को दृष्टि में रखना पड़ता है । इसमें सूक्ष्मातिसूक्ष्म तथ्य को ग्रहण करना पड़ता है । छायावादी कवियों के काव्य में इस प्रकार की उपमाओं का सफल और अधिक प्रयोग सर्वाधिक महत्वपूर्ण है । रामचरित मानस से एक उदाहरण देखिये :-

" भयउ सहमि कछु कहि नहि आवा ।
जनु सचान बन झपटेउ लावा ।।"

अप्रस्तुत का प्रयोग प्रस्तुत में रमणीयता की वृद्धि के लिए किया जाता है । निःसन्देह रामचरित मानसमें इस प्रकार के अप्रस्तुतों की आयोजना प्रचुरमात्रा में हुई है। नीचे रा० मा० में प्रयुक्त उपमाओं की तालिका प्रस्तुत की जा रही है । यहां लाघव के लिए उदाहरण नहीं दिये जा रहे हैं अपितु काण्ड , पंक्ति-संख्या तथा पृष्ठ संख्या के क्रम से अंकों के रूप में उनका निदर्शन कराया जा रहा है :-

१।७। २;

१।१।३ ; १।२३।३ ;

१।२९।३ ; १।२२।३ ;

१।२९।३ ; १।७। ४ ; १।१०।४ ; १।१२।४ ;

१।१२।४ ; १।१२।५ ; १।१२।४ ; १।१३।४ ; १।१४।४ ;

१।२३।४ ; १।२३।४ ; १। ३।४ ; १। ३।७ ; १। ३।७ ;

१। ४।७ ; १। ४।७ ; १। ४।८ ; १।१७।८ ; १।२४।७ ;

१।१५।१२; १।१९।१२; १।२१।१२ ; १।१३।१३ ; १।१३।१३ ;

१।१३।१३ ; १।२०।१३ ; १। ६।१४ ; १। ७।१४ ; १। ९।१४

१। ९।१४ ; १।१०।१४ ; १।१०।१४ ; १।१४।१९ ; १। ९।२० ;

१। ९।२० ; १।१०।२० ; १।११।२० ,: १।१२।२० ; १।१३।२० ;:

१।१३।२० ; १।२५।२० ; १।२६।२० ; १। १।२१ ; १। २।२१ ;

१। ३।२१ ; १। ६।२१ ; १।२३।२२ ; १। ७।२३ ; १।१७।२३ ;

१। ७।२४ ; १। २।२५ ; १।१७।२८ ; १।११।३० ; १।११।३० ;

१।२१।४२ ; १।२१।५७ ; १। ९।५८ ; १।१३।५८ ; १। ५।६१

१। ७।६१ ; १। ८।६१ ; १। ९।६१ ; १।१२।६१ ; १।१२।६२ ;

१।१२।६२ ; १।१९।६३ ; १। १।६४ ; १। १।६५ ; १।१८।६६ ;

१।१८।६६ ; १।१८।६८ ; १।१७।७५ ; १।१३।७६ ; १।१२।८० ;

१। ३।८२ ; १।१६।८२ ; १।१८।८८ ; १।१८।८८ ; १।१८।८८

१।१८।८८ ; १। ९।९९ ; १।१०।१०७,: १।१७।१०७: १।१०।१०९ ;

१।१३।१०९; १।१३।१०९; १।१२।११५; १।१२।११५ ; १।१४।११८ ;

१। ७।१२०; १।१३।१२०; १।१५।१२०; १।१५।१२० ; १।१४।१२४ ;

१।१२।१२५ १।२०।१२६; १।१९।१२७; १।१०।१२८ ; १।२१।१२८

१। ८।१३० ; १।१४।१३० ; १।१४।१३०; १।२०।१३० ; १। ३।१३४;

१। ६।१३५ ; १।१५।१३६ ; १। ३।१३७ १।१३।१३७ ; १।१३।१३७;

१।२२।१४३ ; १।२०।१४७ १।२०।१४७; १।२१।१४८ ; १। ५।१४९;

१।१८।१६३ ; २।१३।१८७; २। ८।१८८; २। ४।१९५ ; २।१७।१९७

२।१०।१९८ ; २।१३।२०० ; २। ८।२०१ ; २। ८।२०६

२। ८।२०६ ; २।२०।२०६ ; २।२०।२०६ ; २।२०।२०६

२। २।२०७ ; २। ३।२०७ ; २। ३।२०७ ; २। ५।२०७

२। ६।२०९ ; २।२१।२१२ ; २।१४।२१४ ; २।१४।२२५

२। १।२३९ ; २। १।२३९ ; २। १।२३९ ; २।१०।२३३

२।१३।२३८ ; २।१५।२३८ ; २।१५।२३८ ; २।१५।२३८

२।१६।२३८ ; २। ७।२३९ ; २। ७।२३९ ; २।१७।२४१

२।२२।२४६ ; २।१५।२४९ ; २। ८।२६६ ; २। ८।२६६

२।१२।२७९ ; २।१७।२८० ; २। २।२८४ ; २। ४।२८६

२।१०।२८६ ; २।१२।२८७ ; २। ६।२८९ ; २।२४।२९२

२।२४।२९२ ; २।१५।२९३, ; २। १।२९५ ; २।१७।२९८

२।२२।२९८ ; २। २।२९९ ; २।१०।३०० ; २।१४।३०७

२। २।३०८ ; २। ६।३०८ ; २।१२।३०८ ; २।२२।३०८

२। ७।३०९ ; २।१६।३१३ ; ३।१२।३२४ ; ३।१२।३२४

३।१२।३२४ ; २। ८।३२८ ; ३।१३।३३३ ; ३। ९।३४१

३।११।३४१ ; ३। ६।३४८ ; ३। ९।३४८ ; ३।११।३४८

३।१४।३४८ ; ३। २।३५० ; ३।१३।३५० ; ३। १।३५१

३। ७।३५२ ; ४। २।३५७ ; ४।२ ।३५७ ; ४। ८।३५७

४। १।३५८ ; ४। १।३५८ ; ४। ८।३६१ ; ४। ८।३६१

४।१०।३६१ ,: ४।११।३६१ ; ४।१२।३६१ ; ४।१२।३६१

४।१३।३६१ ; ४।२०।३६१ ; ४।२०।३६१ ; ४।२१।३६१

४।२१।३६१ ; ४।२१।३६१ ; ४। १।३६२ ; ४।१६।३६२

४।१६।३६२ ; ४।१९।३६२ ; ४।२०।३६२ ; ४।२१।३६२

५।१५।३७५ ; ५।१७।३७६ ; ५।२१।३७६ ; ५।२१।३७६

५।२१।३७६ ; ५। ७।३७८ ; ५।१४।३७९ ; ५।१४।३७९

५।१५।३७९ ; ५।१६।३७९ ; ५। १।३८० ; ५। ४।३९०

५।२४।३९० ; ५। ४।३९४ ; ५।१०।३९५ ; ५।१०।३९५

६।१०।४०८ ; ६। ४।४०९ ; ६। ३।४१० ; ६। ३।४११

६।१४।४१३ ; ६।१८।४१३ ; ६। ८।४१३ ; ४।२१।४१७

६। ५।४१८
६। ७।४२५
६। ८।४३२
६। ८।४४४
६। ९।४५३
६।११।४५६
६। ३।४६१
६। ४।४६४
६। ७।४७६
६।१०।४७८
७।१४।४६५
७।१६।५०६
७। ३।५०७
७। ८।५३०
७। १।५३५
७। २।५३६
७। ६।५३६
७। ९।५३६
७। ७।५५०
७। ४।५५८
७।२१।५६१
७। ४।५६२

६।१८।४१८
६।१४।४२६
६। ५।४३५
६। २।४४७
६। ४।४५७
६।११।४६०
६। ८।४६१
६।२४।४६४
६।१८।४७७
७।१४।४८८
७।१६।५०६
७।१६।५०६
७।१२।५१४
७।१६।५३१
७।२२।५३८
७। ४।५३६
७। ८।५३६
७।११।५३६
७।१५।५५६
७।१६।५५८
७।२२।५६१

६।१६।४२२
६।१६।४३०
६। ५।४४४
६।१३।४४६
६। ४।४५७
६।१८।४६०
६। ८।४६१
६। १।४७४
६।१८।४७७
७।१२।४८६
७।१६।५०६
७। ३।५०७
७।१६।५२७
७। १।५३५
७। १।५३६
७। ५।५३६
७। ८।५३६
७। ७।५४३
७।१४।५५७
७।२०।५६१
७। २।५६२

(२) उत्प्रेक्षा - रामचरितमानस में उत्प्रेक्षा को सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है। उत्प्रेक्षा, रचना में वहां आती है जहां, प्रस्तुत में अप्रस्तुत की मात्र सम्भावना की जाती है। उपमा अलंकार में जो दृश्य-विधान किया जाता है वह सृष्टि का ही कोई-न-कोई अंग होता है, किन्तु उत्प्रेक्षा में यह बात सदा आवश्यक नहीं होती है। इसमें प्रकृति मात्र से संतुष्ट न होकर विभिन्न, एकाधिक प्रकृति खण्डों को समग्र रूप में ग्रहण करना होता है। ये प्रकृति-रूप भावना के उत्कर्ष में सहायक होते हैं। ये उपस्थित दृश्य-विधान को और अधिक स्पष्ट भी करते हैं। संक्षेप में यदि कहना चाहें तो कह सकते हैं कि उपमा में उपमान, उपमेय जैसा ही लिया जा सकता है किन्तु उत्प्रेक्षा में उपमेय की प्रकृति रूप और उसके प्रभाव से पृथक किसी अन्य प्रकार का उपमान भी ग्रहण किया जाता है।

उत्प्रेक्षा के प्रयोग में तुलसीदास अत्यन्त प्रवीण हैं। उनकी उत्प्रेक्षाएं उपमा से पृथक स्पष्ट रूप में दिखाई पड़ती हैं। यही स्पष्टता हिन्दी के अन्य कवियों में या तो गौण है या नहीं के बराबर है। रा०च०मा० में विभिन्न प्रकार की उत्प्रेक्षाएं देखने को मिलती हैं, किन्तु ये सर्वथा सहज रूप में आई हैं। उसके लिए कवि को किसी प्रकार का प्रयास नहीं करना पड़ा है। उत्प्रेक्षा के कतिपय उत्कृष्ट उदाहरण नीचे दिये जाते हैं -

लागति अवध भयावनि भारी।
मानहुं काल राति अंधियारी ।। २।१३।२१४

यहां कवि ने, राम के वियोग में, अवध की भयानक दशा की तुलना कालरात्रि के अंधकार से की है।

इसी प्रकार कैकेयी के कटुवचन की तुलना 'जले पर नमक छिड़कने' से की गई है -

अति कटु बचन कहति कैकेई।
मानहुं लोन जरे पर देई ।। २।५।१६२

रामचरितमानस में कहीं-कहीं तो उपमा एवं उत्प्रेक्षा के

संश्लिष्ट रूप भी उपलब्ध होते हैं। यथा -

जमगन मुंह मसि जग जमुना सी ।
जीवन मुकुति हेतु जनु कासी ॥ १।१०।२०

इन कतिपय उदाहरणों के पश्चात्, अब हम रामचरितमानस में आदि से अन्त तक प्रयुक्त सुन्दर उत्प्रेक्षाओं की तालिका अंकों में प्रस्तुत करेंगे, पहला अंक कांड-द्योतक, दूसरा पंक्ति-द्योतक एवं अन्तिम संख्या पृष्ठ-द्योतक होगी ।

१।१।१२	१।५।९९	१।१३।१५४
१।२१।७०	१।१८।११४	१।२।१५८
१।८।८०	१।१८।११५	१।२२।१६०
१।३।९९	१।२।११६	१।१५।१७१
१।१०।१०४	१।३।१२०	१।२।१७३
१।१६।११४	१।१०।१२०	१।४।१७३
१।१४।११५	१।२४।५८	२।१५।१८१
१।२।११६	१।१६।६८	२।१२।१८४
१।१।१२	१।१०।७६	१।६।१२०
१।१४।७४	१।३।९९	१।२।१२८
१।१।९९	१।१७।१००	१।९।१३०
१।४।९९	१।२३।११४	१।२३।१३०
१।१०।१०४	१।१८।११५	१।१२।१३०
१।१८।११४	१।३।१२०	१।३।१४२
१।१४।११५	१।३।१२०	१।३।१४७
१।२।११६	१।७।१३०	१।१९।१५३
१।५।१२०	१।२३।१३०	१।१३।१५४
१।६।६८	१।९।१३२	१।२४।१५८
१।१४।७४	१।१।१४७	१।११।१६५
१।३।९८	१।२२।१५०	१।१६।१७१

१।२।१७३
१।१३।१७६
२।१५।१८१
२।२२।१८४
१।१९।१२१
१।१९।१२१
१।६।१३०
१।७।१३०
१।९।१३०
१।२०।१३०
१।७।१३१
१।९।१३२
१।१२।१३२
१।१२।१४०
१।२०।१४४
१।८।१५०
१।८।१५०
१।७।१५४
१।८।१५४
१।२५।१५६
१।२।१५८
१।२५।१५९
१।२२।१६०
१।१०।१७१
१।१७।१७१
१।१८।१७१
१।३।१७३
१।४।१७३

१।१३।१७६
१।१२।१८१
२।१२।१८२
२।१२।१८२
२।५।१८६
२।१३।१८९
२।१।१८८
२।९।१८८
२।१२।१८९
२।२२।१८९
२।१०।१९०
२।१०।१९०
२।१०।१९०
२।१४।१९०
२।६।१९१
२।१३।१९१
२।१३।१९१
२।१४।१९१
२।१४।१९१
२।५।१९२
२।५।१९२
२।८।१९२
२।८।१९३
२।८।१९३
२।१५।१९३
२।२।१९४
२।३।१९४
२।२०।१९४

२।२१।१९४
२।१।१९५
२।११।१९५
२।११।१९५
२।१३।१९५
२।१३।१९५
२।४।१९६
२।४।१९६
२।५।१९६
२।६।१९६
२।१०।१९६
२।१६।१९६
२।१७।१९६
२।१८।१९६
२।२३।१९७
२।२३।१९७
२।२३।१९८
२।२।१९९
२।२४।२००
२।५।२०१
२।१४।२०१
२।२२।२०१
२।८।२०२
२।२।२०४
२।१९।२०८
२।१९।२०८
२।२५।२०९
२।२५।२०९

२।१२।२११
२।१२।२११
२।१३।२११
२।१५।२१२
२।१५।२१२
२।१५।२१४
२।१५।२१४
२।१५।२१४
२।२३।२१५
२।२३।२१५
२।८।२११
३।२।२२१
२।३।२२१
२।८।२२१
२।१२।२२४
२।१।२२८
२।१।२८८
२।२२।२२८
२।२।२३१
२।२।२३१
२।२।२३१
२।३।२३१
२।३।२३१
२।३।२३१
२।१४।२३५
२।२०।२३५

२।१०।२३८
२।१४।२३६
२।२०।२३६
२।२१।२३६
२।६।२४०
२।१०।२४०
२।१७।२४०
२।२३।२४१
२।२३।२४१
२।२।२४२
६।२।२४४
६।११।२४४
२।१६।२४४
२।१५।२४६
२।२५।२४६
२।१०।२५४
२।३।२५६
२।३।२५६
२।२।२६३
२।२।२६३
२।२०।२६६
२।१६।२७६
२।११।२७७
२।१७।२७६
२।१७।२७६
२।२०।२७६

२।२।२८१
२।२।२८१
२।१२।२८१
२।१२।२८१
२।१६।२८१
२।१६।२८१
२।१६।२८१
२।२।२८२
२।२।२८२
२।२१।२८२
२।१६।२८३
२।१५।२८४
२।१८।२६१
२।२४।२६६
२।१२।२६६
२।१४।३०१
२।२२।३०४
२।११।३०५
२।१०।३०८
२।१०।३१०
२।१०।३१०
२।११।३११
२।४।३१४
२।५।३१४
३।१८।३२६
३।१८।३२६

३।१९।३२६
३।२०।३२६
३।२३।३२८
३।१३।३३१
३।१४।३२२
३।१७।३३२
३।११।३३३
३।१२।३३५
३।१।३४७
३।२३।३४१
४।१९।३६१
४।१९।३६१
४।२।३६२
४।३।३६२
४।३।३६२
४।१४।३६२
४।१४।३६२
४।३।३६२
४।१०।३६३
५।१०।३७८
५।१४।३७९
६।१५।४१६
५।१९।३८१
५।१९।३८१
५।१९।३८५

५।१०।३८८
६।४।४१०
६।१४।४१३
६।१।४१९
६।१।४१९
६।१०।४२७
४।१०।४२७
६।१२।४२९
६।७।४३३
६।१३।४३३
६।१६।४४६
६।१२।४४२
६।५।४४३
६।१।४४४
६।१।४४४
६।२।४४४
६।२२।४४४
६।१२।४४६
६।१६।४४६
६।१८।४५०
६।९।४५१
६।११।४५१
६।१४।४५१
६।२१।४५१
६।२१।४५७

६।८।४५३
६।१७।४५४
६।१७।४५४
६।२।४५५
६।८।४५५
६।१८।४५७
६।१९।४५७
६।१।४५८
६।२।४५८
६।३।४५८
६।६।४५८
६।११।४५८
६।११।४५८
६।१६।४५८
६।१७।४५८
६।१८।४५८
६।१६।४६१
६।१७।४६१
६।१।४६२
६।१।४६२
६।९।४६२
६।१०।४६२
६।१०।४६२
६।१३।४६२
६।१३।४६२

६।१६।४६२	६।२।४७१	७।१०।४६०
६।१६।४६२	६।१८।४७१	७।६।४६२
६।११।४६४	६।१८।४७१	७।३।५०६
६।११।४६४	६।१८।४७१	७।१०।५११
६।१०।४६६	६।२१।४७१	७।१८।५११
६।१४।४६६	६।१४।४७६	७।१६।५११
६।४।४६७	६।१६।४८३	७।३।५५१
६।४।४६७	६।१६।४८३	
६।२०।४६६	६।१६।४८३	

(३) रूपक - वर्ण्य के लिये अवर्ण्य की योजना अथवा प्रस्तुत के स्थान पर अप्रस्तुत के आरोप को आचार्यों ने रूपक अलंकार कहा है । यह आयोजना अभेद-स्थापन के आधार पर की जाती है । इसीलिये रूपक अलंकार में उपमेय पर उपमान का निषेध रहित आरोप माना जाता है । आचार्य मम्मट ने रूपक की परिभाषा देते हुए लिखा है -

"तद्रूपकमभेदो य: उपमानोपमेययो:"

आचार्य विश्वनाथ ने भी लिखा है -

"रूपकं रूपिता रोपो विषये निरपह्नवे"

ऊपर के उद्धरणों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि रूपक अलंकार में उपमेय और उपमान में अन्तर न मानकर प्रथम के लिये दूसरे का यथावत् ग्रहण कर लिया जाता है ।

तुलसीदासकृत रामचरितमानस में रूपकों का आयोजन पर्याप्त मात्रा में हुआ है । रूपक के विभिन्न भेदों का निर्वाह तुलसीदास ने सफलतापूर्वक किया है । सांग रूपक की तो सुन्दर सृष्टि तुलसीदास ने की है । सरिता का रूपक गोस्वामीजी को अधिक प्रिय था । यही

कारण है कि मानस में इसका कई स्थानों पर प्रयोग हुआ है। नीचे रूपक के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं -

अलकहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी ।
मानहुं रोष तरंगिनि बाढ़ी ।।
पाप पहार प्रकट भई सोई ।
भरी क्रोध जल जाइ न जोई ।।
दोउ बर कूल कठिन हठ धारा ।
भंवर कूबरी बचन प्रचारा ।।
ढाहत भूप रूप तरु मूला ।
चली बिपति बारिधि अनुकूला ।। २।३४-३८।३३

इस रूपक में कैकेयी के कर्म की कटुता एवं भीषणता को स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। नदी के दो किनारों के समान उसके क्रोध के दोनों पक्ष दो वर हैं। नदी की धारा के समान उसका हठ भी अत्यन्त तीव्र है। कूबरी के वचन ही इस वेगवती धारा के भंवर हैं। यह धारा 'भूप' के 'रूपतरु' को समूल नष्ट करती हुई 'विपत्ति-वारिधि' की ओर बढ़ी जा रही है।

नीचे एक और सांगरूपक, उस समय का, प्रस्तुत किया जाता है जब चित्रकूट में राम, जनक को अपने आश्रम को ले जा रहे हैं -

आश्रम सागर सांत रस, पूरन पावन पाथु ।
सैन मनहुं करुना सरित, लिए जात रघुनाथ ।।
बोरति ग्यान बिराग करारे । बचन ससोक मिलत नद नारे ।
सोच उसास समीर तरंगा । धीरज तट तरुबर कर भंगा ।।
बिषम बिषाद तोरावति धारा ।भय भ्रम भंवर अबर्त अपारा ।।
केवट बुध बिद्या बड़ि नावा । सकहिं न खेइ एक नहिं आवा ।।
बनचर कोल किरात बिचारे । थके बिलोकि पथिक हियं हारे ।।
आश्रम उदधि मिली जब जाई । मनहुं उठेउ अंबुधि अकुलाई ।।
२।२३।२६।२७६ :
२।४।२७७

इस रूपक के द्वारा शोक का जो वर्णन हुआ है वह अत्यन्त मार्मिक है।

उसमें करुणा साकार हो उठी है । यहां शोक ने ऐसा भीषण रूप धारण किया है कि उसमें ज्ञान एवं वैराग्य डूबते हुए दिखाई दे रहे हैं । इस शोक-सरिता का वेग इतना तीव्र है कि 'धीरज तरुवर' के पांव भी उखड़ गए हैं ।

नीचे रामचरितमानस में प्रयुक्त प्रमुख रूपकों की तालिका दी जाती है -

१।६।२	१।६।१३	१।२२।२१
१।१०।२	१।१०।१३	१।२१।२२
१।११।२	१।११।१३	१।२१।२२
१।७।३	१।१।१४	१।२१।२२
१।६।४	१।२।१४	१।३।२७
१।११।६	१।२।१४	१।६।२७
१।१६।६	१।२०।१६	१।१६।२८
१।१६।६	१।२०।१६	१।१७।२८
१।१६।६	१।१२।१७	१।६।४६
१।२।८	१।१२।१७	१।४।५५
१।१२।१०	१।३।२०	१।१३।५०
१।५।११	१।५।२०	१।१७।५३
१।६।११	१।७।२०	१।१६।५५
१।६।१२	१।१४।२०	१।१८।५५
१।१०।१२	१।१५।२०	१।११।५७
१।१०।१२	१।२१।२०	१।११।५८
१।१६।१२	१।२२।२०	१।२०।५८
१।२०।१२	१।२३।२०	१।१५।६१
१।२४।१२	१।२४।२०	१।१३।६२
१।१।१३	१।१८।२१	१।१४।६२

१।१५।६२
१।२४।६३
१।२२।७०
१।२०।७४
१।२३।७५
१।१६।७६
१।१६।७६
१।१६।७६
१।२३।७६
१।४।७७
१।१४।८९
१।१४।९४
१।१४।९४
१।२१।९५
१।१७।१००
१।२४।१०२
१।६।१०३
१।७।१०५
१।१०।१०६
१।२२।१०६
१।२४।१०६
१।७।११०
१।१२।११०
१।१२।११०
१।२५।१११
१।४।११३

१।५।११३
१।८।११३
१।९।११४
१।१९।११४
१।१२।११५
१।७।११७
१।१४।११७
१।२२।११८
१।१०।११९
१।१२।१२१
१।१।१२३
१।९।१२३
१।३।१२४
१।३।१२४
१।८।१२५
१।३।१२८
१।६।१२८
१।१९।१२८
१।१३।१२९
१।१५।१३०
१।११।१३२
१।११।१३२
१।११।१३२
१।६।१३३
१।१४।१३६
१।८।१४०

१।१२।१४०
१।१०।१४३
१।१०।१४३
१।६।१५२
१।७।१५६
१।१२।१५७
१।१०।१५७
१।५।१५९
१।५।१५९
१।७।१५९
१।४।१६२
१।११।१६३
१।१०।१६८
१।१।१६९
१।१६।१७१
१।६।१७३
१।३।१७४
२।९।१७९
२।२।१७९
१।१२।१७९
२।१३।१७९
२।१३।१७९
२।१६।१७९
२।१७।२७९
२।१।१८३
२।१७।१८३

२।१७।१८८
२।७।१८८
२।२१।१८८
२।२१।१८८
२।२२।१८८
२।४।१९०
२।७।१९१
२।८।१९१
२।१६।१९१
२।९।१९२
२।२०।१९३
२।१।१९६
२।१६।१९६
२।१६।१९६
२।७।१९७
२।६।१९९
२।८।२०१
२।३।२०३
२।३।२०३
२।१२।२०३
२।१२।२०३
२।२०।२०३
२।६।२०४
२।६।२०४
२।१६।२०५
२।५।२०७

२।६।२०७
२।१३।२०७
२।४।२०८
२।३।२१३
२।१३।२१३
२।१०।२१६
२।१५।२१६
२।१६।२१६
२।१५।२१६
२।१६।२१६
२।३।२१८
२।१२।२२०
२।१८।२२०
२।१४।२२१
२।१८।२२१
२।१९।२२१
२।७।२२२
२।१।२२४
२।१८।२२४
२।२।२२७
२।१९।२२७
२।१९।२२७
२।२१।२२७
२।२४।२२८
२।४।२३०
२।१३।२३०

२।२१।२३०
२।२५।२३१
२।१२।२३२
२।५।२४३
२।१२।२४३
२।१२।२४४
२।१४।२४४
२।११।२४५
२।१३।२४६
२।५।२५४
२।८।२५४
२।१२।२६०
२।११।२६२
२।२३।२६४
२।११।२६८
२।२३।२७४
२।२०।२८०
२।१७।२८१
२।१९।२८२
२।२०।२८२
२।२०।२८६
२।१९।२८७
२।२१।२८७
२।२४।२८७
२।६।२८९
२।५।२९०

२।७।२९३
२।८।२९३
२।८।२९४
२।१०।२९६
२।१४।२९६
२।२३।२९६
२।१३।३०३
२।७।३०६
२।८।३०६
२।१६।३०७
२।२१।३०७
२।११।३१०
२।२४।३१०
२।१४।३१२
२।६।३१४
२।८।३१८
३।२।३२१
३।११।३२१
३।१२।३२१
३।१२।३२१
३।२३।३२१
३।२३।३२१
३।७।३२२
३।११।३२२
३।१०।३२४
३।१८।३२४
३।१८।३२४

३।२०।३२४
३।२।३२६
३।२।३२७
३।३।३२७
३।४।३२७
३।५।३२७
३।६।३२७
३।११।३२७
३।१८।३२७
३।११।३२९
३।१४।३३०
३।५।३३१
३।१०।३३१
३।६।३४०
३।६।३४०
३।१०।३४२
३।३।३४३
३।४।३४५
३।९।३४५
३।२१।३४५
३।१३।३४६
३।१९।३४६
३।१९।३४६
३।[illegible]।३४७
३।१४।३४७
३।१५।३४७
३।१।३५०

३।१।३५०
३।१।३५०
३।३।३५०
३।३।३५०
३।१।३५२
४।८।३७०
५।१३।३७५
५।२।३७९
५।४।३८०
५।७।३८३
५।१२।३८६
५।२१।३८६
५।५।३८७
५।५।३८७
५।५।३८७
५।२१।३८७
५।१८।३८८
५।१८।३९२
५।६।३९४
५।१९।३९४
५।२०।३९४
५।२१।३९४
५।२१।३९४
५।३।३९५
५।१७।३९५
५।२४।३९५
५।२४।३९५

५।१३।३९९
५।१३।३९९
५।१४।३९९
६।२।४०३
६।४।४०३
६।५।४०९
६।६।४०९
६।७।४०९
६।१९।४१०
६।२१।४१०
६।२२।४१०
६।२२।४१०
६।२२।४१०
६।२।४११
६।३।४११
६।४।४११
६।५।४११
६।५।४११
६।५।४११
६।६।४११
६।६।४११
६।६।४११
६।७।४११
६।७।४११
६।८।४११
६।१२।४१३
६।१३।४१३

६।१२।४१५
६।१२।४१५
६।१४।४१६
६।१८।४१७
६।६।४१८
६।६।४१९
६।७।४२३
६।४।४२४
६।१०।४२४
६।१७।४२५
६।११।४३०
६।५।४३२
६।३।४३६
६।९।४३६
६।८।४४४
६।९।४४४
६।१।४४९
६।२।४५२
६।२।४५२
६।१८।४५२
६।२।४५८
६।७।४६०
६।२।४६२
६।६।४६३
६।१७।४६७
६।४।४७४
६।६।४७४

६।१५।४७८
६।१६।४७८
६।२०।४७९
६।२।४८१
६।२।४८१
६।४।४८१
६।४।४८१
५।४।४८१
६।५।४८१
६।२९।४८५
७।१।४८७
७।५।४८७
७।६।४८७
७।३।४८८
७।९।४८८
७।९।४९०
७।११।४९०
७।११।४९०
७।३।४९१
७।६।४९१
७।१६।४९१
७।१७।४९२
७।९।४९३
७।९।४९३
७।२२।४९३
७।३।४९४
७।३।४९४

७।३।४९४
७।१०।४९७
७।१४।४९७
७।१४।४९७
७।२।४९८
७।३।४९८
७।३।४९८
७।३।४९८
७।५।४९८
७।५।४९८
७।८।४९८
७।५।४९८
७।९।४९८
७।१५।४९८
७।१५।४९८
७।२०।४९८
७।२३।४९८
७।७।४९९
७।९।४९९
७।४।५००
७।१६।५००
७।१९।५००
७।५।५०१
७।२१।५०१
७।१८।५०३
७।२।५०४
७।४।५०४
७।४।५०७
७।४।५०७
७।५।५०७
७।५।५०७
७।६।५०७
७।६।५०७
७।७।५०७
७।७।५०७
७।७।५०७
७।९।५०७
७।९।५०७
७।१५।५०७
७।१६।५०७
७।१८।५०७
७।१९।५०७
७।१९।५०७
७।२०।५०७
७।१।५०८
७।७।५०९
७।१३।५०९
७।१३।५०९
७।१६।५०९
७।१६।५०९
७।१६।५०९
७।१७।५०९
७।१७।५०९
७।५।५११
७।९।५१३
७।१७।५१३
७।१७।५१३
७।१७।५१३
७।२०।५१५
७।२२।५१५
७।२।५१६
७।२।५१६
७।४।५१६
७।१४।५१६
७।१७।५१६
७।१७।५१६
७।१९।५१६
७।१९।५१६
७।२१।५१६
७।१६।५१७
७।२०।५१७
७।२।५२७
७।४।५२७
७।५।५२७
७।६।५२७
७।७।५२७
७।१०।५३४
७।७।५४०

७।१४।५४०
७।१९।५५१
७।१७।५५२
७।१७।५५२
७।२२।५५४
७।१२।५५५
७।२।५५७
७।३।५५७
७।२०।५५७
७।२।५५८
७।२।५५८
७।२।५५८
७।२।५५८
७।३।५५८
७।४।५५८
७।५।५५८
७।५।५५८
७।८।५५८
७।९।५५८
७।१०।५५८
७।१०।५५८
७।१२।५५८
७।१५।५५८
७।२।५६१

७।१९।५५८
७।२।५५९
७।४।५५९
७।५।५५९
७।५।५५९
७।५।५५९
७।६।५५९
७।८।५५९
७।३।५६०
७।७।५६०
७।९।५६०
७।७।५६०
७।१२।५६०
७।१८।५६०
७।१९।५६०
७।१९।५६०
७।२०।५६०
७।२२।५६०
७।२२।५६०
७।२२।५६०
७।१।५६१
७।१।५६१
७।१।५६१
७।२।५६१

७।३।५६१
७।३।५६१
७।३।५६१
७।३।५६१
७।८।५६२
७।१२।५६२
७।१४।५६२
७।१५।५६२
७।१८।५६२
७।६।५६३
७।८।५६३
७।९।५६३
७।९।५६३
७।१२।५६३
७।१३।५६३
७।१३।५६३
७।१४।५६३
७।११।५६५
७।४।५६६

उपमानों का अन्य अलंकारों के रूप में प्रयोग -

(४) अतिशयोक्ति -

कवि जब उपमेय को बिलकुल ही छिपाकर केवल उपमान का वर्णन करता है, साथ ही उपमान के साथ उपमेय का अभेद स्थापित करता है तब अतिशयोक्ति की सृष्टि स्वतः हो जाती है। अतिशयोक्ति का मूल तत्व `अतिशयता` है। उपमान और उपमेय में अभेद होने पर उनमें भेद दिखाना भी अतिशयोक्ति ही है। इसे भेदकातिशयोक्ति कहा जाता है। उपमेय उपमान में संबंध रहने पर भी उनमें सम्बन्ध का अभाव बताकर जो अतिशयोक्ति की जाती है उसे `असंबन्धातिशयोक्ति` कहा जाता है। इसी प्रकार सम्बन्ध न रहने पर सम्बन्ध दिखाकर कार्यकारण की एक साथ उपस्थिति दिखाकर तथा कारण के पहले ही कार्य की नियोजना करके भी अतिशयोक्ति की जाती है जिन्हें क्रमशः `संबन्धातिशयोक्ति,` `अक्रमातिशयोक्त` एवं `अत्यन्त्यातिशयोक्ति` की संज्ञा दी जाती है।

तुलसीदास के रामचरितमानस में प्रायः सभी प्रकार की अतिशयोक्तियों का प्रयोग हुआ है। साधु महिमा का वर्णन करते हुए तुलसीदास ने अतिशयोक्ति अलंकार की बड़ी ही मनोहर आयोजना की है-

बिधि हरि हर कबि कोबिद बानी।
कहत साधु महिमा सकुचानी ।। १।२२।३

सीता के रूप का वर्णन करते हुए तुलसी ने अतिशयोक्ति की चरम सीमा को छू लिया है -

सिय सोभा नहिं जाय बखानी।
जगदंबिका रूप गुन खानी ।।
उपमा सकल मोहि लघु लागी।
प्राकृत नारि अंग अनुरागी ।।

सिय बरनिअ तेइ उपमा देई ।
कुकबि कहाइ अजसु को लेई ।।
जौ पट तरिअ तीय सम सीया ।
जग असि जुबति कहाँ कमनीया ।।
गिरा मुखर तन अरध भवानी ।
रति अति दुखित अतनु पति जानी ।।
बिष बारुनी बंधु प्रिय जेही ।
कहिअ रमा सम किमि बैदेही ।। आदि

१।१५।२०।१२२

मानस में इसी प्रकार के सुन्दर अतिशयोक्ति के स्थल भरे पड़े हैं ।

(५) अपह्नुति -

जहाँ वर्ण्य का निषेध कर अप्रस्तुत की स्थापना की जाती है वहाँ अपह्नुति अलंकार होता है । इसमें उपमेय को छोड़कर उपमान की स्थापना का आग्रह होता है । इसकी परिभाषा करते हुए जयदेव ने लिखा है -

'अतथ्यमारोपयितुं तथ्यापास्तिरपह्नुतिः ।'

रामचरितमानस से एक उदाहरण देखिये -

मोरे प्राननाथ सुत दोऊ ।
तुम्ह मुनि पिता आन नहिं कोऊ ।। १।४।१०५

(६) काव्यलिंग -

काव्यलिंग वहाँ होता है जहाँ कारण देकर रचना के अर्थ का समर्थन किया जाता है । संस्कृत-आचार्यों ने इसे ही हेतु का प्रतिपादन कहा है । उनके अनुसार भी हेतु का प्रतिपादन वाक्य या पद के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए होता है । तुलसीदास के मानस से एक उदाहरण

देखिए -

`स्याम गौर किमि कहौं बखानी ।
गिरा अनयन नयन बिनु बानी ।। १।८।११४

(७) उल्लेख -

एक वस्तु का अनेक प्रकार से ग्रहण उल्लेख अलंकार कहलाता है । ग्रहण का अर्थ ज्ञान है । अत: एक वस्तु का अनेक प्रकार से ज्ञान ही इस अलंकार का स्वरूप है ।

रामचरितमानस में `उल्लेख` के अनेक सुन्दर उदाहरण हैं । `धनुषयज्ञ` अवसर पर राम को उपस्थित जनसमूह के वर्गों ने अपनी-अपनी भावना के अनुरूप देखा है । `राम` का अनेक रूपों में उल्लेख किया गया है । यथा -

राज समाज बिराजत रुरे ।
उडुगन महं जनु जुग बिधु पूरे ।
जिन्ह के रही भावना जैसी ।
प्रभु मूरत देखी तिन्ह तैसी ।।
डरे कुटिल नृप प्रभुहिं निहारी ।
मनहुं भयानक मूरत भारी ।।
रहे असुर छल छोनिप बेखा ।
तिन्ह प्रभु प्रगट काल सम देखा ।।
पुरबासिन्ह देखे दोउ भाई ।
नर भूषन लोचन सुखदाई ।।
नारि बिलोकहिं हरष हिय, निज निज रुचि प्रभु रूप ।
जनु सोहत श्रृंगार धरि, मूरति परम अनूप ।। १।३-१०।१२०

(८) दृष्टान्त अलंकार -

इस कोटि के अलंकारों का कार्य किसी तथ्य को पुष्ट करना और यथावत मन में उतार देना होता है । संस्कृत- आचार्यों ने इसे

साधारण धर्मों का बिम्ब-प्रतिबिम्ब दिखाने वाला अलंकार कहा है । तात्पर्य यह है कि इसमें समर्थन की भावना प्रबल होती है । रामचरितमानस में इसके बहुत से उदाहरण मिलेंगे ।

एक उदाहरण देखिये -

मनिति बिचित्र सुकवि कृत जोऊ ।
राम नाम बिनु सोह न सोऊ ।। १।१।८

+ + +

सोइ मरोस मेरे मन आवा ।
केहि न सुसंग बड़प्पन पावा ।।
धूमौ तजै सहज करुवाई ।
अगर प्रसंग सुगंध बसाई ।। १।६-७।८

+ + +

मंगल करनि कलिमल हरनि,
तुलसी कथा रघुनाथ की ।
गति कूर कविता सरित की,
ज्यौं सरति पावन पाथ की ।। १।६-१०।८

इस विवेचना में रामकथा की उत्तमता और समर्थता को स्पष्ट करने या उसका समर्थन करने का उद्योग है । तुलसी ने इस प्रकार की आयोजना द्वारा भावनाओं को स्पष्ट करके सामने रख दिया है ।

(६) निदर्शना -

जहां उपमेय एवं उपमान का ऐसा समन्वय किया जाय कि वे आपाततः अनुपन्न दीखने पर भी अन्त में सादृश्य-सम्बन्ध स्थापित कर लें, वहां निदर्शना अलंकार होता है । इस सम्बन्ध में आचार्य विश्वनाथ ने लिखा है -

सम्भवन्वस्तु सम्बन्धोऽसम्भवन्वाऽपि कुत्रचित् ।
यत्र बिम्बानुबिम्बत्वं बोधयेत्सा निदर्शना ।।

तुलसीदासकृत रामचरितमानस में निदर्शना के माध्यम से रमणीयता की

पर्याप्त वृद्धि हुई है । `सीता` द्वारा वन गमन का आग्रह सुनकर `राम` ने इसी निदर्शना के द्वारा उन्हें समझाया है -

हंस गवनि तुम्ह नहिं बन जोगू ।
सुनि अपजसु मोहि देइहि लोगू ।।
मानस सलिल सुधा प्रतिपाली ।
जिअइ कि लवन पयोधि मराली ।।
नव रसाल बन बिहरन सीला ।
सोह कि कोकिल बिपिन करीला ।। २।१-३।२०६

इसी प्रकार धनुष भंग प्रकरण में, धनुष की कठोरता और राम की कोमलता का वर्णन करते हुए सीता की माता के बहाने तुलसीदास ने निदर्शना का सुन्दर प्रयोग किया है ।

(१०) पर्यायोक्ति -

जहां वाच्य (वर्णनीय या उपमेय) वस्तु का वाच्य वाचक भाव से प्रतिपादन न कर प्रकारान्तर से किया जाय, वहां यह अलंकार होता है । आचार्य मम्मट ने इसका लक्षण निम्न प्रकार से दिया है -

`पर्यायोक्तं विना वाच्यवाचकत्वेन यद्वच: । `

`रामचरितमानस` में इस अलंकार का भी पर्याप्त प्रयोग हुआ है । जनक वाटिका प्रसंग से एक उदाहरण देखिये -

`देखन मिस मृग बिहग तरु, फिरै बहोरि बहोरि ।
निरखि निरखि रघुबीर छबि, बाढ़ै प्रीति न थोरि ।।
१।१-२।११७

यहां प्रकारान्तर से `राम` की अनुपमेय सुन्दरता को ही पुष्ट किया गया है , जिसका अवलोकन `सीता` बार-बार करना चाहती हैं ।

(११) परिसंख्या -

जहां एक वस्तु की अनेक स्थानों में स्थिति सम्भव रहने पर भी अनेक निषेध कर उसका एक स्थान में नियमन कर दिया जाय, वहां

परिसंख्या अलंकार होता है । इसका लक्षण देते हुए आचार्य जयदेव लिखते हैं -

`परिसंख्या निषिध्यैक मन्यस्मिन्वस्तुणु यन्त्रणम्`

रामचरितमानस के उत्तरकाण्ड में वर्णित रामराज्य के प्रसंग से एक उदाहरण दृष्टव्य है -

`दंड जतिन्ह कर भेद जहं नर्तक नृत्य समाज ।
जीतहु मनहिं सुनिअ अस रामचन्द्र के राज ।।` ७।१-२।५०३

(१२) भ्रान्तिमान -

जहां सादृश्य के कारण एक वस्तु में किसी दूसरी वस्तु का ज्ञान कर लिया जाय, वहां भ्रान्तिमान अलंकार होता है । रुय्यककी ने इसका लक्षण इन शब्दों में लिखा है -

`सादृश्याद् वस्त्वनन्तर प्रतीति: भ्रान्तिमान् ।`

सीताहरण के समय मारीच (मृग) की आर्त वाणी सीता को राम की वाणी जान पड़ी । इस भ्रान्ति का उल्लेख करते हुए तुलसीदास लिखते हैं -

आरत गिरा सुनी जब सीता ।
कह लछिमन सन परम सभीता ।।
जाहु बेगि संकट अति भ्राता ।
लछिमन बिहंसि कहा सुनु माता ।। आदि । ३।२-३।३४०

यहां पर भ्रान्तिमान का स्पष्ट उदाहरण उपलब्ध है ।

(१३) व्यतिरेक -

जहां उपमान की अपेक्षा उपमेय का गुणोत्कर्ष दिखलाया जाय, वहां व्यतिरेक अलंकार होता है । आचार्य मम्मट इस सम्बन्ध में लिखते हैं -

`उपमानादन्यस्य व्यतिरेक: स एव स: ।`

एक उदाहरण देखिए -

"कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा ।
व्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा ।।" १।६।१३५

इन पंक्तियों में परशुराम के वचनों की कठोरता को अत्यन्त उत्कर्ष के साथ प्रगट किया गया है ।

(१४) <u>व्याजस्तुति</u> - <u>व्याजनिन्दा</u> -

जहां किसी की स्तुति के व्याज से निन्दा या निन्दा के व्याज से स्तुति की जाए, वहां यह अलंकार होता है । आचार्य विश्वनाथ के शब्दों में -

"निन्दास्तुतिभ्यां वाचाभ्यां गम्यत्वे स्तुतिनिन्दयो: ।"

`रामचरितमानस` में अंगद-रावण संवाद के समय इसी प्रकार की व्याज-निन्दा का प्रयोग है । उदाहरण देखिए -
अंगद कहते हैं -

"कह कपि धर्मसीलता तोरी ।
हमहुं सुनी कृत पर त्रिय चोरी ।।
देखी नयन दूत रखवारी ।
बूड़ि न मरहु धर्मव्रत धारी ।।
कान नाक बिनु भगिनि निहारी ।
क्षमा कीन्हि तुम्ह धर्म बिचारी ।।" ६।७-६।४१५

इस प्रकार की व्याजनिन्दाओं और स्तुतियों का प्रयोग `रामचरितमानस` में बार-बार हुआ है । ऐसे स्थल `मानस` के मनोरम स्थल कहे जा सकते हैं ।

(१५) <u>विनोक्ति</u> -

जहां एक वस्तु के बिना दूसरी वस्तु को शोभन या अशोभन बतलाया जाय, वहां विनोक्ति अलंकार होता है । आचार्य मम्मट ने इसकी

परिभाषा इस प्रकार की है -

"विनोक्ति: सा विनाऽन्येन यत्रान्य: सन्ननेतर:।"

रामचरितमानस में इस प्रकार के अलंकारों के पर्याप्त उदाहरण मिल जाएगे। रामवनगमन के समय का एक चित्र देखिये, जो तुलसीदास की विनोक्ति-चातुरी को पर्याप्त रूप से स्पष्ट कर देती है -

"जिय बिनु देह नदी बिनु बारी।
तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी।।" २।२२।२०६

(१६) विभावना -

जहाँ कारण के अभाव में कार्य होने का वर्णन किया जाय, वहाँ विभावना अलंकार होता है। जयदेव ने इस अलंकार का लक्षण देते हुए लिखा है -

"विभावना विनाऽपि स्यात् कारणं कार्यजन्मचेत्।"

इस अलंकार का उपयोग भी तुलसीदास ने रामचरितमानस में पर्याप्त मात्रा में किया है। अयोध्याकाण्ड से एक उदाहरण प्रस्तुत किया जाता है -

"मुनि तापस जिन्ह तें दुखु लहहीं।
ते नरेस बिनु पावक दहहीं।।" २।७।२३२

(१७) विरोधाभास -

जहाँ दो वस्तुओं में मूलत: विरोध न रहने पर भी उनका इस रूप में प्रतिपादन किया जाय कि उनके बीच किसी विरोध का आभास मिलने लगे, वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है। श्री अप्पयदीक्षित ने इसका लक्षण इस प्रकार लिखा है -

"आभासत्वे विरोधस्य विरोधाभास इष्यते।"

रामचरितमानस के सुन्दरकाण्ड में हनुमान के लंका-प्रवेश के समय

का एक उद्धरण इस संदर्भ में पर्याप्त होगा। देखिये -

'गरल सुधा रिपु करै मिताई।
गोपद सिंधु अनल सितलाई।।
गरुड़ सुमेरु रेनु सम ताही।
रामकृपा करि चितवा जाही।।' ५।१२-१३।३७४

(१८) स्मरण -

जहाँ किसी वस्तु के दर्शन से तत्सदृश पूर्वानुभूत वस्तु का उद्बुद्ध स्मृति का वर्णन किया जाय, वहाँ 'स्मरण' अलंकार होता है। आचार्य मम्मट के शब्दों में कह सकते हैं -

'यथाऽनुभवमर्थस्य दृष्टे तत्सदृशी स्मृतिः स्मरणम्।'

तुलसीदास ने इस प्रकार के अलंकारों को उपमा और उत्प्रेक्षा के साथ मिलाकर उनके चमत्कार को और बढ़ा दिया है। उत्प्रेक्षा के साथ मिले-जुले स्मरण अलंकार का एक उदाहरण लीजिये।

'सुमिरि सीय नारद बचन उपजी प्रीति पुनीत।
चकित बिलोकति सकल दिसि, जनु सिसु मृगी सभीत।।'
१।१५-१६।११४

(१९) समासोक्ति -

जहाँ समान लिंग-कार्य या विशेषण पदों के अश्लिष्ट या श्लिष्ट प्रयोग द्वारा प्रस्तुत (उपमेय) के साथ अप्रस्तुत (उपमान) की प्रतीति करायी जाय, वहाँ समासोक्ति अलंकार होता है। आचार्य विश्वनाथ के शब्दों में-

'समासोक्तिः समैर्यत्र कार्य लिङ्ग विशेषणैः।
व्यवहार समारोपः प्रस्तुतेऽन्यस्य वस्तुनः।।'

जनकवाटिका प्रसंग से एक उदाहरण देखिये -

'लोचन मग रामहिं उर आनी।
दीन्हे पलक कपाट सयानी।।' १।१६।११५

(२०) संदेह -

जहां प्रस्तुत में अप्रस्तुत का संशय बना रहे, वहां यह अलंकार होता है । आचार्य विश्वनाथ के शब्दों में -

"सन्देह: प्रकृतेऽन्यस्य संशय: प्रति भोत्थित: ।"

रामचरितमानस के सुंदरकांड में इसका उत्कृष्ट उदाहरण देखा जा सकता है । विप्र-रूप में हनुमान को देखकर विभीषण के मन में विभिन्न प्रकार के सन्देह उत्पन्न हो रहे हैं -

"की तुम्ह हरिदासन्ह महुं कोई ।
मोरे हृदयं प्रीति अति होई ।।
की तुम्ह राम चरन अनुरागी ।
आएहु मोहिं करन बड़ भागी ।।" ५।७-८।३७५

(२१) व्याघात -

जहां जिस 'उपाय' से कोई कार्य सिद्ध होता हो, उसे उसी उपाय से असिद्ध कर दिये जाने का चित्रण हो, वहां 'व्याघात' अलंकार होता है । आचार्य रुय्यक ने इस अलंकार का लक्षण इस प्रकार लिखा है -

"यथा साधितस्य तथैव अन्येन अन्यथाकरणं व्याघात: ।"

रामचरितमानस में इस प्रकार के अलंकारों का, भावों के प्रकर्षण के लिए पर्याप्त प्रयोग हुआ है । एक, दो उदाहरण देखिये -

१. सीतल सिख दाहक भइ कैसें ।
चकइहि सरद चंद निसि जैसें ।। २।८।२०६

२. "औरु करइ अपराधु कोउ, और पाव फल भोगु ।
अति बिचित्र भगवंत गति को जग जानइ जोगु ।।"
२।४-५।२१२

२.४ उपमान-वाचकों का अध्ययन

२.४१ उपमान वाचकों का ढांचा :

रामचरित मानस में उपमान वाचकों के चार प्रकार के ढांचे प्रयुक्त हुए हैं :-

(१) " उपमान वाचक ------------|-------------- उपमान वाचक "

(२) " ------------ उपमानवाचक । -------------उपमान वाचक ।

(३) " उपमान वाचक ------------। -----------------------।

उपमान वाचक ------------। -----------------------।। "

(४) " -------------------------|-------------- उपमान वाचक ।

-------------------------|-------------- उपमान वाचक ।। "

इन चारों प्रकार के ढांचों को उपमान वाचकों के साथ इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है :-

(१) उपमान वा० ------------------------------ उ० वा०

इति ---------------------------- जथा

६।१०।४७८

(२) " ------------------उ० वा० । ---------------- उ० वा० । "

(क) " ------------------- कैसे । ------------------- जैसे । "

३।१४।३२६	१।१३।५८	३। ६।३४१	६। ४।४५७
४।१२।३६२	७। १।५३५	१।१२।६२	६। ५।४३५
२। ८।२६६	१।१३।१३५	१।१०।१२८	६। ८।४३०
२।१७।२४१	१।२०।१४७	६। ४।४५७	२। ८।२६६
२।१७।१६७	१।२०।१४७	४।१२।३६१	७। १।५३५
१। ८।१३०	१।१३।१३७	१।२३।३	२। ४।१६५
२। ८।२८८	२। १।२३१	५।१०।३६५	२। ७।२३६
६। ८।४६१	२। ७।२३६	२। ६।२०६	

(ख) " ------------ कैसा । ------------------ जैसा "

६।१६।४४४ ४। ४।३६३ ३।१८।३४५ ६।१६।४४४
३। ३।४४६

(ग) " ------------कैसी । ------------------ जैसी । "

३।१२।३२४ १।१७।८ ४। १।३६२ २।१२।२७६
१।२०।१३० ३।१२।३२४

(घ) " ------------ जैसे ------------------ तैसे । "

१।२२।१४३

(३) " उ० वा० --------------|--------------------|
उ० वा० --------------|--------------------||"
" जिमि --------------- | --------------------|
तिमि --------------- | --------------------||"

२।२१।२००
१।६-१०।१४४

(४) " ------------------ | ------------------ उ० क० |
------------------ | ------------------ उ० क० ||"
" ------------------ | ------------------ क्यों
------------------ | ------------------ ज्यों ||"

२।६-१०।२६३ .

२.४२ उपमान वाचकों का विवरण :

नीचे रामचरितमानस में प्रयुक्त उपमान वाचकों का विवरण प्रस्तुत किया जाता है । रा० मा० में निम्नलिखित उपमान-वाचक प्रयुक्त हुए हैं :-

१- इव	३- अनु	५- जिमि
२- जथा	४- जस	६- जैसा

७- जैसी	११- नाईं	१५- सरिसा सरिस
८- जैसे	१२- मनहुं	१६- सी
९- ज्यों	१३- सम	१७- से
१०- तिमि	१४- समान	१८- सों

नीचे क्रम से समस्त वाचकों का विवरण प्रस्तुत किया जाता है :-

(१) इव

इव	४।२०।३६२		इव		
	अकारादि				
"	१।१८।६६	कामी	"	६। ५।४४४	कुंभकरन
"	७।२१५६१	खल	"	७।२२।५६१	खल
"	४।२१।३६२	घन	"	१। ३।८२	छाती
"	१।१५।१२	तनु	"	६।२१।४१७	दसन
"	१।१२।१२५	ब्रह्मांड	"	१।१६।६३	भव-बारिधि
"	१।१६।१२	मन	"	१।१२।११५	मनु (मन)
"	७।१६।५२७	माया	"	१।१२।११५	मुख
"	१।१५।१२०	राम	"	१।१३।१०६	राम
"	१।१३।१०६	राम	"	३। ८।३२८	राम
"	७। ३।५०७	राम	"	४। १।३५८	राम
"	६। २।४४७	राम	"	६।११।४६०	रामु
"	१।१३।१०६	लखनु	"	१।१५।१२०	लखण
"	१८।६६	लोलुप	"	४।१। ३५८	सबहिं
"	७। ३।५०७	सेवक			

(२) जथा

जथा			जथा		
"	६।२०।४७८	अखंड	"	६।१८।४१३	अंगद
"	४।१०।३६१	दामिनिदमक	"	७। ७।५५०	द्विज
"	७। २।५६२	दुष्ट	"	४।११।३६१ बरषहिं जलद	
"	५। ४।३६४	बिभीषण	"	१।११।३०	विष्णु

जथा	३।१४।३४८	मीन	जथा	३।१३।३३३	राम
"	६।१८।४७७	राम	"	६। ७।४२५	रावासगण
"	६।१८।४१३	समासद			

(३) जनु

जनु (उत्प्रेक्षा)	१। ३।६६	अगरधूप	जनु	६।१८।४५०	अतुलित बली
"	७।१२।४६१	अनुज भरत	"	१। १।६६	अवधपुरी
"	७।१८।५११	असन्तन्ह	"	२।१२।२८१	आस्त्रमु
"	२।११।२४४	उर्दू ी	"	२।१९।२०	कथा (राम)
"	६।१८।४५७	कपिमट्टा	"	६।१०।४६६	करन्हि
"	४।१४।३६२	कास	"	६।१६।४५७	कृपान
"	३।१८।३२६	कृपाला	"	१।२१। ७०	कुंअरि
"	२। ६।१६१	कुमति	"	१।१०। ७६	केस
"	२।१२।१८६	कैकेई	"	२।१७।१६६	कैकेई
"	२।२४।२००	कैकेई	"	४।१०।४२७	कोट
"	६।१२।४४२	कोटि कोटि कपि	"	६।२०।४६६	कोसलराज
"	२।१४।२०१	कोसिल्या	"	६।१०।४२७	कंगूरन्हि
"	६।१८।४५८	खग	"	६। ६।४५१	गजजूथ
"	६।१७।४५८	गीध	"	२। १।१६५	गुनगावहिं
"	२।१५।२१४	घर	"	२। ४।३१४	चरनपीठ
"	२। ५।३१४	चरनपीठ	"	२।१४।२३५	चित्रकूट
"	२।२२।१८४	चेरी	"	१। ७।१३०	जनक
"	१।२४।१५८	जनक	"	१।२०।१३०	जुगलकर
"	६। १।४४४	तन	"	६।२१।४७१	तन
"	६। २।४४४	तनकारे	"	३।१ ।३४७	तरु
"	६। ४।४२०	ताटका	"	२।१३।१६१	दसरथ
"	२।१३।१६५	दशरथ का प्रासाद	"	४।१६।३६१	दादुर
"	४।१६।३६१	धुनि	"	१।१५।१७१	धूप धूम

जनु	२।१६।२०८	लखन
"	२। २।२८२	"
"	२। ३।२३१	लखनु
"	१। २।११६	लखन
"	१। २।१२८	लोचनलोल
"	१।१४।७४	सलरूपा
"	६। १।४४४	सर
"	६।२२।४५४	सर न्हिमरा मुख
"	६। ७।४३३	सर समूह
"	१।१३।१७६	सासु
"	६।१६।४८३	सिंघासन
"	६।१३।४६२	सिर
"	२।१५।२१२	सीतहिं
"	३।२३।३४१	सीता
"	१।१६।११४	सिय
"	१। ६।१३०	"
"	१। २।१५८	"
"	२। ३।२३१	"
"	२।१६।२८१	सीय
"	२। ६।१३०	सुखहिं
"	१।१६।१५३	सुलवारी
"	१।२२।१६०	सुंदरी
"	२।१५।१८१	सुभाषा
"	२।१०।२५०	सुमंत्र
"	२। ३।२२१	सुमंत्रु
"	३।१४।३३२	सूपनखा
"	१।१०।३७	संल
"	६। २।२४४	सोनित प्रवन
"	६।११।४६४	हनुमाना
	२।१४।१६०	हृदय
जनु	२।२०।२३६	लखन
"	२। २।२३१	लखनु
"	२।१६।२०८	लछिमन
"	१। २।११६	लतामवन
"	१।१२।१३२	सकल महीप
"	१। ६।१३०	सबरानी
"	६।१७।४५४	सर
"	६। ५।४४३	सरलच्छा
"	२।१२।१८४	सारद
"	६।१६।७७१	सिर
"	६।१०।४६२	सिर
"	२।१५।२१२	सीतलसिख
"	१।१८।११५	सीता
"	६।१६।४८३	"
"	१।२३।११४	सिय
"	१।२१।१४७	"
"	२। २।२३१	"
"	२।२२।२२८	सीय
"	२।१६।२८१	"
"	१।७।१३०	सुख
"	१।२२।१५७	सुलवारी
"	१।२४।५८	सुनयना
"	२। ३।२२१	सुमंत्र
"	२। ८।२११	सुमित्रा
"	२। ८।२२१	सुमंत्रु
"	२। २।२८२	सेवा
"	६। ६।४५८	सोनित
"	५।१६।३८५	हनुमाना
"	२।१४।२३६	हय

जनु	१।१२।१३२	प्रगुफुल्लकमलपतंगा	जनु	१।२३।१३०	मुवाल (मुपाल)
"	२।२१।१६४	मुवालू	"	२।१०।२५४	मुवालु
"	६।११।४५८	मज्जा	"	१। ४।६६	मनि
"	१।१४।७४	मनु	"	२।१०।३०८	मनोदशा
"	२।१६।२८३	मछतारी	"	२।१२।२६६	महिलायें
"	७। ६।४६२	मातु	"	२।२२।२०१	मातु वचन
"	६।१६।४६१	मार्गन	"	६।१६।७७१	मुकुट
"	१।१०।१०४	मुख	"	६। ८।४५५	मुठिका
"	५।१०।३७८	मुद्रिका	"	६।१२।४२६	मुंड
"	१।१०।१०४	मुनिबर	"	२।१६।२८१	मुनि मंडली
"	३।१८।३२६	मुनिहिं	"	६।१६।४४६	मेघनाद
"	२।१५।१८१	मोंदु	"	२।१२।१८२	मंगल
"	२। ५।१८६	मंथरा	"	१।१८।११५	रघुपति
"	१।२३।१३०	रघुवर	"	६।१३।४६२	रघुवीर
"	६।१६।४६२	रंड एकरघु	"	२।१२।१८२	रनिवास
"	२। २।१६४	राउ	"	२। २।२४२	राजा
"	२।२३।२४१	राजा	"	१। २।११६	राम
"	१। ३।१२०	राम	"	१। ३।१२०	राजसमाज
"	१। २।१७३	रानियां	"	१। २।१७३	रानियां
"	१। ३।१७३	रानियां	"	१। ४।१७३	रानियां
"	२। २।२३१	राम	"	२। ३।२३१	राम
"	२।२०।२३५	राम	"	२।२०।२६६	राम
"	२। ३।२५६	रामचरण	"	२।२१।२८२	रामसखा
"	६। ६।४६२	रामा	"	६।१६।४८३	राम
"	३।२३।२४१	रावन	"	६। १।४१६	रावन
"	६।१७।४५४	रावनदस माला	"	६। ८।४५५	रावन
"	६।११।४६४	रावन	"	६।२१।४७१	रुधिरकन
"	६।१४।४१३	रोमावली	"	१। ३।१२०	लखन

जनु	१।१४।११५	नयन	जनु	१।१७।१००	नख
"	१। ६।६८	नर	"	२।१३।२११	नर नारी
"	२। ३।२५६	नर नारी	"	६।१४।४६६	नल नील
"	२। २।२६३	निषादहि	"	७।२०।४६०	नारि
"	१।१६।६८	नारी	"	६।१४।४५१	निसानल
"	३।१७।३३२	निसिचर निकर	"	४। २।३६२	निसिलम घन
"	१।१६।१२१	नृप	"	२।१३।१८६	नृप
"	२। ५।२०१	प्रजा	"	६। ३।४५८	पर्वत प्रहार
"	१।१३।१५४	प्रभु	"	१।१६।१२१	प्रभुहिं
"	६।१८।४७१	प्रसून	"	२।१५।२१४	परिजन
"	६।१३।४३३	पवनसुत	"	७।१०।४८८	पवनसुत
"	२।१२।१८१	प्रिय बानी	"	१।१०।१७१	पुरट घर
"	४।१४।३६२	फूले	"	२।१३।१६१	बचन
"	२।१०।१६६	बचन	"	२।१६।२४४	बचन
"	२।१०।३१०	बचन	"	६। १।४१६	बचन
"	१।१३।१७६	बधू	"	६।१६।४४६	बंदर
"	२।२०।२७६	बन-संपत्ति	"	२।१७।२७६	बन-रोल
"	१। २।१५८	बनिताबृंद	"	२।२५।२४६	बचन
"	१।२२।१६०	बरन्ह	"	६।१६।४६२	बरषि बान
"	१। ८।८०	बराहू	"	६। ८।४५३	[illegible]मुद
"	१। ७।१५४	बाजि	"	१। ८।१५४	बाजि
"	१।१३।१५४	बाजि	"	२।२३।१६८	बात
"	६।१७।४६१	बान	"	६।११।४५१	बाहिनी
"	६।१०।४६२	बाहू	"	१। ३।१४७	विप्रवर बृंदा
"	४। २।३६२	बिराजा	"	१।१४।११५	बिलोक
"	६।११।४५८	बीर	"	१। ५।६६	बेद मुनि
"	२। २।२६३	भरत	"	२।१७।२७६	भरत
"	२।१२।२८१	भरत	"	२।१०।३१०	भरतहिं
"	२।२५।२४६	भरतु	"	१।१८।१७१	भामिनि

(४) जस

जस	६। ३।४११	अपर	जस	४।२१।३६१	अर्क जवास
"	२।१०।२८६	कोल किरात	"	१।१२।४	खल
"	१।१२।४	खल	"	१।१२।४	"
"	४।१३।३६१	कुनदी	"	२। १।२९५	नरपाल
"	४।२०।३६१	नवपल्लव	"	४।१६।३६२	निरमल जल
"	३।६।३४८	निरमल बारी	"	४।२१।३६१	पात
"	४।२१।३६१	वर्षा ऋतु	"	४। ८।३६१	बारिद
"	४।२०।३६१	बिटप	"	२।१२।२८७	भरत
"	४। ८।३६१	मारगन	"	२।१३।१८७	राज्याभिषेक
"	६।१८।४७७	रतन	"	४।१६।३६२	सरिता

(५) जिमि

जिमि	६।१२।४७६	अनल	जिमि	४।१५।३६२	अगस्ति
"	२।१६।१६१	अभिषेक	"	२।२०।२७०	अवध
"	२।१०।३१७	अवधराज	"	१।२१। ४	असज्जन
"	७। ८।५११	असन्तन्ह	"	७।१४।५११	असन्तन्ह
"	७।१७।५१२	असन्तन्ह	"	४। ६।३६३	इंदु
"	४। ६।३६२	ऊसर	"	१। ५।२१	कपट
"	५। ५।३८२	कपि(हनुमान)	"	६। ६।४२३	
"	१। ५।२१	कलि	"	७।२४।५६८	कामिहिं
"	४। ३।३६२	कियारी	"	४। ४।३६२	कृषी निरावहिं
"	२।२२।३०१	कीरतिसरि	"	१।५। २१	कुचालि
"	१। ५।२१	कुरल	"	१। ५।२१	कुपथ
"	६।१०।४४१	कुंभकरन	"	७। १।५६२	खल
"	६। ६।४४४	कुंभकरन	"	२। ८।१६१	कैकेई
"	२।१४।१८७	कैकयसुता	"	२।१२।१८७	कैकय सुता

जिमि	२।१६।१६१	कैकेइ
	४। २।३६२	खद्योत
	३। २।३३८	खल के
	१।१०।३७	प्रियबानी गिरिबा
	७।१३।४६६	गृह
	१। ५।२१	गुन ग्राम
	६।१८।४३२	घहरात
	४। ६।३६२	चक्रवाक
	४। ४।३६२	चतुर किसाना
	१।१६।१२५	चाप
	१।१७।१२५	"
	४। ७।३६२	जंतु संकुल
	४।१६।३६१	जल
	४।२०।३६१	जल संकोच
	६।२२।४१७	जासु(रावण)
	१।१७।६०	झूठेहु
	७। ३।५५१	तनु
	६। ६।४३१	तम
	४। ६।३६२	तृन
	६। २।४७०	तुलसीदास
	६। २।४४५	दसानन
	१। ८।१६	दुख
	१। ८।१६	दोष
	६।२२।४१७	धरणी
	६। ४।४३५	धूरि
	४। २।३६३	नगर
	२।२४।१६८	नर नारी
	३। १।३३८	नवमि नीच के
	१। ८।१६	नाम

जिमि	२। ७।२०२	कौसिल्या
	४।१८।३६२	खंजन
	१।११।४	खलगन
	६।१०।४४१	गिरि सिखर
	६। २।४७०	गुन गन
	२।१६।२४१	घोरे
	४। ५।३६२	चक्रवाक
	४। ८।३६३	चकोर
	४। ७।३६४	चातक
	१।१७।१२५	चाप
	१।१६।१४३	चापु
	४।१५।३६१	जल
	४।१६।३६१	जल-निधि
	१।१८।१७	जापक जन
	१।२२।२६	जीव
	२। ७।२४१	तनु
	४।२४।३५६	तनु त्याग
	४।१५।३६१	तलाबा
	४।१८।३६१	तृन-संकुल
	६।१३।४२३	तेज तथा श्रीहत
	६। ४।४४५	दुख संठा
	१। ८।१६	दुरासा
	१। ५।२१	दंभ
	१। ६।१४४	धरमसील
	४।२२।३६१	धूरी
	२।१६।२०१	नर नारि
	३। १।३३८	नवमि नीच के
	३। १।३३८	नवमि नीच के
	७।२३।५६८	नारि

बिमि	२।१२।१६१	मृदु बचन	बिमि	२।१७।३१४	मुनि गन गुरु तथा जनक
〃	४।१०।३६२	मेघ	〃	६।६। ४४६	मेघनाद
〃	१।१३।१२५	मेरु	〃	७।१७।५५६	मोदा
〃	६।१७।४४१	रघुपति	〃	३।१५।३१६	रघुपतिबल
〃	२।११।३१७	रमा बिलासु	〃	१।१६।१४३	राम
〃	२।२०।२००	राम	〃	२।१६।२०७	〃
〃	२।२६।२१६	राम	〃	२। २।२४१	〃
〃	६। ४।४३४	राम	〃	६।१३।४३४	〃
	७।१०।५०८	रामकथा	〃	६।१७।४४५	रामकृपा
〃	३। २।२४१	राम जननी	〃	२।१६।१६१	रामतिलक
〃	२।१७।२६७	रामप्रेम	〃	२।१२।२८०	रामसैल
〃	६। ३।४२७	रावनहिं	〃	५। ५।३८२	रावनाचरण
〃	६। ४।४३५	रुधिर	〃	१। २।१०६	रूप
〃	२। ४।२२६	पीयूष	〃	२। २।२३६	लखन
〃	२।१६।२७७	लखन	〃	१। १।१४४	लखनु
〃	२। ८।२३६	लखनु	〃	१।१७।६०	सत्य
〃	६।१२।४७६	सत्य श्री	〃	७।१७।५१०	संत
〃	७।१७।५१०	संत	〃	७। ८।५११	संत
〃	७। ३।५६२	संत	〃	२। २।३०६	सनेह
〃	४।१२।३६३	सरद ऋतु	〃	६। ८।४६३	सरदातप
〃	४।१७।३६२	सरित	〃	२। २।२३६	सिय
〃	६। २।४४५	सिर	〃	६।१५।४६२	सिर
〃	२। ७।२०२	सीतल बानी	〃	२। ६।२०४	सीता
〃	२।१६।२०७	सीता	〃	३। ७।३४१	〃
〃	२।११।२०४	सिय	〃	२।१८।२०४	सुभाउ
〃	१।१५।१६७	सिय	〃	२। ६।२०७	सिय
〃	२।१२।२३८	〃	〃	६। ५।४७७	सीस
〃	६। ६।४६६	सीस भुजा	〃	।१२।१४०	सुमंत्र
〃	२।१८।२४०	सुमंत्र	〃	३।१६।३१६	सुरपतिसुत

जिमि	३।१६।२३१	नारी	जिमि	४। ४।३६२	निरावहिं
〃	४। २।३६२	निविड़ तम	〃	३। ७।३४१	निसाचर
〃	६। ३।४२८	निसाचर निकर	〃	४। ६।३६३	निसि
〃	४। ८।३६३	निसि ससि	〃	२। ४।२२६	निषाद
〃	४। ३।३६३	नृप	〃	१। १।११६	नृपति
〃	१। १।११६	नृपति	〃	४। ३।३६३	नीर अगाधा
〃	४।१२।३६२	पतंग	〃	४। १८।३६१	पंथ
〃	४।१५।३६२	पंथ जल	〃	४। ८।३६२	पथिक
〃	६। ६।४३१	प्रकास	〃	६।१३।४६५	प्रभु
〃	१। ५।२१	पाखंड	〃	४।१७।३६२	पानी
〃	३।१६।३३१	पुरुष मनोहर	〃	२।१८।१६७	बचन
〃	७।१८।४८८	बचन	〃	१।१३।१२५	ब्रह्मांड
〃	४।२२।३६१	वर्षा ऋतु	〃	४। ५।३६२	वर्षाऋतु
〃	४। ७।३६२	वर्षा ऋतु	〃	४। ८।३६२	〃
〃	४। ६।३६२	बरसे	〃	२।२४।१६८	बात
〃	४।२४।३५६	बालि	〃	६।११।४३६	बिकल बानर निकर
〃	३। ३।३४६	विटप	〃	४।२२।३६२	वृष्टिसारदी
〃	१।२२। ५	बंचक	〃	७।२०।५३७	भगति
〃	६।१०।४५३	भट	〃	२।१२।२८०	भरत
〃	२। २।३०६	भरत	〃	२।१०।३१७	〃
〃	२।१६।३१७	〃	〃	७।१०।४८८	〃
〃	७।१८।४८८	〃	〃	२।१६।३०२	भरत का चरित्र-वर्णन (सबके लिए)
〃	६। ६।४४४	भालु बलीमुख	〃	२।१२।१६१	भूप
〃	१। १।१४४	भूप	〃	६। ६।४२३	भूमि
〃	१। २।१०६	मन-मन	〃	४। ३।४६३	महावृष्टि
〃	६। ४।४३४	माया	〃	६।१३।४३४	माया
〃	६।१३।४६५	माया	〃	४।१०।३६२	मारुत
〃	४। ३।३६३	मीन	〃	४।२०।३६२	मीना

जैसे	२। ८।२६६	पायन	जैसे	२।१७।१६७	बचन
"	१।२०।१४७	बशिष्ठ	"	४।१२।३६१	बूंद बघात
"	७। १।५३५	भगति	"	१। ८।१३०	मृग
"	१।१३।१३७	मनमलीन	"	१।२३।३	माँ
"	२। ४।१६५	मंगल	"	२। ८।१८८	रानी
"	२। १।२३१	राम	"	५।१०।३६५	राम
"	२। ७।२३६	राम सीता	"	३।१२।३२४	राम
"	६। ८।४६१	रावन	"	२। ७।२३६	लखनहि
"	१।२२।१४३	लखनु	"	२। ६।२०६	लखनु
"	१।१४।१३०	सलिल	"	१।१२।६२	सगुन
"	५।१०।३६५	सज्जन	"	३।१२।३२४	श्री
"	६। ८।४६१	सर	"	४। १।३६२	सखि संपन्नमहि
"	१।२३।३	साधुमहिमा	"	२।१०।१०६	सिखरे बचन
"	१।१४।१३०	सिय	"	२। ८।२०६	सीतल सिख
"	२। ८।२०६	सिय	"	२।१।२३१	सिय
"	१।१४।१२४	संभु सरासन			

(९) ज्यौं

ज्यौं	१।१०।८	कविता सरिता
ज्यौं	३।६।३३३	कोदंड कठिन चढ़ाइ सिर
ज्यौं	३।६।३३३	जट - जूट

(१०) तिमि

तिमि	२।२०।२००	अवध	तिमि	७।२४।५६८	कामिहि
"	२।२०।२००	राम	"	१।२।११६	राम आगमन
"	१।६। १४४	सुख संपति	"	२।१३।२४०	सुमंत्र
"	१।१६।६६	सुरपतहि			

(११) नाईं

नाईं (समान)	७।७।५४३	नर	नाईं (समान)	५।२४।३६०	पर नारि लिलास
〃	२।२२।३०८	मति गति			

(१२) मनहुं

मनहुं	१। ३।६६	अबीर	मनहुं	७।१६।५११	बसन्तन्ह
〃	२। ५।१६२	कटुबचन (कैकेई)	〃	२। ३।१६४	कटुबचन (कैकेई)
〃	५।२०।३८८	कपिंदा	〃	६। १।४५८	कपि लंगूर
〃	६। ४।४६७	कर (रावण के)	〃	१।१८।११४	किंकिनिधुनि
〃	२। ८।१६३	कुमति	〃	२।१०।१६०	कैकेई
〃	२।१६।२७६	कैकेई	〃	२। ८।१६२	〃
〃	२। ५।१६२	〃	〃	२।१५।१६३	〃
〃	२।२०।१६४	〃	〃	२।११।१६५	〃
〃	२। ४।१६६	〃	〃	२। ६।१६६	〃
〃	२।१८।१६६	〃	〃	२। ८।२०२	कौसिल्या
〃	१।१८।११४	कंकन धुनि	〃	२।१२।२२४	कंद मूल फल
〃	६।२०।४५७	गजरथ तुरग चिकार	〃	१।११।१६५	गवन
〃	२।२१।२३६	घोरे	〃	६।१६।४५८	घायल भट
〃	१। ८।१५७	दसरथु	〃	२।१३।१६५	दशरथ का प्रासाद
〃	२। २।१६६	दुख	〃	१।१६।१७१	सुरतरु सुमन माल
〃	६। २।४५८	धूरि	〃	२।२४।२१५	नर नारि
〃	२।१२।२११	नर नारी	〃	२। ४।१६६	नरपति
〃	२। ५।१६६	नरपति	〃	२।१४।१६१	नरपालू
〃	५।१४।३७६	नव तरु किसलय	〃	२। १।२२८	नारि नर
〃	२।२२।१६७	नृप	〃	१। ६।१३२	नृपन्ह
〃	२। २।२०४	नूपुरमुखर	〃	२। २।२८१	पद अंका

मनहुं	६।१५।४१६	प्रति उत्तर
〃	३।११।३३३	प्रभु
〃	१।२५।१५९	परिछाहीं
〃	२।१५।२४६	परिवार
〃	१। ३।९८	पुत्र जन्म
〃	७। ३।५०६	बजाज। सराफ, बनिक
〃	२। ६।१८८	बात
〃	६। १।४६२	बाहु
〃	१। ८।१५७	विस्वामित्र
〃	१। ३।१४२	बंदनिवारे
〃	२। २।२८१	भरत
〃	२।१०।१९०	भूषण सजति
〃	२।१४।३०१	मन
〃	२।१६।१९६	महिपु
〃	३।१९।३२६	मुनि
〃	५।१९।३८१	मेघनाद
〃	२।२२।१८९	रानि
〃	१।२०।१४४	रानी
〃	२।२३।२१५	राम
〃	६।१४।४७६	राम
〃	२। १।२२८	राम लखन सिय
〃	२।११।२७७	लखन
〃	२।२५।२०९	लखनु
〃	६। ८।४६३	सगुन प्रबंड
〃	२।१८।२९९	सभा
〃	६।१२।४४६	सायक
〃	१। १।१२	सिल कृपा

मनहुं	१। ५।१२०	प्रभु
〃	७।१०।५११	पराई निंदा
〃	१।२५।१५६	परिछाहीं
〃	३।११।३४७	पिक
〃	२।१४।१९१	बचन
〃	२। १।१८८	बात
〃	६। १।४६२	बाहु
〃	२।११।३०५	बिबुध
〃	१।१७।१७१	बंदनवारे
〃	१। १।१२	मनिति
〃	६। ४।४६७	मालु
〃	१। १।१४७	मतगज
〃	६।२१।४५१	मरकट मालु
〃	२। ८।१९३	मृदु बचन
〃	३।२३।३२८	मुनि समूह
〃	२।११।१९५	राज भवन
〃	१। ४।१७३	रानियां
〃	२।२३।१९७	राम
〃	३।२०।३२६	राम
〃	२।१२।२११	राम लखन सिय
〃	३।११।३११	रिपुदल
〃	१। ९।१३२	लखनु
〃	२।२२।३०४	लोग
〃	२।१०।१९०	सपथ
〃	२।२५।२०९	साथ चलने की आज्ञा
〃	६। २।४७१	सायक
〃	६। ९।४६२	सिर

मनहुं	१। ७।१३१	सिय	मनहुं	२।१०।२३८	सिय
"	२।१५।२८४	सीय	"	२।१५।२१४	सुख हित मीतु
"	२। ६।२४०	सुमंत्र	"	२।१७।२४०	सुमंत्र
"	२।२४।२६६	संत	"	३।१२।३३५	संग्राम
"	५।१६।३८१	हनुमाना			

(१३) सम

सम	१।२३।४	असाधु	सम	१।१२।६१	कथा (राम की)
"	६। ५।४१८	कुठारा	"	२।१५।२३८	कंद मूल फल
"	१।१४।४	खल	"	१।१०।४	खल गन
"	१। २।६४	गिरा	"	१।२१।३	गुन
"	२। २।२८४	गुरु सिव	"	१। ६।५८	चरना
"	४। ८।३५७	चित	"	१।१८।८८	जनक
"	२।१४।२२५	जमुन-जल	"	१। ७।२३	जस (राम का)
"	१। ७।२३	जस (सीता का)	"	६।१६।४३०	जुगल दल
"	३। ७।३५२	जुवति - तनु	"	१। ३।१३४	जेहिं सिव धनु तोरा
"	६।११।४५६	तुरग	"	१।१८।८८	दाम
"	३।१२।३५०	दास अमानी	"	१। ७।२	देह
"	७। ४।५५८	धृति	"	१।१८।८८	धूरि
"	१। ३।७	नर	"	१। ३।७	नर
"	२।१४।२१४	नर नारी	"	१।२०।१३	नाम
"	४।२। ३५७	निज दुख गिरि	"	५।१४।३७६	निसि
"	६। ८।४४४	निसिचर	"	५। १।३५०	निसिचर निकर
"	१। ५।१४६	पकवाने	"	१। ७।१२०	प्रभु
"	१।१३।१२०	प्रभु	"	५।२१।३७६	प्रभु भुज
"	५।२१।३७६	प्रभु भुज	"	५।२१।३७६	प्रभु भुज
"	२। २।२०७	परनसाल	"	७। ४।५६२	परनिंदा
"	६। ७।४७६	पावक	"	१।१७।७५	बचन

सम	१।१५।१३६	वचन
〃	२।२१।२१२	वचन
〃	७।१२।५१४	बचन
〃	२।१३।२३८	बन
〃	२। ३।२०७	बनदेवी
〃	१।१२।८०	बराहु
〃	२।१०।३००	बानी
〃	७।१४।४८८	बानी
〃	७। ८।५३६	मगवाना
〃	२।१४।३०२	मरतु
〃	२।२०।२०६	मांग
〃	२।१५।२३८	मुनितिय
〃	१। ३।१३७	मोंही (मुक्त कों)
〃	१। ६।१४	राम
〃	१। ६।१४	राम
〃	१।१३।१३	सीताराम
〃	७। ४।५३६	राम
〃	१।१६।८२	लोकमान्यता
〃	१। ४।७	सज्जन
〃	१।२०।२०७	सलिल
〃	२।१६।२३८	साथिरी
〃	१।२१।५७	सारद
〃	१। ७।६१	सिर
〃	५। ४।३६०	सीता
〃	१।२१।३	सुबन
〃	७। ८।५३०	हाथा
〃	५।१६।३७६	त्रिविधि समीरा

सम	२। ३।२००	बचन
〃	६। ८।४३२	बचन
〃	१। ६।१३५	बचनु
〃	२। ३।२०७	बनदेव
〃	२।२२।२४६	बनन
〃	६।१३।४४६	बाना
〃	६। १।४७४	बानी
〃	७। ८।५३६	मगवाना
〃	७। ६।५३६	मगवाना
〃	२।२०।२०६	भूषण
〃	२।१५।२३८	मुनि
〃	१। १।६४	मोह
〃	७। ५।५३६	रघुबीर
〃	१। ६।१४	राम
〃	१।१३।१३	सीताराम
〃	७। २।५३६	राम
〃	६।१५।५५६	रावन
〃	१। ४।७	सज्जन
〃	७।२०।५६१	संत
〃	५।१४।३७६	सखि
〃	१।२३।४	साधु
〃	७।१४।४६५	सिंघासनु
〃	१।१३।१३	सीता
〃	१।१८।६८	सीलनिधि
〃	२।२४।२६२	सेवकाई
〃	६।१८।४६०	त्रिविधि पुरुष
〃	३। १।३५१	त्रिय

(१४) समान

समान	६। ६।४५३	कपि	समाना	२।१७।२९८	कंद मूल फल
समाना	१।१३।४	खल	〃	३।११।३४१	जटायु
〃	१।२१।१२	जस	〃	१। ६।६१	जीह
〃	१।१४।१६	तीनि काल	〃	४। २।३५७	दुख रुज
〃	५।१५।३७५	देह	〃	१।१७।१०७	धनिक बनिक
〃	४।२४।४६४	नर	〃	५। ७।३७८	नूतन किसलय
〃	२। ६।३०८	पाक रिपुरीती	〃	१। ८।६१	प्रानी
〃	६। ४।४६४	बिभीषनु	〃	१। ७।२४	विषय-कथा
〃	७। ६।५३६	भावाना	〃	६।१४।४१२	भुजा
〃	२। ८।२०१	राजु	〃	७।११।५३६	राम
〃	१।१७।२८	रामकथा	〃	५।१७।३७६	रामहिं
〃	६।१६।४२२	लंका	〃	१। ५।६१	श्रवन रंध्र
〃	२।१०।२३३	श्रवन	〃	६। ३।४६१	सर
〃	६।१४।४१३	सिर	〃	२।१५।२४६	हृदय
〃	१।२४।८	हृदय			

(१५) सरिसा सरिस

सरिसा	५।१५।३७६	कुबलय बिपिन	सरिस	१।६।११	वारिद बेद
सरिस	१।१६।१२०	धनु	सरिस	१।१८।१६३	पकवाने
〃	२। ५।२०७	पताक	〃	२।२२।२९८	बनवासू
〃	५। ६।३८०	बान	〃	१।२१।१४८	बासु
〃	१।१३।७६	भुजदंडा	〃	२।१२।३०८	मधुवा
〃	२।१०।१९८	मनु	〃	१।७।१४	राम
〃	७।२२।५३८	राम	〃	७।१।५३६	राम
〃	१।६।२१	रामचरित	〃	६।१०।४०८	रावन
〃	६।४।४०६	ससिह	〃	१।१।३	साधुचरित

सरिस	१।१४।११८	सियमुख	सरिस	२।१५।२६३	सुमारु
सरिस	२।२४।२६२	सेवकाई	〃	१। ४।८	संत
सरिस	२।२०।२०६	संसारु			

(१६) सी

सी	१।६।२०	कथा (राम की)	सी	१।६।२०	कथा (रामकी)
〃	१।१०।२०	〃	〃	१।११।२०	〃
〃	१।१२।२०	〃	〃	१।१३।२०	〃
〃	१।१३।२०	〃	〃	२। ६।२८६	'मति'
〃	२। ४।२८६	मधु			

(१७) से

से	१।७।४	खलगन	से	१।२५।२०	गुन ग्राम
〃	१।२६।२०	गुनग्राम	से	१। १।२१	〃
〃	१। २।२१	〃	〃	१। ३।२१	〃
से (समान)	२। ७।३०६	बचन	सी	२।१७।२८०	बटु
से	२।१६।३१३	मुनिगन गुरु तथा जनक	से	१।१०।१४	राम
〃	१।१०।१४	राम	〃	१।२१।१२८	लोग
〃	२। २।३०८	लोग			

(१८) सो

सो	१।२।२५	कबिता	सो	७।१४।५५७	जीव
〃	१।२०।१२६	धन	〃	७।१६।५३१	नर
सोउ	१।११।३०	विष्णु	〃	७।१२।४८६	मरत
सोई	६। ३।४१०	मेघ डंबर	〃	३। ६।३४८	राम
सो	७।१६।५०६	राम	〃	७।१६।५०६	राम
〃	७।१६।५०६	राम	〃	७।१६।५०६	राम
सोइ	३। २।३५०	रामनाम	सोई	१।२३।२२	लीला सगुन
〃	७।१६।५५८	सोऽहमस्मि			

-: रामचरित मानस में प्रयुक्त :-

उपमानों का

पर्यायवाची

अध्ययन .

:--------:----------:

नीचे रामचरित मानस में प्रयुक्त उपमानों का पर्यायवाची अध्ययन आवृत्त्यनुसार प्रस्तुत किया जा रहा है :-

(१) कामधेनु - वाची

१. कामधेनु (५) - भूमि, रेनू (रेणु, सुरसरि की), सेवकाई (सेवक की), मगवाना, भक्ति ।

२. सुर धेनु (२) - कथा (राम की), बासुदेव

(२) फरसावाची :

१. कुठार (१) - असंतन्हि
२. कुठारी (३) - रामकथा, (कलियुग में) कैकेयी (२)

(३) मृगीवाची :

(१) मृगी (४) सीता,(२) कौशल्या, सुमित्रा

(२) मृगी मृग - (नर नारी) (गांव के)

(४) मछली वाची :

(१) मीना (४) - जनमन, परिजन (अवध के) लक्ष्मण मन
(२) मीनगन (१) लोग (जनकपुर तथा अयोध्या के)
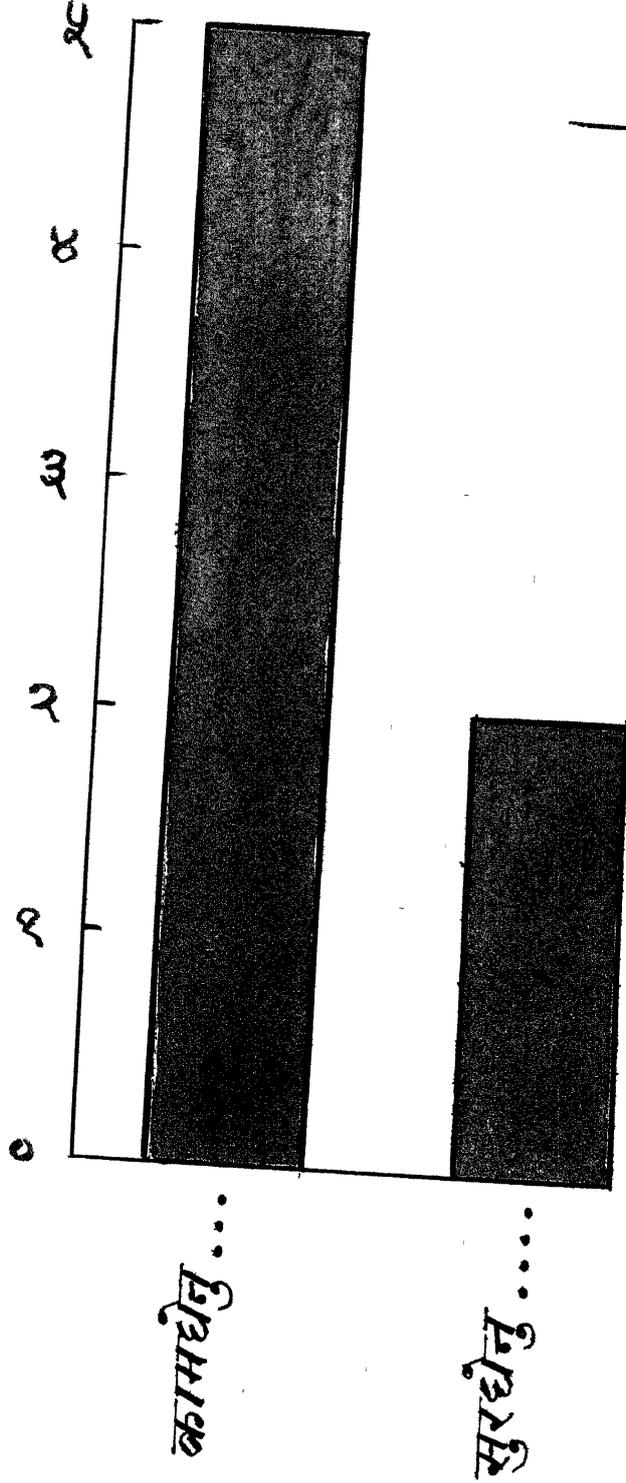
(५). यमुना वाची :

(१) रवि नन्दिनी (१) कर्म कथा
(२) जमुना (१) कथा (राम की)

(६). अंधकार वाची :
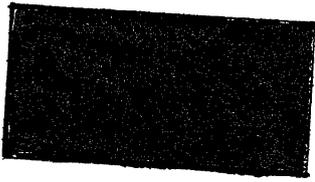
(१) तम (६) - १. जातु, धानु बरुथ
२. मद माग
३. माया
४. भ्रम
५. मोह
६. अविद्या
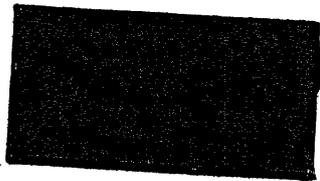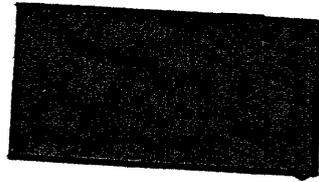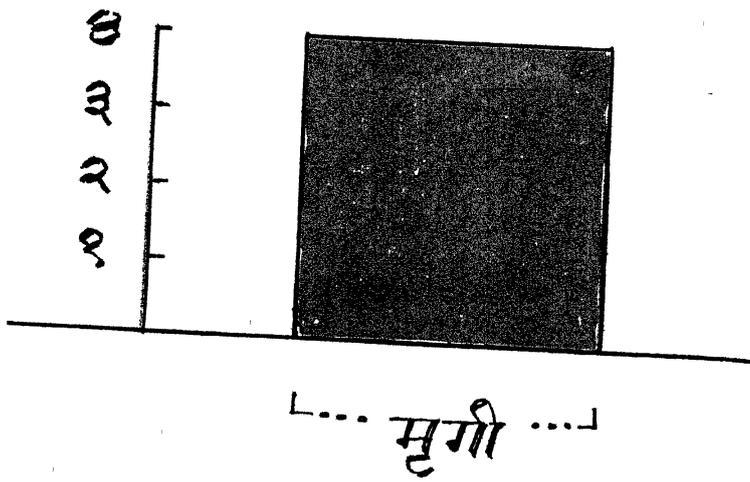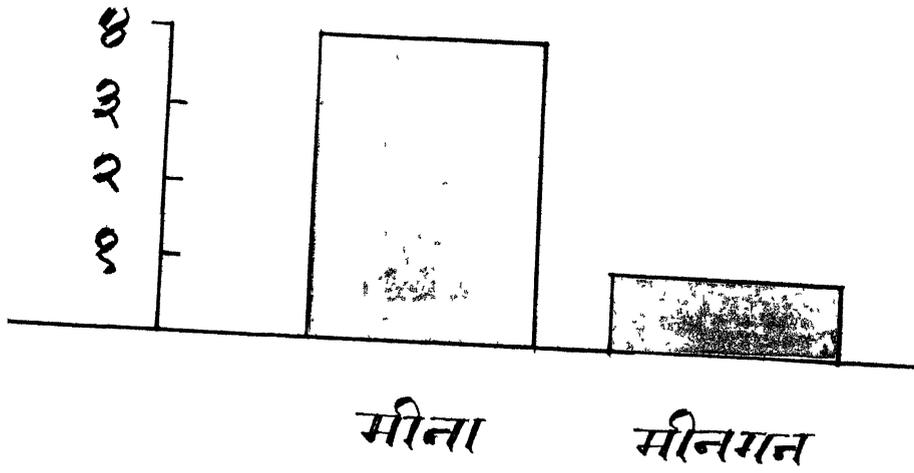
कामधेनु
वाची

फरसा वाची—

मूगी

४
३
२
१
मूगी

मछलीं नाची

यमुना वाची

अंधकार वाची

(२) तमी अंधियारी (१) ममता

(३) अंधियारी (१) अगर-धूप
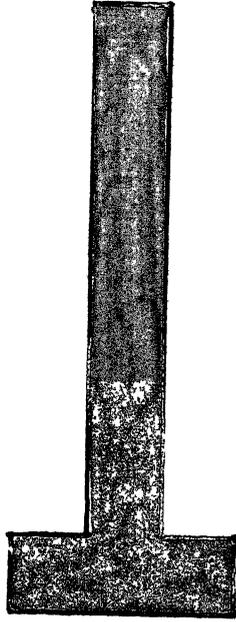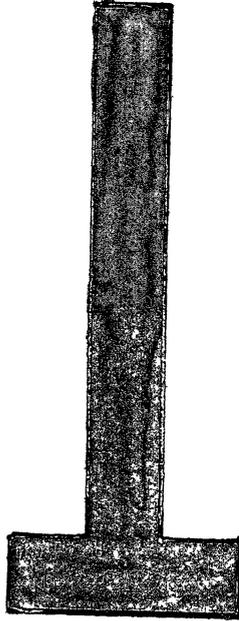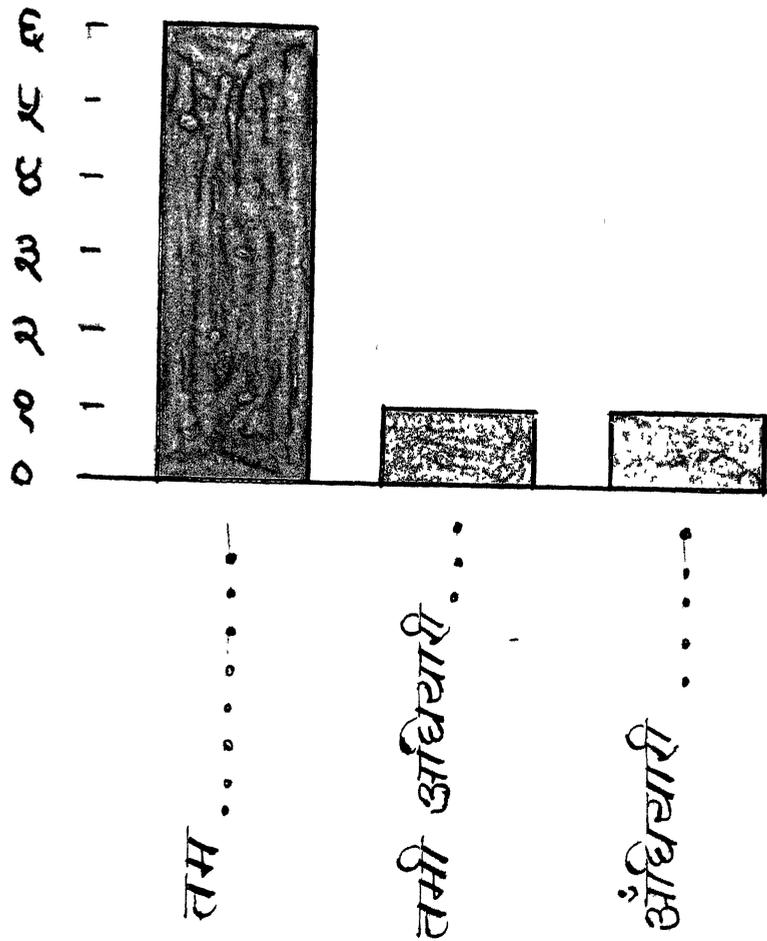
(७). कौवावाची :

(१) काक (३)- खल, कामी, लोलुप

(२) काक रीति (१) - पाकरिपु रीति

(३) बायस (१) - खल

(८). पपीहावाची :

(१) चातक (४)

१. सज्जन
२. मरतु
३. जाचक
४. लोचन (भक्तों के)

(२) चातक - चातकि (१) - नर नारी (अवध की)

(३) चातकी (१) - सिय .

(९). दुष्टवाची :

(१) खल (३) - १. छुद्र नदी
२. अर्क जवास
३. रावन

(२) खल के बचन (१)

१. बूंद अघात .
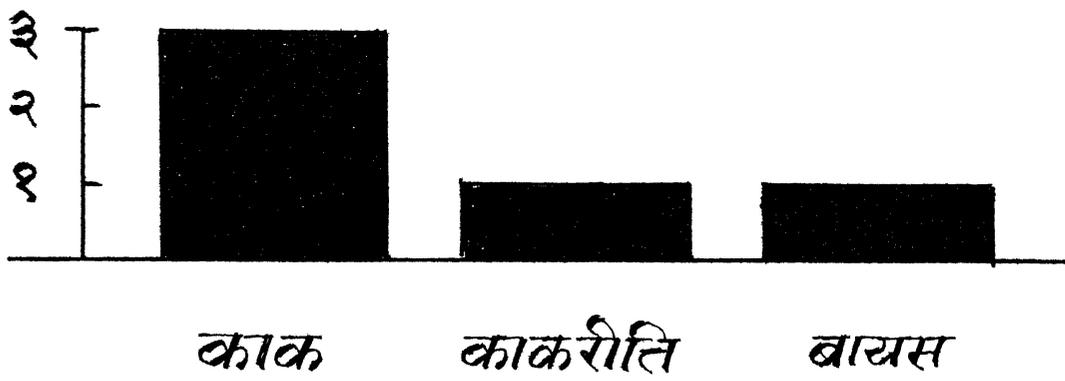
(३) खल के प्रीति (१)

दामिनी दमक .

(१०) मायावाची :
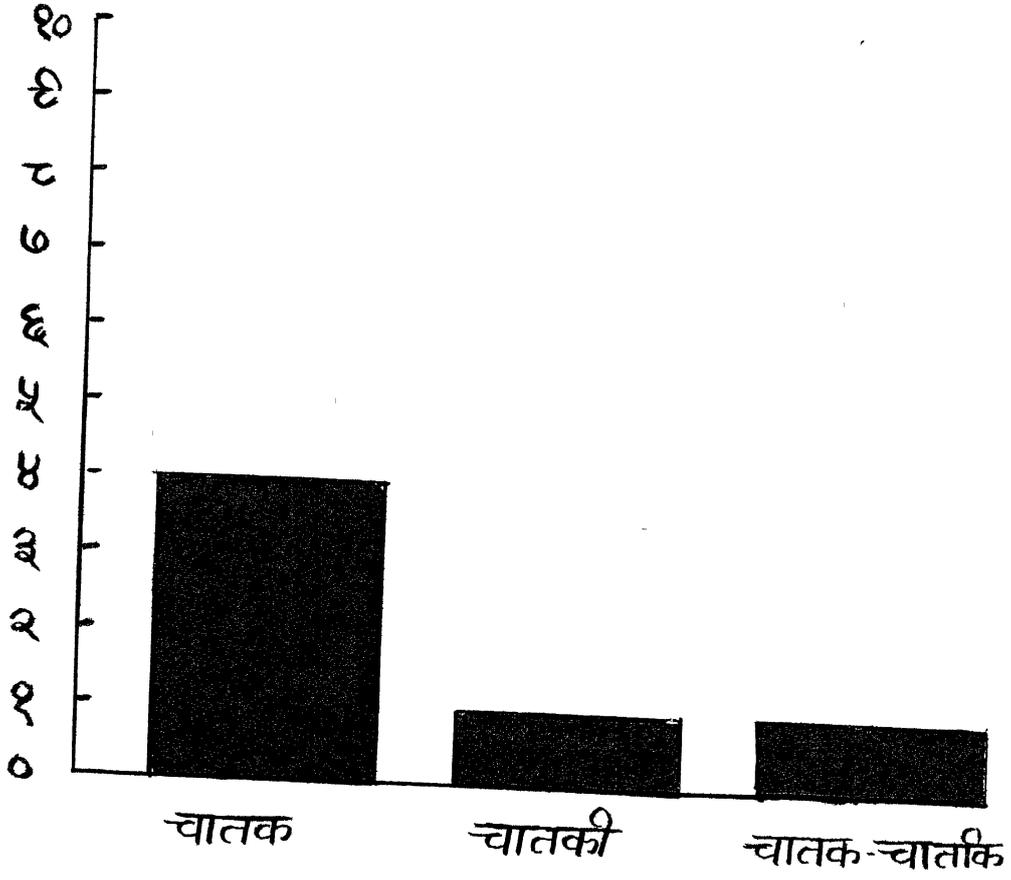
(१) माया (४) - सीय, हास (राम का)
श्री (सीता), नारि

(२) माया कोटि (१) भगवाना

(३) मायाच्छन्न (१) पुरइनसघन ओट

कौआ
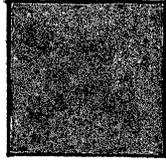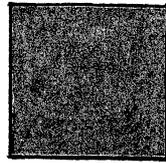
पपीहा वाची
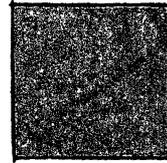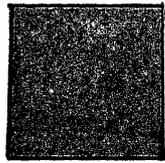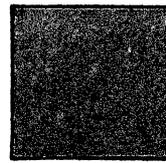
खल के बचन..

खल के प्रीति..

खल.........

१ २ ३

माया वाची

माया कोटि ....

माया च्छन्न ....

माया ....

१ २ ३ ४ ५

(११) मणिवाची :

(१) मनि (छः) १. गुन ५. राम (२)
२. कवित ६. सिर (कुम्भकरण का)
३. बधु ७. भगति (२)
४. (राम लक्ष्मण एवं सीता)

(२) मनिगन (१) नर नारी (पुर की)
(३) मनि गुन गन (१) साधु महिमा ।

(१२) सरोवर वाची :

(१) सरोवर - (१) दसरथु
(२) तड़ाग - (१) धर्म
(३) सर - (३) - नर, अवध, रामचरित

(१३) शिववाची :

(१) सिव (१)
(२) हर (१)
(३) पंचानन (१)

(१४) अमृतवाची :
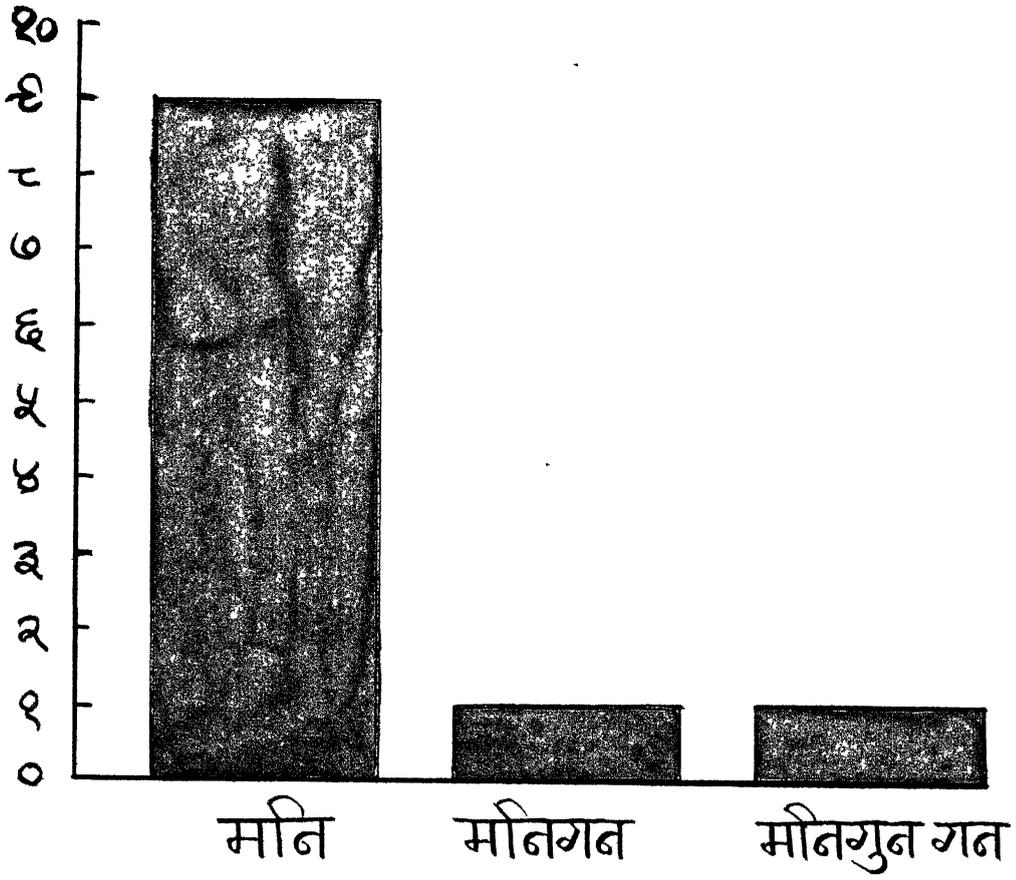
(१) अमिअ (अमृत) (७) - पदरज, कंदमूल फल[३], तीरथ तोय, अहार, जस
(२) पियूषा (१) - बचन हनुमान के
(३) (१७) - साधु, जस (राम का यश), गिरा (शंकर की), जस, बचन(राम के)[२] सलिल (जनकपुर के कूपादि के) पकवान (जनक के)[(२)], मधु(बन का), कंदमूल फल, चरित (राम का), बानी (राम की), बानी (भरत की), साधु कर्म, कथा (राम की)[(२)] ।

(४) सुधा तरंगिनि (१) कथा (राम की).

मणि वाची

१०
९
८
७
६
५
४
३
२
१
०
मनि
मनिगन
मनिगुन गन

सरोवर वाची

सरोवर .....

तड़ाग ......

सर ....

० १ २ ३

शिव

सिव.....

हर.......

पंचानन...

१ २ ३

अमृत वाची
१७
१६
१५
१४
१३
१२
११
१०
९
८
७
६
५
४
३
२
१
०
सुधा
अमिअ (अमृत)
सुधा
पियूष
तरंगिनि

(१५) वज्रवाची :
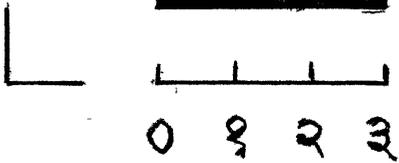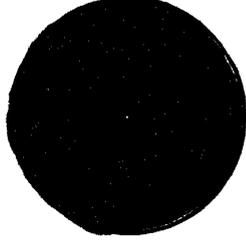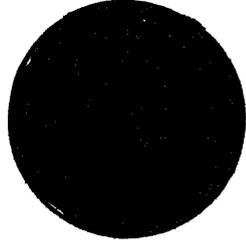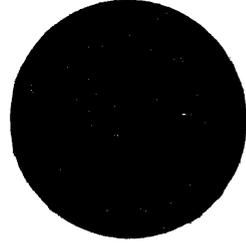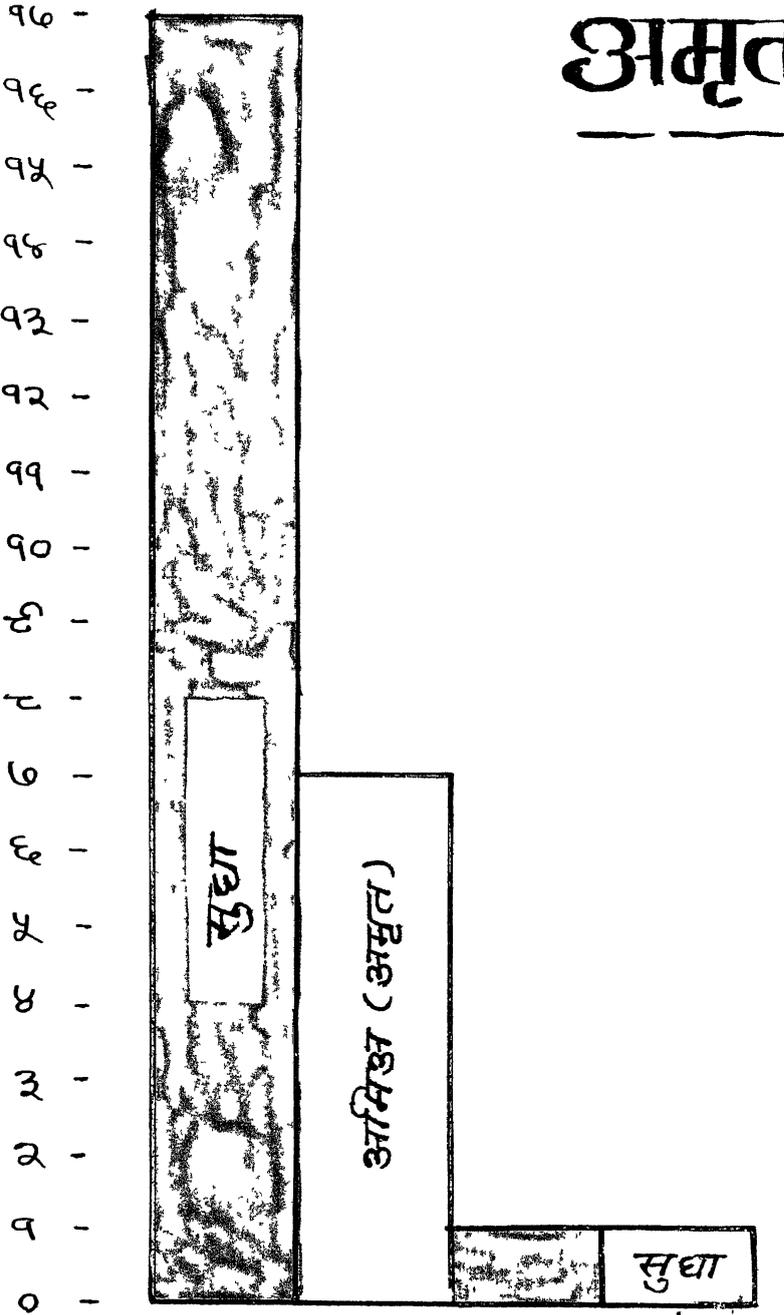
(१) कुलिस (५) =

१. छाती (जो हरि चरित सुनकर हरषाती नहीं)
२. कपाटा
३. बचन (परशुराम के)
४. उर (भरत का)
५. सर (रावण के)

(२) पवि (पावे) (२) - खग (जटायु)
बाना (बाण)

(३) बज्र (१) मुठिका

(४) बज्रपात (१) पर्वत प्रहार

(१६) नदीवाची :

(१) सरि - (२) - नर , संसृति
(२) नदी - (१) - मोह
(३) सरिता - (३) कविता, सुख सम्पत्ति, जस (राम का)
(४) सरि नाना (१) राम कथा

(१७) भीलवाची :

(१) किरात (१) मनजात
(२) किराती (१) कैकेयी
(३) किराटिनी (२) कैकेयी
(४) किरातहि (१) राम

(१८) भ्रमरवाची :
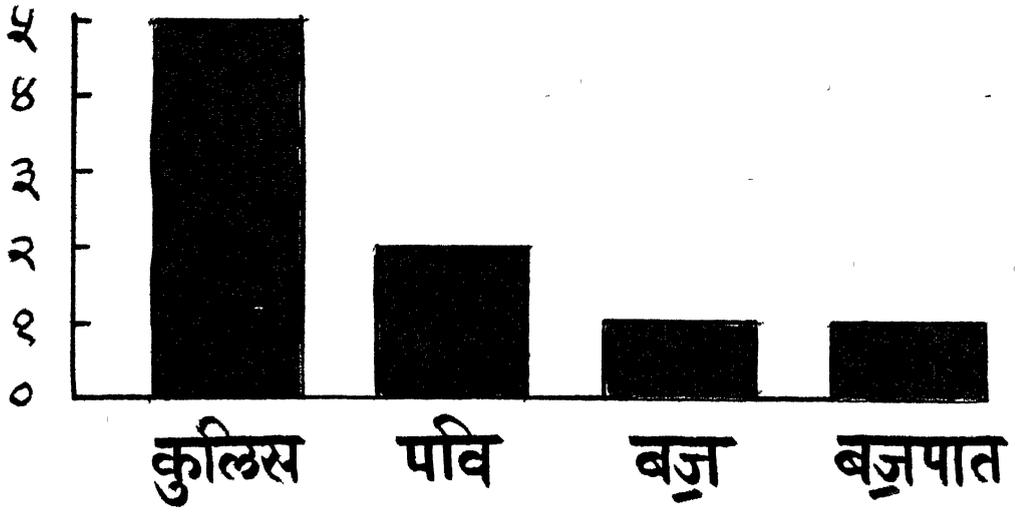
(१) भृंग (४) - १. लोचन (मुनिबर के) (३) मन (भक्तों का)
२. रावण ४. राम

(२) मधुकर (३)
१. संत २. दास (तुलसी) ३. भालु
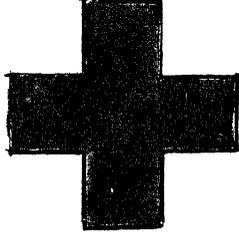
बज्रवाची

नदी वाची

सरिनामा .... ✚

नदी .... ✚

सरि ...... ✚ ✚

सरिता ..... ✚ ✚ ✚

१ २ ३

मौन वाची
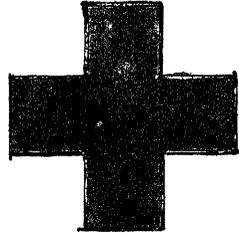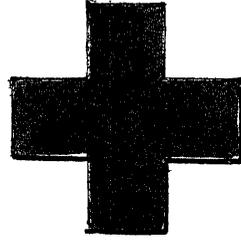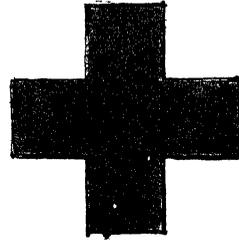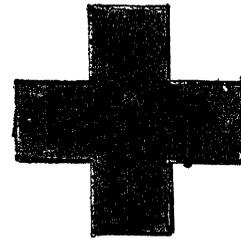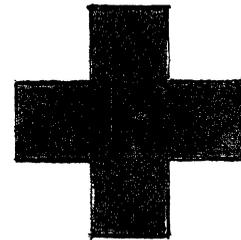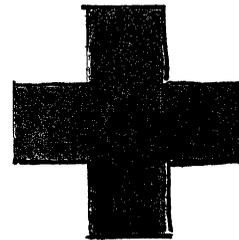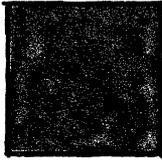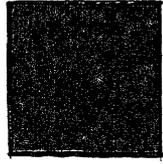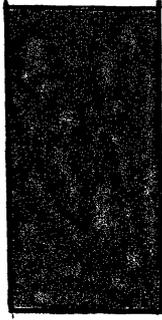
भ्रमर वाची

मधुप समाजा.....	■				
मधुकर......	■	■	■		
भृंग.......	■	■	■	■	
मधुप.......	■	■	■	■	■
	१	२	३	४	५

(३) मधुप (५) - १. मन (भरत का)
२. मन (मुनि का)
३. मनु (मन = रावण का)
४. मन
५. हरि

(४) मधुप समाजा (१) केस

(१९) मृगवाची :

(१) मृग (५) - जीव, सपथ (दशरथ की), लषण, राम, लोग.

(२) मृगजलु (१) सीता

(३) मृगजूथ (१) लोभ, मोह

(४) मृगीमृग - नर, नारी (गांव के)

(२०) आकाशवाची :

(१) व्योम - व्योम (१) भगत उर

(२) आकाश - अकास (१) - गुनगन

(३) नभ

(४) गगन - (१) - बन

(५) बतासा - (१) - बिषय

(२१) कल्पवृक्षवाची :

(१) कल्पतरु (१) - नामु (राम का)
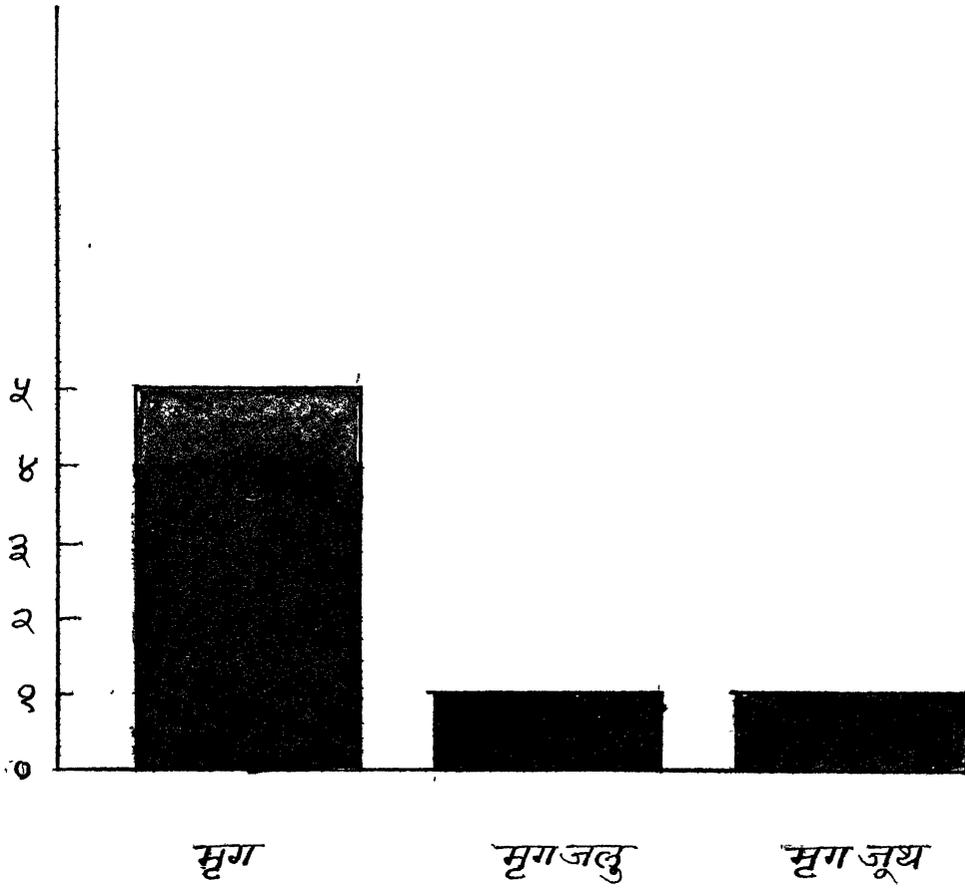
(२) कल्प पादप (२) - राम

(३) कल्प बेलि (१) - सीता

(४) काम तरु (१) - नाम (राम का)

(५) सुरतरु (२) - मनोरथु (दशरथ का), बासुदेव.

मृग वाची।

आकाश वाची

व्योम ....

आकाश ....

गगन ....

खलासा ....
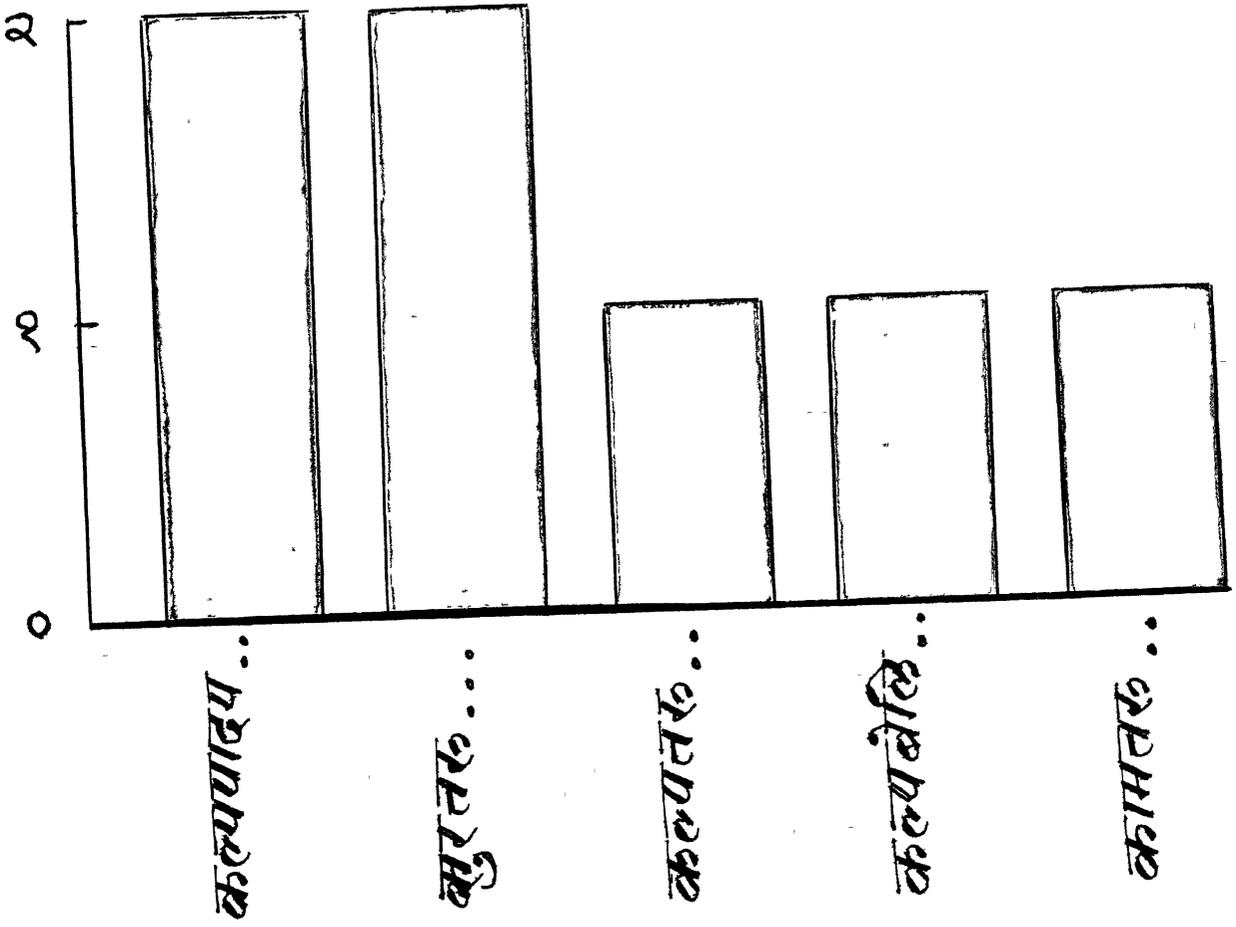
१ २.

कल्पवृक्ष

वाची

(२२) गंगावाची :

(१) गंगा (२)
(२) सुरसरि (३)
(३) गंग तरंग (१)
(४)सुरसरि धारा (१)
(५) सुरसरि गत सलिल (१)

(२३) चकोरवाची :

१. चकोर - चकोरा - चकोर (७)

१. संत
२. मुनि
३. मन (जनक का)
४. नयन (राम के)
५. लोचन (देवताओं के)
६. मन (दसरथ का)
७. स्त्री पुरुष (गांव के)

२. चकोर कुमारी (१)
सिय

३. चकोरी (२) १ सीता
२. गिरिवर राजकिशोरी (पार्वती)

४. निकर चकोर (१) मनि समूह

५. चकई (२) - सीता (२)

(२४) जलवाची :
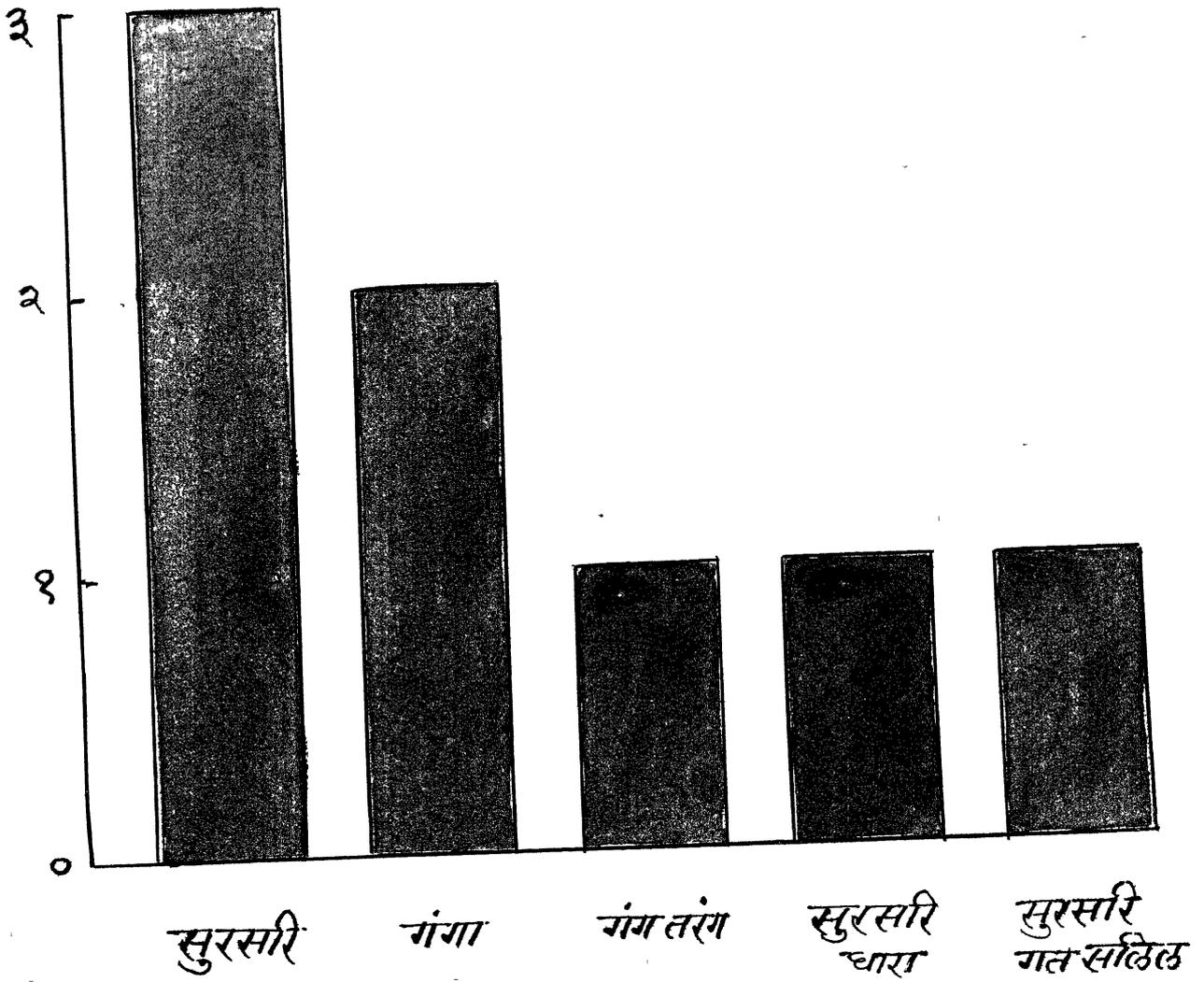
१. अम्बु (२) = अवधि, भव

२. जल जलु (१०) - सीता, पुनरहित (निर्गुण), वचन (राम के), कपट (कैकेयी का), राम, प्रेमभक्ति, बल (रावण का), भगति (राम की), मोदा, बिमल ज्ञान ।

३. जल स्वाति (१) सुख (सीता का)

४. पानी (२) धनुष भंग, प्रियबानी (दशरथ की)

३

२

१

०

सुरसरि

गंगा

गंग तरंग

सुरसरि धारा

सुरसरि गत सलिल

चकोर वाची

चकोर कुमारी

चिकर चकोर

चकई

चकोरी

चकोरा चकोरी चकोरू

० १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
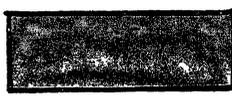
जल वाची

जल-जलु ....

पावस-पानी ....

पानी ....

अम्बु ....

नारी ....

जल-जलु ....

१० ९ ८ ७ ६ ५ ४ ३ २ १ ०

५. पावस पानी (१) - सीतल बानी

६. बारि (वारि) (३) - सुख, राम दरस, हनुमान

(२५) नेत्रवाची :

१. नयन - (२)- सेवक (राम का), ज्ञान बिराग
२. लोचन - (२)- नारियों के (अवधपुर की),
३. नयन पुटरि - (१)- सीता
४. मृगनयन (१) - नारि
५. मृगलोचन (२) - लोचन (सीता के) , लोचन (मंदोदरी के).
६. खंजन नैन (१) - नैन (सीता के).

(२६) हंसवाची :

१. बाल मराल (३) राजकुंवर (राम), राम, दोऊ भोटा (राम लक्ष्मण)
२. बाल मराल गति (१) - सीता कीगति
३. मराल (२) - गुन ग्राम (राम के) लक्षण .
४. मराली (३) सीता (२) , भरत भारती
५. हंसहि (१) सज्जन
६. हंसा (३) बासुदेव, राम (२) ।

(२७) कामदेव वाची :

१. अनंग (१) - अंग (राम के)
२. काम कामा (४) = बाजि, तुन, छबि (राम की), गज
३. मदनु (३) = परिछाही, राम, (२)
४. मनसिज (१) = नर
५. मनसिज मीन (१) = लोचन (सीता के)
६. मार (१) = सिर (रावण का)
७. मनोभव फंद (१) - बंदनिवारें

नयन पुतरि –

मृग नयनि –

खंजन नैन –

मृग लोचन –

लोचन – –

नयन – –

१ २ ३

हंसः वाची

हंसहि ......

बालमरालगति

मराल .....

मराली.....

हंसा ......

बाल मराल.

१ २ ३

४
३
२
१
०

काम~कामा
मदनु
अनंग
मनसिज
मनसिज मीन
मार
मनोभव कंद
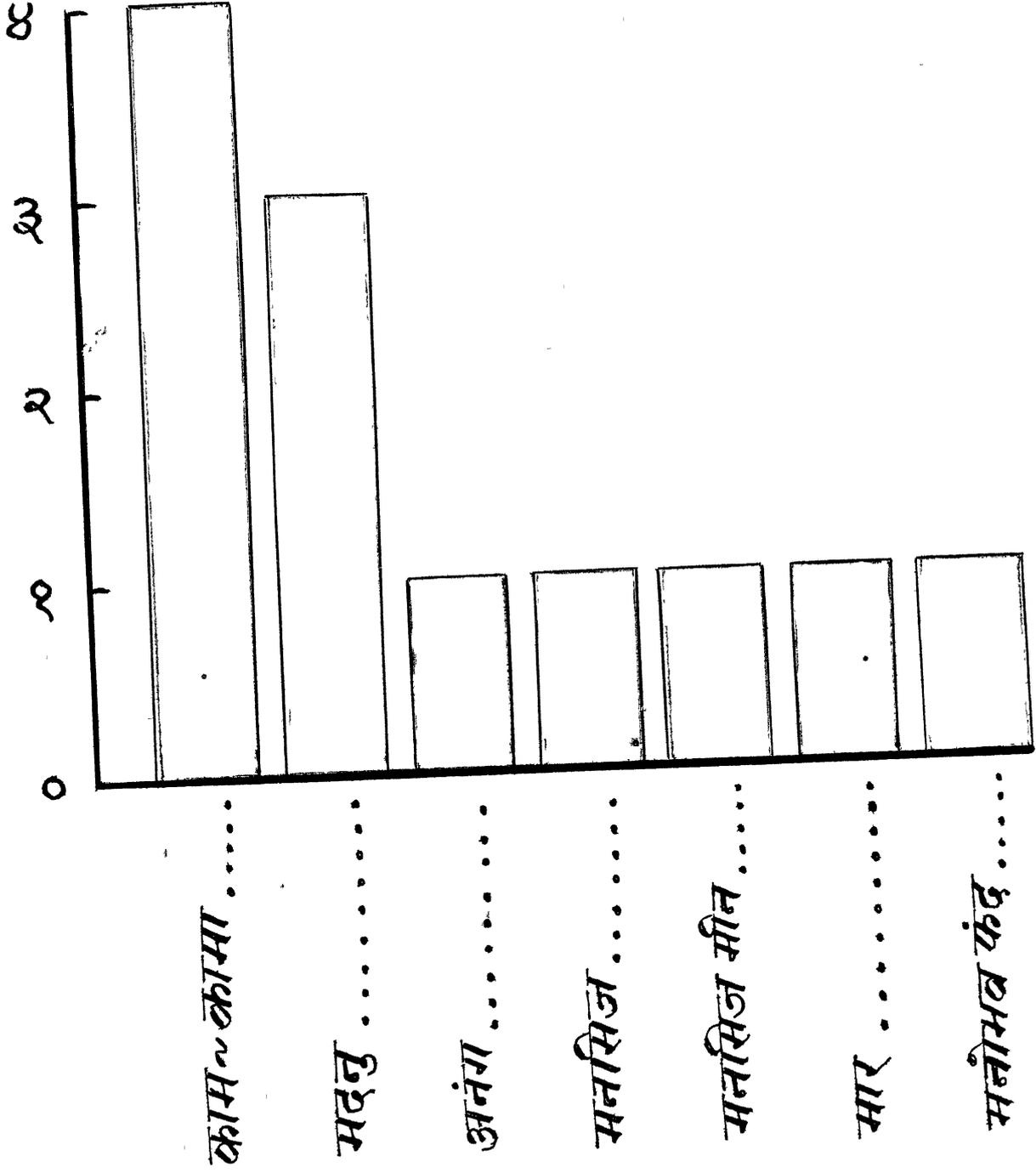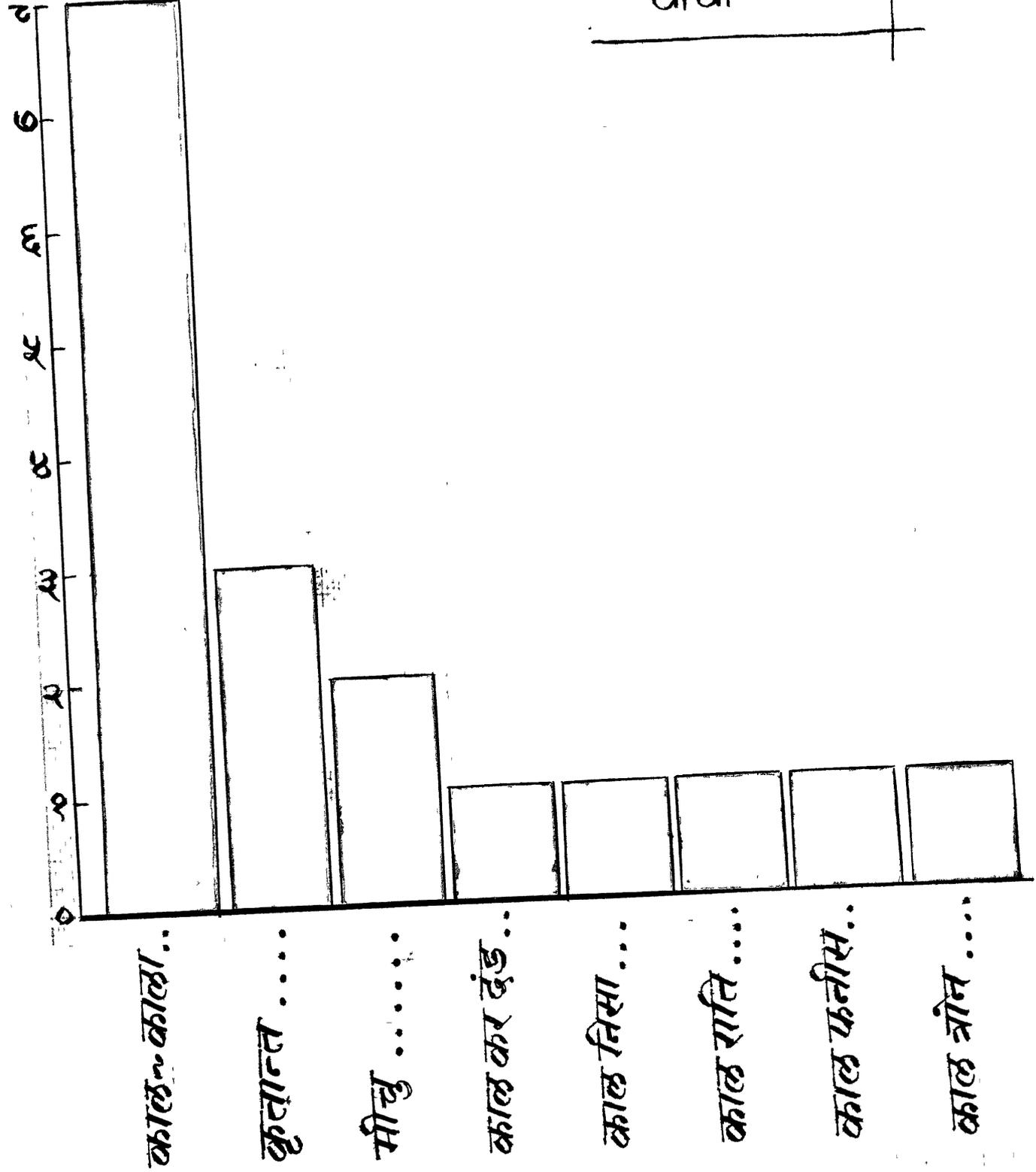
(२८) कालवाची :

१. काल काला (८) - प्रभु, भृकुटि बिलास (राम), पवनसुत, निशिचर, कपि भालु, मर्कट भालु, बलीमुख, बिभीषनु(विभीषण)

२. काल कर दंड (१) - सचित प्रचंड (शक्ति प्रचंड)

३. काल निसा (१) - निसि (सीता के लिए)

४. काल राति (१) - अवध

५. कालफनीस (१) - सायक (राम के)

६. कालक्रोन (१) - सरन्हि भरा मुख

७. कृतान्त (३) - जटायु , कपि, रावण

८. मीचु (२) - मोही (परशुराम), कैकेयी ।

(२६) अग्नि वाची :
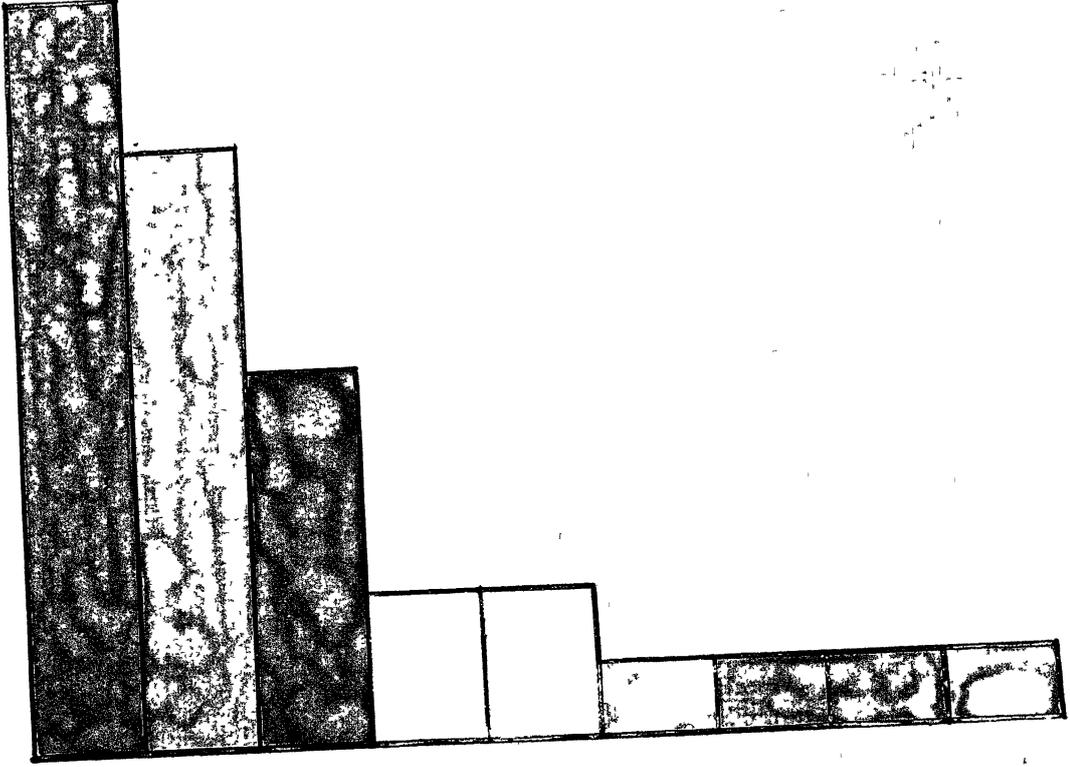
१. अनल (१०) - गुनग्राम (राम के), लोकमान्यता, कुमति (कैकेयी), सर (राम का बाण), नूतन किसलय, क्रोध (रावण का), आनन (राम का) प्रभु (राम),कुठार(परशुराम का) अकाम ।

२. अंगार - (१) - मुद्रिका (राम की)

३. अंगार रासिन्ह (१) - रुधिर (राक्षसों का)

४. अगिनि (अग्नि) (२) - आग। विरह ।

५. पावक (५) - पवनकुमार, ब्रम्ह बिवेकु, हरि, सर, ज्ञान ज्योति,

६. कृसानु कृसानू (८) - लगन, कोप (भृगुवर का), कोपु (परशुराम का), राम(३), नवतरु किसलय, बान (रघुपति का)

७. दावारि (१) - बात (राम बन गमन की)

८. दव (२) - बिरह (राम का), बिरहागि (राम वियोग की)

९. बड़वानल (१) - प्रभु प्रताप

मृत्यु (काल)
वाची
० १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
काल-काला..
कृतान्त ....
मीचु ......
काल कर दंड..
काल निसा...
काल राति....
काल फनीस..
काल त्रोन....

अग्नि वाची

(३०) पर्वतवाची :

१. कज्जल गिरि - (३) - कुंभकरण, दसानन, रावण ।
२. गिरि - (२) - रावण, कुम्भकरण का मुख ।
३. दुह मंदर (१) - द्वौ कपि
४. नील गिरि (१) - सिर (राम का)
५. पन्नगयुत गिरिन्दा (१) - कपिंदा
६. पावन पर्वत (१) - बेद पुरान
७. पाहक (१) - नाम (राम का)
८. बिसाल सैल (१) - देह (राक्षसों की)
९. भूधर (२) - चारिदस भुवन, दुह संडा (कुम्भकरण के लिए)
१०. मंदरगिरि (१) - सल (कुम्भकरण)
११. मंदर (४) - धनु, माथ (राम), बंदर ज्ञान .
१२. सृंग (१) - सिर (रावण का)
१३. सृंगनि (१) = कंगूरनि ।
१४. सृगन्ह (१) - माला
१५. सिखर (१) - बराह
१६. सैल (३) - सूपनखा, अस्थि (राम की), रावन
१७. हिमगिरि (२) - जनक, तनु (लक्ष्मण का)
१८. हिरासिहि (१) - राम
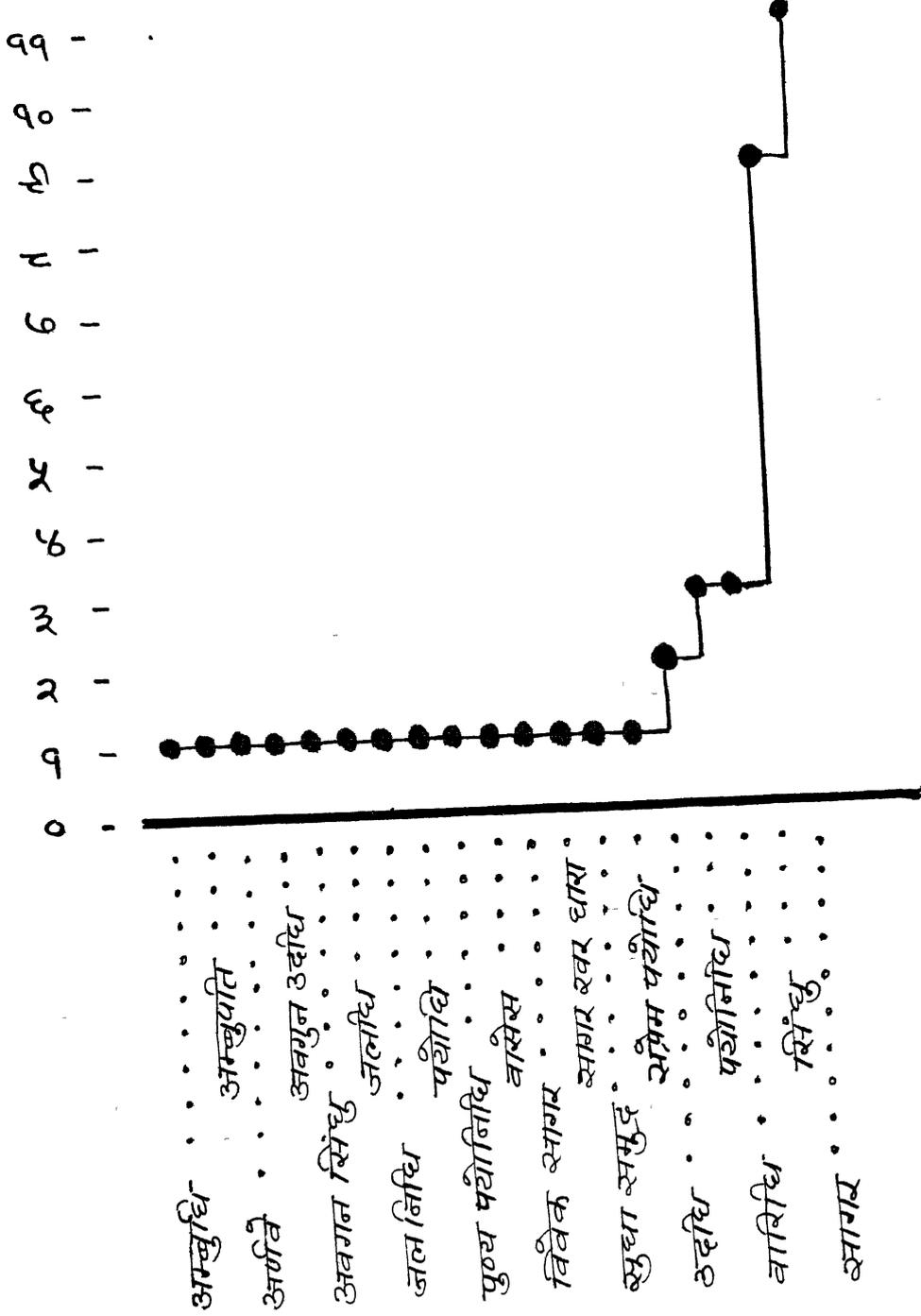
(३१) सागरवाची :

१. उदधि (२) - बेदपुराण, उदर (राम का)
२. अम्बुधि (१) - अवध
३. अम्बुपति (१) - वीणा (= जिह्वा, राम की)
४. अर्णवे (१) - भव
५. अवगुन उदधि (१) - भरत
६. अनगुन सिंधु (१) - असंतन्ह
७. जलधि (१) - मोह

पर्वत वाची

	१	२	३	४	५
दुई मंदर	■				
नील गिरि	■				
पच्छ युत गिरिन्दा	■				
पावन पर्वत	■				
पाहरू	■				
विसाल सैल	■				
मंदर गिरि	■				
सृंग	■				
सृंगनि	■				
सृंगन्ह	■				
सिखर	■				
हिम रासिहिं	■				
हिम गिरि	■	■			
भूधर	■	■			
गिरि	■	■			
कज्जल गिरि	■	■	■		
सैल	■	■	■		
मंदर	■	■	■	■	
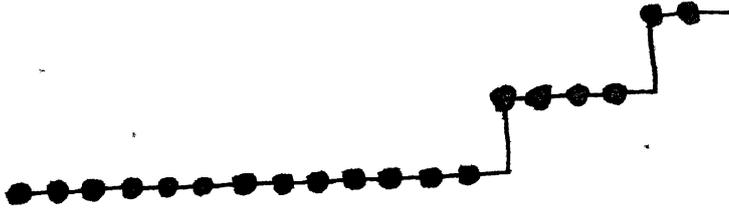
८. जलनिधि (१) - नारी चरित
९. पयोधि (१) - राम बियोग
१०. पयोनिधि (३) - पाप, रूप, ब्रम्ह ।
११. पुन्य पयोनिधि (१) - भूप दोउ (दशरथ एवं जनक)
१२. बारिधि (३) - रनिवास (अवध का), भव, (२)
१३. बारीश (१) - बिरह (राम का)
१४. बिबेक सागर (१) - गुरु (वशिष्ठ)
१५. सागर (११)- बाहुबल (राम का), धरम सील। आश्रम, भरत के गुण, रघुपति बल, भुज(रावण की) भाव, (३) बिरह (राम का), समर (लंका का)
१६. सागर खर धारा (१) - फरसु
१७. सिंधु (९) - सज्जन, हृदय, चरित (शंकर का), भरत बड़ाई, संसार, राम, भर, पुर (अयोध्या)। रघुराउ (राम)।
१८. सुधा समुद्र (१) राम ।
१९. सुप्रेम पयोधि (१) भरत ।

(३२) हाथीवाची :

१. करि - (२) - भरत, मनसिज
२. करिकर - (२) भुजदंडा (राम) प्रभु भुज
३. करिनिकर (१) - सेना (भरत की)
४. करिबरूथ - (१) - सभा रावण की ।
५. कुंजरगामी- (१) - सकल जग स्वामी
६. कुंजरहिं (१) - कपि (अंगद)
७. कामकलभकर (२) - भुजा (लक्ष्मण) भुजा (राम की)
८. करिनि (१) - कैकेयी
९. गज (३) - राम, भूपगन, कुम्भकरण
१०. गजराजा (३) - हनुमान, मेघनाद, कुम्भकरण

हाथी वाची

कुंजर गामिनी
करिनिकर
करिवररूप
कुंजरगामी
कुंजरहिं
करिनि
गजराजघटा
गजमाते
गजगामिनि
गयंदु
मत्तगजगन
मत्तगजजूथ
वृद्ध गजराज
करि
करिकर
कामकलभकर
मत्तगज
गज
गजराज

० १ २ ३ ४ ५

११. गजराज घटा - (१) - रिपुदल ।
१२. गजमाते - (१) - पिक (कूजट)
१३. गजगामिनी - (१) - कैकेयी
१४. कुंजर गामिनी - (१) - सखियाँ (का गमन)
१५. गयंदु - (१) - रघुबीर मनु
१६. मत्तगज - (२) - रावण (२)
१७. मत्तगजगन - (१) - नृपन्ह
१८. मत्तगज जूथ - (१) - सभा (रावण की)
१९. वृद्ध गजराज - (१) - नरपति (दशरथ)

(३३) बादलवाची :

१. घनु घन (५)

प्रभु राम — भट्ट
राम — सज्जन
तन (राक्षस का)

२. घन गर्जहिं (१) - दुंदुभि धुनि
३. घन गाजहिं (१) - निसान रव
४. घन घटा - (१) - कपि भट्टा
५. घन पटल (१) - मोह
६. घनमाला (१) - कच (राम के)
७. घन समुदाई (१) - निसाचर निकर
८. नव अम्बुधर (१) - गात (राम का)
९. जलद घटा (१) - मेघडम्बर
१०. नील जलद (१) - तनु स्याम (राम का)
११. जलद पटल (१) - लता भवन
१२. नील नीरधर (१) - स्याम बरन
१३. जलधर (१) - गुनग्राम (राम के)
१४. पाथोद (१) - गात (राम का)
१५. तड़ित पटल (१) - मुकुट (रावण का)

बादल वाची

- प्राविष्ट सरद पयोद .... ☐
- प्राविष्ट जलद .... ☐
- घन गर्जन्हि .... ☐
- घन गाजेहिं .... ☐
- घन घट्टा .... ☐
- घन पटल .... ☐
- घन माला .... ☐
- घन समुदाई .... ☐
- नव अम्बुधार .... ☐
- जलद घटा .... ☐
- नील जलद .... ☐
- जलद पटल .... ☐
- नील नीरधर .... ☐
- जलधर .... ☐
- पयोद .... ☐
- तड़ित पटल .... ☐
- प्रलय पयोद .... ☐
- बिनु जल वारिद .... ☐
- मघा मेघ .... ☐
- वारिद .... ☐ ☐
- सावन घन .... ☐ ☐
- घनुघन .... ☐ ☐ ☐ ☐ ☐

१ २ ३ ४ ५

१६. प्रलय पयोद (१) - मेघनाद

१७. प्राबिट जलद (१) - गजजूथ

१८. प्राबिट सरद पयोद (१) - जुगल दल

१९. बारिद (२) - स्याम सरीरा (राम का)
तनु (राम का)

२०. बिनु जल बारिद (१) - मतिहीन नर।

२१. मघा मेघ (१) - सायक छाई

२२. सावन घन (२) - मत्तगज धूम

(३४) सर्पवाची :

१. अहि (१) - खल

२. अहिगन (२) - बान (राम के), निसिचर (राक्षसगण)

३. अहिनी (१) - सूपनखा

४. अहिगति (१) - चित (कुमित्र का चित)

५. अहि भवन - भवन रंध्र

६. उरग (२) - नीच, बाण (राम के)

७. उरग स्वास - (१) - त्रिबिध समीरा

८. कारि सांपिनि (१)- चेरी (मंथरा)

९. नाग - (२) - बलि, रावन

१०. फनि (५) - - सुजन, सुमंत्र, साधु, दसानन, नृप (दसरथ)

११. व्याल (३) - दाम, मार्गन, काल

१२. व्याला (१) - सर (लछमण के)

१३. व्यालू (१) - भुवालू

१४. भुजंगिनि (१) - कथा (राम की)

१५. भुजंग-भामिनि (१) - रानी (कैकेयी)

१६. भुजंग (१) - भूठेव

१७. मनि बिनु व्यालहिं (१)- नरपाल (जनक)

१८. मनि हीन भुजंगू (१) - नरपति (दसरथ)

सर्प वाची

शब्द	१	२	३	४	५
अहि	■				
अहिनी	■				
अहिमति	■				
अहिभवन	■				
उरग स्वास	■				
कार साँपिनि	■				
व्याला	■				
व्यालू	■				
भुआँगिनि	■				
भुअंग भामिनि	■				
भुजंग	■				
मनि बिनु व्यालहिं .	■				
मनि हीन भुअंगू ..	■				
लघु व्याल	■				
सर्प	■				
साँपिनि	■				
सेष	■				
नाग	■	■			
उरग	■	■			
अहिगन	■	■			
व्याल	■	■	■		
फनि	■	■	■	■	■

१६. लघु व्याल (१) - धनु
२०. सर्प (१) - संसय
२१. सामिनि (१) - चिंता
२२. सेष (१) - खल

(३५). चन्द्रमावाची :

१. इंदु (४) - कलस, (नृपगृह), गौर सरीरा, राम, सन्त (३),
२. चंद्र चंदु चंदू (१०)- रूप (राम का), मुख (राम का)
रूप (लक्ष्मण का), राम, राजा दसरथ,
रघुनंदु, बदनि (सीता), आनन (कैकेयी),

३. चंद किरन रस (१) - सुख (अयोध्या के)
४. नव बिधु (१) - जसु (भरत का)
५. नवससि (१) - भूसुर
६. निशेश (१) - राम
७. बिधु (१६) - 'रा' (अक्षर), लखन, राम (३), मुख जसु, बदन (भामिनियों के), बदन (नारियों के), बदन (रानियों का), मंगल (समाचार), बदन (राम का) (३)
बदन (राम तथा लक्ष्मण का), बदन (सीता का),
मुख (सीता का)
८. जुग बिधु पूरे (१) - (राम एवं लक्ष्मण)
९. बिधु बदनी (१) - मनिति (कविता)
१०. मयंक (३) - बदन (वासुदेव का), बदन (लक्ष्मण का), बदन (राम का) ।
११. सरद बिमल बिधु (१) - बदन (राम का)
१२. सरद ससि (१) - रघुपति ।
१३. सरद चन्द्र (१) - सीतल सिख
१४. सरद इंदु (१) - राम
१५. इंदिरा (१) - सत्य श्री

१६. चांदनी (२) - सिख सीतल, कैकेय नंदिनि.

१७. चांदनीरात (१) - बधावा (अवध का)

१८. ससि (१२) - रघुपति, सिय मुख, मुख (राम का), मुख (सीता का), राम(२) बदनु(परशुराम का) राउ (रावण), केसरि, मन(राम का), लोकपाल, आनन (राम का)

१९. ससिकर (२) - गिरा (शिव की), हासा(हास्य राम का)
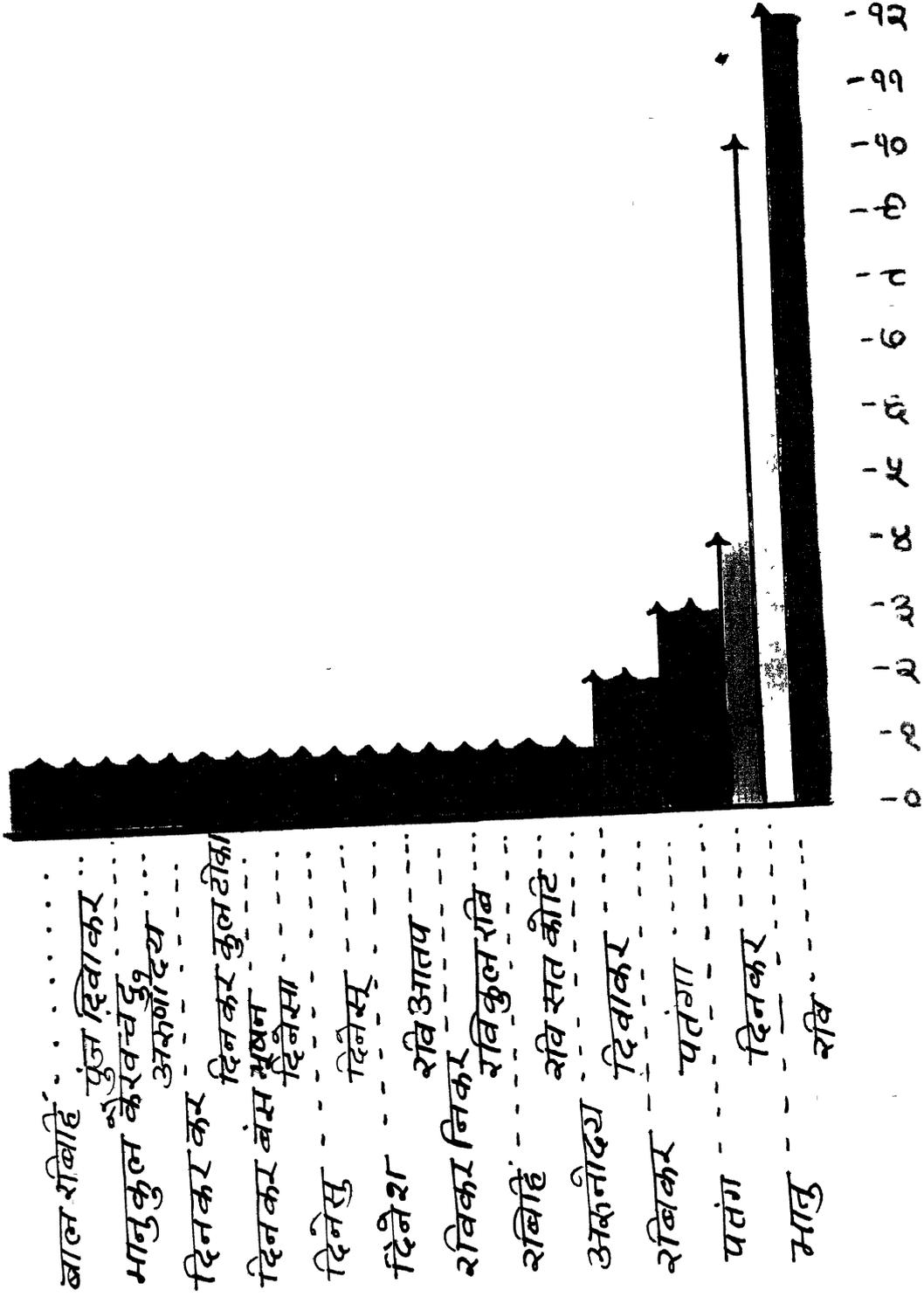
(३६) सूर्यवाची :

१. बाल रबिहिं (१)- राम

२. पुंज दिवाकर (१) - राम

३. भानु - (१०) - राम (८), ससि, दशरथ

४. भानुकुल कैरव चन्दु (१) - राम

५. दिनकर - (४) - मुकुट (रावण),राम, रथ दंड(राम) रघुबीर

६. दिवाकर - (२) - नयन (राम के), राम

७. अरुणोदय । अरुनोदय (१) - राम आगमन

८. दिनकरकर - (१) - गुनग्राम (राम के)

९. दिनकर कुलटीका । (१) - राम

१०. दिनकर बंस भूषन (१) - राम

११. दिनेसा - - राम

१२. दिनसु - (१) - राम

१३. दिनेसु - (१) - आचरणु (भरत का)

१४. दिनेस - (१) - - बिरह (रघुपति का)

१५. पतंगा (३) - नाम (राम का), राम, परसुराम

१६. पतंग (३) - निसिचर निकर, रावण, रजनीचर

१७. रबि (१२)- नाम (राम का, राम (२), रघुबर, बन , महिमा (राम की) , बान (राम का)

प्रभु प्रताप

प्रभु (राम

सिंहासनु

राम (अप्रस्तुत रूप में)

प्रताप (राम का)

१८.	रवि आतप	(१)	अखंड (रामरूप)
१६.	रविकर	(२)	मद, बचन (शंकर के)
२०.	रविकर निकर	(१)	बचन (गुरु के)
२१.	रविकुल रवि	(१)	टपु (दसरथ)
२२.	रबिहिं	(१)	पुरुष मनोहर
२३.	रविसत कोटि	(१)	राम
२४.	अरुणोदय	(१)	राम आगमन .

कमलवाची

१.	पदुम (१२)	पद (गुरु के), पद (कौशल्या), पद (वशिष्ठ), पद (रघुपति), पद(राम), पद (सीता), पद (प्रभु राम)
२.	पंकज - पंकज (५०)	चरण (६) (राम), पद (२)(गुरु), चरण(शंकर), पद(शिव), पद(रघुबीर), पद (विश्वामित्र), मुख (सीता), पाणि (कामदेव), पांय(पैर सीता के) पांय (राम), पद (१६)(राम), पद (दशरथ), पद (भरत), पांय (भरत), मुख (भरत), मुख (२)(राम), बदन (राम), हृदय (जटायु), चरण (सन्त), कर (प्रभुराम), ज्ञान बिग्याना, लोचन (राम), मुनि मानस, पद (भगवान), गुरु पद (वशिष्ठ)
३.	पंकरुह (६)	पद (राम), पानि(पाणि)(३), पद (वासुदेव)(२)
४.	जलज (४)	सन्त, पद (प्रभुराम), कर (राम), बिलोचन (राम)
५.	जलजाता-(जलजात)(७)	पद(राम)(२), चरन (राम), पद (लछमण), पद (माधव), हनुमाना, नयन (भरत)।
६.	नीरज (३)	नयन (राम तथा लछमण), नयन(भरत), राम ।
७.	कमल (६१)	चरन (रघुनन्दन), पद (सब जनों के), चरन (चरण कवियों के), पद (शत्रुघ्न), पद (जानकी के), पद (शिव का)(२), पद (प्रभु राम), पद (राम)(१७), पद (भगवन्त के), पद (हरि का), चरन (रघुबीर), पद (रघुबीर),

कम्पल वाची

पद(विश्वामित्र),(२), पद (पार्वती के), के)
नयन (राम), पद (वशिष्ठ)(२), कर (राम)(४),
दसरथ (दशरथ), चरन (सीता), पद(कौशल्या),
चरन (राम)(४), कर (लक्ष्मण), पद (राम,
लक्ष्मण एवं सीता के), कर (रघुराई), कर (भरत के)
कर (सीता के), पद (मुनि)(२), पद(अगस्त्य मुनिके)
हृदय (भक्तों का), चरन (रघुपति), पद (रघुनाथ),
कर (रावण के)(२), भानुकुल, मुख(रघुपति),
मुख (राम) ।

८.	अब्ज (२)	पद (राम), पाद (भृगु का)
९.	अम्बुज (६)	चरना (शम्भु), अंबक, पद (वशिष्ठ), पद(राम)(२), चरन (चरण)
१०.	अम्भोज (२)	अम्बक, नयन (राम के)
११.	अरविंद (२)	पद (राम)(२)
१२.	कंज (१९)	पद (गुरु), `रा` (अक्षर), कर(राम), पद(राम) (१३), बिलोकन (राम), लोचन (राम)(२), हृदय (कामारि) ।
१३.	कुमुद (२)	दसरथ कुल, दसरथ
१४.	कुमुदिनी (१)	नारि (अवध की)
१५.	कुमुद गण (१)	भुआल (भूपालों)
१६.	तामरस (१)	लखण (लक्ष्मण)
१७.	नलिन (४)	लोचन (शम्भु), लोग(सभा), नयन (शंकर), चरन (राम के) ।

१८. नील कंज (३) स्याम सरीरा (राम), तनु स्यामा, लोचन (रामके)

१६. नील जलज (१) तनु (राम)

२०. नील जलजात (१) सरीर (राम)

२१. नील नलिन (१) लोयन (लोचन - सीता के)

२२. नीलोत्पल (१) तन स्याम (राम का)

२३. पाथोज (१) पद (शंकर)

२४. बनज बन (२) परिवारू (परिवार रघुकुल), अयोध्या ।

२५. बारिज (१) लोचन (राम)

२६. बारिज (१) चरन (राम)

२७. राजिव(राजीव) (१४) नयन (राम)(८), नयन, पद (भगवानराम),
लोचन (राम)(३), बिलोचन

२८. राजिव दल(राजीवदल)(१) लोचन (राम)

२६. स्याम सरोज (१) नयन (मिना के)

३०. सरद सरोरुह (१) नयन (राम के)

३१. सरसिज (२) पद (राम), लोचन (राम)

३२. सरसिज बन बिनु बारी(१) इन्द्री (इन्द्रियां दशरथ की)

३३. सरसीरुह (३) लोचन (लक्ष्मण), लोचन (राम)(२)

३४. सरोज (३३) पद (राम भक्तों के), कर, मुख लोचन (लक्ष्मण),
चरन (विश्वामित्र)(२), पानि (सीता के),

पद (रघुपति के), कर (सीता का),
पद(परशुराम का), पद (राम का)(७),
पद (सीता)(२), चरन (जनक का), चरन(गुरु का),
चरन (राम)(५), पानि, कर (राम का)(२),
मुख (राम), भुज (भुजा राम की), सिर (रावणके),
लोचन (राम का)

३५. सरोज बन (१) सिर (रावण का)

३६. सरोज बिपिन (१) अयोध्यावासी

३७. सरोरुह (६) चरन (राम)(४), नयन (राम एवं लक्ष्मण के),
लोचन (भरत), नयन (भरत), चरन (वशिष्ठ),
लोचन (राम के)

३८. कंजारुण (१) लोचन (राम के)

३९. कंजबन (२) विषाय मनोरथ, सन्त

४०. कमल नाल (१) शंकर चाप

४१. कमल बन (१) कानन्हि (रावण)

४२. कमल बिपिन (१) रघुकुल

४३. कलकंज (१) लोचन (राम के)

४४. अरुण बारिज (१) नयन

४५. कैरव (२) रघुकुल, कामक्रोध

४६. कैरव बिपिन (१) रविकुल पति

४७. जुग जलज (२) जुगल कर (सीता के), जुग हाथ (भरत के)

४८. नव राजीव (२) नयन (भरत एवं राम के), मृदु बरना (राम के)

४६. पीत जलजात (१) सरीरा (लक्ष्मण का)

५०. स्याम सरोज (१) मैन (मैना के)।

---000---

`रामचरितमानस` के उपमानों की तालिका नीचे प्रस्तुत की गई है। एक ओर उपमेय तथा दूसरी ओर उपमान दिये गये हैं। सन्दर्भ एवं विवरण को स्पष्ट करने के लिये `मानस` से उद्धरण भी प्रस्तुत किये गये हैं।

उपमेय	उपमान
अकाम	अनल

अवटइ अनल अकाम बनाई। ७।३।५५८

अकासा	हरिजन

बिनु घन निर्मल सोह अकासा।
हरिजन इव परिहरि सब आसा। ४।२०।३६२

अखंड	रवि आतप

अनवद्य अखंड न गोचर गो। ६।७।४७८
+ + +
रवि आतप भिन्न न भिन्न जथा। ६।१०।४७८

अनल	क्षीर सागर

तब अनल भूसुर रूप कर, गहि सत्य श्री श्रुति विदित जो।
जिमि क्षीर सागर इंदिरा, रामहि समर्पी आनि सो ॥
६।१२।४७६

अगर धूप	अंधिआरी

अगर धूप जनु बहु अंधिआरी। १।३।६६

उपमेय — उपमान

अगस्ति — संतोषा

उदित अगस्ति पंथ जल सोषा ।
जिमि लोभहि सोषइ संतोषा ।। ४।१५।३६२

अघ — खगगन

होउ नाथ अघ खग गन बधिका । ३।९।३५०

अघ — उलूक

अघ उलूक जहं तहां लुकाने । ७।१६।५०७

अतुलित बली — कज्जल कै आंधी

चले बीर सब अतुलित बली ।
जनु कज्जल कै आंधी चली ।। ६।९८।४५०

अधगो
(नीचे की इन्द्रियां) — जातना

उदर उदधि अधगो जातना । ६।६।४११

अधर :राम का: — लोभ

अधर लोभ जम दसन कराला । ६।१३।४११

अनुग्रह :राम का: — मरुत

सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरो । ७।९७।५१३

उपमेय		उपमान
अनुज :लछमन:		जीव
	आगे रामु अनुज पुनि पाछे ।	३।११।३२४
	+ + +	
	उभय बीच सिय सोहति कैसे । ब्रह्म जीव बिच माया जैसी ।।	३।१२।३२४
अनुज :भरत:		सिंगार
	अति प्रेम हृदय लगाइ अनुजहि मिले प्रभु त्रिभुवन धनी ।	७।१०।४६१
	+ + +	
	जनु प्रेम अरु सिंगार तनु धरि मिले बर सुषमा लही ।।	७।१२।४६१
अपर नाम		उडुगन
	अपर नाम उडुगन बिमल	३।३।३५०
अविद्या		निशा
	प्रथम अविद्या निशा नसानी ।	७।१५।५०७
अविद्या		तम
	प्रबल अविद्या तम मिटि जाई ।	७।१०।५६०
अबीर		अरुनारी
	उड़इ अबीर मनहुं अरुनारी ।	१।३।६६

उपमेय		उपमान
अभिषेक		फल
	जोग सिद्धि फल समय जिमि	२।१८।१८१
अर्क जवास		खल
	अर्क जवास पात बिनु भयऊ । जस सुराज खल उद्यम गयऊ ॥	४।२१।३६१
अवध		१. दिनु २. तनु ३. यामिनी

जिमि भानु बिनु दिनु प्रान बिनु तनु चंद बिनु जिमि यामिनी ।
तिमि अवध तुलसीदास प्रभु बिनु समुझि धौं जियं भामिनी ॥
२।२०।२००

उपमेय		उपमान
अवध		सर
	नारि कुमुदिनी अवध सर	७।३।४६४
अवध		अम्बुधि
	उमगि अवध अम्बुधि कहुं आई ।	५।१३।१७८
अवध		कालराति
	लागति अवध भयावनि भारी । मानहुं कालराति अंधियारी ॥	२।१३।१९४

उपमेय		उपमान
अवधपुरी		राती (रात्रि)
	अवधपुरी सोहि एहि भांती ।	
	प्रभुहिं मिलन आई जनु राती ॥	१।१।६६
अवधराजु		चंपक बागा
	अवधराजु सुरराजु सिहाई ।	
	+ + +	
	चंचरीक जिमि चंपक बागा ॥	२।१०।३१७
अवधि		बंधु
	अवधि बंधु प्रिय परिजन मीना ।	२।१२।२०३
असज्जन		जौंक
	बन्दौं संत असज्जन चरना ।	१।१६।४
	+ + +	
	जलज जौंक जिमि गुन बिलगाहीं ।	१।२१।५
अस्थि (राम की)		सैल
	अस्थि सैल सरिता नस जारा ।	६।५।४११
असन्तन्ह		हरहाई
	सुनहु असन्तन्ह केर सुभाऊ ।	७।७।५११
	भूलेहु संगति करिअ न काऊ ।	
	तिन्हकर संग सदा दुखदाई ।	
	जिमि कपिलहिं घालइ हरहाई ।	७।८।५११

उपमेय — उपमान

बसन्तन्ह — मौरा (मौर)

सुनहु बसन्तन्ह केर सुभाऊ । ७।७।५११

+ + +

बोलहिं मधुर बचन जिमि मौरा ।। ७।१४।५११

बसन्तन्ह — जूड़ी आई

सुनहु बसन्तन्ह केर सुभाऊ । ७।७।५११

+ + +

काहु कै जौ सुनहिं बड़ाई ।

स्वास लेहिं जनु जूड़ी आई ।। ७।१८।५११

बसन्तन्ह — जगनृपती

सुनहु बसन्तन्ह केर सुभाऊ । ७।७।५११

+ + +

जौ काहु कै देखहिं बिपती ।

सुखी भए मानहुं जग नृपती ।। ७।१६।५११

बसन्तन्ह — अवगुन सिन्धु

सुनहु बसन्तन्ह केर सुभाऊ । ७।७।५११

+ + +

अवगुन सिन्धु मंद मति कामी । ७।२३।५११

उपमेय		उपमान
असन्तन्ह		कुठार
	संत असन्तन्ह कै असि करनी ।	
	जिमि कुठार चंदन आचरनी ।।	७।१७।५१२
असाधू		सुरा
	सुधा सुरा सम साधु असाधू ।	१।२३।४
अहंकार (राम का)		सिव
	अहंकार सिव बुद्धि अज	६।७।४११
अहंकार		अरुआ (रौग विशेष)
	अहंकार अति दुखद डमरुआ ।	७।१७।५६२
मुनि अकुलाइ (आकुल मुनि)		हीन मनि फनिबर (मणिहीन फणिव
	मुनि अकुलाइ उठा तब कैसें ।	
	बिकल हीनमनि फनिबर जैसें ।।	३।१४।३२६

उपमेय	उपमान

आचरनु~आचरण (भरत का) — दिनेसू

परम पुनीत भरत आचरनू ।

\+ + +

हरन कठिन कलि कलुष कलेसू ।

महा मोह निसि दलन दिनेसू ।। २।६।३१८

आचरनू~आचरण (भरत का) — मृगराजू

परम पुनीत भरत आचरनू । २।५।३१८

\+ + +

पाप पुंज कुंजर मृगराजू ।। २।७।३१८

आचरनू~आचरण (भरत का) — सुधाकर सारू

परम पुनीत भरत आचरनू । २।५।३१८

\+ + +

जन रंजन भंजन भवभारू ।

राम सनेह सुधाकर सारू ।। २।८।३१८

आनन (कैकेयी का) — चंद

मनु तम आनन चंद चकोरू । २।४।१६०

आनन (राम का) — अनल

आनन अनल अंबुपति जीहा । ६।४।४११

उपमेय		उपमान
आयत लोचनं (राम के)		राजीव
	राजीव आयत लोचनं	३।२१।३४३
आरत :आर्त लोग: (अयोध्या के)		जुआरिहि
	आरत कहहिं बिचारि न काऊ ।	
	सूझ **जुआरिहि** आपन दाऊ ॥	२।१५।२८६
आश्रम (राम का)		सागर
	आश्रम **सागर** सांत रस	२।२३।२६६
आसनु (राम का)		परमारथु (परमार्थ)
	भरत दीस प्रभु आसनु पावन ।	२।११।२८८
	+ + +	
	जनु जोगी **परमारथु** पावा ॥	२।१२।२८८
अहारू		अमिअं (अमिय)
	कंद मूल फल **अमिअं** अहारू ।	२।५।२०७
इंद्री (दशरथ की)		सरसिज बन बिनु बारी (जलविहीन कमल बन)
	इंद्रीं सकल बिकल भईं भारी ।	
	जनु सर **सरसिज बन बिनु बारी** ॥	२।११।२४४

उपमेय		उपमान
उर (मंथरा का)		पाहन
	कपट छुरी उर पाहन टेई ।	२।७।१८८
उर (भरत का)		कुलिश
	कुलिश कठिन उर भयउ न बेहू ।	२।१२।२११
उर		गृह
	उर गृह बैठि ग्रंथि निरुवारा ।	७।१६।५५८
उर		गृह
	जब सौ प्रभंजन उर गृह जाई	७।५।५५६
ऊसर		हरिजन हियं
	ऊसर बरषै तृन नहि जामा । जिमि हरिजन हियं उपज न कामा ।	४।६।३६२
अंग (राम के)		अनंग
	संग्राम अंगन राम अंग अनंग बहु सोभा लही ।	६।२७।४७१
अंग अंग		अपर लोक
	अपर लोक अंग अंग बिश्रामा ।	६।२१।४१०

उपमेय		उपमान
अंगद		पंचानन
	अंगद दीख दसानन कैसा ।	६।१३।४१३
	+ + +	
	जथा मत्त गज जूथ महुं , पंचानन चलि जाइ ।	६।१८।४१३
अंबक (आंख)		अंबुज
	नव अंबुज अंबक छबि नीकी ।	१।८।७६
अंबक (आंख)		अंभोज
	अंभोज अंबक अंबु उमगि सुअंग पुलकावलि छई ।	१।१६।१५५
कच (राम के)		घनमाला
	नखत दिवाकर कच घनमाला ।	६।२२।४१०
कटि (राम की)		केहरि कटि
	सोभा सींव सुभग दोउ बीरा ।	१।३।११६
	+ + +	
	केहरि कटि पट पीत धर	१।११।११६
कटि (लछमण की)		केहरि कटि
	सोभा सींव सुभग दोउ बीरा ।	१।३।११६
	+ + +	
	केहरि कटि पट पीत धर ।	१।११।११६

उपमेय		उपमान
कटु वचन (कैकेई के)		लोन
	अति कटु बचन कहति कैकेई ।	
	मानहुं लोन जरे पर देई ॥	२।५।१६२
कटु :वचन: (कैकेई के)		माहुरु
	पुनि कह कटु कठोरु कैकेई ।	
	मानहुं घाय महुं माहुरु देई ॥	२।३।१६४
कथा (राम की)		तरनी
	करौं कथा भव सरिता तरनी ।	१।३।२०
कथा (राम की)		भरनी (भरणी मंत्र)
	राम कथा कलि पन्नग भरनी ।	१।५।२०
कथा (राम की)		अरनी
	राम कथा कलि पन्नग भरनी ।	
	पुनि बिबेक पावक कहुं अरनी ॥	१।५।२०
कथा (राम की)		कामद गाई
	राम कथा कलि कामद गाई ।	१।६।२०

उपमेय		उपमान
कथा (राम की)		सजीवनि मूरि
	राम कथा कलि कामद गाई ।	
	सुजन सजीवनि मूरि सुहाई ।।	१।६।२०
कथा (राम की)		सुधा तरंगिनि
	राम कथा कलि कामद गाई ।	१।६।२०
	+ + +	
	सोइ बसुधा तल सुधा तरंगिनि ।	१।७।२०
कथा (राम की)		भुअंगिनि
	राम कथा कलि कामद गाई ।	१।६।२०
	+ + +	
	भयभंजनि भ्रम भेक भुअंगिनि ।	१।७।२०
कथा (राम की)		असुर सेन (राक्षसों की सेना)
	राम कथा कलि कामद गाई ।	१।६।२०
	+ + +	
	असुर सेन सम नरक निकंदिनि ।	१।८।२०
कथा (राम की)		गिरिनन्दिनि
	राम कथा कलि कामद गाई ।	१।६।२०
	+ + +	
	साधु बिबुध कुल हित गिरिनंदिनि ।	१।८।२०

उपमेय		उपमान
कथा (राम की)		रमा
	राम कथा कलि कामद गाई ।	१।६।२०
	+ + +	
	संत समाज पयोधि रमा सी ।।	१।६।२०
कथा (राम की)		छमा (पृथ्वी)
	राम कथा कलि कामद गाई ।	१।६।२०
	+ + +	
	विस्व भार भर अचल छमा सी ।।	१।६।२०
कथा (राम की)		जमुना
	राम कथा कलि कामद गाई ।	१।६।२०
	+ + +	
	जम गन मुँह मसि जग जमुना सी ।	१।१०।२०
कथा (राम की)		कासी
	राम कथा कलि कामद गाई ।	१।६।२०
	+ + +	
	जीवन मुकुति हेतु जनु कासी ।।	१।१०।२०

उपमेय		उपमान
कथा (राम की)		तुलसी
	राम कथा कलि कामद गाई ।	१।६।२०
	+ + +	
	रामहि प्रिय पावनि तुलसी सी ।	१।११।२०
कथा (राम की)		तुलसी
	राम कथा कलि कामद गाई ।	१।६।२०
	+ + +	
	तुलसिदास हित हिय हुलसी सी ।।	१।११।२०
कथा (राम की)		मेकल सैल सुता (नर्मदा)
	राम कथा कलि कामद गाई ।	१।६।२०
	+ + +	
	सिव प्रिय मेकल सैल सुता सी ।	१।१२।२०
कथा (राम की)		अदिति
	राम कथा कलि कामद गाई ।	१।६।२०
	+ + +	
	सदगुन सुर गन अंब अदिति सी ।	१।१३।२०

उपमेय		उपमान
कथा (राम की)		प्रेम परिमिति
	राम कथा कलि कामद गाई ।	१।६।२०
	+ + +	
	रघुबर भगति प्रेम परिमिति सी ।।	१।१३।२०
कथा (राम की)		मंदाकिनी
	रामकथा मंदाकिनी, चित्रकूट चित चारु।	१।१४।२०
कथा (राम की)		सुरधेनु
	रामकथा सुरधेनु सम	१।१२।६१
कथा (राम की)		पावनि गंगा
	पूछेहु रघुपति कथा प्रसंगा ।	
	सकल लोक जग पावनि गंगा ।।	१।२३।६०
कथा (राम की)		करतारी
	रामकथा सुंदर करतारी ।	१।१४।६१
कथा (राम की)		कुठारी
	रामकथा कलि बिटप कुठारी ।	१।१५।६१

उपमेय	उपमान
कथा (राम की)	सरि नाना (सरिताएं)

जिन्हकें श्रवन समुद्र समाना ।
कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना ।। २।१०।२३३

कथा (राम की)	सजीवन मूरी

राम कथा गिरिजा मैं बरनी ।
कलिमल समनि मनोमल हरनी ।।
संसृति रोग सजीवन मूरी । ७।१२।५६७

कथा (रघुबीर की)	सुधा

नाथ तवानन ससि स्रवत, कथा सुधा रघुबीर ।
७।१६।५२७

कथा (राम की)	सुधा

कथा सुधा मथि काढहिं ७।२।५६१

कपट	ईंधन

कुपथ कुतरक कुचालि कलि, कपट दंभ पाखंड ।
दहन राम गुन ग्राम जिमि, ईंधन अनल प्रचंड ।। १।५।२१

कपट (मंथरा का)	छुरी

कपट छुरी उर पाहन टेई । २।७।१८८

उपमेय		उपमान
कपट (कैकेयी का)		जलु
	पाइ कपट जलु अंकुर जामा ।	२।२२।१८८
कपाटा < कपाट		कुलिस
	सुभग द्वार सब कुलिस कपाटा ।	१।४।१०८
कपि :अंगद:		कुंजरहि
	कपि कुंजरहिं बोलि लै आए ।	६।१२।४१२
कपि		केहरी
	धाएउ कपि केहरी असंका ।	६।१०।४२४
कपि		कृतांत
	क्रुद्ध कृतांत समान कपि, तनु स्रवत सोनित राजहीं ।	६।६।४५३
कपि :हनुमान:		गरुड़
	देखि प्रताप न कपि मन संका । जिमि अहिगन महुं गरुड़ असंका ।।	५।५।३८२
कपिकुल		देस
	कपिकुल देस चरन जब चहहीं ।	६।८।४४४

उपमेय		उपमान
कपि चरन		संत कर मन (संत का मन)

भूमि न छांड़त कपि चरन, देखत रिपु मद भाग ।
कोटि बिघ्न तें संत कर, मन जिमि नीति न त्याग ।।
६।६।४२३

कपिंदा		पच्छजुत गिरिंदा
	राम कृपा बल पाइ कपिंदा ।	
	भए पच्छजुत मनहुं गिरिंदा ।।	५।२०।३८८
कपि भालु		काल
	हत कपि भालु काल सम बीरा ।	६।६।४४६
कपि लंगूर		इंद्रधनु
	कपि लंगूर बिपुल नभ छाए ।	
	मनहु इंद्र धनु उए सुहाये ।।	६।१।४५८
कपि भट्टा		घन घट्टा
	देखि चले सन्मुख कपि भट्टा ।	
	प्रलय काल के जनु घन घट्टा ।।	६।१८।४५७
कंध (राम के)		बालकेहरि
	कंध बाल केहरि दर ग्रीवा ।	७।१६।५३०

उपमेय		उपमान
कर		सरोज
	कर सरोज जयमाल	१।२२।७०
कर (राम के)		कंजा~ कंज
	सिर परसे प्रभु निज कर कंजा ।	१।२३।७६
कर (सीता का)		सरोज
	कर सरोज जयमाल सुहाई ।	१।१५।१३०
कर (राम का) : अप्रस्तुत :		जलजु
	अरुन पराग जलजु भरि नीके ।	१।५।१६०
कर (राम के)		कमल
	बोले राम कमल कर जोरी ।	२।१।१८३
कर (राम तथा लछमण के)		कमलनि
	सोहहिं कर कमलनि धनु तीरा ।	२।२१।२२७
कर (रघुराई के)		कमल
	तब कर कमल जोरि रघुराई ।	२।२५।२३१

उपमेय	उपमान
कर (भरत के)	कमल
भरतु कमल कर जोरि, धीर धुरंधर धीर धरि ।	२।८।२५४
कर (राम के)	कमलनि
कर कमलनि धनु सायकु फेरत ।	२।१०।२८९
कर (सीता के)	कमल
सिर कर कमल परसि बैठाए ।	२।२०।२८२
कर (राम का)	सरोज
कर सरोज सिर परसेउ	३।३।३४३
कर (प्रभु राम का)	पंकज
प्रभु कर पंकज कपि कें सीसा ।	५।२१।३७७
कर (रावण के)	कमलन्हि
पुनि नभ सर मम कर निकर, कमलन्हि पर करि बास ।	६।१३।४१३
कर (रावण के)	कमलन्हि
गहि मालु बसिहु कर मनहुं, कमलन्हि बसे निसि मधुकरा ।	६।४।४५७

उपमेय		उपमान
कर (राम का)		सरोज
	कर सरोज प्रभु मम सिर धरेऊ।	७।१०।५३४
कर		कमल
	निज कर कमल परसि मम सीसा।	७।२२।५५४
करन्हि ~ कर (रावण के)		कमल वन
	गहि न जाहिं करन्हि पर फिरहीं। जनु जुग मधुप कमल बन चरहीं॥	६।१०।४६६
करम कथा (कर्म कथा)		रविनन्दिनि (यमुना)
	करम कथा रविनन्दिनि बरनी।	१।५।३
कल्पना (राम की)		जगमय
	जगमय प्रभु का बहु कल्पना	६।६।४११
कलस		इंदु
	नृप गृह कलस सो इंदु उदारा।	१।४।१६
कलि		ईंधन
	कुपथ कुतरक कुचालि कलि, कपट दंभ पाखंड। दहन राम गुन ग्राम जिमि, ईंधन अनल प्रचंड॥	१।५।२१

उपमेय		उपमान
कलिकालु		कनककशिपु
	कनककशिपु कलिकालु	१।९७।१७
कलिकाल		मलायतन
	सेइ कलिकाल मलायतन	६।७।४८६
कलेवर (राम का)		मरकत
		(मरकत मणि)
	मरकत मृदुल कलेवर स्यामा ।	७।८।५३०
कवि (कोविद)		मानस मराल
	कवि कोविद रघुवर चरित, मानस मंजु मराल ।	१।५।११
कवित ~ कविता		१. मनि
		२. मानिक
		३. मुकुता
	जदपि कवित रस एकौ नाहीं ।	
	राम प्रताप प्रगट येहि माहीं ।।	
	+ + +	
	मनि मानिक मुकुता छवि जैसी ।	१।९७।८

उपमेय		उपमान
कविता		भूति मसान की
	गति कूर कविता सरित की	१।१०।८
	+ + +	
	मय अंग भूति मसान की	१।१२।८
कविता		सरिता
	चली सुभग कविता सरिता सी ।	१।२।२५
कविता सरित की गति		पावन पाथ की (गति)
	गति कूर कविता सरित की, ज्यौं सरित पावन पाथ की ।	१।१०।८
काम		बात
	काम बात कफ लोभ अपारा ।	७।१२१।५६२
काम क्रोध		कैरव
	काम क्रोध कैरव सकुचाने ।	७।१६।५०६
कामादि		सैनापति
	सैनापति कामादि भट	७।१२१।५२७

उपमेय		उपमान
कामरिपु		सांत रसु (शान्त रस)
	बैठे सोह काम रिपु कैसें । धरें सरीरु सांत रसु जैसें ।।	१।१३।५८
कामिहिं		मोहिं (तुलसी)
	कामिहिं नारि पिआरि जिमि, लोभि प्रिय जिमि दाम । तिमि रघुनाथ निरंतर, प्रिय लागहु मोहि राम ।।	७।२४।५६८
कामी		काक
	जे कामी लोलुप जग माहीं । कुटिल काक इव सबहि डेराहीं ।।	१।१८।६६
काल कराल		ब्याल
	काल कराल ब्याल खगराजहिं	७।५।५०७
कास		बुढ़ाई
	फूले कास सकल महि छाई । जनु बरषा कृत प्रगट बुढ़ाई ।।	४।१४।३६२

उपमेय		उपमान
क्यारी < क्यारी		नारी
	महावृष्टि चलि फूटि क्यारी ।	
	जिमि सुतंत्र भएँ बिगरहिं नारी ।।	४।३।३६२
कृपान		दामिनी
	बहु कृपान तरवारि चमकहि ।	
	जनु दह दिसि दामिनी दमकहि ।।	६।९९।४५७
कृपाला : राम :		तमाला
	मुनिहि मिलत अस सोह कृपाला ।	
	कनक तरु हि जनु भेंट तमाला ।।	३।१८।३२६
कृषी निरावहिं		तजहिं मोह मद मान
	कृषी निरावहिं चतुर किसाना ।	
	जिमि बुध तजहिं मोह मद माना ।।	४।४।३६२
किंकिनि धुनि		दुंदुभी
	कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि ।	
	कहत लखन सन राम हृदय गुनि ।।	
	मानहुं मदन दुंदुभी दीन्ही ।।	१।१८।११४

उपमेय | उपमान

कीरति सरि | सुरसरि

जिमि सुरसरि कीरति सरि तोरी । २।२२।३०९

कुंअरि | राजमराल

सखी संग लै कुंअरि तब चलि जनु राजमराल । १।२९।७०

कुचालि | ईंधन

कुपथ कुतरक कुचालि कलि, कपट दंभ पाखंड ।
दहन राम गुन ग्राम जिमि, ईंधन अनल प्रचंड ।। १।५।२९

कुठारा | अनल

दहन अनल सम जासु कुठारा । ६।५।४१८

कुतरक < कुतर्क | ईंधन

कुपथ कुतरक कुचालि कलि, कपट दंभ पाखंड ।
दहन राम गुन ग्राम जिमि, ईंधन अनल प्रचंड ।। १।५।२९

कुपथ | ईंधन

कुपथ कुतरक कुचालि कलि, कपट दंभ पाखंड ।
दहन राम गुन ग्राम जिमि, ईंधन अनल प्रचंड ।। १।५।२९

उपमेय		उपमान
कुवलय विपिन		कुंतवन
	कुवलय बिपिन कुंत बन सरिसा ।	५।१५।३७६
कुबुद्धि		मूठि
	मूठि कुबुद्धि धार निठुराई ।	२।६।१६२
कुभोग		सरैन < सर
	मृग लोग कुभोग सरैन हिये	७।५।४६८
कुंभकरन		गज
	कुंभकरन आवत रनधीरा ।	
	+ + +	
	जिमि गज अर्क फलन्हि को मारा ।	६।१०।४४१
कुंभकरन		गजराज
	कुंभकरन मन दीख बिचारी ।	
	हनी निमिष महं निसिचर धारी ।।	६।१३।४४३
	+ + +	
	महि पटकइ गजराज इव	६।५।४४४

उपमेय		उपमान
कुंभकरन		कूक
	कुंभकरन मन दीख बिचारी ।	
	हती निमिष महं निसिचर धारी ।	६।९३।४४३
	+ + +	
	कूक बिलोकि जिमि मेष बरूथा ।	६।६।४४४
कुमति (कैकेई की)		मुंह
	मुंह मह कुमति कैकेयी केरी ।	२।२१।१८८
कुमति : कैकेयी :		कुविहंग (बाज)
	बात दृढ़ाइ कुमति हंसि बोली ।	
	कुमत कुविहंग कुलह जनु खोली ।।	२।६।१६१
कुमति : कैकेयी :		अनल
	सुनि मृदु बचन कुमति अति जरई ।	
	मनहुं अनल आहुति घृत परई ।।	२।८।१६३
कुल (रावण का)		सलभ
	होइहि सलभ सकल कुल तोरा ।	३।१६।३९१
केश (कुटिल)		मधुप
	कुटिल केश जनु मधुप समाजा ।	१।१०।७६

उपमेय		उपमान
केसरी		ससि
	ससि केसरी गगन बन चारी ।	६।६।४०६
कैकेई		गजगामिनि
	साँझ समय सानंद नृपु, गयउ कैकेयी गेह ।	२।२१।१८६
	+ + +	
	कारन मोहि सुनाउ गजगामिनि जिन कोप कर ।	२।२६।१८६
कैकेई		किरातिनि
	भूषन सजति बिलोकि मृगु मनहुं किरातिनि फंद ।	२।२०।१६०
कैकेई		किरातिनि
	बिधि कैकेई किरातिनि कीन्ही।	२।२६।२१४
कैकेई		किराती
	कैकेई हरषित येहि भांती । मनहुं मुदित दव लाइ किराती ।।	२।२६।२७६
कैकेई		कुठारी
	भइ दिनकर कुल बिटप कुठारी ।	२।३।२२८

उपमेय	उपमान
कैकई	निठुरता

सांझ समय सानंद नृपु, गयउ कैकई गेह ।
गवनु निठुरता निकट किए जनु धरि देह सनेह ।। २।१२।१८६

कैकई	भिल्लिनि

सांझ समय सानंद नृपु, गयउ कैकई गेह । २।१२।१८६
+ + +
भिल्लिनि जिमि छाड़न चहति । २।८।१६१

कैकय सुता (कैकेयी)	उकठ कुकाठु (उकठा हुआ काठ)

कैकय सुता सुनत कटु बानी । २।११।१८७
+ + +
जिमि न नवइ फिरि उकठ कुकाठू । २।१४।१८७

कैकय सुता (कैकेई)	कदली

कैकय सुता सुनत कटु बानी ।
+ + +
तन पसेउ कदली जिमि कांपी । २।१२।१८७

कैकेई	करिनि

सांझ समय सानंद नृपु, गयउ कैकेई गेह । २।१२।१८६
+ + +
फारत करिनि जिमि हतेउ समूला । २।१६।१९९

उपमेय		उपमान
कैकेई		बघिका
	अवध उजारि कीन्ह कैकेई ।	
	दीन्हिसि अचल बिपति कैकेई ।	२।१७।१९१
	+ + +	
	जतिहिं बघिका नास ।।	२।१९।१९१
कैकेई		तरवारि
	अति कटु बचन कहति कैकेई ।	
	+ + +	
	मनहुं रोष तरवारि उघारी ।।	२।८।१९२
कैकेई (उठि ठाढ़ी)		रोष तरंगिनि
	अति कटु बचन कहति कैकेई ।	
	मानहुं लोन जरे पर देई ।।	२।५।१९२
	+ + +	
	अस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी ।	
	मानहुं रोष तरंगिनि बाढ़ी ।।	२।१५।१९३
कैकेई		कुठारी
	अति कटु बचन कहत कैकेई ।	
	+ + +	
	जनि दिनकर कुल होसि कुठारी ।	२।२०।१९३

उपमेय		उपमान
कैकेई		मसानु
	पुनि कह कटु कठोर कैकेई ।	२।३।१९४
	+ + +	
	जागति मनहुं मसानु ॥	२।२०।१९४
कैकेई		बिपति बिषाद बसेरा
	भूप प्रीति कैकइ कठिनाई ।	
	+ + +	
	मानहुं बिपति बिषाद बसेरा ॥	२।११।१९५
कैकेई		सिंघिनिहि
	पुनि कह कटु कठोर कैकेई ।	
	+ + +	
	सहमि परेउ लखि सिंघिनहिं,	
	मनहुं बृद्ध गजराजु ।	२।४।१९६
कैकेई (सरुषा)		मीचु
	सरुष समीप दीखि कैकेई ।	
	मानहुं मीचु घरी गनि लेई ॥	२।६।१९६
कैकेई		कठोरपन धरे सरीर
	सरुष समीप दीखि कैकेई ।	२।६।१९६
	+ + +	
	मनु कठोरपनु धरे सरीरू ॥	२।१७।१९६

उपमेय		उपमान
कैकेई		निठुराई
	सरुष समीप दीखि कैकेई ।	
	+ + +	
	बैठि मनहुं तनु धरि निठुराई ।	२।१८।१९९
कैकेई		जोंक
	सरुष समीप दीखि कैकेई ।	२।६।१९९
	+ + +	
	चलइ जोंक जल वक्र गति, जद्यपि सलिलु समान ।	२।१०।१९७
कैकेई		बाधिनि
	सरुष समीप दीखि कैकेई ।	२।६।१९९
	+ + +	
	मृगन्हि चितव जनु बाधिनि भूली ।	२।२४।२००
कैकेयी		कठपुतली
	कूबरी करि कबुली कैकेयी ।	२।७।१९८
कैकेयी		बहे जात (बहता हुआ व्यक्ति)
	कूबरी करि कबुली कैकेयी ।	२।७।१९८
	+ + +	
	तोहि सम हितु न मोर संसारा ।	
	बहे जात कइ भइसि अधारा ।।	२।१८।१९८

उपमेय		उपमान
कैकयनंदिनि		चंदिनि < चांदनी
	नावत सुत सुनि कैकय नंदिनि ।	
	हरषी रविकुल जलरुह चंदिनि ।।	२।१३।२४६
कोट		मेरु
	कोट कंगूरन्हि सोहहिं कैसे ।	
	मेरु के सृंगनि जनु घन बैसे ।।	६।१०।४३७
कोटि कोटि कपि		टीडी
	कोटि कोटि कपि धरि धरि खाई ।	
	जनु टीडी गिरि गुहां समाई ।।	६।१२।४४२
कोदंड कठिन चढ़ाइ सिर		मरकत सयल पर लसत दामिनि
	कोदंड कठिन चढ़ाइ सिर जटजूट बांधत सोह क्यों । मरकत सयल पर लसत दामिनि कोटि सों जुग भुजग ज्यों । 3/८/33	
क्रोध		अनल
	रावन क्रोध अनल निज	५।२४।३६५
क्रोध		पित्त
	क्रोध पित्त नित छाती जारी ।	७।१२१।५६२

उपमेय		उपमान
कोपु		कृसानु
	भृगुबर कोपु कृसानु	१।१४।१३६
कोपु		कृसानु
	कोपु मोर अति घोर कृसानू ।	१।१२।१३६
कोल किरात		मरु धरनि (मरु प्रदेश)
	कोल किरात भिल्ल बनबासी । + + + हमहिं अगम अति दरसु तुम्हारा । जस मरु धरनि देवसरि धारा ।।	२।१०।२८६
कौसलराज		तमाल
	तेहिं मध्य कौसलराज सुंदर,स्याम तन सोभा लही । जनु इंद्रधनुष अनेक की, बर बारि तुंग तमाल ही ।।	६।२०।४६६
कौसल्या		दिसि प्राची (पूर्व दिशा)
	बंदौं कौसल्या दिसि प्राची ।	१।६।१२

उपमेय		उपमान
कौसिलहं (कौसिल्या)		कद्रू
कद्रू बिनतहिं दीन्ह दुख, तुम्हहिं कौसिलहं देब ।	२।६।१८७	
कौसिल्या (माता)		धनद
गए मातु पहिं रामु गोसाईं ।	२।१०।२०१	
+ + +		
रंक धनद पदवी जनु पाईं ।।	२।१४।२०१	
कौसिल्या (माता)		जवास
बचन बिनीत मधुर रघुबर के ।		
सर सम लगे मातु उर करके ।।		
सहमि सूखि सुनि सीतलि बानी ।		
जिमि जवास परें पावस पानी ।।	२।७।२०२	
कौसिल्या		मृगी
कहि न जाइ कछु हृदय बिषादू ।		
मनहुं मृगी सुनि केहरि नादू ।।	२।८।२०२	
कंकन धुनि		दुंदुभी
कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि ।		
कहत लखन सन रामु हृदय गुनि ।।	१।१८।११४	
मानहुं मदन दुंदुभी दीन्ही ।।	१।१८।११४	

उपमेय		उपमान
कंगूरन्हि		घन
	कोटि कंगूरन्हि सोहहिं कैसे ।	
	मेरु के शृंगनि जनु घन बैसे ।।	६।१०।४२७
कंठ (बालकों का)		कंबु कंठ
	कंबु कंठ अति चिबुक सुहाई ।	१।२२।१००
कंठ (राम का)		केकि कंठ
	केकि कंठ दुति स्यामल अंगा ।	१।२४।१५३
कंध (राम के)		वृषभ कंध
	वृषभ कंध केहरि ठवनि	१।८।१२१
कंध (लक्ष्मण के)		वृषभ कंध
	वृषभ कंध केहरि ठवनि	१।८।१२१
कंध (परशुराम के)		वृषभ कंध
	वृषभ कंध उर बाहु बिसाला ।	१।१६।१३२
कंधर (राम के)		केहरि कंधर
	केहरि कंधर बाहु बिसाला ।	१।११।११०

उपमेय		उपमान
कंधर (लक्ष्मण के)		केहरि कंधर
	केहरि कंधर बाहु बिसाला ।	१।११।११०
कंधर (विष्णु)		केहरि कंधर
	केहरि कंधर चारु जनेऊ ।	१।१२।७६
कंद मूल फल		अमी
	कंद मूल फल अंकुर नीके ।	
	दिये आनि मुनि मनहुं अमी के ।।	२।१२।२२४
कंद मूल फल		अमिअ
	असनु अमिअ सम कंद मूल फल ।	२।१५।२३८
कंद मूल फल		सुधा
	दल फल मूल कंद बिधि नाना ।	
	पावन सुंदर सुधा समाना ।।	२।१७।२४८
कंद मूल फल		अमिअ
	असनु अमिअ सम कंद मूल फल	२।२।२६६
कम (धावा)		पवि
	धावा क्रोधवंत खग कैसे ।	
	छूटै पवि पर्बत कहुं जैसे ।।	३।१।३४१

उपमेय		उपमान
खग		नागरि ~ नाविक
	बहु भट बहहिं चढ़े खग जाहीं ।	
	जनु नागरि खेलहिं सर माहीं ॥	६।१८।४५८
खगमृग		परिजन
	खग मृग परिजन नगरु बनु ।	२।१।२०७
खगमृग		सेवी
	खग मृग बदन सरोरुह सेवी ।	२।३।२०३
खद्योत		दंभिन्ह
	निसि तम घन खद्योत बिराजा ।	
	जिमि दंभिन्ह कर मिला समाजा ॥	४।२।३६२
खंजन		सुकृत
	जानि सरद रितु खंजन आए ।	
	पाइ समय जिमि सुकृत सुहाए ॥	४।१८।३६२
खल		पृथुराज
	बंदौं खल जस सेष सरोषा ।	१।१२।४
	+ + +	
	पुनि बंदौं पृथुराज समाना ॥	१।१३।४

उपमेय		उपमान
खल		रेण सरीषा
	बंदी खल जस रेण सरीषा	१।१२।४
खल		सक्र
	बंदी खल जस रेण सरीषा ।	१।१२।४
	+ + +	
	बहुरि सक्र सम बिनवौं तेही ।	१।१४।४
खल		बायस
	सुनत बरहिं खल रीति	१।१६।४
	+ +	
	बायस पलिअहि अति अनुरागा ।	१।१६।४
खल		काक
	खल परिहास होइ हित मोरा ।	
	काक कहहिं कलकंठ कठोरा ॥	१।७।७
खल		१. दादुर २. बक
	हंसहि बक दादुर चातक ही ।	
	हंसहिं मलिन खल बिमल बतकही ।	१।८।७

उपमेय		उपमान
खल (राक्षसगण)		सलभ
	प्रभु सन्मुख धाए खल कैसें । सलभ समूह अनल कहं जैसें ।।	६।४।४५७
खल		मंदरगिरि
	काटे भुजा सोह खल कैसा । पच्छहीन मंदरगिरि जैसा ।।	६।१६।४४४
खल :रावण:		पतंग
	खल कुल सहित पतंग	५।१४।३६६
खल		बन
	कालरूप खल बन दहन ।	६।५।४३२
खल		सन
	सन इव खल पर बंधन करई ।	७।२१।५६१
खल		१. अहि २. मूषक ३. हिम ४. उपल
	खल बिनु स्वारथ पर अपकारी । अहि मूषक इव सुनु उरगारी ।।	७।२२।५६१
	जिमि ससि हति हिम उपल बिलाहीं	७।२१।५६२

उपमेय		उपमान
खल के प्रिय बानी		अकाल कुसुम
	भयदायक खल कै प्रिय बानी ।	
	जिमि अकाल के कुसुम भवानी ।।	१।२।३३८
खलगन		१. अघ
		२. धनेसा
		३. केतु
		४. कुंभकरन
		५. हिम उपल
	बहुरि बंदि खलगन सतिभायें ।	१।५।४
	+ + +	
	अघ अवगुन धन धनी धनेसा ।।	१।६।४
	उदै केतु सम हित सबही के ।	
	कुंभकरन सम सोवत नीके ।।	१।१०।४
	पर अकाज लगि तनु परिहरहीं ।	
	जिमि हिम उपल कृषी दलि गरहीं ।।	१।११।४
खलगन		१. राहु
		२. सहसबाहु
	बहुरि बंदि खलगन सतिभायें ।	१।५।४
	+ + +	
	हरि हर जस राकेस राहु से ।	
	पर अकाज भट सहसबाहु से ।।	१।७।४
खलगन : तेज :		१. कृसानु
: रोष :		२. महिषेसा

उपमेय		उपमान
	बहुरि बंदि खलगन सतिभायें ।	१।५।४
	+ + +	
	तेज कृसानु रोष महिषेषा ।।	१।६।४

ग :

गज		१. काम
		२. क्रोध
		३. मद
	काम क्रोध मद गज पंचानन ।	६।४।४८२
गजजूथ		प्रावृट जलद
	चले मत्त गज जूथ घनेरे ।	
	प्रावृट जलद मरुत जनु प्रेरे ।।	६।१।४५१
गजरथ तुरग चिकार		बलाहक घोरा
	गजरथ तुरग चिकार कठोरा ।	
	गर्जत मनहुं बलाहक घोरा ।।	६।२०।४५७
गमन (सखियों का)		कुंजरगामिनीं
	चलि ल्याइ सीतहिं सखी सादर सजि सुमंगल भामिनीं ।	
	नवसप्त साजे सुंदरी सब मत्त कुंजर गामिनीं ।।	१।२१।१५७

उपमेय		उपमान
गवनी (गमन)		बालमराल गति
	सीता गमनु राम पहिं कीन्हा ।	१।११।१३०
	+ + +	
	गवनी बाल मराल गति	१।१३।१३०
गवन (गमन)		सांझ
	राज्य गवनु सुनि सब बिलखाने ।	
	मनहु सांझ सरसिज सकुचाने ।।	१।११।१६५
गात (राम का)		पाथोद
	पाथोद गात सरोज मुख	३।२१।३४३
गात (राम का)		नव अंबुधर
	नव अंबुधर बर गात	७,४।४६६
ग्राम्य गिरा		स्याम सुरभि
	स्याम सुरभि पय बिसद अति, गुनद करहिं सब पान । गिरा ग्राम्य सिय राम जस, गावहिं सुनहिं सुजान ।।	१।१५।८
गिरा		सुधा
	हरषि सुधा सम गिरा उचारी।	१।२१।६०
गिरा		ससिकर
	ससि कर सम सुनि गिरा तुम्हारी ।	१।१।६४
गिरि		संत
	बूंद अघात सहहिं गिरि कैसे ।	
	खल के बचन संत सह जैसे ।।	४।१२।३६१

उपमेय		उपमान
गिरि गुहा		पूरबदिसि
	पूरब दिसि गिरि गुहा निवासी ।	६।५।४०६
गिरिजा		राम भगति
	सोह सैल गिरिजा गृह आएं ।	
	जिमि जनु राम भगति के पाएं ।।	१।९०।३७
गिरिबर राज किसोरी :पार्वती:		चकोरी
	जय जय गिरिबर राज किसोरी ।	
	जय महेस मुख चंद चकोरी ।।	१।७।११७
गिरि सिखर		अर्क फलन्हि
	कोटि कोटि गिरि सिखर प्रहारा ।	६।६।४४१
	+ + +	
	जिमि गज अर्क फलन्हि को मारा ।	६।९०।४४१
गिरि सिला		रथ
	रथ गिरि सिला दुंदुभी झरना ।	३।१४।३४७
गृह		परद्रोह
	बिसरे गृह सपनेहुं सुधि नाहीं ।	
	जिमि परद्रोह संत मन नाहीं ।।	७।१३।४८८

उपमेय		उपमान
गुन		मनि
	फनि मनि सम निज गुन अनुसरही ।	१।२१।३
गुन		सागर
	भरत शील गुन बिनय बड़ाई ।	
	+ + +	
	सागर सीपि कि जाहिं उलीचे ।	२।६।३००
गुन		बिंजन
	ग्याति हीन गुन सब सुख कैसे ।	
	लवन बिना बहु बिंजन जैसे ।।	७।१।५३५
गुन गावहिं		सायक
	पढ़हि भाट गुन गावहिं गायक ।	
	सुनत नृपहिं जनु लागहिं सायक ।।	२।१।१६५
गुनगन (राम के गुणगण)		अकास
	कहौं तासु गुन गन कछुक, जड़मति तुलसीदास ।	
	निज पौरुष अनुसार जिमि, मसक उड़ाहिं अकास ।।	६।२।४७०
गुनग्राम (राम के)		बिबुध बैद
	जग मंगल गुनग्राम राम के ।	
	+ + +	
	बिबुध बैद भव भीम रोग के ।	१।१८।२०

उपमेय		उपमान
गुनग्राम (राम का)		१. सचिव २. सुभट ३. कुंभज
	जग मंगल गुनग्राम राम के ।	
	+ + +	
	सचिव सुभट भूपति बिचार के ।	
	कुंभज लोभ उदधि अपार के ।।	१।२१।२०
गुनग्राम (राम का)		केहरिसावक
	जग मंगल गुनग्राम राम के ।	१।१७।२०
	+ + +	
	केहरि सावक जन मन बन के ।	१।२२।२०
गुनग्राम (राम का)		१. अतिथि २. कामद घन ३. मंत्र
	जग मंगल गुनग्राम राम के ।	१।१७।२०
	+ + +	
	अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के ।	
	कामद घन दारिद दवारि के ।।	१।२३।२०
	मंत्र महामनि बिषय ब्याल के ।	१।२४।२०

उपमेय	उपमान
गुनग्राम (राम का)	१. दिनकर कर २. जलधर ३. देवतरुवर ४. हरि ५. हर

जग मंगल गुनग्राम राम के । १।१७।२७

\+ + +

हरन मोह तम दिनकर कर से ।

सेवक सालि पाल जलधर से ।। १।२५।२०

अभिमत दानि देवतरुवर से ।

सेवत सुलभ सुखद हरि हर से ।। १।२६।२०

उपमेय	उपमान
गुनग्राम (राम का)	१. उडुगन २. भोग ३. साधु लोग ४. मराल ५. गंग तरंग

जग मंगल गुनग्राम राम के । १।१७।२०

\+ + +

सुकवि सरद नभ मन उडुगन से ।

राम भगत जन जीवन धन से ।। १।१।२१

सकल सुकृत फल भूरि भोग से ।

जग हित निरुपधि साधु लोग से ।। १।२।२१

सेवक मन मानस मराल से ।

पावन गंग तरंग माल से ।। १।३।२१

उपमेय　　　　　　　　　　　　　　　　　　उपमान

गुनग्राम (राम के)　　　　　　　　　　　　　　अनल

दहन राम गुन ग्राम जिमि, ईंधन अनल प्रचंड । २।५।२१

गुनरहित　　　　　　　　　　　　　　　　　　जलु

जो गुन रहित सगुन सोइ कैसें ।

जलु हिम उपल बिलग नहिं जैसें ।। १।१२।६२

गुर　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　अंध

गुर सिष बधिर अंध का लेखा ।

गुर : गुरु बसिष्ठ :　　　　　　　　　　　　　बिबेक सागर

गुर बिबेक सागर जगु जाना । २।१४।२५६

गुरतिय तथा बिप्रतिय　　　　　　　　　　　　गंग गौरि

गुरतिय पद बंदे दुहुं भाईं ।

सहित बिप्रतिय जे संग आईं ।। २।१।२८४

गंग गौरि सम सब सनमानी ।। २।२।२८४

गुर पद　　　　　　　　　　　　　　　　　　पदुम

गुर पद पदुम हरषि सिरु नावा । २।१३।२१३

उपमेय		उपमान
गुह		करम नास जलु
	गाउं जाति गुह नाउं सुनाई ।	
	+ + +	
	करम नासु जलु सुरसरि परई ।	२।१।२६२
गौरि		मूरतिवंत तपस्या
	रिषिन्ह गौरि देखी तहं कैसी ।	
	मूरतिवंत तपस्या जैसी ॥	१।२१।४२
गौर सरीरा		१. कुंद
		२. इंदु
		३. दर
	कुंद इंदु दर गौर सरीरा ।	१।८।५८

: घ :

घन		साधु
	बेद पुरान उदधि घन साधु ।	१।२१।२२
घन		आसा
	बिनु घन निर्मल सोह अकासा ।	
	हरिजन इव परिहरि सब आसा ॥	४।२१।३६२

उपमेय		उपमान
घर		मसान
	घर मसान परिजन जनु भूता ।	२।२५।२२४
घौरे		औरे
	रघु पहिचानि बिकल लखि घौरे ।	
	गरहिं गात जिमि आतप औरे ।।	२।९६।२४१
घौरे		जलमृग
	चरफराहिं बन कलाहिं न घौरे ।	
	जलमृग मनहुं आनि रथ औरे ।।	२।२१।२३६
घहरात		पविपात
	घहरात जिमि पवि पात	६/१८/४३२
घायल बीर		कुसुमित किंसुक के तरु
	घायल बीर बिराजहिं कैसे ।	
	कुसुमित किंसुक के तरु जैसे ।।	६।५।४३५
घायल भट		अर्धजल परे (शव)
	कहरत भट घायल तट गिरे ।	
	जहं तहं मनहुं अर्धजल परे ।।	६।८६।४५८

उपमेय		उपमान
घ्रान (राम नाम की)		अस्विनी कुमारा
	जासु घ्रान अस्विनी कुमारा ।	६।१।४११

: च :

चक्रवाक		धर्म
	देखियत चक्रवाक खग नाहीं ।	
	कलिहि पाइ जिमि धर्म पराही ।।	४।५।३६२
चक्रवाक		दुर्जन
	चक्रवाक मन दुख निसि पैखी ।।	
	जिमि दुर्जन पर संपति देखी ।।	४।६।३६२
चकोर		बर बाजी
	मोर चकोर करि बर बाजी ।	३।१२।३४७
चकोर		हरिजन
	देखि इंदु चकोर समुदाई ।	
	चितवहिं जिमि हरिजन हरि पाई ।।	४।६।३६३

उपमेय		उपमान
चतुर किसाना		बुध
	कृषी निरावहिं चतुर किसाना ।	
	जिमि बुध तजहिं मोह मद माना ।।	४।४।३६२
चतुरंग सैन		समिधि (समिधा)
	समिधि सैन चतुरंग सुहाई ।	
	महा महीप भये पशु आई ।।	१।१३।१३६
चरन (कवियों के)		कमल
	चरन कमल बंदौं तिन्ह केरे ।	१।१२।१०
चरन (राम का)		पंकज
	राम चरन पंकज मन जासू ।	१।१६।१२
चरन (रघुनन्दन के)		कमल
	चरन कमल बंदौं सब लायक ।	१।११।१३
चरन (राम के)		पंकज
	राम चरन पंकज प्रिय जिन्हहीं ।	
चरन (शंकर के)		पंकज
	चरन पंकज गहि रह्यौ ।	१।१९६।५५

उपमेय		उपमान
चरना (शंभु के)		कंजु
	तरुन अरुन कंजु सम चरना ।	१।६।५८
चरन (राम के)		पंकज
	अरु चरन पंकज नख ज्योती ।	१।१७।१००
चरन (रघुबीर का)		कमल
	चरन कमल रज चाहति	१।१०।१०६
चरन (राम के)		सरोरुह
	जिन्ह के चरन सरोरुह लागी ।	१।४।११३
चरन (विश्वामित्र के)		सरोज
	चरन सरोज सुभग सिर नाए ।	१।१०।११६
चरन (विश्वामित्र के)		सरोज
	करि मुनि चरन सरोज प्रनामा ।	१।२२।११८
चरन (जनक के)		सरोज
	चरन सरोज धूरि धरि सीसा ।	१।१०।१६८

उपमेय		उपमान
चरन (गुरु के)		सरोज
	श्री गुरु चरन सरोज रज	२।६।२७६
चरन (राम के)		सरोरुह
	खग मृग चरन सरोरुहसेवी ।	२।३।२०३
चरन (सीता के)		कमल
	चरन कमल मृदु मंजु तुम्हारे ।	२।१६।२०५
चरन (राम के)		सरोज
	छिनु छिनु चरन सरोज निहारी ।	२।१३।२०७
चरन (राम के)		कमल
	चरन कमल रज कहुं सबु कहई ।	२।१४।२२१
चरन (राम के)		सरोज
	चरन सरोज पखारन लागा ।	२।७।२२२
चरन (राम के)		सरोरुह
	चरन सरोरुह नाथ जनि	३।११।३२२

उपमेय		उपमान
चरन (राम के)		कमल
	नहिं दृढ़ चरन कमल अनुरागा ।	३।२।३२६
चरन (राम के)		सरोरुह
	चरन सरोरुह प्रीति अभंगा ।	३।११।३२६
चरन (संतों के)		पंकज
	संत चरन पंकज अति प्रेमा ।	३।५।३३९
चरन (रघुपति के)		कमल
	रघुपति चरन कमल सिरु नाई ।	३।४।३४५
चरन (राम के)		पंकज
	राम चरन पंकज उर धरहू ।	५।७।३८३
चरन (राम के)		जलजाता
	देखिहौं जाइ चरन जलजाता ।	५।१८।३६२
चरन		मोह बिटप
	टरइ न कपि चरन येहि भांती ।	६।६।४२३
	+ + +	
	मोह बिटप नहिं सकहिं उपारी ।।	६।७।४२३

उपमेय		उपमान
चरन (राम के)		पंकज
	आइ चरन पंकज सिरु नाना ।	६।१७।४२५
चरन (राम के)		सरोज
	राम चरन सरोज उर राखी ।	६।३।४३६
चरन (राम के)		पंकज
	बिप्र चरन पंकज सिरु नावा ।	६।७।४६०
चरन (राम के)		अंबुज
	चरनांबुज प्रेम सदा सुभदं ।	६।१६।४७८
चरन (बसिष्ठ के)		सरोरुह
	धाइ धरे गुर चरन सरोरुह ।	७।३।४६१
चरन (राम के)		सरोज
	पुनि पुनि चरन सरोज निहारहिं ।	७।४।५००
चरन (राम के)		नलिन
	चरन नलिन उर धरि गृह आवा ।	७।२१।५०१

उपमेय		उपमान
चरन (राम के)		कमल
	सेवति चरन कमल मन लाई ।	७।१८।५०३
चरन (राम के)		कमल
	चरन कमल बंदित अज संकर ।	७।१७।५०६
चरन (राम के)		बारिज
	राम चरण बारिज जब देखौं ।	७।१६।५५१
चरनपीठ		जामिक
	चरनपीठ करुनानिधान के ।	
	जनु जुग जामिक प्रजा प्रान के ।।	२।४।३१४
चरनपीठ		१. सम्पुट २. आखर जुग ३. कपाट ४. कर ५. नयन
	चरनपीठ करुनानिधान के ।	२।४।३१४
	+ + +	
	संपुट भरत सनेह रतन के ।	
	आखर जुग जनु जीव जतन के ।।	२।५।३१४
	कुल कपाट कर कुसल करम के ।	
	बिमल नयन सेवा सुधरम के ।।	२।६।३१४

उपमेय		उपमान
चरित (राम का)		चिन्तामनि
	रामचरित चिंतामनि चारु ।	१।२०।१६
चरित		सिंगारु
	रामचरित चिंतामनि चारु । संत सुमति तिय सुभग सिंगारू ।।	१।२०।१६
चरित (राम का)		सिंधु
	चरित सिंधु गिरिजारमन	१।५।५७
चरित(राम का)		सुधा
	चरित किए श्रुति सुधा समाना ।	३।२१।३२०
चातक		बंदी
	चातक बंदी गुन गन बरना ।	३।१४।३४७
चातक		संकर द्रोही
	चातक रटत तृषा अति ओही । जिमि सुख लहइ न संकर द्रोही ।।	४।७।३६४
चाप (परसुराम का)		कमलनाल
	कमलनाल जिमि चाप चढ़ावौं ।	१।१६।१२५

उपमेय		उपमान
चाप (परशुराम का)		छत्रक दंड
	कमल नाल जिमि चाप चढ़ावौं ।	
	जोजन सत प्रमान लै धावौं ।।	
	तोरौं छत्रक दंड जिमि,	१।१७।१२५
चाप (परशुराम का)		स्रुवा
	चाप स्रुवा सर आहुति जानू ।	१।१२।१३६
चापु (शंकर का)		पंकजनाल
	भंजेउ चापु प्रयास बिनु, जिमि गज पंकज नाल ।	१।१६।१४३
चारिउ वेद		बोहित
	बंदौं चारिउ वेद, भव बारिधि बोहित सरिस।	१।६।११
चारिदस भुवन		भूधर
	भुवन चारिदस भूधर भारी ।	१।१२,१७६
चाल (नारियों की)		चाल (गज की)
	चलीं मुदित परिछनि करन,	
	गज गामिनि बर नारि ।	१,४।१५५
चाल (सीता की)		हंस गवनि
	हंसगवनि तुम्ह नहिं बन जोगू ।	२।१।२०६

उपमेय		उपमान
चित		चित्रकूट
	चित्रकूट चित चारु	१।१५।२०
चित		अग्निगति
	जाकर चित अग्निगति सम माईं ।	४।८।३५७
चित (राम का)		महान (महत्तत्व)
	मन ससि चित्त महान	६।७।४९१
चित्त		दिआ (दीपक)
	चित्त दिआ भरि धरइ दृढ़	७।१०।५५८
चिंता		साँपिनि
	चिंता साँपिनि को नहिं खाया ।	७।६।५२७
चित्रकूट		अहेरी
	चित्रकूट जनु अचल अहेरी ।	२।१४।२३५
चेरी		कारि साँपिनि
	तबहुं न बोलि चेरि बड़ि पापिनि । छाड़इ स्वास कारि जनु साँपिनि ।।	२।२२।१८४

उपमेय		उपमान
बैरी		बरुणा रितु
	बिपति बीज बरुणा रितु बैरी ।	२।२१।१८८

: छ :

छवि (मुख की)		मकरंद
	मुख सरोज मकरंद छवि	१।१२।११५
छवि (राम की)		काम (कामदेव)
	तन काम अनेक अनूप छवी ।	६।१०७।४७७
छाती		कुलिस
	कुलिस कठोर निठुर सोइ छाती ।	१।१०।६१
छाती		बवाँ
	बवाँ बनल इव सुलगै छाती ।	१।३।८२
छुद्र नदी		खल
	छुद्र नदी भरि चली तोराई । जस थोरेहु धन खल इतराई ।।	४।१३।३६१

उपमेय		उपमान
: ज :		
जगु		पैसन- तमाशा
	जगु पैसन तुम्ह देखनि हारा ।	२।१६।२३२
जगदीसा		अहीसा
	भार धरन सत कोटि अहीसा ।	
	निरवधि निरुपम प्रभु जगदीसा ।।	७।१०।५३६
जट जूट		दामिनि एवं भुजंग
	कौदंड कठिन चढ़ाइ सिर जटजूट बांधत सोह क्यों ।	
	मरकत सयल पर लरत दामिनि, कोटि सों जुग भुजंग ज्यों ।।३।६।३३३	
जटायु (गीधराज)		कृतांत
	गीधराज सुनि आरत बानी ।	
	रघुकुल तिलक नारि पहिचानी ।।	३।६।३४१
	+ + +	
	धावत देखि कृतान्त समाना ।	३।११।३४१
जन्तु संकुल		प्रजा बाढ़
	बिबिध जन्तु संकुल महि भ्राजा ।	
	प्रजा बाढ़ जिमि पाइ सुराजा ।।	४।७।३६२

उपमेय		उपमान
जनक		जम = यम
	धूरि मेरु सम जनक जम ताहि ब्याल सम दाम ।	१।१८।८८
जनक		पैरत थकें (तैरते-तैरते थका हुआ व्यक्ति)
	जनक लहेउ सुखु सोचु बिहाई । पैरत थकें थाह जनु पाई ।।	१।७।१३०
जनक		हिमगिरि
	जनक बाम दिसि सोह सुनयना । हिमगिरि संग बनी जनु मयना ।।	१।२४।२५७
जन मन		मीना
	पाप पयोनिधि जन मन मीना ।	१।१२।१७
जन मन		कानन
	बसहु निरंतर जन मन कानन	६।४।४८१
जप तप ब्रत आदि		हरित तृन
	जप तप ब्रत जम नियम अपारा । जे श्रुति कह सुभ धर्म अचारा ।। तेइ तृन हरित चरइ जब गाई ।	७।१।५५८

उपमेय		उपमान
जमुन जल		शरीर सम स्याम (राम के शरीर की तरह स्याम)
	उतरि नहाये जमुन जल, जो शरीर सम स्याम ।	२।९४।२२५
जरनि		छई ~ क्षय
	पर सुख देखि जरनि सोइ छई ।	७।९६।५६२
जल		निर्गुन ब्रह्म
	पुरइन सघन ओट जल, बेगि न पाइअ मर्म । मायाछन्न न देखिए जैसे, निर्गुन ब्रह्म ।।	३।९९।३४८
जल		सद्गुन (सद्गुण)
	सिमिट सिमिट जल भरहिं तलावा । जिमि सद्गुन सज्जन पहिं आवा ।।	४।९५।३६९
जल (सरिता का)		जिव
	सरिता जल जलनिधि महुं जाई । होइ अचल जिमि जिव हरि पाई ।।	४।९६।३६९
जलनिधि		हरि
	सरिता जल जलनिधि महुं जाई । होइ अचल जिमि जिव हरि पाई ।।	४।९६।३६९

उपमेय		उपमान
जलसंकोच		घनहीना
	जल संकोच विकल भइ मीना ।	
	अबुध कुटुंबी जिमि घनहीना ।।	४।२०।३६१
जस		दंड
	दंड समान भयउ जस जाका ।	१।२१।१२
जस (राम का)		सुधा
	राम सीय जस सलिल सुधा सम ।	१।७।२३
जस (सीता का)		सुधा
	राम सीय जस सलिल सुधा सम	१।७।२३
जसु (भरत का)		नवबिधु
	नवबिधु बिमल तात जसु तोरा ।	२।११।२६८
जाचक - याचक		चातक, दादुर
	जाचक चातक दादुर मोरा ।	१।१६।१७१
जातुधान बरूथ		तम
	तम बरूथ कहँ जातुधान की ।	५।४।३८०

उपमेय		उपमान
जापक जन		प्रह्लाद
	जापक जन प्रह्लाद जिमि	१।१८।१७
जासु : रावण :		मत्त गज
	जासु चलत डोलत इमि धरनी । चढ़त मत्त गज जिमि लघु तरनी ।।	६।२२।४१७
जीभ (कैकेयी की)		कमान
	जीभ कमान बचन सर नाना ।	२।१६।१६६
जीव		मृग
	फिरहिं मृग जिमि जीव दुखारी ।	१।२२।२६
जीव		कीर, मर्कट
	सो मायाबस भयउ गोसाईं । बंध्यो कीर मर्कट की नाईं ।।	७।१४।५५७
जीह (जिह्वा)		दादुर जीह
	जीह सो दादुर जीह समाना ।	१।१।६१
ग्रीवा (राम की)		कंबुपति
	आनन अमल कंबुपति ग्रीवा ।	६।४।४११

उपमेय		उपमान
जुगल कर		जुग जलज
	सुनत जुगल कर माल उठाईं । प्रेम बिबस पहिराइ न जाईं ।। सोहत जनु जुग जलज सनाला ।।	१।२०।१३०
जुगल दल (दोनों दल)		प्राविट सरद पयोद
	सबल जुगल दल समबल जोधा । + + + प्राविट सरद पयोद घनेरे ।।	६।८८।४३०
जुग हाथ (हस्तयुग्म)		जुगजलज
	करि प्रनामु बोले भरतु, जोरि जलज जुग हाथ ।	२।७।२८३
जुवति तनु		दीपसिखा
	दीपसिखा सम जुवति तनु ।	३।७।३५२
जेहिं सिव धनु तोरा (धनुष तोड़ने वाले राम)		सहस्रबाहु
	सुनहु राम जेहि सिव धनु तोरा । सहस बाहु सम सो रिपु मोरा ।।	१।३।१३४
जोग (योग)		जगिनि
	जोग जगिनि करि प्रगट तब	७।७।५५८

उपमेय		उपमान
जौबन (यौवन)		ज्वर
	जौबन ज्वर केहि नहीं भकावा ।	७।७।५२८

: झ :

झरना		दुंदुमी
	रथ गिरि सिला दुंदुमी झरना ।	३।१५।३५८
झलका (भरत के पैर का)		बौसकन
	झलका झलकत पायन्ह कैसें ।	
	पंकज कौस बौसकन जैसें ।।	२।८।२६६
झूठेउ (असत्य)		भुजंग
	झूठेउ सत्य जाहि बिनु जानें ।	
	जिमि भुजंग बिनु रजु पहिचानें ।।	१।१७।६०

: ढ :

ढेंकू		ऊंट
	ढेक महोख ऊंट बिसरा ते ।	३।११।३४७

उपमेय		उपमान

: त :

उपमेय		उपमान
तन (राक्षस का)		घन
	तन महुं प्रबिसि निसरि सर जाहीं ।	
	जनु दामिनि घन मांझ समाहीं ।।	६।१।४९४
तन (श्याम)		नीलौत्पल
	नीलौत्पल तन श्याम	४।११।३७०
तन (राम का)		तमाल
	भुजदंड सर कौदंड फेरत, रुधिर कन तन अति बने ।	
	जनु रायमुनी तमाल पर, बैठीं बिपुल सुख आपने ।।	६।२१।४७१
तन (राम का)		सत कौटि काम (करौड़ों कामदेवों के समान)
	राम काम सत कौटि सुभग तन	७।२१।५३८
तन कारे		कज्जल गिरि
	श्रौनित स्रवत सौह तन कारे ।	
	जनु कज्जल गिरि गैरु पनारे ।।	६।२।४५४

उपमेय		उपमान
तनु (दशरथ का)		त्रिन (तृण)
	प्रिय तनु त्रिन इव परिहरेउ ।	१।१५।१२
तनु		तमाला
	नील जलज तनु स्याम तमाला ।	१।६।१०५
तनु (राम का)		नील जलज
	नील जलज तनु स्याम तमाला ।	१।६।१०५
तनु (लक्ष्मण का)		कनक घट
	मन मलीन तनु सुंदर कैसे । बिष रस भरा कनक घट जैसे ।।	१।१३।१३७
तनु		तृन (तृण)
	तृन जिमि तनु परिहरिहि नरेसू ।	२।७।२४९
तनु (सीता का)		तूल
	बिरह अगिनि तनु तूल समीरा ।	५।५।३०७
तनु (लक्ष्मण का)		हिमगिरि
	हिमगिरि निभ तनु कछु एक लाला ।	६।१७।४३४

उपमेय		उपमान
तनु		बारिद
	बरुन नयन बारिद तनु स्यामा ।	६।६।४५७
तनु		पट
	जीव तनु बरौं तजौं पुनि बनायास हरिजान । जिमि नूतन पट पहिरइ नर परिहरइ पुरान ।।	७।३।५५१
तनु त्याग (बालि का)		गिरत सुमन माल
	राम चरनदृढ़ प्रीति करि, बालि कीन्ह तनु त्याग । सुमन माल जिमि कंठ तें गिरत न जानइ नाग ।।	४।२४।३५६
तनु स्याम (स्याम शरीर)		नील जलद
	नील जलद तनु स्याम ।	३।६।३२५
तनु स्यामा (स्याम शरीर)		नील कंज
	नील कंज तनु सुंदर स्यामा ।	६।८।४३६
तम		संसय
	मस्त प्रकाश कतहुं तम नाहीं । ज्ञान उदय जिमि संसय जाहीं ।।	६।६।४३६

उपमेय		उपमान
तरु		बानित
	बिबिध भाँति फूले तरु नाना ।	
	जनु बानित बनी बहु बाना ॥	३।३।३४७
तलावा (तालाब)		सज्जन
	सिमिटि सिमिटि जल भरहिं तलावा ।	
	जिमि सदगुन सज्जन पहिं आवा ॥	४।१५।३६१
ताटंका (ताटंक)		दामिनी दमंका
	मंदोदरी स्रवन ताटंका ।	
	सोइ प्रभु जनु दामिनी दमंका ॥	६।४।४१०
तारा		मुक्ताहल - गजमुक्ता
	बिथुरे नभ मुकुताहल तारा ।	६।७।४०६
तृन		कामा - काम
	ऊसर बरषै तृन नहिं जामा ।	
	जिमि हरिजन हिय उपज न कामा ॥	४।६।३६२
तृन संकुल		पाखंडवाद
	हरित भूमितृन संकुल समुझि परहिं नहिं पंथ ।	
	जिमि पाखंड बाद तें गुप्त होहिं सदग्रंथ ॥	४।१८।३६१

उपमेय	उपमान
तृस्ना (तृष्णा)	उदरवृद्धि
तृस्ना उदरवृद्धि अति भारी ।	७।१८।५६२
तीतर लावक	पदचर जूथा (पैदल सेना)
तीतर लावक पदचर जूथा ।	३।१३।३४७
तीनिकाल (तीनों काल)	आमलक
जानहिं तीनि काल निज ग्याना । करतलगत आमलक समाना ॥	१।१४।१६
तीरथ तोय	अमिअ - अमिय
राखिअ तीरथ तोय तहं, पावन अमिअ अनूप ।	२।१२।३११
तुरग	मन
चंचल तुरग मनोहर चारी । अजर अमर मन सम गति कारी ॥	६।११।४५६
तुरीय (तुरीयावस्था)	तूल
तूल तुरीय संवारि पुनि ।	७।१२।५५८

उपमेय	उपमान
तुलसीदास	मसक

कहै तासु गुनगन कछुक, जड़मति तुलसीदास ।
जिन पौरुष अनुसार जिमि मसक उड़ाहि अकास ।।६।२।४७०

उपमेय	उपमान
तेज तथा श्री हत (रावण)	मध्यदिवस जिमि ससि

भयउ तेज हत श्री सब गई ।
मध्य दिवस जिमि ससि सोहई ।। ६।१३।४२३

उपमेय	उपमान
तोष - संतोष	मरुत

तोष मरुत तब छमा जुड़ावै । ७।४।५५८

: द :

उपमेय	उपमान
दनुज	गहन घन

दनुज गहन घन दहन कृसानुहि । ७।७।५०६

उपमेय	उपमान
दसन (राम के)	जम (यम)

अधर लोभ जम दसन कराला । ६।३।४९१

उपमेय		उपमान
दसन		मूलक
	जिन्हके दसन कराल न फूटे ।	
	उर लागत मूलक इव टूटे ॥	६।२१।४२७
दसरथ		लावा
	सुनि मृदु बचन भूप हिय सोकू ।	
	ससिकर छुअत बिकल जिमि कोकू ॥	२।१२।१६१
	गयउ सहमि नहिं कछु कहि आवा ।	
	जनु सचान बन झपटेउ लावा ॥	२।१३।१६१
दसरथ		अतिहि (यती)
	बिबरन भयउ निपट नरपालू ।	२।१४।१६१
	+ + +	
	अतिहिं अक्रिया नास ।	२।१६।१६१
दसरथ		भानुकुल भानु
	जिअन मरन फलु दसरथ पावा ।	
	राम बिरह करि मरनु सँवारा ॥	२।७।२४५
	+ + +	
	बंधउ ताशु भानुकुल भानू ॥	२।११।२४५
दसरथु		सरोवर
	चले जहाँ दसरथु जनवासें ।	
	मनहुँ सरोवर तकेउ पिआसें ॥	१।८।१५०

उपमेय		उपमान
दशरथ का प्रासाद		बिषाद बसेरा
	गए सुमंत्रु तब राउर माहीं ।	
	देखि भयावन जात डेराहीं ।।	
	धाइ खाइ जनु जाइ न हेरा ।	
	मानहुँ बिपति बिषाद बसेरा ।।	२।१३।१६५
दसरथकुल		कुमुद
	जय दसरथ कुल कुमुद सुधाकर ।	७।२।५१६
दसरथ के दोउ ढोटा (दशरथ के दोनों पुत्र, राम और लक्ष्मण)		बाल मरालन्हि के बौटा (हंस शावक के बच्चे)
	ए दोउ दसरथ के ढोटा ।	
	बाल मरालन्हि के कल जोटा ।।	१।३।१११
दसानन		कज्जलगिरि
	अंगद दीख दसानन बैसा ।	
	सहित प्रान कज्जलगिरि जैसा ।।	६।१३।४११
दसानन		फनि
	सौ सिर परेउ दसानन आगें ।	
	बिकल भयउ जिमि फनि मनि त्यागें ।।	६।२।४४५

उपमेय		उपमान
दादुर		बटुसमुदाई (बटु-समुदाय)
	दादुर धुनि चहुं दिसा सुहाई । बेद पढ़हिं जनु बटु समुदाई ।।	४।१६।३६१
दाम		ब्याल
	ताहि ब्याल सम दाम	१।१८।८८
दामिनि दमक		खल कै प्रीति
	दामिनि दमक रही घन माहीं । खल कै प्रीति जथा थिर नाहीं ।।	४।१०।३६१
दास अमानी		बालक सुत
	बालक सुत सम दास अमानी ।	३।१३।३५०
दास तुलसी (तुलसीदास)		मधुकर
	रघुबीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावहीं ।	४।८।३७०
द्विज		खरारी :राम:
	ते द्विज मम प्रिय जथा खरारी ।	७।७।५५०

उपमेय		उपमान
दुइ खंडा ~ दो खण्ड (कुंभकरण के)		भूधर
	तब प्रभु काटि कीन्ह दुइ खंडा ।	६।१।४४५
	+ + +	
	परे भूमि जिमि नभ तें भूधर ॥	६।४।४४५
दुख		निशि
	सहित दोष दुख दास दुरासा ।	
	दलइ नामु जिमि रबि निसि नासा ॥	१।८।१६
दुख (राज परिवार का)		फल
	बर दौर दल दुख फल परिनामा ।	२।२२।१८८
दुख (राम वियोग का)		करुन रस कटकई
	मनहुं करुन रस कटकई उतरी अवध बजाइ ।	२।२।१९९
दुख रज (दुख का रजकण)		मेरु
	मित्र का दुख रज मेरु समाना ।	४।२।३५७
दुंदुभि धुनि		घन गरजनि
	दुंदुभि धुनि घन गरजनि घोरा ।	१।१६।१७१

उपमेय		उपमान
दुराशा		निसि
	सहित दोष दुख दास दुरासा ।	
	दलइ नामु जिमि रवि <u>निसि</u> नासा ॥	१।८।२६
दुष्ट		केतू
	दुष्ट उदय जग आरति हेतू ।	
	जथा प्रसिद्ध अधम ग्रह <u>केतू</u> ॥	७।२।५६२
दुष्टता एवं कुटिलई		कुष्ट
	<u>कुष्ट</u> दुष्टता मन कुटिलई ।	७।१६।५६२
देव (देवगण)		चोर
	सकल कहहिं कब होइहि काली ।	
	बिघन मनावहिं देव कुचाली ॥	
	तिन्हहिं सोहाइ न अवध बधावा ।	
	<u>चोरहिं</u> चंदिनि राति न भावा ॥	२।१।१८४
देवरिषि		मृगराज
	जस्त देवरिषि मम पुर आवा ।	
	+ + +	
	सूल हाड़ ले भाग सठ, स्वान निरखि <u>मृगराज</u> ।	१।१६।६६

उपमेय	उपमान
देह (शिव की)	कुंद इंदु
कुंद इंदु सम देह उमा रमन करुना अयन ।	१।७।२
देह (राक्षसों की)	सैल
कहुं माल देह बिसाल सैल समान अति बल गर्जहीं ।	५।१५।३७५
सुरतरु सुमन माल (देवताओं द्वारा वर्षा की जाने वाली सुरतरु सुमन की माला)	बलाक अवलि
सुरतरु सुमन माल सुर बरषहिं । मनहुं बलाक अवलि मनु करषहिं ।।	१।१९।१७९
दोउ बीर (राम-लक्ष्मण)	पुरुषसिंह
पुरुष सिंह दोउ बीर हरषि चले मुनि भय हरन ।	१।७।१०५
दोउ बासना (दशरथ तथा कैकेयी की)	रसना
दोउ बासना रसना दसन बर मरम ठाहरु देखई ।	२।२३।१८८
दोष	निशि
सहित दोष दुख दास दुरासा । दलइ नामु जिमि रबि निसि नासा ।।	१।८।१९

उपमेय	उपमान
द्वौ कपि (अंगद तथा हनुमान)	दुइ मंदर

लंका द्वौ कपि सोहहिं कैसे ।
मथहिं सिंधु दुइ मंदर जैसे ।। ६।८।४३७

दंभ	ईंधन

कुपथ कुतर्क कुचालि कलि कपट दंभ पाखंड ।
दहन राम गुन ग्राम जिमि ईंधन अनल प्रचंड ।। १।५।२१

दंभ, कपट, मद, मान	नहरुआ (रोग विशेष)

दंभ कपट मद मान नहरुआ । ७।१७।५९२

दंभ कपट पाखंड	भट

सेनापति कामादि भट
दंभ कपट पाखंड । ७।१२।५२७

उपमेय		उपमान
धरनी		नृप
	पंक न रेनु सोह असि धरनी ।	
	नीति निपुन नृप कै जसि करनी ॥	४।१६।३६२
धरनी		लघु तरनी
	जासु चलत डोलत इमि धरनी ।	
	चढ़त मत्त गज जिमि लघु तरनी ॥	६।२२।४१७
धरम		तड़ाग
	धरम तड़ाग ग्यान बिग्याना ।	७।१६।५०७
धरमसील		सागर
	जिमि सरिता सागर महुं जाहीं ।	
	जद्यपि ताहि कामना नाहीं ॥	१।६।१४४
	तिमि सुख संपति बिनहिं बोलाएं ।	
	धरमसील पहिं जाहिं सुभाएं ॥	१।१०।१४४
धृति		जावनु
	धृति सम जावनु देइ जमावै ।	७।४।५५८
धुनि (दादुर की)		बेद पढ़हिं
	दादुर धुनि चहुं दिसा सुहाई ।	
	बेद पढ़हिं जनु बटु समुदाई ॥	४।१६।३६१

उपमेय		उपमान
धूप धूमा		सावन घन
	धूप धूम नभु मेचकु भयऊ ।	
	सावन घन घमंड जनु ठयऊ ।।	१।१९५।१७९
धूरि		मेरु
	धूरि मेरु सम जनक जम ।	१।१८८।८८
धूरि		मृतक धूम
	रुधिर गाड़ भरि भरि जम्यौ, ऊपर धूरि उड़ाइ ।	
	जिमि अंगार रासिन्ह पर, मृतक धूम रह छाइ ।।	६।४।४३५
धूरि		जलधारा
	उठै धूरि मानहुं जलधारा ।	६।२।४५८
धूरी (फूल)		परसहिं
	सोवत कबहुं मिलहिं नहिं धूरी ।	
	करइ क्रोध जिमि परसहिं दूरी ।।	४।२२।३६१

: न :

नख		मोती ।
	अरुन चरन पंकज नख जोती ।	
	कमल दलन्हि बैठे जनु मोती ।।	२।१७।१००

उपमेय	उपमान
नख	ससि द्युति
पदज रुचिर नख ससि द्युति हरना ।	७।१०।५३०
नगरु :अयोध्या:	बनु गख्वर
नगरु सकल बनु गख्वर भारी ।	२।२०।२१४
नगर	सुभ
चले हरषि तजि नगर नृप, तापस बनिक भिखारि ।	
जिमि हरि भगति पाइ सुम, तजहिं आश्रमी चारि ।।४।२।३६३	
नयन (विष्णु के)	अरुन बारिज
तरुन अरुन बारिज नयन ।	१।२।५
नयन (रघुनन्दन के)	राजिव
राजिव नयन धरे धनु सायक ।	१।१३।१२
नयन (रानियों के)	मृग सावक (नयनी)
बिधु बदनी मृग सावक नयनी ।	२।१६।१८२
नयन (मैना के)	स्याम सरोज
स्याम सरोज नयन भरे बारी ।।	१।११।५२

उपमेय		उपमान
नयन (राम के)		चकोर
	सिय मुख ससि भए नयन चकोरा ।	१।१६४।१६४
नयन (सीता के)		मृगसावक
	जहं बिलोक मृग सावक नयनी । जनु तहं बरिस कमल सित श्रेनी ।"	१।१४।१९५
नयन (राम के)		नीरज
	नीरज नयन भावते जी के ।	१।२२।१२०
नयन (लक्ष्मण के)		नीरज
	नीरज नयन भावते जी के ।	१।२२।१२०
नयन (राम के)		कमल
	नयन कमल कल कुंडल काना ।	१।१०।१६२
नयन (राम के)		राजिव
	सुचि सुंदर आश्रमु निरखि, हरषे राजिव नैन ।	२।१८,२३१
नयन (भरत के)		सरोरुह
	पुलक गात हियं रामु सिय, सजल सरोरुह नयन ।२।८,२६६	

उपमेय | उपमान

नयन (राम लछमण के) — सरद सरोरुह

स्यामल गौर किसोर बर, सुंदर सुखमा अयन ।
सरद सर्बरी नाथ मुख, सरद सरोरुह नयन ।। २।८।२२८

नयन (सीता के) — बाल मृग(नयनी)

सकुच सप्रेम बाल मृगनयनी २।१२।२२८

नयन (सीता के) — खंजन (नयन)

खंजन मंजु तिरीछे नयननि ।
निज पति कहेउ तिन्हहिं सियसयननि ।। २।१५।२२८

नयन (राम के) — नीरज

नीरज नयन नेह जल बाढ़े । २।१४।२६०

नयन (राम के) — राजीव

अरुन नयन राजीव सुबेसं ३।४।३२७

नयन (राम के) — राजिव

तब निज भुजबल राजिवनयना । ४।५।३७०

नयन (राम के) — दिवाकर

नयन दिवाकर कच घनमाला । ६।२२।४६०

उपमेय	उपमान
नयन (लक्ष्मण के)	जलज
जलज नयन उर बाहु बिसाला ।	६।२७।४३४
नयन (राम के)	राजिव
बोले राजिवनयन	६।२।४४३
नयन (राम के)	राजीव
राजीव नयन बिसाल ।	६।१८।४७६
नयन (शंकर के)	नलिन
नलिन नयन भरि बारि ।	६।२१।४८०
नयन (भरत के)	जलजात
राम राम रघुपति जपत स्रवत नयन जलजात ।	७।१२।४८८
नयन (भरत एवं राम के)	नव राजीव
नव राजीव नयन जल बाढ़े ।	७।८।४९१
नयन (राम के)	अंभोज
अंभोज नयन बिसाल उर	७।६।४९६

उपमेय		उपमान
नयन (राम के)		राजीव
	सजल नयन राजीव	७।२२।५००
नयना ~ नयन (राम के)		राजिव
	जौ कौसलपति राजिव नयना ।	३।१८।३२७
नयना ~ नयन (राम के)		राजिव
	भर आए जल राजिव नयना ।	५।१०।३८७
नयना ~ नयन (राम के)		राजिव
	चितइ कृपा करि राजिव नयना ।	५।१६।३८८
नैन (राम के)		सरद सरोरुह
	सरद सरोरुह नैन	२।४।२७६
नर		सर
	जग बहु नर सर सरि सम भाई ।	१।३।७
नर		सरि
	जग बहु नर सर सरि सम भाई ।	१।३।७

उपमेय		उपमान
नर		मनसिज
	बसहिं नगर सुंदर नर नारी । जनु बहु मनसिज रति तनुधारी ।।	१।६।६८
नर		रघुराया
	लोभ पास जेहिं गर न बंधाया । सो नर तुम्ह समान रघुराया ।।	४।२४।३६४
नर		पशु
	ज्ञानवंत अपि सो नर, पशु बिन पूंछ बिषान ।	७।१६।५३१
नर		मर्कट
	नारि बिबस नर सकल गोसाईं । नाचहिं नट मर्कट की नाईं ।।	७।७।५४२
नर तनु		बेरो
	नर तनु भव बारिधि कहुं बेरो ।	७।१७।५९३
नरनारि		मनिगन
	मनिगन पुर नरनारि सुजाती ।	२।१४।१७६

उपमेय	उपमान
नर नारि (अवध के)	चातक चातकि

जेहि चाहत नर नारि सब, अति आरत येहि भाँति ।
जिमि चातक चातकि त्रिषित, वृष्टि सरद रितु स्वाति ।।२।१६।२०९

नरनारि (अवध के)	१, कोक, कोकी २, कमल

राम दरस हित नेम व्रत, लगे करन नर नारि ।
मनहुं कोक कोकी कमल, दीन विहीन तमारि ।। २।२३।२१५

नर नारि (अयोध्या के)	मीनगन

नगर नारि नर व्याकुल कैसे ।
निघटत नीर मीन गन जैसे ।। २।९७।२४१

नर नारी	बेलि बिटप

सुनि भए बिकल सकल नर नारी ।
बेलि बिटप जिमि देखि दवारी ।। २।२४।१६८

नर नारी (अवध के)	माखी

कहहिं परसपर पुर नर नारी । २।११।२११
+ + +
बिकल मनहुं माखी मधु छीने ।। २।१२।२११

उपमेय — उपमान

नर नारी (अवध के) — बिहग

कहहिं परसपर पुर नर नारी । — २।११।२११

\+ + +

जनु बिनु पंख बिहग अकुलाहीं ।। — २।१३।२११

नर नारी (अवध के) — खग मृग

खग मृग विपुल सकल नर नारी । — २।१०।२१४

नर नारी (अवध के) — घोर जन्तु

घोर जन्तु सम पुर नर नारी । — २।१४।२१४

नर नारी (अयोध्या के) — करि करिनि (हाथी तथा हथिनी)

राम दरस बस सब नर नारी ।

जनु करि करिनि चले तकि बारी ।। — २।३।२५६

नरपति (दशरथ) — बृद्ध गजराजु

आइ दीख रघुबंस मनि नरपति निपट कुसानु ।

सहमि परेउ लखि सिंघिनिहि मनहुं बृद्ध गजराजु ।।२।४।१६६

नरपति :दशरथ: — मनिहीन भुअंगू (मणिहीन भुजंग)

आइ दीख रघुबंसमनि नरपति निपट कुसानु ।

\+ + +

मनहुं दीन मनिहीन भुअंगू । — २।५।१६६

उपमेय		उपमान

नरपाल :जनक: — मनि बिनु ब्यालहिं

रानि कुचालि सुनत नरपालहि ।
सूझ न कछु जस मनि बिनु ब्यालहि ।। २।१।२६५

नरपालू~ नरपाल : दशरथ : — तरु तालू

बिबरन भयउ निपट नरपालू ।
दामिनि हनेउ मनहुं तरु तालू ।। २।१४।१६१

नलनील — जुग मधुप

तब नल नील सिरन्हि चढ़ि गए । ६।१२।४६६
+ + +
जनु जुग मधुप कमल बन चरहीं ।। ६।१४।४६६

नव तरु किसलय — कृसानू

नव तरु किसलय मनहुं कृसानू । ५।१४।३७९

नवनि नीच कै — अंकुस

नवनि नीच कै अति दुखदाई ।
जिमि अंकुस धनु उरग बिलाई ।। ३।१।३३८

नवनि नीच कै — उरग

नवनि नीच कै अति दुखदाई ।
जिमि अंकुस धनु उरग बिलाई ।। ३।१।३३८

उपमेय		उपमान
नवनि नीच के		बिलाई
	नवनि नीच के अति दुखदाई ।	
	जिमि अंकुस धनु उरग बिलाई ।।	३।९।३३८
नव पल्लव		बिबेका
	नव पल्लव भए बिटप अनेका ।	
	साधक मन जस मिले बिबेका ।।	४।२०।३६९
निषादहिं ~ निषाद		बिषय
	सोहत दिए निषादहिं लागू ।	
	जनु धन धरें बिषय अनुरागू ।।	२।२।२६३
नस (राम की)		सरिता
	अस्थि सैल सरित नस जारा ।	६।५।४११
नाथ :राम :		मंदरं
	भवाम्बुनाथ मंदरं ।	३।१२।३२९
नाथ :राम:		अघ खग गन बधिका (पाप रूपी पक्षियों के बधिक)
	होउ नाथ अघ खग गन बधिका ।	३।९।३५०

उपमेय	उपमान
नाम (राम का)	सहस्र नाम ~ सहस्रनाम (विष्णु के)
बंदौ राम नाम रघुबर को ।	१।१४।१३
+ + +	
सहस नाम सम सुनि सिव बानी ।	१।२०।१३
नाम (राम का)	काम तरु
नाम कामतरु काल कराला ।	१।१३।२७
नाम (राम का)	हनुमानू ~ हनुमान
कालनेमि कलि कपट निधानू । नाम सुमति समरथ हनुमानू ।।	१।२६।२७
नाम (राम का)	नर केसरी (नृसिंह)
राम नाम नर केसरी ।	१।२७।२७
नाम (राम का)	पतंगा पतंग
जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा ।	१।१३।६२
नाम (राम का)	भेषज
जासु नाम भव भेषज	७।५।५६५

उपमेय		उपमान
नामु (राम का)		रबि
	दलइ नामु जिमि रबि निसि नासा ।	१।७।१६
नामु (राम का)		कल्पतरु
	नामु राम को कल्पतरु	१।७।१७
नारि		बसंता
	होहिं बिपिन कहुं नारि बसंता ।	३।१८।३५०
नारि		सिसिर रितु
	पलुहइ नारि सिसिर रितु पाई ।	३।२३।३५०
नारि		निबिड़ रजनी
	नारि निबिड़ रजनी अंधियारी ।	३।२४।३५०
नारि (अयोध्या की)		तरंग
	बढेउ कोलाहल करत जनु नारि तरंग समान ।	७।१०।४१०
नारि (अवध की)		कुमुदिनी
	नारि कुमुदिनी अवध सर	७।३।४६४

उपमेय		उपमान
नारि		माया
	नारि विस्व माया प्रगट ।	७।२२।५५६
नारि		दाम
	कामिहिं नारि पियारि जिमि, लोभिहिं प्रिय जिमि दाम ।	७।२३।५६८
नारी		रति
	बसहिं नगर सुंदर नर नारी । जनु बहु मनसिज रति तनु धारी ।।	१।१६।६८
नारी		१. देह २. नदी
	जिय बिनु देह नदी बिनु बारी । तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी ।।	२।२२।२०६
नारी		रविमनि~रविमणि
	पुरुष मनोहर निरखत नारी । + * + जिमि रविमनि द्रव रबिहिं बिलोकी ।	३।१६।३३१
नारिचरित (कैकेयी का)		जलनिधि
	नारि चरित जलनिधि अवगाहू ।	२।१३।१६०

उपमेय		उपमान
नारि नर		मृगीमृग
	थके नारि नर प्रेम पियासे । मनहुं मृगी मृग देखि दिआसे ।।	२।१।२२८
निज दुख गिरि (पर्वत के समान अपना दुख)		रज
	निज दुख गिरि सम रज करि जाना ।	४।२।३५७
निठुराई (कैकेयी की)		धार
	मूठि कुबुद्धि धार निठुराई ।	२।६।१६२
निवृत्ति		नीड़
	नीड़ निवृत्ति पात्र बिस्वासा ।	७।२।५५८
निर्मल जल		गतमद मोहा
	सरिता सर निर्मल जल सोहा । संत हृदय जस गत मद मोहा ।।	४।१६।३६२
निर्मल बारी		संत हृदय
	संत हृदय जस निर्मल बारी ।	३।६।३४८
निर्माण		निसि अरु दिवसु
	निसि अरु दिवसु निर्माण अपारा ।	६।१।४११

उपमेय		उपमान
निरावहिं		तजहिं
	कृषी निरावहिं चतुर किसाना ।	
	जिमि बुध तजहिं मोह मद माना ।।	४।४।३६२
निबिड़ तम		कुसंग
	कबहुं दिवस महुं निबिड़ तम, कबहुंक प्रगट पतंग ।	
	बिनसइ उपजइ ग्यान जिमि, पाइ कुसंग सुसंग ।।	४।२।३६२
निसाचर		म्लेछ
	बधक निसाचर छीनहिं जाईं ।	
	जिमि म्लेछबस कपिला गाईं ।।	३।७।३४१
निसाचर निकर		घन समुदायी
	चले निसाचर निकर पराईं ।	
	प्रबल पवन जिमि घन समुदाईं ।।	६।३।४२८
निसान रव		घन गाजहिं
	पवन निसान घोर रव बाजहिं ।	
	प्रलय समय के घन जनु गाजहिं ।।	६।१४।४५१
निसि		पर संपति
	चक्रवाक मन दुख निसि पैखी ।	
	जिमि दुर्जन पर संपति देखी ।।	४।६।३६३

उपमेय		उपमान
निसि		कालनिसा
	कालनिसा सम निसिचारि भानू ।	५।१४।३७६
निसिचर		दुकाल
	येह निसिचर दुकाल सम अहहीं ।	६।८।४४४
निसिचर (मरण)		निज मुख कहे धर्म
	कीजहिं निसिचर दिनु अरु राती ।	
	निज मुख कहे धर्म जेहिं भांती ॥	६।१८।४४५
निसिचर निकट		सपच्छ कज्जल गिरि
	धाए निसिचर निकर बरूथा ।	
	जनु सपच्छ कज्जल गिरि जूथा ॥	३।१७।३३२
निसिचर निकर		पतंग (कीड़े)
	निसिचर निकर पतंग सम ।	५।१।३८०
निसि तम घन		दंभिनकर मिला समाज
	निसि तम घन खद्योत बिराजा ।	
	जनु दंभिन्ह कर मिला समाजा ॥	४।२।३६२
निशि ससि		संत दरस
	सरदातप निसि ससि अपहरईं ।	
	संत दरस जिमि पातक टरईं ॥	४।८।३६३

उपमेय		उपमान
निषाद		मूला
	कीन्ह निषाद दंडवत तेही ।	२।३।२२६
	+ + +	
	मुदित सुलखनु पाइ जिमि मूला ।।	२।४।२२६
नृप		नखत (नक्षत्र)
	नृप सब नखत करहिं उजिआरी ।	१।३।११६
नृप		तारे
	प्रभुहिं देखि सब नृप हिंयं हारे ।	
	जनु राकेस उदय भएं तारे ।।	१।१६।१२१
नृप : दशरथ :		पुरंदर
	सहित बसिष्ठ सोह नृप कैसे ।	
	सुरगुर संग पुरंदर जैसें ।।	१।२०।१४७
नृप :दशरथ:		सनेह
	सांझ समय सानंद नृपु गयउ कैकई गेह ।	
	गवनु निठुरता निकट किए जनु धरि देह सनेह ।	२।१३।१८८
नृप : दशरथ :		फनिक
	चरन परत नृप रामु निहारे ।	
	+ + +	
	गइ मनि मनहु फनिक फिरि पाई ।	२/२३/१९८

उपमेय	उपमान

नृप — आश्रमी

चले हरषि तजि नगर नृप, तापस बनिक भिखारि ।
जिमि हरि भगति पाइ श्रम, तजहिं आश्रमी चारि ।। ४।३।३६२

नृपति — कुमुद

अरुनोदय सकुचे कुमुद, उडगन जोति मलीन ।
जिमि तुम्हार आगमन सुनि, भए नृपति बलहीन ।। १।१।११६

नृपति — उडगन

अरुनोदय सकुचे कुमुद, उडगन जोति मलीन ।
जिमि तुम्हार आगमन सुनि भए नृपति बलहीन ।। १।१।११६

नृपन्ह — मत्त गज गन

अरुन नयन भृकुटी कुटिल, चितवत नृपन्ह सकोप ।
मनहुं मत्त गज गन निरखि, सिंघ किसोरहिं चोप ।। १।६।१३२

नृपु : दशरथ : — रबिकुल रबि

कौसल्या नृपु दीख मलाना ।
रबिकुल रबि अंथएउ जियं जाना ।। २।१२।२४४

नीर अगाधा (अगाधा नीर) — हरि सरन (हरि की शरण)

सुखी मीन जे नीर अगाधा ।
जिमि हरि सरन न एकौ बाधा ।। ४।३।३६३

उपमेय		उपमान
नूतन किसलय		अनल
	नूतन किसलय अनल समाना ।	५।७।३७८
नूपु मुखर (नूपुर ध्वनि - सीता की)		बिनती
	नूपुर मुखर मधुर कबि बरनी ।	
	मनहुं प्रेमबस बिनती करहीं।।	२।२।२०४

: प :

पकवाने ~ पकवान (जनक के)		सुधा
	भरे सुधा सम सब पकवाने ।	१।५।१४६
पकवाने ~ पकवान (जनक के)		सुधा
	भांति अनेक परे पकवाने ।	
	सुधा सरिस नहिं जाहि बखाने ।।	१।१८।१६३
पतंग		ज्ञान
	कबहु दिवस महुं निबिड़ तम, कबहुंक प्रगट पतंग ।	
	बिनसइ उपजइ ज्ञान जिमि, पाइ कुसंग सुसंग ।।	४।१२।३६२

उपमेय		उपमान
पंथ		सदग्रंथ
	हरित भूमि तृन संकुल, समुझि परहिं नहिं पंथ ।	
	जिमि पाखंड विवाद तें, गुप्त होहिं सदग्रंथ ।।	४।१८।३६१
पंथ जल		लोभहि~ लोभ
	उदित अगस्ति पंथजल सोखा ।	
	जिमि लोभहि सोखइ संतोषा ।।	४।१५।३६२
पथिक		इन्द्रियगन ~ इन्द्रियगण
	जहं तहं रहे पथिक थकि नाना ।	
	जिमि इन्द्रियगन उपजें ज्ञाना ।।	४।८।३६२
पद (गुरु के)		कंज
	बंदौं गुरुपद कंज	१।६।२
पद (गुरु के)		पदुम
	बंदौ गुरुपद पदुम परागा ।	१।११।२
पद (सबके)		कमल
	बंदौ सबके पद कमल	१।११।६
पद (लक्ष्मण के)		जलजाता जलजात
	बंदौ लछिमन पद जलजाता ।	१।२०।१२

उपमेय		उपमान
पद (रिपुसूदन के)		कमल
	रिपुसूदन पद कमल नमामी ।	१।२४।१२
पद (रामभक्तों के)		सरोज
	बंदौं पद सरोज सब केरे ।	१।६।१३
पद (सीता के)		कमल
	ताके जुग पद कमल मनावौं ।	१।१०।१३
पद (गुरु के)		पंकज
	सिर धरि गुरु पद पंकज धूरी ।	१।१८।२१
पद (राम के)		पंकरुह
	बब रघुपति पद पंकरुह ।	१।३।२७
पद (माधव के)		जलजाता जलजात
	पूजहिं माधव पद जलजाता ।	१।६।२७
पद (प्रभु के)		जलज
	प्रभु पद जलज सीस तिन्ह नाए ।	१।१३।५०

उपमेय		उपमान
पद (शिव का)		कमल
	पद कमल मन मधुकर तहां ।	१।४।५५
पद (शिव के)		पाथौज (कमल)
	पुनि गहै पद पाथौज मयना ।	१।९८।५५
पद (शिव के)		कमल
	सिव पद कमल जिन्हहि रति नाहीं ।	१।११।५७
पद (शिव का)		पंकज
	सकल करहिं पद पंकज सेवा ।	१।२०।५८
पद (प्रभु का)		कमल
	पुनि पुनि प्रभु पद कमल गहि ।	१।२४।६३
पद (वासुदेव के)		पंकरुह (कमल)
	बासुदेव पद पंकरुह ।	१।२०।७४
पद (राम के)		राजीव
	पद राजीव बरनि नहिं जाहीं ।	१।१६।७६

उपमेय	उपमान
पद (राम के)	कमल
नाथ देखि पद कमल तुम्हारे ।	१।४।७७
पद (भगवान विष्णु के)	कमल
तेहि मागेउ भगवंत पद, कमल अमल अनुराग ।	१।१४।८६
पद (विष्णु के)	कंजा ~ कंज
नमत नाथ पद कंजा	१।१४।६४
पद (हरि के)	कमल
हरि पद कमल बिनीत	१।२१।६५
पद (रघुबीर के)	कमल
पद कमल परागा रस अनुरागा	१।२२।१०६
पद (रघुबीर के)	पंकज
सोह पद पंकज जेहि पूजत अज	१।२४।१०६
पद (राम का)	पंकज
परसि जासु पद पंकज धूरी ।	१।२५।१११

उपमेय		उपमान
पद (विश्वामित्र के)		कमल
	मुनि पद कमल बंदि दोउ भ्राता ।	१।७।११०
पद (विश्वामित्र के)		पंकज
	गुर पद पंकज नाइ सिर	१।२४।११२
पद (गुरु विश्वामित्र के)		कमल
	गुर पद कमल पलोटत प्रीते ।	१।५।११३
पद (राम के)		जलजाता ~ जलजात
	पौढ़े धरि उर पद जलजाता ।	१।८।११३
पद (पार्वती के)		कमल
	देखि पूजि पद कमल तिहारे ।	१।१४।११७
पद (विश्वामित्र के)		कमल
	मुनि पद कमल गहे तब जाई ।	१।१२।१२१
पद (राम के)		कमल
	नाइ राम पद कमल सिरु	१।८।१२५
पद (रघुपति के)		सरोज
	रघुपति पद सरोज चितु राचा ।	१।६।१२८

उपमेय		उपमान
पद (परशुराम के)		सरोज
	पद सरोज मेले दोउ भाई ।	१।६।१३३
पद (राम तथा सीता के)		सरोज
	जे पद सरोज मनोज अरि ।	१।७।१५६
पद (राम के)		कमल
	जावक जुत पद कमल सुहाए ।	१।४।१६२
पद (राम के)		पंकज
	बहुरि राम पद पंकज धोए ।	१।११।१६३
पद (गुरु वशिष्ठ के)		कमल
	पूजे गुर पद कमल बहोरी ।	१।३।१७४
पद (कौशिल्या के)		कमल
	जाइ सासु पद कमल जुग	२।२०।२०३
पद (राम के)		कमल
	छिनु छिनु प्रभु पद कमल बिलोकी ।	२।६।२०७

उपमेय		उपमान
पद (कौशिल्या के)		पदुम ~ पद्म
	कहीं नाइ पद पदुम सिरु	२।१६।२१६
पद (राम के)		पंकज
	नाथ कुसल पद पंकज देखे ।	२।१५।२१६
पद (आर्यपुत्र के)		कमल
	आरज सुत पद कमल बिनु ।	२।१२।२२०
पद (रघुपति के)		पदुम
	बिनु रघुपति पद पदुम परागा ।	२।१८।२२०
पद (राम के)		पदुम
	मोहिं पद पदुम पखारन कहहू ।	२।१८।२२१
पद (राम के)		कमल
	पद कमल धोइ चढ़ाइ ।	२।१६।२२१
पद (राम के)		सरसिज
	निज पद सरसिज सहज सनेहू ।	२।१८।२२४

उपमेय		उपमान
पद (राम के)		पद्म
	परसि राम पद पद्म परागा ।	२।२।२२७
पद (राम, लक्ष्मण तथा सीता के)		कमल
	मृदु पद कमल कठिन मगु जानी ।	२।४।२३०
पद (दशरथ के)		पंकज
	तात प्रनामु तात सन कहेहू ।	
	बार बार पद पंकज गहेहू ।।	२।५।२४३
पद (गुरु वसिष्ठ के)		पद्म
	बार बार पद पद्म गहि ।	२।१२।२४३
पद (राम के)		पंकज
	सुमिरि राम पद पंकज पनहीं ।	२।१२।२६०
पद (भरत के)		पंकज
	कुसल मूल पद पंकज पेखी ।	२।११।२६२
पद (राम तथा सीता के)		पद्म
	सीय राम पद पद्म सनेहू ।	२।२३।२७४

उपमेय	उपमान
पद (सीता के)	पद्दुम
धरि सिर सिय पद पद्दुम परागा ।	२।१६।२८२
पद (राम के)	पद्दुम
जबतें प्रभु पद पद्दुम निहारे ।	२।२०।२८६
पद (वसिष्ठ के)	कमल
गुरु पद कमल प्रनामु करि ।	२।२१।२८७
पद (वसिष्ठ के)	अम्बुज
जे गुरु पद अंबुज अनुरागी ।	२।५।२६०
पद (राम के)	पंकज
जहं न राम पद पंकज भाऊ ।	२।१३।३०३
पद (राम के)	पद्दुम
प्रभु पद पद्दुम पराग दोहाई ।	२।१६।३०७
पद (राम के)	कमल
प्रभु पद कमल गहे अकुलाई ।	२।२१।३०७

उपमेय	उपमान
पद (मुनि के)	कमल
मुनि पद कमल मुदित सिरु नावा ।	२।२४।३१०
पद (राम के)	कमल
प्रभु पद कमल बिलोकहिं जाई ।	२।१४।३१२
पद (प्रभु के)	पदुम
प्रभु पद पदुम बंदि दोउ भाई ।	२।२।३१९
पद (राम के)	अंबुज
भजामि ते पदांबुज	३।११।३२१
पद (राम के)	अब्ज
पदाब्जभक्ति देहि मे ।	३।७।३२२
पद (मुनियों के)	कमल
मुनि पद कमल नाइ करि सीसा ।	३।१०।३२४
पद (अगस्त मुनि के)	कमल
मुनि पद कमल परे दोउ भाई ।	३।१८।३२८
पद (राम के)	कमल
गहि पद कमल अनुज कर जोरी ।	३।१०।३४२

उपमेय		उपमान
पद (राम के)		सरोज
	पुनि पुनि पद सरोज सिरु नावा ।	३।६।३४५
पद (गुरु के)		पंकज
	गुर पद पंकज सेवा	३।२१।३४५
पद (राम के)		पंकज
	मुल हृदय पद पंकज धरै ।	३।१३।३४६
पद (राम के)		पंकज
	सुनत पद पंकज गहे ।	३।१।३५२
पद (रघुनाथ के)		कमल
	जाइ कमल पद नाएसि माथा ।	३।२४।३६६
पद (राम के)		सरोज
	प्रीति न पद सरोज मन माहीं ।	५।१३।३७५
पद (राम के)		कंज
	कुसल देखि पद कंज	५।१२।३८६
पद (प्रभु राम के)		पंकज
	प्रभु पद पंकज नावहिं ।	५।१८।३८८

उपमेय		उपमान
पद (राम के)		सरोज
	हर उर सर सरोज पद जेई ।	५।२१।३६४
पद (राम के)		कमल
	देखि राम पद कमल तुम्हारे ।	५।२१।३६४
पद (राम के)		कंज
	सेवत सुजन पद कंज	५।३।३६५
पद (राम के)		अंबुज
	पद अंबुज गहि बारहिं बारा ।	५।२७।३६५
पद (राम के)		पंकज
	प्रभु पद पंकज भृंग ।	५।१३।३६६
पद (राम के)		कमल
	नाइ कमल पद नाथ ।	६।६।४०६
पद (राम के)		पाताल
	पद पाताल सीस अज धामा ।	६।२१।४१०

उपमेय		उपमान
पद (राम के)		कंज
	सुमिरि राम पद कंज ।	६।८।४१३
पद (राम के)		कंज
	गहि राम पद कंज	६।४।४२४
पद (राम के)		कमल
	प्रभु पद कमल सीस तिन्ह नाए ।	६।११।४३०
पद (राम के)		कमल
	बंदि राम पद कमल जुग ।	६।१।४४६
पद (राम के)		कंज
	हरषि गहे पद कंज ।	६।१८।४५२
पद (राम के)		कमल
	जेहि हौं हरि पद कमल बिलोकी ।	६।१४।४६७
पद (राम के)		कंज
	गहहिं सकल पद कंज	६।६।४७४
पद (राम के)		पंकज
	पद पंकज सेवित संभु उमा ।	६।१५।४७८

उपमेय		उपमान
पद (राम के)		कंज
	अब देखि प्रभु पद कंज ।	६।२०।४७६
पद (राम के)		पंकज
	अब कुसल पद पंकज बिलोकि	६।२६।४८५
पद (राम के)		कंज
	कौशल्या पदकंज मंजुलौ ।	७।५।४८७
पद (राम के)		अरविन्दु~ अरविन्द
	राम पदारविन्दु अनुरागी ।	७।३।४८८
पद (राम के)		पंकज
	गहे भरत पुनि प्रभु पद पंकज	७।६।४९१
पद (राम के)		कंज
	पद कंज द्वंद मुकुंद राम	७।१०।४९७
पद (राम के)		पंकज
	पद पंकज प्रभु न जे करती ।	७।८।४९८

उपमेय		उपमान
पद (राम के)		पंकज
	जिन्हकें पद पंकज प्रीति नाहीं ।	७।६।४६८
पद (राम के)		पंकज
	पद पंकज सेवत सुद्ध हिये ।	७।१३।४६८
पद (राम के)		सरोज
	पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग ।	७।२०।४६८
पद (राम के)		पंकज
	नित नइ प्रीति राम पद पंकज	७।६।४६६
पद (राम के)		जलजाता
	जाउं कहां तजि पद जलजाता ।	७।१६।५००
पद (राम के)		पंकज
	पद पंकज बिलोकि मन तरिहौं ।	७।१९।५००
पद (राम के)		पंकज
	बसेउ हृदय पद पंकज रासी ।	७।५।५०२

उपमेय		उपमान
पद (राम के)		अरविंद
	राम पदारबिंद रति	७।२।५०४
पद (राम के)		कंज
	मम पद कंज	७।५।५९२
पद (राम के)		पंकज
	तव पद पंकज प्रीति निरंतर ।	७।२०।५९५
पद (राम के)		सरोज
	जाके पद सरोज रति होई ।	७।२।५९६
पद (प्रभु राम के)		कमल
	जन्म जन्म प्रभु पद कमल	७।४।५९६
पद		सरोज
	पद सरोज पुनि पुनि सिर नाई ।	७।९२।५५५
पद (राम के)		पंकज
	भजहु राम पद पंकज	७।३।५६०

उपमेय		उपमान
पद (राम के)		पंकज
	करिअ राम पद पंकज नेहा ।	७।१४।५६३
पद (राम के)		कंजा
	उपजइ प्रीति राम पद कंजा ।	७।४।५६६
पद अंका (राम के)		पारसु
	हरषहिं निरखि राम पद अंका ।	
	मानहुँ पारसु पायउ रंका ।।	२।२।२८२
पद-रज (गुरु की)		अमिअ
	गुर पद रज मृदु मंजुल अंजन ।	
	नयन अमिअ दृग दोष विभंजन ।।	१।२१।२
पद-रज (गुरु की)		अंजन
	गुर पद रज मृदु मंजुल अंजन ।	१।२१।२
प्रकास		ज्ञान
	भयउ प्रकास कतहुं तम नाहीं ।	
	ज्ञान उदय जिमि संसय जाहीं ।।	६।६।४३९

उपमेय		उपमान
प्रजा (अयोध्या की)		जलचरगन
	विपुल बियोग प्रजा अकुलानी ।	
	जनु जलचर गन सूखत पानी ।।	२।५।२०९
प्रताप (राम का)		रवि
	येह प्रताप रवि जाके ।	७।१।५०८
प्रतिउत्तर		सड़सिन्ह
	प्रतिउत्तर सड़सिन्ह मनहुं	६।१५।४१६
पर्वत प्रहार		वज्रपात
	दुहुं दिसि पर्वत करहिं प्रहारा ।	
	वज्रपात जनु बारहिं बारा ।।	६।३।४५८
प्रभु (राम)		बीर रसु
	प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी ।	१।४।१२०
	देखहिं भूप महारन धीरा ।	
	मनहुं बीर रसु धरें सरीरा ।।	१।५।१२०
प्रभु : राम :		काल
	तिन्ह प्रभु प्रगट काल सम देखा ।	१।७।१२०

उपमेय		उपमान
प्रभु : राम :		सिसु
	बिदुषन्ह प्रभु बिराटमय दीसा ।	
	बहु मुख कर पग लोचन सीसा ॥	१।११।१२०
	+ + +	
	सिसु सम प्रीति न जाइ बखानी ॥	१।१३।१२०
प्रभु : राम :		परमतत्त्वमय
	बिदुषन्ह प्रभु बिराटमय दीसा ।	१।११।१२०
	+ + +	
	जोगिन्ह परम तत्त्वमय भासा ॥	१।१४।१२०
प्रभु : राम :		घनु
	प्रभु मनसहिं लयलीन मनु, चलत बाजि छबि पाव ।	
	भूषित उडगन तड़ित घनु, जनु बर बरहि नचाव ॥	१।२३।१५४
प्रभु : राम :		मृगराज
	चितवत मनहुं मृगराज प्रभु ।	३।११।२३३
प्रभु : राम :		अनल
	प्रभु सन्मुख धाए खल कैसें ।	
	सलभ समूह अनल कहं जैसें ।	६।९।४५७

उपमेय		उपमान
प्रभु : राम :		रवि
	प्रभु छन महं पाया सब काटी । जिमि रवि उएं जाहिं तम फाटी ।।	६।१३।४६५
प्रभु प्रताप		रवि
	जब लगि प्रभु प्रताप रवि नाहीं ।	५।२०।३६४
प्रभु भुज (राम के)		करि कर
	प्रभु भुज करि कर सम दसकंधर ।	५।२१।३७६
प्रभु भुज (राम के)		स्याम सरोज
	स्याम सरोज दाम सम सुंदर । प्रभु भुज करि कर सम दसकंधर ।।	५।२१।३७६
प्रभुभुज (राम के)		दाम
	स्याम सरोज दाम सम सुंदर । प्रभु भुज करि कर सम दसकंधर ।।	५।२१।३७६
प्रभु प्रताप		बड़वानल
	प्रभु प्रताप बड़वानल भारी ।	६।४।४०३

उपमेय		उपमान

प्रभुहिं ~ प्रभु | | भयानक मूरति

डरे कुटिल नृप प्रभुहिं निहारी ।
मनहुं भयानक मूरति भारी ॥ १।६।१२०

प्रभुहिं ~ प्रभु | | राकेस ~ राकेश

प्रभुहिं देखि सब नृप हिंयं हारे ।
जनु राकेस उदय भएं तारे ॥ १।१६।१२१

प्रयाग | | मृगराऊ ~ मृगराज

को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ ।
कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ ॥ २।१।२२४

प्रसून | | उडुगन

सिर जटा मुकुट प्रसून बिच बिच, अति मनोहर राजहीं ।
जनु नीलगिरि पर तड़ित पटल, समेत उडुगन भ्राजहीं ॥ ६।१८।४८

परनसाल (पर्णशाला) | | सुरसदन

नाथ साथ सुरसदन सम
परनसाल सुख मूल ॥ २।२।२०७

पर नारि लिलारु | | चौथि के चंद

सो पर नारि लिलारु गोसाईं ।
तजौ चौथि के चंद कि नाईं ॥ ५।२४।३८०

उपमेय		उपमान
परनिंदा		अघ
	परनिंदा सम अघ न गिरीसा ।	७।४।५६२
पराई निन्दा		परीनिधि (पड़ी हुई सम्पत्ति)
	जहं कहुं निन्दा सुनहिं पराई ।	
	हरषहिं मनहुं परी निधि पाई ।।	७।१०।५११
परसु ~ परशु		सागर खर धारा (सागर की तीव्र धारा)
	जासु परसु सागर खर धारा ।	६।६।४१८
परसुराम		पतंगा = सूर्य
	बाल्ड भृगुकुल कमल पतंगा ।	१।११।१३२
परिछाहीं (प्रतिच्छाया-सीता की)		रति
	रामसीय सुंदर परिछाहीं ।	
	+ + +	
	मनहुं मदनु रति धरि बहु रूपा ।	१।२५।१५६
परिछाहीं (प्रतिच्छाया)		मदनु ~ मदन
	राम सीय सुंदर परिछाहीं ।	
	+ + +	
	मनहुं मदनु रति धरि बहु रूपा ।	१।२५।१५६

उपमेय	उपमान
परिजन (अवध के)	मीना ~ मीन
जद्यपि जँह प्रिय परिजन मीना ।	२।१२।२०७
परिजन	भूता
घर मसान परिजन जनु भूता ।	२।१५।२१४
परिवार	कुरंगविहंगा
परनकुटी प्रिय प्रियतम संगा ।	
प्रिय परिवारु कुरंग विहंगा ।।	२।१४।२३८
परिवारु (रघुकुल)	कमल बनु
भरत दुखित परिवारु निहारा ।	
मानहुँ तुहिन कमल बनु मारा ।।	२।१५।२४६
पवन कुमार	पावक
प्रनवौं पवन कुमार खल बन पावक ज्ञान घन ।	१।१।१३
पवनसुत	काला ~ काल
देखि पवनसुत कटक बिहाला ।	
क्रोधवंत जनु धायउ काला ।।	६।२३।४३३
पवनसुत	पीत
बिप्र रूप धरि पवनसुत,	
आइ गयउ जनु पीत ।	७।१०।४८८

उपमेय	उपमान
पहारू (पर्वत)	अवध सौध सत (अवध के सैकड़ों महल)
अवध सौध सत सरिस पहारू ।	२,५।२०७
पाकरिपु रीती : इन्द्र की रीति :	काक (रीती)
काक समान पाकरिपु रीती ।	२।६।३०८
पाखंड	ईंधन
कुपथ कुतर्क कुचालि कलि कपट दंभ पाखंड ।	
दहन राम गुन ग्राम जिमि ईंधन अनल प्रचंड ।।	१।५।२१
पात	उद्यम
अर्क जवास पात बिनु भयऊ ।	
जस सुराज खल उद्यम गयऊ ।।	४।२१।३६२
पाद ~ पद (प्रभु के)	अब्ज
बर बिलसद्विप्रपादाब्ज चिन्हं	७।१।४८७
पानि (सीता के)	पंकरुह
जोरि पंकरुह पानि	१।२४।६३

उपमेय		उपमान
पानि (कामदेव के)		पंकज
	मथि पानि पंकज निज माहू ।	१।१।१२३
पानि (सीता के)		सरोज
	पानि सरोज सोह जयमाला ।	१।६।१२३
पानि (जनक के)		पंकरुह
	जोरि पंकरुह पानि सुहाए ।	१।२६।१६८
पानि (सीता के)		सरोज
	सिय निज पानि सरोज सुहाई ।	२।२०।२८०
पानि (भरत के)		पंकरुह
	बोले पानि पंकरुह जोरी ।	२।११।३१०
पानी		ममता
	रस रस सूख सरित सर पानी । ममता त्याग करहिं जिमि ज्ञानी ।।	४।१७।३६२
पाप		पयोनिधि
	पाप पयोनिधि जन मन मीना ।	१।१२।१७

उपमेय		उपमान
पाय (राम के)		पंकज
	लागे पखारन पाय पंकज	१।५।१५६
पाय (सीता के)		पंकज
	लागे पखारन पाय पंकज	१।५।१५६
पायन्ह (भरत के)		पंकज
	झलका झलकत पायन्ह कैसे । पंकज कोस ओसकन जैसे ।।	२।८।२६६
पारावत		ताजी (घोड़े)
	पारावत मराल सब ताजी ।	३।१२।३४८
पावक		श्रीखंड
	श्रीखंड सम पावक प्रवेसू ।	६।७।४७६
प्रानी ~ प्राणी		सब
	जीवत सव समान तेइ प्रानी ।	१।८।६१
पिक		गजराते
	कूजत पिक मानहुं गज माते ।	३।११।३४७

उपमेय		उपमान
प्रिय बानी (दशरथ की)		पानी
	मंत्री मुदित सुनत प्रिय बानी ।	
	अभिमत बिरव परेउ जनु पानी ।।	२।१२।१८८
पुर (अयोध्या)		सिन्धु
	राका ससि रघुपति पुर सिंधु देखि हरषान ।	७।६।४६
पुरइन सघन ओट		मायाछन्न
	पुरइन सघन ओट जल बेगि न पाइअ मर्म ।	
	मायाछन्न न देखिए, जैसे निर्गुन ब्रह्म ।।	३।१२।३४८
पुरट घट		नीड़
	छुहे पुरट घट सहज सुहाए ।	
	मदन सकुन जनु नीड़ बनाए ।।	१।१०।१७१
पुरुष मनोहर		रबिहि ~ रवि
	पुरुष मनोहर निरखत नारी ।	३,१५।३३१
	+ + +	
	जिमि रबिमनि द्रव रबिहि बिलोकी ।	३।१६।३३१
पुलक सरीर मुनि : सुतीक्ष्ण :		पनसफल
	मुनि मग माँझ अचल होइ बैसा ।	
	पुलक सरीर पनसफल जैसा ।।	३।१०।३२६

उपमेय		उपमान
पुत्र जन्म		ब्रह्मानन्द
	दसरथ पुत्र जन्म सुनि काना ।	
	मानउ ब्रह्मानन्द समाना ।।	१।१।६८
प्रेम भगति		जल
	प्रेम भगति जल बिनु रघुराई ।	७।२२।५९५

: फ :

फूले		प्रगट
	फूले कास सकल महि छाई ।	
	जनु बरषा कृत प्रगट बुढ़ाई ।।	४।१४।३६२
फूले कमल सर		सगुन ~ सगुण
	फूले कमल सोह सर कैसा ।	
	निर्गुन ब्रह्म सगुन भए जैसा ।।	४,४,३६२

: ब :

बक्र उक्ति (अंगद की)		धनु ~ धनुष
	बक्र उक्ति धनु बचन सर	६।१४।४१६
बचन (गुरु के)		रबिकर निकर
	जासु बचन रबिकर निकर	१।२।१०

उपमेय		उपमान
बचन (प्रभु के)		सुधा
	स्रवन सुधा सम बचन सुनि	१।१७।७५
बचन (शंकर के)		रविकर
	सम रवि कर बचन मम	१।६।६२
बचन (राम के)		जल
	बढ़त देख जल सम बचन	१।१५।१२६
बचन (कैकेयी के)		सचान
	जनु सचान बन झपटेउ लावा ।	२।२३।१९९
बचन (कैकेयी के)		दामिनि
	दामिनि दमकि मनहुं गरज तालू ।	२।२४।१९९
बचन (राम के)		बागबिभूषणरा
	बोले बचन बिगत सब दूषन ।	
	मृदु मंजुल जनु बाग बिभूषन ।।	२।१०।१९६
बचन (कैकेयी के)		सर
	जीभ कमान बचन सर नाना ।	२।२६।१९६

उपमेय		उपमान
बचन (कैकेयी के)		गयादिक तीरथ (गया आदि तीर्थ)
	लागहिं कुमुख बचन सुभ कैसे । मगह गयादिक तीरथ जैसे ।।	२,१७।१६७
बचन (कैकेयी के)		सुरसरिगत सलिल
	रामहिं मातु बचन सब भाए । जिमि सुरसरि गत सलिल सुहाए ।।	२।१८।१६७
बचन (पुरजनों के)		बान - धारा
	बचन बान सम लागहिं ताही ।	२।३।२००
बचन (कैकेयी के)		बान - धारा
	सुनहिं बचन बान सम लागे ।	२।२१।२१२
बचन (सीता के)		पिकबयनी
	सकुचि सप्रेम बाल मृगनयनी । बोली मधुर बचन पिकबयनी ।।	२।१२।२२८
बचन (कौशिल्या के)		सीतलबारि

प्रिया बचन मृदु सुनत नृप, चितयउ आँखि उघारि ।
तलफत मीन मलीन जनु, सींचेउ सीतलबारि ।। २।१६।२५४

उपमेय	उपमान
बचन (राम के)	१. सरबसु (सर्वस्व) २. ससि रसु (शशिरस)
मीठे बचन जानि सरबसु से । हित परिनाम सुनत ससिरसु से ।।	२।७।३०६
बचन (राम के)	गिराप्रसादू ~ गिराप्रसाद
मुख प्रसन्न मन मिटा बिषादू । भा जनु गूँगेहि गिरा प्रसादू ।।	२।१०।३१०
बचन (अंगद के)	महानल घृत
सुनत बचन [illegible] मत्सरा । जरत महानल जनु घृत परा ।।	६।१।४१६
बचन (माल्यवंत के)	बान
ताके बचन बान सम लागे ।	६।८।४३२
बचन (हनुमान के)	पियूषा - पीयूष
सुनत बचन बिसरे सब दूखा । तृषावंत जिमि पाइ पियूषा ।।	७।१८।४८८
बचन (राम के)	सुधा
सुनत सुधा सम बचन राम के ।	७।१२।५१४

बचन (अंगद के) — सर

बक्र उक्ति धनु बचन सर — ६।१४।५१६

बचनु (परशुराम के) — कुलिस

कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा । — १।६।१३५

बचनु (कैकेयी के) — बानु - बाण

बचन भयंकर बानु — २।८।१६१

१. बजाज — कुबेर
२. सराफ
३. बनिक - वणिक

बैठे बजाज सराफ बनिक अनेक मनहुं कुबेर तें । — ७।३।५०६

बटु — सुषमा

तिन्ह तरु बरन्ह मध्य बटु सोहा ।
+ + +
बिरची बिधि सकेलि सुषमा सी ।। — २।१७।२८०

बदन (वासुदेव का) — मयंक

सरद मयंक बदन छबि सींवां । — १।६।७६

उपमेय		उपमान
बदन (लक्ष्मण का)		मयंक
	बदन मयंक ताप त्रय मोचन	१।१२।११०
बदन (राम का)		मयंक
	बदन मयंक पाप मय मोचन ।	१।१२।११०
बदनु - बदन (परशुराम का)		ससि
	सीस जटा ससि बदनु सुहावा ।	१।१४।१३२
बदन (भामिनियों के)		बिधु
	बिधु बदनी मृग बालक लोचनि ।	१।१४।१४५
बदनु (राम का)		बिधु
	सरद बिमल बिधु बदनु सुहावन ।	१।२।१५४
बदन (जनकपुर की नारियों के)		बिधु
	बिधु बदनी सब सब मृगलोचनि ।	१।५।१५५
बदन (रानियों के)		बिधु
	बिधुबदनी मृगसावक नयनी ।	२।१६।१८२

उपमेय	उपमान	
बदनि - बदन (सीता का)	चंद	
चंद बदनि दुखु कानन भारी ।		२।४।२०
बदन (राम का)	बिधु	
सुदिन सुघरी तात कब होइहि ।		
जननि जिअत बदन बिधु जोइहि ।।		२।४।२०८
बदन (राम तथा लक्ष्मण के)	बिधु	
सरद परब बिधु बदन बर, लसत स्वेदकन जाल ।		२।२५।२२७
बदनु (सीता का)	बिधु	
बहुरि बदनु बिधु अंचल ढाँकी ।		२।१४।२२८
बदन (राम का)	बिधु	
छिनु छिनु पिय बिधु बदन निहारी ।		२।११।२३८
बदनि (सीता का)	चंद	
चंद बदनि दुखु कानन भारी ।		२।४।२०७
बदनु (परशुराम का)	ससि	
सीस जटा ससि बदनु सुहावा ।		१।१४।१३२
बदनु (राम का)	बिधु	
सरद बिमल बिधु बदन सुहावन ।		१।२।१५४

उपमेय		उपमान
बदनु (राम का)		बिधु
	निरखत राम बिधु बदनु निहारा ।	२।७।२४५
बधावा (अयोध्या का)		चाँदिनिराति
	तिन्हहिं सोहाइ न अवध बधावा ।	
	चोरहिं चंदिनि राति न भावा ।।	२।१।१८४
बधू		मनि
	सुंदरि बधू सासु लै सोईं ।	
	फनिकन्ह जनु सिरमनि उर गोईं ।।	१।१३।१७६
बंदर		मंदर
	जाहिं कहाँ भए व्याकुल बंदर ।	
	सुरपति बंदि परेउ जनु मंदर ।।	६।१६।४०६
बन्धु : भरत :		बन्हनि्हं
	रामहिं बन्धु सोचु दिन राती ।	
	अन्हनिह कमठ हृदउ जेहिं भाँती ।।	२।१०।१८२
बन		राहु - राहू
	कहेउ जान बन केहि अपराधा ।	२।१२।२०२
	+ + +	
	लिखत सुधाकर गा लिखि राहू ।।	२।१७।२०२

उपमेय   उपमान

बन   डाबर

सुरसर सुभग बनज बन चारी ।
डाबर जोगु कि हंस कुमारी ।। २।६१।२०४

बन   लवन पयोधि

[illegible] तुम्ह नाहिं न जोगू ।
\+ \+ \+
जिअइ कि लवन पयोधि मराली । २।२।२०६

बन   रबि

चंद किरन रस रसिक चकोरी ।
रबि रुख नयन सकइ किमि जोरी ।। २।६४।२०४

बन   बिषबाटिका

करि केहरि निसिचर चरहिं, दुष्ट जंतु बन भूरि ।
बिष बाटिका कि सोह सुत, सुभग सजीवनि मूरि ।। २।६६।२०४

बन   बिपिन करीला
(करील बन)

नव रसाल बन बिहरन सीला ।
सोह कि कोकिल बिपिन करीला ।। २।३।२०६

उपमेय		उपमान
बन	अवध लखन सम बन प्रिय लागा ।	लखन लवध (लघु अवध) 2।13।238
बन	धरि केसरी गगन बन चारी ।	गगन 6।6।406
बनु - बन	खग मृग परिजन नगरु बनु ।	नगरु - नगर 2।1।207
बनदेव	पितु बनदेव मातु बन देवी ।	पितु - पिता 2।3।203
बनदेव	बनदेवी बनदेव उदारा । करहहिं सासु ससुर सम सारा ।।	ससुर - श्वसुर 2।3।207
बनदेवी	बनदेवी बनदेव उदारा । करहहिं सासु ससुर सम सारा ।।	सासु - सास 2।3।207
बनदेवी	पितु बनदेव मातु बन देवी ।	मातु - माता 2।3।203

उपमेय	उपमान

बनबासू - बनवास — कोटि अमरपुर

सीता राम संग बनबासू ।
कोटि अमरपुर सरिस सुपासू ।। २।१२२।२६८

बन संपति — प्रजा (सुराज पाई हुई)

राम बास बन संपति भ्राजा ।
सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा ।। २।२०।२७६

बनसैल - बन शैल — सुनाजू - सुनाज

भरत दीख बनसैल समाजू ।
मुदित छुधित जनु पाइ सुनाजू ।। २।१७।२७६

बनिता बृंद — छबि ललना

सोहति बनिता बृंद महुँ सहज सुहावनि सीय ।
छबि ललना गन मध्य जनु, सुषमा तिय कमनीय ।। १।२।१५८

बयन (सुमुखियों के) — कोकिल बयन

जूथ जूथ मिलि सुमुखि सुनयनीं ।
करहिं गान कल कोकिल बयनीं ।। १।११।१४०

बयन (जनकपुर की रानियों के) — कोकिल बयन

कहहिं परस्पर कोकिल बयनीं । १।१४।१५१

उपमेय		उपमान
कुल विचार प्रचारा		रासभ
	<u>रासभ</u> कुल विचार प्रचारा ।	१।४।१३
ब्रह्मांड		१. कंदुक २. काचे घट
	<u>कंदुक</u> इव ब्रह्मांड उठावौं । <u>काचे घट</u> जिमि डारौं फोरी ॥	१।१२।१२५ १।१३।१२५
ब्रह्मांड		फल
	<u>फल</u> ब्रह्मांड अनेक निकाया ।	३।६।३२६
(वर्षा ऋतु - अप्रस्तुत)		सुराज
	जस <u>सुराज</u> खल उद्यम गयऊ ।	४।२१।३६१
(वर्षा ऋतु)		क्रोध
	करइ <u>क्रोध</u> जिमि धरमहि दूरी ।	४।२२।३६१
वर्षा ऋतु		कलिहि - कलियुग
	<u>कलिहिं</u> पाइ जिमि धर्म पराहीं ।	४।१५।३६२
(वर्षा ऋतु)		सुराजा
	प्रजा बाढ़ जिमि पाइ <u>सुराजा</u> ।	४।७।३६२

<u>उपमेय</u>		<u>उपमान</u>
(वर्षा ऋतु)		ज्ञाना - ज्ञान
	जिमि इंद्रियगन उपजे <u>ज्ञाना</u> ।	४।८।३६२
बर दौत		दौ दल
	बर <u>दौत दल</u> दुख फल परिनामा ।	२।२२।१८८
बरणहि जलद		बुध बिद्या पाए (विद्या प्राप्त बुद्धिमान)
	बरणहिं जलद भूमि निअराए । जथा नवहिं <u>बुध बिद्या पाए</u> ।।	४।११।३६१
बरषि बान (धारा वर्षा)		निहार
	जनु <u>निहार</u> महं दिनकर दुरेऊ ।	६।१६।४६२
बरसै (वर्षा)		उपज
	ऊसर बरषै तृन नहिं जामा । जिमि हरिजन हियं <u>उपज</u> न कामा ।।	४।१६।३६२
बराहू		सिखर
	नील महीधर <u>सिखर</u> सम, देखि बिसाल बराहू ।।	१।१२।८०

उपमेय		उपमान
बराहू		राहू
	फिरत बिपिन नृप दीख बराहू ।	
	जनु बन दुरेउ ससिहि ग्रसि राहू ॥	१।८।८०
बल (रावण का)		जल
	म॰ फुा सागर ज॰ जल पूरा ।	६।६।५१६
बल्कल (वल्कल)		बिमल दुकूल
	बलकल बिमल दुकूल ।	२।१।२०७
बलीमुख		काल
	बीर बली मुख जुद्ध बिरुद्धे ।	
	देखियत बिपुल काल जनु क्रुद्धे ॥	६।८।४५३
बसिष्ठ		सुरगुर
	राजत बसिष्ठ सोह नृप कैसे ।	
	सुरगुर संग पुरंदर जैसे ॥	१।२०।१४७
बहु बासना		मसक
	बहु बासना मसक हिम रासिहि	७।८।५०७
बाजि		काम
	बाजि बेषु जनु काम बनावा ।	१।७।१५४

उपमेय		उपमान
बाजि		लराहि - मोर
	अनु बाजि बेणु बनाइ मनरिद्ध	१।८।१३७
	+ + +	
	अनु वर लराहि नचाव ।	१।१३।१५४
बात (मंथरा की)		माहुर
	सुनत बात मृदु अंत कठौरी ।	
	देति मनहुं मधु माहुर घौरी ॥	२।६।१८८
बात (मृदु बचन कठौरी - मंथरा की)		मधु माहुर घौरी
	सुनत बात मृदु अंत कठौरी ।	
	देति मनहुं मधु माहुर घौरी ॥	२।६।१८८
बात (राम बनगमन की)		बीछी (बिच्छू का विष)
	नगर व्यापि गइ बात सुतीछी ।	
	छुवत चढ़ी अनु सब तन बीछी ॥	२।२३।१९८
बात (राम बनगमन की)		दवारि (दावाग्नि)
	नगर व्यापि गइ बात सुतीछी ।	
	+ + +	
	बेलि बिटप जिमि देखि दवारी ।	२।२४।१९८

उपमेय — उपमान

बान (रघुपति का) — कृसानु - कृशान

रघुपति बान कृसानु । — ५।१।३८०

बान — रबि

राम बान रबिउएँ जानकी । — ५।४।३८०

बान (राम के) — अहिगन

राम बान अहिगन सरिस — ५।६।३८०

बान (राम के) — उरगा - उरग

चले बान सपच्छ जनु उरगा । — ६।९०।४६१

बानर — मसक

बचन सुनत प्रेमाकुल बानर ।

\+ \+ \+

मसक कबहुं खगपति हित करहीं । — ६।७।४८३

बाना (लक्ष्मण के) — पबि - पवि

देखेसि आवत पबि सम बाना । — ६।८३।४०९

बानी (कौशल्या की) — सुरसरि

सुनि सुरसरि सम पावनि बानी । — २।१०।३००

उपमेय	उपमान

बानी (राम की) — सुधा

किए सुखी कहि बानी सुधा सम । — ६।१।४७४

बानी (राम की) — निगम

मारुत स्वास निगम निज बानी । — ६।२।४९१

बानी (भरत की) — सुधा

बोलेउ सुवन सुधा सम बानी । — ७।१४।४८८

बारिद — बिष्नु भगत

लछिमन देखु मोर गन नाचत बारिद पेखि ।
गृही बिरति रत हरष जस, बिष्नु भगत कहुं देखि ।। ४।८।३६१

बालकु :लखन: — राकेस कलंकू

कौसिक सुनहु मंद येहु बालकु ।
\+ \+ \+
भानु बंस राकेस कलंकू ।। — १।१०।१३५

बालि — नाग

राम चरन दृढ़ प्रीति करि, बालि कीन्ह तनु त्याग ।
सुमन माल जिमि कंठ तें, गिरत न जानइ नाग ।। ४।२४।३५६

उपमेय	उपमान

बासु (निवास स्थान) — सुरपुर

बीच बीच बर बासु बनाए।
सुरपुर सरिस संपदा छाए ।। १।२१।१४८

(वासुदेव) = विष्णु — १. सुरतरु, २. सुरधेनु

सुनु सेवक सुरतरु सुरधेनु। १।१६।७५

(वासुदेव) — हंसा - हंस

जो भुसुंडि मन मानस हंसा। १।२३।७५

बाहिनी — बीर बसंत सैन

अति बिचित्र बाहिनी बिराजी।
बीर बसंत सैन जनु साजी ।। ६।११।४५२

बाहु (राम के) — दिगपाला

माया हास बाहु दिगपाला। ६।३।४११

बाहु (रावण के) — राहु

जनि जल्पसि जड़ जंतु कपि, सठ बिलोकु मम बाहु।
लोकपाल बल बिपुल ससि, ग्रसन हेतु सब राहु ।। ६।१२।४१५

उपमेय	उपमान
बाहुबल (रघुबर का)	सागरु - सागर
सागरु रघुबर बाहुबल	१।१३।१२६
बाहु (राक्षसों के)	राहु
रहे छाइ नभ सिर बरु बाहू ।	
मानहुं अमित केतु बरु राहू ।।	६।६।४६२
बाहू - राहु (राक्षसों के)	राहु - राहु
रहे छाइ नभ सिर बरु बाहू ।	
मानहुं अमित केतु बरु राहू ।।	६।६।४६२
जनु राहु केतु अनेक नभ,	६।१०।४६२
बिकल बानर निकर	करुना
प्रभु बिलाप सुनि कान, बिकल भए बानर निकर । आइ गयउ हनुमान जिमि करुना महं बीर रस ।।	६।११।४३६
बिचार	मथानी
मुदिता मथइ बिचार मथानी ।	७।५।५५८
बिटप	पर उपकारी पुरुष
फल भारनि नमि बिटप सब, रहे भूमि निअराइ । पर उपकारी पुरुष जिमि, नवहिं सुसंपति पाइ ।।	३।३।३४६

उपमेय		उपमान
विटप		साधक मन
	नव पल्लव मग विटप अनेका ।	
	साधक मन जस मिले बिबेका ।।	४।२०।३६१
वितर्क		वीचि
	वितर्क वीचि संकुरे ।	३।२३।३२१
विधि करि हर पद		छीर सिन्धु
	भरतहिं होइ न राजमदु, बिधि हरि हर पद पाइ ।	
	कबहुं कि कांजी सीकरनि, छीरसिन्धु बिनसाइ ।।	२।७।२७८
बिनय (भरत की)		हंसी - हंसिनी
	भरत बिनय सुनि सबहिं प्रसंसी ।	
	खीर नीर बिबरन गति हंसी ।।	२।११।३१३
बिपति (बनगमन की)		बीजु - बीज
	बिपति बीजु बरषा रितु चेरी ।	२/२१/१८८
बिप्रबर बृंदा		श्रुति छंदा (सशरीर)
	तिन्ह चढ़ि चले बिप्रबर बृंदा ।	
	जनु तनु धरें सकल श्रुति छंदा ।।	१।३।१४७

उपमेय		उपमान
बिबुध		कौका - कौक
	बिबुध बिकल निसि मानहुं कौका ।	२।११।३०५
बिभीषण (दशानन का भाई)		उलूकहिं - उलूक
	नाथ दसानन कर मैं भ्राता ।	
	+ + +	
	जथा उलूकहिं तम पर नेहा ।	५।४।३६४
बिभीषनु - बिभीषण		काल
	उमा बिभीषनु रावनहिं, सनमुख चितव कि काउ ।	
	चितव सो काल समान अब, श्री रघुबर प्रभाउ ॥	६।४।४६४
बिमल ग्यान		जल
	बिमल ग्यान जल जब सो नहाई ।	७।१३।५६३
बिरति		चर्म
	बिरति चर्म असि ग्यान मद	७।३।५६१
बिरह (राम का)		दव - दावाग्नि
	दैखे लोग बिरह दव दाढ़े ।	२।३।२१३

उपमेय | उपमान

बिरह (सीता का) | अगिन (अग्नि)
बिरह अगिनि तनु तूल समीरा । | ५।५।३८७

बिरह (राम का) | बरीस - बारीश
बूड़त बिरह बारीस,
कृपानिधान मोहि कर गहि लियौ । | ७।१६।४६१

बिरह (रघुपति का) | दिनेस - दिनेश
रघुपति बिरह दिनेश | ७।३।४६४

बिरहागी - बिरहाग्नि | दव - दावाग्नि
जेहिं दव दुसह दसहुं दिसि दीन्हीं । | २।९६।२९४

बिराग - वैराग्य | नवनीता - नवनीत
तब मथि काढ़ि लेइ नवनीता ।
बिमल बिराग सुभग सुपुनीता ।। | ७।६।५५८

बिराग | बल
जब उर बल बिराग अधिकाई । | ७।९१।५९३

बिराजा | दंभिन्ह कर मिला समाजा
निसि तम घन खद्योत बिराजा ।
जनु दंभिन्ह कर मिला समाजा ।। | ४।२।३६२

उपमेय		उपमान
बिलोक (दृष्टिपात)		बरिस कमल सित श्रेनी (श्वेत कमल की वर्षा)
	जहं बिलोक मृग सावक नयनी । जनु तहं बरिस कमल सित श्रेनी ।।	१।१४।११५
बिलोचन (राम के)		कंज
	स्याम गात कल कंज बिलोचन ।	१।५।१११
बिलोचन (राम के)		राजीव
	स्याम गात राजीव बिलोचन ।	६।७।४८२
बिलोचन (राम के)		जलज
	जलज बिलोचन स्यामल गातहिं	७।३।५०७
बृष्टि सारदी		भगति - भक्ति
	कहुं कहुं बृष्टि सारदी थोरी । कोउ कोउ पाव भगति जिमि मोरी ।।	४।२२।३६२
बिषय		बिष
	नर तनु पाइ बिषय मन देहीं । पलटि सुधा ते सठ बिष लेहीं ।।	७।१२।५१३

उपमेय		उपमान
बिषय		बयारी (वायु)
	आवत देखहिं बिषय बयारी ।	७।४।५५६
बिषय		प्रभंजन
	जब सौं प्रभंजन उर गृह जाई ।	७।५।५५६
बिषय		बतासा
	बुद्धि बिकल भइ बिषय बतासा ।	७।६।५५६
बिषय		समीर
	बिषय समीर बुद्धि कृत भोरी ।	७।८।५५६
बिषय		कुपथ्य
	बिषय कुपथ्य पाइ अंकुरे ।	७।६।५६३
बिषय आस		दुर्बलता
	बिषय आस दुर्बलता गई ।	७।१२।५६३
बिषय कथा		संबुक भेक सेवार (घोंघे, मेढ़क, सैवार)
	संबुक भेक सेवार समाना । इहाँ न बिषय कथा रस नाना ।	१।७।२४

उपमेय	उपमान
बिषय, मनोरथ	सूल - शूल
बिषय मनोरथ दुर्गम नाना ।	
ते सब सूल नाम को जाना ।।	७।२४।५६२
बिषय मनोरथ पुंज	कंज बन
बिषय मनोरथ पुंज कंज बन ।	६।५।४८१
बिष्णु	त्रिपुरारी - त्रिपुरारी
बिष्णु जो सुर हित नर तनु धारी ।	
सोउ सर्बग्य जथा त्रिपुरारी ।।	१।११।३०
बिस्व (वशिष्ठ के लिए)	बदर
जिन्हहि बिस्व कर बदर समाना ।	२।१४।२५६
बिस्वामित्र (विश्वामित्र)	पिआसे (प्यासे)
बिस्वामित्र बिनय बड़ि देखी ।	
उपजा उर संतोषु बिसेषी ।।	१।६।१५०
+ + +	
चले जहां दसरथु जनवासें ।	
मनहुं सरोवर तकेउ पिआसें ।।	१।८।१५०
बिस्वास (विश्वास)	बटु (लड़का/नट)
बटु बिस्वास अचल निज धरमा ।	१।७।३

उपमेय	उपमान
बेद पुरान (बेद पुराण)	उदधि
बेद पुरान उदधि घन साधू ।	१।२१।२२
बेनी (त्रिबेनी)	हरिलोक निसैनी
देखु परम पावनि पुनि बेनी । हरन सोक हरि लोक निसैनी ।।	६।१८।४८४
बैदेही	जनक सुकृति मूरति (जनक की मूर्ति स्वरूप सुकृति)
जनक सुकृत मूरति बैदेही ।	१।८।१५९
बैन (रानियों के)	कोकिल के स्वर
गावहिं मंगल कोकिल बयनी ।	२।१३।१८८
बंचक	१. कालनेमि २. रावन ३. राहु
लखि सुबेष जग बंचक जेऊ । + + + कालनेमि जिमि रावन राहू ।।	१।२२।५
बंदनवारे - बंदनवार	पाकरिपु चाप
मंजुल मनिमय बंदनवारे । मनहुं पाकरिपु चाप संवारे ।।	१।९७।१७९

उपमेय		उपमान
वंदनिवारे (वंदनवार)		मनोभव फंद
	रचे रुचिर बर वंदनिवारे ।	
	मनहुं मनोभव फंद संवारे ।।	१।३।१४२
बुंद		बान
	बान बुंद भइ बृष्टि अपारा ।	६।२।४५८
बुंद अघात		खल के बचन
	बुंद अघात सहहिं गिरि कैसे ।	
	खल के बचन संत सह जैसे ।।	४।१२।३६१
भगत उर (भक्त का उर)		ब्योम
	बसहु भगत उर ब्योम ।	३।३।३५०
भगति (भक्ति)		सुसीतलताई
	प्रेम भगति जो बरनि न जाई ।	
	सोइ मधुरता सुसीतलताई ।।	१।२४।२२
भगति (भक्ति - रघुपति की)		बरषा रितु
		(वर्षा ऋतु)
	बरषा रितु रघुपति भगति ।	१।१।१४

उपमेय		उपमान
भगति	राका रजनी भगति तव।	राका रजनी 3।2।350
भगति	देहि भगति रघुपति अति तरनी।	तरनी - तरणी 7।16।506
भगति	भगति हीन गुन सब सुख ऐसे। लवन बिना बहु बिंजन जैसे॥	लवन 7।11।535
भगति	प्रीति बिना नहिं भगति दृढ़ाई। जिमि खगपति जल कै चिकनाई॥	चिकनाई 7।20।537
भगति (राम की)	राम भगति जल मम मन मीना।	जल 7।17।552
भगति (राम की)	जे असि भगति जानि परिहरहीं। + + + ते जड़ कामधेनु गृह त्यागी॥	कामधेनु 7।4।556

उपमेय		उपमान
भगति (राम की)		चिंतामनि
	राम भगति चिंतामनि सुंदर ।	७।७।५६०
भगति (राम की)		मनि – मणि
	तेहि मनि बिनु गुरु पाव न कोईं ।	७।१२।५६०
भगति		मनि
	पाव भगति मनि सब सुखखानी ।	७।२०।५६०
भगति		मधुरता
	भगति मधुरता जाहि	७।२।५६१
भगति		सजीवनि
	रघुपति भगति सजीवनि मूरी ।	७।३।५६३
भगति हीन नर (भक्तिहीन नर)		बिनु जल बारिद
	भगतिहीन नर सोहइ कैसा ।	
	बिनु जल बारिद देखिअ जैसा ।।	३।१८।३४५
भगवाना		प्रकास
	सहज प्रकास रूप भगवाना ।	१।१५।६२

उपमेय		उपमान
भगवाना		कामधेनु
	कामधेनु सत कोटि समाना ।	
	सकल कामदायक भगवाना ।।	७।६।५३६
भगवाना		अमित कोटि सारदा (अमित कोटि शारदा)
	सकल कामदायक भगवाना ।	७।६।५३६
	+ + +	
	सारद कोटि अमित चतुराई ।	७।७।५३६
भगवाना		बिधि सत कोटि
	सकल कामदायक भगवाना ।	७।६।५३६
	+ + +	
	बिधि सत कोटि सृष्टि निपुनाई ।।	७।७।५३६
भगवाना		बिष्नु कोटि
	सकल कामदायक भगवाना ।	७।६।५३६
	+ + +	
	बिष्नु कोटि सम पालन करता ।।	७।८।५३६
भगवाना		रुद्रकोटि
	सकल कामदायक भगवाना ।	
	+ + +	
	रुद्र कोटि सत सम संघरता ।	७।८।५३६

उपमेय		उपमान
भगवाना		धनद कोटि सत (सत कोटि धनद)
	सकल कामदायक भगवाना ।	
	+ + +	
	धनद कोटि सत सम धनवाना ।	७।६।५३६
भगवाना		माया कोटि
	माया कोटि प्रपंच निधाना ।	७।६।५३६
भट		घन
	मर्दहिं निसाचर कटक भट,	
	बलवंत घन जिमि गाजहीं।	६।१०।४५३
भट		(नौका)
	बहु भट बहहिं चढ़े खग जाहीं ।	६।३।४५८
भुज		तरु
	भुज तरु प्रबल प्रताप दिवाकर ।	६।३।४८१
भनिति (कविता)		बिधुबदनी
	भनिति बिचित्र सुकबि कृत जोऊ ।	१।१।८
	+ + +	
	बिधुबदनी सब भांति संवारी ।।	१।२।८

उपमेय	उपमान

मनिति (कविता) — सुराती (रात्रि)

मनिति मौरि सिव कृपा बिभाती ।
ससि समाज मिलि मनहुं सुराती ॥ १।१।१२

भरत — अनुरागू

मिलेउ बहौरि भरत लघु भाईं । २।१७।२६२
+ + +
सौहत दिए निषादहि लागू ।
जनु धनु धरैं बिषय अनुरागू ॥ २।२।२६३

भरत — अघ उदधि

अति सनेह सादर भरत, कीन्हेउ दैंड प्रनामु ।
+ + +
मैं धिग धिग अघ उदधि अभागी ।
सबु उतपातु भय्उ जेहिं लागी ॥ २।२३।२६४

भरत — क्षुधिता

भरत दीख बन सैल समाजू ।
मुदित क्षुधिता जनु पाइ सुनाजू ॥ २।१७।२७६

भरत — तापस - तपस्वी

राम सैल सौभा निरखि, भरत हृदयं अति प्रेमु ।
तापस तप फलु पाइ जिमि, सुखी सिराने नेमु ॥ २।१२।२८०

उपमेय		उपमान
भरत		रंका - रंक
	उमगे भरत बिलोचन बारी ।	२।२३।२८०
	+ + +	
	हरषहिं निरखि राम पद अंका ।	
	मानहुँ पारसु पायउ रंका ।।	२।२।२८१
भरत		जोगी - योगी
	भरत दीख प्रभु आश्रमु पावन ।	२।११।२८९
	+ + +	
	करत प्रबेस मिटे दुख दावा ।	
	जनु जोगीं परमारथु पावा ।।	२।१२।२८९
भरत		मीनहिं - मीन
	निसि न नींद नहिं भूख दिन, भरतु बिकल सुठि सोच ।	
	नीच कीच बिच, मगन जस मीनहिं सलिल संकोच ।।	२।१२।२८७
भरत		घटज (कुंभज ऋषि)
	सकल बिलोकत भरत मुख, बनइ न उतरु देत ।	२।२३।३०५
	+ + +	
	कुसमउ देखि सनेहु संभारा ।	
	बढ़त बिंधि जिमि घटज निवारा ।।	२।२।३०६
भरत		चंचरीक
	तेहिं पुर बसत भरत अनुरागा ।	
	चंचरीक जिमि चंपक बागा ।।	२।१०।३१७

उपमेय	उपमान
भरत	१. बेतस २. बनज

राम प्रेम भाजन भरतु, बड़े न येहि करतूति ।

\+ \+ \+

जिमि जल निघटत सरद प्रकासे

बिलसत बेतस बनज बिकासे ।। २।१६।३१७

उपमेय	उपमान
भरत	तृषावंत (तृषित)

राम बिरह सागर महं, भरत मगन मन होत ।

बिप्र रूप धरि पवनसुत आइ गयउ जिमि पोत ।। ७।१०।४८८

\+ \+ \+

सुनत बचन बिसरे सब दूखा ।

तृषावंत जिमि पाइ पियूषा ।। ७।१८।४८८

उपमेय	उपमान
भरत	सद्गुन सिंधु (सद्गुणों के सिन्धु)

सुनि भरत बचन बिनीत अति कपि पुलकि तन चरनन्हि पर्यौ ।

\+ \+ \+

काहे न होइ बिनीत परम पुनीत सद्गुन सिंधु सो ।। ७।१२।४८६

उपमेय	उपमान
(भरत का चरित बखानि) (सबके लिये)	जलहीन मीन गमु (जलरहित भूमि पर मछली का चलना)

अगम सबहिं बरनत बर बरनी ।

जिमि जलहीन मीन गमु धरनी ।। २।१६।३०२

उपमेय		उपमान
भरत दसा (भरत की दशा)		जल अलिगति (फतुआ की दशा)
	भरत दसा तेहि अवसर कैसी ।	
	जल प्रवाह जल अलिगति जैसी ।।	२।१२।२७६
भरत बड़ाई (भरत का यश)		सिन्धु
	औरु करिहि को भरत बड़ाई ।	
	सरसीं सीपि कि सिंधु समाई ।।	२।८।२८६
भरत ब्यवहारू (भरत का व्यवहार)		१. सौन सुगंध (स्वर्ण सुगन्धि)
		२. सुधा ससि सारू (शशिसुधासार)
	सुनि भूपाल भरत ब्यवहारू ।	
	सौन सुगंध सुधा ससि सारू ।।	२।६।३०२
भरत भारती		मराली
	भरत भारती मंजु मराली ।	२।८।३०६
भरत महा महिमा (भरत की महान महिमा)		जलरासी
	भरत महा महिमा जलरासी ।	२।६।२८६

उपमेय	उपमान

भरतहिं — क्षीरसिंधु

भरतहिं होइ न राजमदु, बिधि हरि हर पद पाइ ।
कबहुं की कांजी सीकरनि, छीरसिंधु बिनसाइ ।। २।७।२७८

भरतहिं - भरत — गूंगेहि - गूंगा

भरतहिं भयउ परम संतोषू ।
सन्मुख स्वामि बिमुख दुखु दोषू ।। २।६।३१०
मुख प्रसन्न मन मिटा बिषादू ।
भा जनु गूंगेहि गिरा प्रसादू ।। २।१०।३१०

भरतु - भरत — करि = हाथी

सुनत भरतु भए बिबस बिषादा ।
जनु सहमेउ करि केहरि नादा ।। २।२५।२४६

भरतु — सुप्रेम पयोधि

राम संकोची प्रेमबस,
भरत सुप्रेम पयोधि । २।५।२७२

भरतु — अवगुन -उदधि (अवगुणों के समुद्र)

करि प्रनामु बोले भरतु २।७।२६३
+ + +
अस मैं अवगुन उदधि अगाधू । २।८।२६४

उपमेय		उपमान
भरतु (दशरथ सुत)		भरत (दुष्यन्त पुत्र)
	भरतु भरत सम जानि ।	२।१४।३०२
भरतु - भरत		१. चातक
		२. हंस
	राम प्रेम भाजन भरतु, बड़े न येहि करतूति ।	
	चातक हंस सराहित, टेक विवेक बिभूति ।।	२।१३।३१७
भव		रविकर
	तृषित निरखि रवि कर भव बारी ।	१।२२।२६
भव		अंबु
	भवाम्बु नाथ मंदरं	३।१२।३२१
भव		वाराधि - वाराधि
	पतंति नौ भवाराधि ।	३।२३।३२१
भव		कूपा - कूप
	जा बस जीव परा भव कूपा ।	३।१४।३३०
भव		सागर
	चढ़ि भवसागर तरहिं ।	६।२।४०३

उपमेय		उपमान
भव		सिंधु
	भवसिंधु अगाध परे नर ते ।	७।८।४६८
भव		बारिधि - वारिधि
	भव बारिधि कुंभज रघुनायक ।	७।१३।५०६
भव		बारिधि - वारिधि
	नर तनु भव बारिधि कहुं बेरो ।	७।१७।५१३
भव		सागर
	जो न तरइ भवसागर ।	७।६।५१३
भव		सागर
	भवसागर चह पार जो पावा ।	७।२०।५२७
भवबारिधि - भववारिधि		गोपद
	भव बारिधि गोपद इव तरहीं ।	२।१६।६३
भानुकुल		कमल
	जहां भानुकुल कमल दिवाकर	७।११।४६०

उपमेय		उपमान
भामिनि		दामिनि
	जहँ तहँ जूथ जूथ मिलि भामिनि ।	
	सजि नवसप्त सकल दुति दामिनि ।।	१।१३।१४५
भामिनि		दामिनि
	प्रगटहिं दुरहिं अटन्हि पर भामिनि ।	
	चारु चपल जनु दमकहिं दामिनि ।।	१।१८।१७९
भामिनि		दूध कर माखी (दूध की मक्खी)
	रैस संवाद कहौ कछु माखी ।	
	भामिनि भइहु दूध कर माखी ।।	२।७।१८७
भामिनी		सिंधुर गामिनी
	भरि भरि हेम थार भामिनी ।	
	गावत चलिं सिंधुर गामिनी ।।	७।२२।४२१
भालु		मधुकरा - मधुकर
	गहे भालु बीसहु कर मनहुं,	
	कमलन्हि बसे निसि मधुकरा ।	६।४।४६७
भालु कपी मुख		मैण अरुथा
	भागे भालु कपीमुख जूथा ।	
	वृक बिलोकि जिमि मैण अरुथा ।।	६।६।४६४

उपमेय		उपमान
माय		बच्छ (वत्स)
	माय बच्छ सिसु पाइ पेन्हाई ।	७।२।५५८
भृगुकुल कमल पतंगा (परशुराम)		बाज
	आयउ भृगुकुल कमल पतंगा ।	१।११।१३२
	देखि महीप सकल सकुचाने ।	
	बाज झपट जनु लवा लुकाने ।।	१।१२।१३२
भृकुटि विलास		भयंकर काला - काल
	भृकुटि विलास भयंकर काला ।	६।२२।४१०
भुआल - भूपाल		कुमुदगन - कुमुदगण
	सकुचे सकल भुआल, जनु बिलोकि रबि कुमुदगन ।	१।२३।१३०
भुआलू (भूपाल)		बिहंग
	राम राम रट बिकल भुआलू ।	
	जनु बिनु पंख बिहंग बेहालू ।।	२।२१।१६४
भुआलू (भूपाल)		मनिबिहीन ब्यालू (व्याल)
	प्रान कंठगत भयउ भुआलू ।	
	मनि बिहीन जनु ब्याकुल ब्यालू ।।	२।१०।२५४

उपमेय	उपमान
भुज - भुजा (राम की)	काम कलभ कर
काम कलभ कर भुज बल सींवा ।	१।६।११६
भुज - भुजा (लक्ष्मण की)	काम कलभ कर
काम कलभ कर भुज बलसींवा ।	१।६।११६
भुज (भुजायें सहस्रबाहु की)	गहन (वन)
सहसबाहु भुज गहन अपारा ।	६।५।४१८
भुज - भुजा (रावण की)	सागर
मम भुज सागर बल जल पूरा ।	६।६।४१६
भुजदंडा - भुजदंड (राम के)	करिकर
करि कर सरिस सुभग भुजदंडा ।	१।१३।७६
भुजबलु - भुजबल (नृपों के)	विधु
नृप भुज बलु विधु सिवधनु राहू ।	१।३।१२४
भुजा (रावण की)	बिटप
भुजा बिटप सिर सृंग समाना ।	६।१४।४१२

उपमेय		उपमान
भुजा (रावण की)		पक्षहीन मंदर गिरि
	काटे भुजा सोह खल कैसा ।	
	पक्षहीन मंदरगिरि जैसा ।।	६।९६।४४४
भूप		दीप
	श्री हत भए भूप धनु टूटे ।	
	जैसे दिवस दीप छबि छूटे ।।	१।८।१३०
भूप (दशरथ)		कोकू - कोक
	सुनि मृदु बचन भूप हिय सोकू ।	
	ससिकर छुअत बिकल जिमि कोकू ।।	२।१२।१६१
भूप (भूपगण)		गज
	कंाहिं भूप बिलोकत जाकें ।	
	जिमि गज हरि किसोर कें ताकें ।।	१।६।१६४
भूप दोउ (दोनों राजा)		पुन्य पयोनिधि (पुण्य पयोनिधि)
	पुन्य पयोनिधि भूप दोउ ।	१।६।१५२
भूमि		कामधेनु
	कामधेनु में भूमि सुहाई ।	१।२०।७६

उपमेय	उपमान

भूमि | नीति

भूमि न छांड़त कपि चरन, देखत रिपु मद भाग ।
कोटि बिघ्न तें संत कर, मन जिमि नीति न त्याग ।।६।६।४२३

भूषन (प्रियविहीन नारी के) | भारू - भार

भोग रोग सम भूषन भारू । २।२०।२०६

भूषन सजति : कैकेयी : | फंद

भूषन सजति बिलोकि मृगु,
मनहुं किरातिनि फंद । २।१०।१६०

भूसुर | ससिनव (नव शशि)

भूसुर ससि नव बृंद बलाहक ७।१६।५१६

भोग (प्रियविहीन नारी के लिये) | रोग

भोग रोग सम भूषन भारू । २।२०।२०६

: म :

'म' (राम का दूसरा वर्ण) | भादौं

राम नाम बर बरन जुग,
सावन भादौं मास । १।२।१४

उपमेय		उपमान
मघवा : इन्द्र :		स्वान - श्वान
	सरिस स्वान मघवा निवु जानू ।	२,१२।३०८
मज्जा		फेन
	बीर परहिं जनु तीर तरु, मज्जा बहु बह फेन ।	६।११।४५८
मत्तगज		सावन घन
	चले मत्त गज घंट बिराजी । मनहुं सुभग सावन घन राजी ॥	१।१।१४७
मत्तनाग		तम
	मत्त नाग तम कुंभ बिदारी ।	६।६।४०६
मत्सर		चौरा - चौर
	मत्सर मान मोह मद चौरा ।	७।१८।५०७
मत्सर अबिबेका - मत्सर अविवेक		जुगबिधि ज्वर (दो प्रकार के ज्वर)
	जुग बिधि ज्वर मत्सर अबिबेका ।	७।१६।५६२

उपमेय	उपमान

मति	रंक

मन मति रंक मनोरथ राऊ । १।१३।६

मति (मुनि की) | बबला

मुनि मति ठाढ़ि तीर बबला सी । २।६।२८६

मति (मुनि सुतीक्ष्ण की) | खद्योत

महिमा अमित मोरि मति थोरी ।
रवि सन्मुख खद्योत अंजोरी ।। ३।२३।३२६

मति गति (मति की गति - राम की) | बाल बचन

मति गति बाल बचन की नाईं । २।२२।३०८

मद | चोरा - चोर

मत्सर मान मोह मद चोरा । ७।१८।५०७

मद | रिपु

बिरति चर्म असि ज्ञान, मद लोभ मोह रिपु मारि । ७।३:।५६१

मद | रजनी

मद मोह महा ममता रजनी । ७।३।४६८

मदादिक | सलभ (शलभ)

जरहिं मदादिक सलभ सब । ७।१५।५१८

उपमेय		उपमान
मधु		सुधा
	मधु सुचि सुंदर स्वाद सुधा सी ।	२।४।२८६
मधुकर मुखर		भेरि सहनाईं (भेरी तथा शहनाईं बाजे)
	मधुकर मुखर भेरि सहनाईं ।	३।१५।३४
मंदोदरि - मंदोदरी		मृगलोचनि - मृगलोचनी
	मंदोदरी सोच उर बसेऊ । + + + तब बतकही गूढ़ मृगलोचनि ।	६।१७।४११
मन (दुष्टों के)		माखी - मक्खी
	परहित घृत जिन्हं मन माखी ।	१।८।४
मन (तुलसी का)		रंक
	मन मति रंक मनोरथ राउ ।	१।१६।६
मन (भरत का)		मधुप
	राम चरन पंकज मन जासू । लुबुध मधुप इव तजै न पासू ।।	१।१६।१२
मन (मुनियों का)		मधुप
	मुनि मन मधुप बसहिं जिन्ह माहीं ।	१।१६।७६

उपमेय		उपमान
मन (मुनियों तथा योगियों का)		मधुप
	करि मधुप मन मुनि जोगिजन ।	१।११।१२६
मन (तुलसी का)		मुकुरु - मुकुर
	निज मन मुकुरु सुधार ।	२।६।१७६
मन (दशरथ का)		चकोरु - चकोर
	मन तव आनन चंद चकोर ।	२।४।१६०
मन (जनक का)		पयागू -प्रयाग
	उर उमगेउ अंबुधि अनुरागू ।	
	भयउ भूप मनु मनहुं पयागू ।।	२।१४।३०१
मन (राम का)		ससि - शशि
	मन ससि चित्त महान ।	६।७।४११
मन (भक्तों का)		भृंग
	चिंतकस्य मन भृंग संनिधौ ।	७।६।४८७
मन (कागभुसुंडि का)		मीना - मीन
	राम भगति जल मम मन मीना ।	७।१७।५५२

उपमेय		उपमान
मन		अहीर
	निर्मल मन अहीर निज दासा ।	७।२।५५८
मनजात		किरात
	मनजात किरात निपात किए । मृग लोग कुभोग सरेन हिए ।।	७।५।४६८
मन मलीन (लंकरा का)		विष रस
	मन मलीन तनु सुंदर कैसे । विष रस भरा कनक घट जैसे ।।	१।१३।१३७
मनसिज		करि = हाथी
	मनसिज करि हरिजन सुख दातहिं ।	७।६।५०७
मनि (मणि)		तारा
	मंदिर मनि समूह जनु तारा ।	१।४।६६
मनु - मन		१. ज्ञान २. भगति (भक्ति)
	तहं दिवं हरषि चलेउ मनु राजा । + + + ज्ञान भगति जनु धरे सरीरा ।।	१।१४।७४

उपमेय	उपमान
मन - मन (विदेह का)	चकोरा - चकोर
सहज विराग रूप मनु मोरा ।	
थकित होत जिमि चंद चकोरा ।।	१,२।१०६
मनु - मन (राम का)	मधुप
करत बतकही अनुज सन, मनु सिय रूप लोभान ।	
मुख सरोज मकरंद छबि, करै मधुप इव पान ।।	१।१२।११५
मनु (दशरथ का)	पीपर पात (पीपल का पत्ता)
पीपर पात सरिस मन डोला ।	२।१०।१६८
मन (राम का)	गयन्दु - गयन्द
नव गयन्दु रघुबीर मनु ।	२।८।२०१
मनोदसा - मनोदशा (प्रजा की)	संगम बारि (संगम का जल)
दुबिध मनोगति प्रजा दुखारी ।	
सरित सिंधु संगम जनु बारी ।।	२।१०।३०८
मनोरथ (तुलसी का)	राऊ - राजा
मन मति रंक मनोरथ राऊ ॥	१।११।६

उपमेय	उपमान
मनोरथ (माताओं तथा सखियों का)	बेलीं - बेल
फलित बिलोकि मनोरथ बेलीं ।	२।१७।१७६
मनोरथ (दशरथ का)	बनु - बन
भूप मनोरथ सुभग बनु ।	२।७।१६१
मनोरथ	कीट
कीट मनोरथ दारु सरीरा ।	७।७।५२७
मनोरथु (दशरथ का)	सुरतरु
मोर मनोरथु सुरतरु फूला ।	२।१६।१६१
ममता (रावण की)	तमी - तम
ममता तरुन तमी अँधिआरी ।	५।१६।३६४
ममता	रजनी
मद मोह महा ममता रजनी ।	७।३।४६८
ममता	मल (मैल)
ममता मल मरि जाइ ।	७। ।५५८
ममता	दादु - दाद
ममता दादु कंडु इरषाई ।	७।१५।५६२

उपमेय	उपमान
मर्कट भालु	१. काल २. सपच्छ भूधर बृंद ३. बान - धारा

घाए बिसाल कराल मर्कट, भालु काल समान ते ।
मानहु सपच्छ उड़ाहिं भूधर बृंद नाना बान ते ।। ६।२२।४५१

उपमेय	उपमान
मराल	ताजी

पारावत मराल सब ताजी । ३।१२।३४७

उपमेय	उपमान
महतारी - मातायें (राम की)	सुबेलि (सुन्दर लतायें)

देखीं राम दुखित महतारी ।
जनु सुबेलि अवलीं हिम मारी ।। २।१६।२८३

उपमेय	उपमान
महा मोह	निसि

महा मोह निसि सोवत जागू । ६।६।४३६

उपमेय	उपमान
महावृष्टि	सुतंत्र (स्वतंत्र)

महावृष्टि चलिं फूटि कियारी ।
जिमि सुतंत्र होइ बिगरहि नारी ।। ४।३।४६३

उपमेय	उपमान
महिपु - महीप	लच्छ - लक्ष्य

मनहुं महिपु मृदु लच्छ समाना । २।२६।२६६

मिहिलायें (रनिवास की) करुना - करुणा

आरत जनकराज रनिवासू ।।

\+ \+ \+

सब सिय राम प्रीति किसीं मूरति ।

जनु करुना बहु बेष बिसूरति ।। २।१२।२६६

महिमा (राम की) रवि

महिमा अमित मोरि मति थोरी ।

रवि सन्मुख खद्योत अंजोरी ।। ३।२३।३२६

महीप पसु - पशु

समिधि सैन चतुरंग सुहाई ।

महामहीप भये पसु आई ।। १।१३।१३६

महोख (पक्षी) बेसरा (खच्चर)

ढेक महोख ऊंट बेसरा है । ३।११।३४७

मातु - माता धेनु

कौसल्यादि मातु सब धाई ।

निरखि बच्छ जनु धेनु लवाई ।। ७।६।४६२

मातु बचन सनेह सुरतरु के फूला

मातु बचन सुनि अति अनुकूला ।

जनु सनेह सुरतरु के फूला ।। २।२२।२०१

उपमेय		उपमान
मान		चौरा - चौर
	मत्सर मान मोह मद चौरा ।	७।१८।५०७
माया (राम की)		ऊमरि तरु
	ऊमरि तरु बिसाल तव माया ।	३।६।३२६
माया		इंद्रजाल
	क्रोध मनोज लोभ मद माया ।	
	छूटहिं सकल राम की दाया ।।	३।५।३४८
	सो नर इंद्रजाल नहिं भूला ।।	३।६।३४८
माया (रावण की)		स्वल्प सपेला
	करै लाग माया बिधि नाना ।	६।४।४३४
	जिमि कोउ करै गरुड़ सैं खेला ।	
	डरपावै गहि स्वल्प सपेला ।।	६।४।४३४
माया (रावण की)		तिमिर निकाया (गहन अंधकार)
	एक बान काटी सब माया ।	
	जिमि दिनकर हर तिमिर निकाया ।।	६।१३।४३४
माया (रावण की)		तम
	प्रभु छन महुं माया सब काटी ।	
	जिमि रबिउएं जाहिं तम फाटी ।।	६।१३।४६५

उपमेय — उपमान

माया — नटी

जो माया सब जगहिं नचावा ।। ७।१५।५२७

\+ + +

सोइ प्रभु भ्रू बिलास खगराजा ।

नाच नटी इव सहित समाजा ।। ७।१६।५२७

माया भगति (माया एवं भक्ति) — नारि

माया भगति सुनहु तुम्ह दोऊ ।

नारि वर्ग जानै सबकोऊ ।। ७।२।५५७

माया — नर्तकी

माया खलु नर्तकी बिचारी । ७।३।५५७

मार्गन : बाण : (रावण के) — ब्याल

राम मार्गन गन चले,

लहलहात जनु ब्याल । ६।९६।४६१

मारुत — कपूत

कबहुं प्रबल बह मारुत, जहं तहं मेघ बिलाहिं ।

जिमि कपूत के ऊपजे, कुल सद्धर्म नसाहिं ।। ४।१०।३६२

मीन — धर्मसीलन्ह - धर्मशील

सुखी मीन सब एक रस, अति अगाध जल माहिं ।

जथा धर्मसीलन्ह के दिन सुख संजुत जाहिं ।। ४।१४।३४८

मीन | हरि सरन (हरि की शरण)

सुखी मीन जे नीर अगाधा ।
जिमि हरि सरन न एकौ बाधा ।। ४।३।३६३

मीना - मीन | अबुध कुटुम्बी

जल संकोच बिकल भइ मीना ।
अबुध कुटुंबी जिमि धनहीना ।। ४।२०।३६२

मृदु बचन (कैकेयी के) | ससिकर (शशिकिरण)

सुनि मृदु बचन भूप हिय सोकू ।
ससिकर छुवत बिकल जिमि कोकू ।। २।१२।१६१

मृदु बचन (दशरथ के) | घृत

सुनि मृदु बचन कुमति अति जरई ।
मनहुँ अनल आहुति घृत परई ।। २।८।१६३

मुकुट (राम का) | तड़ित पटल

सिर जटा मुकुट प्रसून बिच बिच अति मनोहर राजहीं ।
जनु नीलगिरि पर तड़ित पटल, समेत उडुगन भ्राजहीं ।। ६।१६।४७२

मुख (राम का) | ससि - शशि

भए मगन देखत मुख सोभा ।
जनु चकोर पूरन ससि लोभा ।। १।१०।१०४

उपमेय		उपमान
मुख (सीता का)		ससि - शशि
	सिय मुख ससि भए नयन चकोरा ।	१।६।११४
मुख (सीता का)		सरोज
	मुख सरोज मकरंद छबि, करइ मधुप इव पान ।	१।१२।११५
मुख (सीता का)		पंकज
	गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी ।	१।३।१२८
मुख (राम का)		चंद्र
	रामचंद्र मुख चंद्र छबि	१।१०।१५७
मुख (राम का)		चंदु - चन्द्र
	रामचंद मुख चंदु निहारी	२।१६।१७६
मुख (राम का)		चंद
	रामचंद्र मुख चंद चकोरा ।	२।१६।२२७
मुख (राम एवं लक्ष्मण के)		सरद सर्बरी नाथ (चन्द्रमा)
	सरद सर्बरी नाथ मुख ।	२।८।२२८

उपमेय	उपमान
मुख (भरत का)	पंकज
मानस तें मुख पंकज आई ।	२।७।३०६
मुख (राम का)	पंकज
नयन मुख पंकज दिए ।	३।३।३२४
मुख (राम का)	पंकज
देखि राम मुख पंकज ।	३।१८।३२४
मुख (राम का)	सरोज
माथोद गात सरोज मुख ।	३।२१।३४३
मुख (रघुपति का)	कमल
सब रघुपति मुख कमल बिलोकहिं ।	७।१७।४६२
मुख (राम का)	कमल
प्रभु मुख कमल बिलोकित रहहीं ।	७।४।५०४
मुख	बिधु
मृगनयनी बिधु मुख निरखि ।	७।२१।५५६
मुख नासिका नयन अरु काना	गिरि-कन्दरा खोह
मुख नासिका नयन अरु काना । गिरि कंदरा खोह अनुमाना ।।	६।१५।४१३

मुठिका - मुष्टिका　　　　वज्र

मुठिका एक ताहि कपि मारा ।
परेउ सैल जनु वज्र प्रहारा ॥　　६।८।४५५

मुदिता　　　　मथइ (मथना)

मुदिता मथइ बिचार मथानी ।　　७।५।५५८

मुद्रिका　　　　असोक अंगार
(अशोक का अंगार)

कपि करि हृदय बिचार, दीन्ह मुद्रिका डारि तब ।
जनु असोक अंगार, दीन्ह हरषि उठ कर गहेउ ॥ ५।१०।३७८

मुंड - मुण्ड　　　　दधि कुंड

एक एक सब मर्दि करि, तोरि चलावहि मुंड ।
रावन आगे परहिं ते, जनु फूटहि दधि कुंड ॥ ६।१२।४२६

मुनि　　　　सद्गुर

साथ सद्गुर सम मुनिसिख मुनिबर।　　२।१५।२३८

मुनि (सुतीक्ष्ण)　　　　चित्र लिखि काढ़ा

राम बदन बिलोक मुनि ठाढ़ा ।
मानहुं चित्र मांझ लिखि काढ़ा ॥　　३।१६।३२६

उपमेय	उपमान
मुनिगन, गुर तथा जनक	पद्म पत्र
(मुनिगण गुरु तथा जनक)	(पद्मपत्र)
मुनिगन गुर धुरधीर जनक से ।	२।१६।३१३
+ + +	
पद्म पत्र जिमि जग जल जाए ।।	२।१७।३१४
मुनितिय - मुनितिय	सासु - सास
सासु ससुर सम मुनितिय मुनिवर ।	२।१५।२३८
मुनिवर (विश्वामित्र)	चकोर
मुनिवर हृदय हरष अति पावा ।	१।६।१०४
+ + +	
भए मगन देखत मुख सोभा ।	
जनु चकोर पूरन ससि लोभा ।।	१।१०।१०४
मुनि मंडली	ज्ञान
लसत मंजु मुनि मंडली, मध्य सीय रघु चंदु ।	
ज्ञान सभा जनु तनु धरे, भगति सच्चिदानंदु ।।	२।१६।२३८
मुनिमन	मानस
मुनि मन मानस हंस निरंतर ।	७।१७।५०६
मुनि मानस	पंकज
मुनि मानस पंकज भृंग भजे ।	६।२५।४६८

उपमेय		उपमान
मुनिन्ह - मुनि		नृप
	मुनिन्ह प्रथम हरि कीरति गाई ।	१।७।१०
	+ + +	
	अति अपार जे सरित बर जौं नृप सेतु कराहिं ।।	१।८।१०
मुनि समूह		निकर चकोर (चकोरों का समूह)
	मुनि समूह महं बैठे, सनमुख सब की ओर ।	
	सरद इंदु तन चितवत, मानहुं निकर चकोर ।।	३।२३।३२८
मुनिहिं - मुनि : सुतीक्ष्ण :		कनकतरुहि - कनकतरु
	मुनिहिं मिलत अस सोह कृपाला ।	
	कनक तरुहिं जनु भेंट तमाला ।।	३।१८।३२६
मेघ		सद्धर्म
	कबहुं प्रबल चल मारुत, जहं तहं मेघ बिलाहिं ।	
	जिमि कपूत के उपजें, कुल सद्धर्म नसाहिं ।।	४।१०।३६२
मेघडंबर - मेघाडंबर		जलद घटा
	छत्र मेघडंबर सिर धारी ।	
	सोह जनु जलद घटा अति कारी ।।	६।३।४१०

उपमेय		उपमान
मेघनाद		गनराजा - गजराज
	पटकसि मेघनाथ बलवाना ।	
	+ + +	
	गिरे जुगल मानहुं गजराजा ।।	५।१६।३८२
मेघनाद		प्रलय पयोद
	मेघनाद माया रचित, रथ चढ़ि गयउ अकास ।	
	गर्जेउ प्रलय पयोद जिमि, भइ कपि कटकहि त्रास ।।	६।६।४४६
मेघनाद		सुरपति
	मेघनाद माया रचित ।	६।८।४४६
	+ + +	
	सुरपति बंदि परेउ जनु मंदर ।	६।१६।४५६
मेरु		मूलक
	सकौं मेरु मूलक जिमि तोरी ।	१।१३।१२५
मो (तुलसी)		साक बनिक (सब्जी बेचने वाला)
	सो मो सन कहि जात न कैसे ।	
	साक बनिक मनि गुन गन जैसे ।।	१।२३।३

उपमेय		उपमान
मोदु - मोद		बौंड़
	नृपहिं मोदु सुनि सचिव सुभाषा ।	
	बढ़त बौंड़ जनु लही सुसाखा ।।	२।१५।१८९
मोर		बाजी = घोड़ा
	मोर चकोर कीर बर बाजी ।	३।१२।३४७
मोरगन - मयूरगण		गृही बिरतिरत
	लछिमन देखु मोर गन, नाचत बारिद पेखि ।	
	गृही बिरति रति हरष जस, बिष्नु भगत कहुं देखि ।।	४।८।३६१
मोह (गिरिजा का)		सरदातप
	ससि कर सम सुनि गिरा तुम्हारी ।	
	मिटा मोह सरदातप भारी ।।	१।१।६४
मोह		घनपटल
	मोह महा घन पटल प्रभंजन ।	६।२।४८२
मोह		रजनी
	मद मोह महा ममता रजनी ।	७।१।४६८
मोह		नदी
	मोह नदी कहुं सुंदर तरनी ।	७।७।४६६

उपमेय		उपमान
मोह आदि		तम
	मोह आदि तम मिटइ अपारा ।	७।१८।५५८
मोह		दरिद्र
	मोह दरिद्र निकट नहिं आवा ।	७।६।५६०
मोह		रिपु
	बिरति चर्म असि ज्ञान मद, लोभ मोह रिपु मारि ।	७।३।५६१
मोह		निशा - निशा
	मोह निशा प्रिय ज्ञान भानु गत ।	७।८।५६२
मोह		जलधी
	मोह जलधि बोहित तुम्ह भए ।	७।११।५६५
मोही (मुझको) : परशुराम)		मीचु (मृत्यु)
	नीचु मीचु सम देख न मोही ।।	१।३।१३७
मोक्ष		जल
	जिमि थल बिनु जल रहि न सकाई । कोटि भांति कोउ करइ उपाई ।। तथा मोक्ष सुख सुनु खगराई ।।	७।१७।५५६

उपमेय	उपमान

मंगल (मंगल समाचार) — बिधु

एहि अवसर मंगलु परम, सुनि रहसेउ रनिवास ।
सोभत लखि बिधु बढ़त जनु, बारिधि बीचि बिलासु । २।१२।१८२

मंगल — बिभूषन (विभूषण)

मंगल सकल सोहाहिं न कैसे ।
सहगामिनिहिं बिभूषन जैसे ।। २।४।१६५

मंथरा — सबरी - शबरी

दीख मंथरा नगरु बनावा । २।१५।१८४
+ + +
सादर पुनि पुनि पूंछत ओही ।
सबरीं गान मृगी जनु मोही ।। २।५।१८६

मंथरा — साढ़साती

दीख मंथरा नगरु बनावा । २।१५।१८४
+ + +
अवध साढ़साती तब बोली ।। २।८।१८६

मंथरा — कुराली - कुचाली

दीख मंथरा नगरु बनावा ।
+ + +
फिरा करमु प्रिय लागि कुराली । २।१५।१८७

उपमेय		उपमान
मंथरा		बकिहिं
	दीस मंथरा नगुरु बनावा ।	२।१५।१८४
	+ + +	
	बकिहिं सराहइ मानि मराली ।	२।१५।१८७
मंदाकिनि - मंदाकिनी		डाकिनि - (पातक पौतक डाकिनी)
	सुरसरि धार नाउं मंदाकिनि ।	
	जौ सब पातक पौतक डाकिनि ।।	२।६।१३५
रघुकुल		कैरव
	रघुकुल कैरव चंद ।	२।१७।१८३
रघुकुल		कमलबिपिन
	रघुकुल कमल बिपिन दिनकर के ।	७।२२।४६३
रघुनन्दू - रघुनन्दन		चंदू - चन्द्र
	बोले उचित बचन रघुनन्दू ।	
	दिकर कुल कैरव बन चंदू ।।	१।६।१०३

उपमेय		उपमान
रघुनाथ		दीपा - दीपक
	गए जनकु रघुनाथ समीपा ।	
	सनमाने सब रबिकुल दीपा ।।	२।१५।३०५
रघुनायक		कुंभज
	भव बारिधि कुंभज रघुनायक	७।१३।५०६
रघुनायक सरुप		गारुड़ि
	तव सरुप गारुड़ि रघुनायक ।	७।५।५४०
रघुपति		ससि - शशि
	प्रगटेउ जहं रघुपति ससि चारु ।	१।१०।१२
रघुपति		तुसारु - तुषार
	बिस्व सुखद खल कमल तुसारु ।	१।१०।१२
रघुपति		सरद ससिहि (शरदकालीन शशि)
	थके नयन रघुपति छबि देखें ।	१।१७।११५
	+ + +	
	सरद ससिहि जनु चितव चकोरी ।	१।१८।११५

उपमेय		उपमान
रघुपति		गरुड़
	उमा करत रघुपति नर लीला ।	
	खेल गरुड़ जिमि अहिगन मीला ।।	६।७२।४४१
रघुपति		राकाससि (राकाशशि)
	राका ससि रघुपति पुर,	
	सिंधु देखि हरषान ।	७।६।४६०
रघुपति बल		सागर
	सठ चाहत रघुपति बल देखा ।	३।१५।३१६
	जिमि पिपीलिका सागर थाहा ।।	३।१५।३१६
रघुपति बिरह		सविष सर
	रघुपति बिरह सविष सर भारी ।	३।२७।४६७
रघुवर		रवि
	रघुवर उर जयमाल, देखि देव बरिसहिं सुमन ।	
	सकुचे सकल भुआल, जनु बिलोकि रबि कुमुद गन ।।	१।२३।१३०
रघुवर किंकर		कुमुद चकोरा
	रघुवर किंकर कुमुद चकोरा ।	२।११।२६८

उपमेय		उपमान
रघुबीर		राजमराला
	कह मुनि सुनु रघुबीर कृपाला ।	
	संकर मानस राज मराला ।।	३।२०।३२४
रघुबीर		दिनकर
	रघुबीर तीर प्रचंड लागहिं, भूमि गिरन न पावहीं ।	६।११।४६२
	+ + +	
	जनु कोपि दिनकर कर निकर जहं तहं बिधुंतुद पोहहीं ।	६।१२।४६२
रघुबीरा - रघुबीर		१. कोटि हिमगिरि
		२. सत कोटि सिंधु
	हिमगिरि कोटि अचल रघुबीरा ।	
	सिन्धु कोटि सत सम गंभीरा ।।	७।५।५३६
रघुराज		सिंधु
	सील संकोच सिंधु रघुराऊ ।	२।१०।२६६
रघुबंस - रघुबंश		बेनु बन
	भइ रघुबंस बेनु बन आगी ।	२।६।१६६
रजनीचर		पतंग
	रजनीचर बृंद पतंग है रहे ।	७।२।४६८

उपमेय		उपमान
दंड एक रघु (राजदण्ड)		दिनकर
	दंड एक रघु देखि न परेऊ ।	
	जनु निहार महँ दिनकर दुरेऊ ।।	६।१६।४६२
रनिवासु - रनिवास (अयोध्या का)		वारिधि बीचि
	एहि अवसर मंगलु परम, सुनि रहसेउ रनिवासु ।	
	सोभत लखि बिधि बढ़त जनु, बारिधि बीचि बिलासु ।।	
		२।१२।१८२
रमा बिलासु - रमा बिलास		बमन
	रमा बिलासु राम अनुरागी ।	
	तजत बमन जिमि जन बड़भागी ।।	२।११।३१७
रबिकुल		कैरवबिपिन
	पति रबिकुल कैरव बिपिन,	
	बिधु गुन रूप निधानु ।	२।६।२०४
राउ (दशरथ)		पाठीनु (बिनु पानी)
	ब्याकुल राउ सिथिल सब गाता ।	
	+ + +	
	जनु पाठीनु दीनु बिनु पानी ।।	२।२।६४
राउ :दशरथ:		गुन उदधि
		(गुणों के उदधि)
	राउ धीर गुन उदधि अगाधू ।	२।७।६७

उपमेय	उपमान
रागद्वेष	उलूक
राग द्वेष उलूक सुखकारी ।	५।११।३६४
राजतिलक (राम का)	सुधाकर
लिखत सुधाकर गा लिखि राहू ।	२।१६।२०२
राजभवन (दशरथ का)	बिपति बिषाद बसेरा
मानहुं बिपति बिषाद बसेरा ।	२।११।१६५
राज्याभिषेक (राम का)	पाकत साली (पका हुआ धान)
ईति भीति जस पाकत साली ।	२।१३।१८७
राजा (दशरथ)	संपाती
जाइ सुमंत दीख कस राजा ।	२।२५।२४१
+ + +	
जनु जरि पंख परेउ संपाती ।	२।२।२४२
राजा (दशरथ)	अमिय रहित चन्दु
जाइ सुमंत दीख कस राजा ।	
अमिअ रहित जनु चंदु बिराजा ।	२।२३।२४१

उपमेय		उपमान
रानियां		रोगी
	अमृत लहेउ जनु संतत रोगी ।	१।२।१७३
रानियां		जोगी - योगी
	पावा परम तत्व जनु जोगी ।	१।२।१७३
रानियां		रंकु - रंक
	जन्म रंकु जनु पारस पावा ।	१।३।१७३
रानियां		अंधहिं - अन्धा
	अंधहिं लोचन लाभु सुहावा ।	१।३।१७३
रानियां		मूक
	मूक बदन जनु सारद छाई ।	१।४।१७३
रानियां		सूर - शूर
	मानहुं समर सूर जय पाई ।	१।४।१७३
रानी		सिखिनि = मोरनी
	प्रेम प्रफुल्लित राजहिं रानी ।	
	मनहुं सिखिनि सुनि बारिद बानी ।।	१।२०।१४४

उपमेय		उपमान
राजु - राज्य (अयोध्या का)		अलान
	राजु अलान समान ।	२।८।२०१
रानि : कैकेयी :		भुअंग भामिनी
	केहि हेतु रानि रिसानि परसत पानि पतिहिं नेवारई । मानहुं सरोष भुअंग भामिनि बिषम भांति निहारई ।।	२।२२।१८६
रानी : कैकेयी :		बलिपशु
	लखइ न रानि निकट दुखु कैसे । चरइ हरित तिन बलिपशु जैसे ।।	२।८।१८८
राम		सावन भादों
	राम नाम बर बरन जुग, सावन भादों मास ।	१।२।१४
राम		जुग जीव
	राम नाम बर बरन जुग । + + + जुग जीव सम सहज संघाती ।	१।२।१४ / १।६।१४
राम		नर - नारायण
	राम नाम बर बरन जुग । + + + नर नारायण सरिस सुभ्राता ।	१।७।१४

उपमेय		उपमान
राम		विधु - पूषन
	राम नाम बर बरन जुग ।	१।२।१४
	+ + +	
	जग हित हेतु विमल विधु पूषन ।	१।८।१४
राम		स्वाद - तोष
	राम नाम बर बरन जुग ।	१।२।१४
	+ + +	
	स्वाद तोष सम सुगति सुधा के ।	१।६।१४
राम		कमठ सेष
	राम नाम बर बरन जुग ।	१।२।१४
	+ + +	
	कमठ सेष सम धर बसुधा के ।	१।६।१४
राम		कंज-मधुकर
	राम नाम बर बरन जुग ।	१।२।१४
	+ + +	
	जन मन मंजु कंज मधुकर से ।	१।१०।१४
राम		हरि-हलधर
	राम नाम बर बरन जुग ।	१।२।१४
	+ + +	
	भगति सुतिय कल करन बिभूषन । / बीरबलौमति हरि हलधर से ।	१।१०।१४

उपमेय		उपमान
राम		छत्र-मुकुट मनि
	राम नाम अरबरन जुग ।	१।२।१४
	+ + +	
	एकु छत्र एकु मुकुट मनि ।	१।११।१४
राम (अप्रस्तुत)		पतंगा - पतंग
	देखेउ रघुकुल कमल पतंगा ।	१।१७।५३
राम		दिनेसा - दिनेश
	राम सच्चिदानंद दिनेसा ।	१।१४।६२
राम		बिधु
	लता भवन तें प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ ।	
	निकसे जनु जुग बिमल बिधु,जलद पटल बिलगाइ ।।	१।२।११६
राम (अप्रस्तुत)		बिधु पूरे (पूर्ण चन्द्र)
	राज समाज बिराजत रूरे ।	
	उडगन महुं जनु जुग बिधु पूरे ।।	१।३।१२०
राम : दोउ भ्राता :		इष्ट देव
	हरिभगतन्ह देखे दोउ भ्राता ।	
	इष्टदेव इव सब सुख दाता ।।	१।१५।१२०

उपमेय		उपमान
राम		१. भानु - भानु २. कृसानु - कृसान
	जाना राम प्रभाउ तब ।	१।६।१४०
	+ +	
	जय रघुबंस बनज बन भानू ।	१।८।१४०
	गहन दनुज कुल दहन कृसानू ।।	१।८।१४०
राम		हंसा - हंस
	जाना राम प्रभाउ तब ।	१।६।१४०
	+ + +	
	करौं काह मुख एक प्रसंसा ।	
	जय महेस मन मानस हंसा ।।	१।१२।१४०
राम		पुरुष सिंघ (पुरुष सिंह)
	रामु लखनु जाकें तनय ।	१।६।१४३
	+ + +	
	पुरुष सिंघ तिहुं पुर उजिआरे ।	१।१०।१४३
राम		गज

तहां राम रघुबंस मनि, सुनिअ महा महिपाल ।
भंजेउ चापु प्रयास बिनु, जिमि गज पंकज नाल ।। १।१६।१४३

उपमेय		उपमान
राम (बंधु दोउ)		कोटि काम
	बारहिं बार सनेह बस, जनक बोलाउब सीय ।	
	लैन आइहहिं बंधु दोउ, कोटि काम कमनीय ।।	१।१७।१५१
राम		रवि - रवि
	अवलोकि रघुकुल कमल रवि	१।७।१५६
राम		हंसा - हंस
	राम करौं केहि भांति प्रसंसा ।	
	मुनि महेस मन मानस हंसा ।।	१।१।१६६
राम		चंदु - चन्द्र
	येहि सुख तें सत कोटि गुन, पावहिं मातु अनंदु ।	
	भाइन्ह सहित बिआहि घर, आए रघुकुल चंदु ।।	१।६।१७३
राम		दिनकर कुल टीका
	रामहिं बोलि कहहिं का राऊ ।	२।२०।१६५
	+ + +	
	गएउ जहां दिनकर कुल टीका ।	२।२२।१६५
राम		रघुकुल दीप
	रामु सुमंत्रहि आवत देखा ।	२।२३।१६५
	+ + +	
	रघुकुलदीपहि चलेउ लेवाई ।।	२।१।१६६

उपमेय		उपमान
राम		भानू - भानु
	मन मुसकाइ भानुकुल भानू ।	
	राम सहज आनंद निधानू ।।	२,१६।१९६
राम		मनि - मणि
	बरन परत नृप राम निहारे ।	२।२२।१९७
	+ + +	
	गइ मनि मनहुं फनिक फिरि पाई ।।	२।२३।१९७
राम : प्रभु :		१. भानु
		२. चंद - चन्द्र
		३. प्रान - प्राण

जिमि भानु बिनु दिनु, प्रान, बिनु तनु चंद बिनु जिमि जामिनी ।
तिमि अवध तुलसीदास प्रभु बिनु, समुझि धौं जियं भामिनी ।।२।२०।२००

राम		बिधु
	बोली देखि राम महतारी ।	२।३।२०४
	+ + +	

पिता जनक भूपाल मनि ससुर भानुकुल भानु ।
पति रघुकुल कैरव बिपिन, बिधु गुन रूप निधानु ।। २।६।२०४

राम : प्रभु :		सिंघ - सिंह
	को प्रभु संग मोहि चितवनि हारा ।	
	सिंघ बधुहिं जिमि ससक सिआरा ।।	२।१६।२०७

उपमेय		उपमान
राम		तमारि
	राम दरस हित नेम ब्रत, लगे करन नर नारि ।	
	मनहुं कोक कोंकी कमल, दीन विहीन तमारि ।।	२,२३।२१५
राम		रेतु
	शुद्ध सच्चिदानंदमय, कंद भानुकुल केतु ।	
	चरित करत नर अनुहरत, संसृति सागर सेतु ।।	२।१०।२१६
राम		मीना - मान
	सकुचि राम निज सपथ देवाई ।	
	+ + +	
	मैं न जिअब जिमि जल बिनु मीना ।।	२।२६।२१६
राम		चंदु - चन्द्र
	होंहिं प्रेमबस लोग इमि, रामु जहां जहं जाहिं ।	२।१२।२३०
	+ + +	
	गांव गांव अस होइ अनंदू ।	
	देखि भानु कुल कैरव चंदू ।।	२।१३।२३०
राम		रवि - रवि
	येहि बिधि रघुकुल कमल रबि, मग लोगन्ह सुख देत ।	२।२१।२३०

उपमेय		उपमान
राम		ब्रह्म
	आगें राम लखनु बने पाछें ।	२।२३।२३०
	+ + +	
	ब्रह्म जीव बिच माया जैसे ॥	२।१।२३१
राम		मदन
	आगें राम लखनु बने पाछें ।	२।२३।२३०
	+ + +	
	जनु मधु मदन मध्य रति लसई ॥	२।२।२३१
राम		बिधु
	आगें राम लखनु बने पाछें ।	२।२३।२३०
	+ + +	
	जनु बुध बिधु बिच रोहिनि सोही ।	२।३।२३१
राम		रघुकुल केतू (रघुकुल के केतु)
	सिय सौमित्रि राम फल खाए ।	२।२३।२३९
	+ + +	
	कस न कहहु अस रघुकुल केतू ।	२।१२।२३२
राम : प्रभु :		देखनिहारे
	जनु पेखन तुम्ह देखनिहारे ।	२।१६।२३२

उपमेय	उपमान
राम	मदनु - मदन

लखन जानकी सहित प्रभु, राजत रूचिर निकेत ।
सोह मदनु मनि वेष जनु, रति रितुराज समेत ।। २।२०।२३५

राम	बच्छु - बच्छ

राम जननि जब आइहि धाई ।
सुमिरि बच्छु जिमि धेनु लवाई ।। २।२।२४१

राम	सुरसरि

येहि तौ राम लाइ उर लीन्हा । २।२२।२६१
+ + +
करम नास जलु सुरसरि परई ।। २।१।२६२

राम	सुराजा

राम बास बन संपति भ्राजा ।
सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा ।। २।२०।२७६

राम	भानू

धरम धुरीन भानुकुल भानू ।
राजा रामु स्वबस भगवानू ।। २।२४।२८०

उपमेय		उपमान
राम		दिनेश - दिनेश
	सकल राम गुन गन अनुरागी ।	२।११।२६६
	+ + +	
	राधित रामा संभ्रम उठेउ, रविकुल कमल दिनेसु ।	२।१४।२६६
राम		कल्पपादपं (कल्पवृक्ष)
	स्यामाश्रम कल्प पादपं ।	३।५।३२२
राम		१. कृसानुः (कृसानु)
		२. भानुः (भानु)
	राम वदन बिलोकि मुनि ठाढ़ा ।	
	मानहुं चित्र मांझ लिखि काढ़ा ।।	३।२०।३२६
	मोह बिपिन घन दहन कृसानुः ।	
	सत सरोरुह कानन भानुः ।।	३।२।३२७
राम		१. मृगराज
		२. बाज
		३. निशेश
		४. बाल मराल
		५. उरगाद (गरुड़)
	निसिचर करि बरूथ मृगराजः ।	
	त्रातु सदा नो भव खगबाजः ।।	३।३।३२७
	अरुण नयन राजीव सुवेशं ।	
	सीता नयन चकोर निशेशं ।।	३।४।३२७
	हर हृदि मानस बाल मरालं ।	
	नौमि राम उर बाहु बिसालं ।।	३।५।३२७
	संशय सर्प ग्रसन उरगादः ।	३।६।३२७

उपमेय		उपमान
राम		१. कल्प पादप
		२. सेतु
	नौमि राम भंजन महिमारं ।	३।६।३२७
	भक्त कल्प पादप आराम: ।।	३।१०।३२७
	तर्जन क्रोध लोभ मद काम: ।	
	अति नागर भव सागर सेतु: ।।	३।११।३२७
राम		इन्दु
	अनुज जानकी सहित प्रभु, चाप बान धर राम ।	
	मम हिय गगन इंदु इव, बसहु सदा येह काम ।।	२।८।३२८
राम		सुख कंदा - सुखकंद
	राम अनुज समेत बैदेही ।	
	निसि दिन देव जपत हहु जेही ।।	३।१६।३२८
	जहं लगि रहे अमर मुनि बृंदा ।	
	हरषे सब बिलोकि सुख कंदा ।।	३।२१।३२८
राम		सरद इंदु (शरद इन्दु)
	राम अनुज समेत बैदेही ।	३।१६।३२८
	+ + +	
	सरद इंदु तन सिवत ।	३।२३।३२८
राम		बाल रबिहि -बालरवि
	राम बोलाइ अनुज सन कहा ।	
	+ + +	
	आइ गए बगमेल धरहु धरहु धावत सुभट ।	
	जथा बिलोकि अकेल, बाल रबिहिं घेरत दनुज ।।	३।१३।३३३

उपमेय		उपमान
राम		राहु
	तब तकि राम कठिन सर मारा ।	३।९९।३३६
	+ + +	
	जन पितिदेव सौंपि सब काहू ।	
	चले जहाँ रावन ससि राहू ।।	३।६।३४०
राम		भृंग
	जो राम मंत्र जपंत संत अनंत जन मन रंजनं ।	३।९।३४४
	+ + +	
	मम हृदय पंकज भृंग अंग, अनंग बहु छबि सोहई ।	३।६।३४४
राम		नट
	छूटहिं सकल राम की माया ।	३।५।३४८
	सो नर इंद्रजाल नहिं भूला ।।	
	जापर होइ सो नट अनुकूला ।।	३।६।३४८
राम (मम)		लोभी
	अस सज्जन मम उर बस कैसें ।	
	लोभी हृदयं बसइ धनु जैसे ।।	५।९०।३६५
राम		मनि - मणि
	तंत राम बिरोध परिहरहू ।	
	जानि मनुज जनि मन हठ धरहू ।।	६।९८।४९०
	बिस्वरूप रघुबंस मनि ।	६।९६।४९०

उपमेय | उपमान

राम — मृगपति

जौं मृगपति बध मेडकन्हि, भल कि कहइ कोउ ताहि ।
जद्यपि लघुता राम कहुं, तोहि बधें बड़ दोष । ६।१२।४१६

राम (लक्ष्यार्थ) — गजारि

नहि गजारि जसु बधे सृकाला । ६।६।४२०

राम — गरुड़

राम समीप गयउ घननादा । ६।१।४३४
+ + +
जिमि कोउ करै गरुड़ सैं खेला । ६।४।४३४

राम — दिनकर

कौतुक देखि राम मुसुकाने ।
भए सभीत सकल कपि जाने ।। ६।१२।४३४
एक बान काटी सब माया ।
जिमि दिनकर हर तिमिर निकाया ।। ६।१३।४३४

राम — कृपा बारिधर

कृपा बारिधर राम खरारी । ६।१।४४४

राम — मृगराज

जय राम रावन मत्त गज, मृगराज सुजसु बखानहीं । ६।२।४५२

उपमेय	उपमान

राम — नीरज

सो राम बाम भाग राजति, रुचिर अति सोभा भली ।
नव नील नीरज निकट, मानहुं कनक पंकज की कली ।। ६।१४।४७६

राम — खगनाथ

जय राम सदा सुखधाम हरे । ६।१५।४७७
+ + +
जनु पावक रावन नाग महा ।
खगनाथ जथा करि कोप गहा ।। ६।१८।४७७

राम — दिवाकर

तहाँ भानुकुल कमल दिवाकर । ७।११।४६०

राम — राकेस - राकेश

निरखि राम राकेश । ७।४।४६४

राम — संसार बिटप

पद कंज द्वंद मुकुंद राम रमेस नित्य भजामहे ।
+ + +
पल्लवत फूलत नवल नित संसार बिटप नमामहे ।। ७।१३।४६७

राम — पुंज दिवाकर

जय राम रमा रमनं समनं । ७।२४।४६७
+ + +
तुम पुंज दिवाकर तेज अनी ।। ७।४।४६८

उपमेय		उपमान
राम		भृंग
	जय राम रमा रमनं समनं ।	७।२४।४८७
	+ + +	
	मुनि मानस पंकज भृंग भजे ।	७।२५।४८८
राम		पलक
	राम नाम जहं राजा सो पुर बरनि कि जाइ ।	७।१६।५०६
	+ + +	
	पलक नयन इव सेवक मातहिं ।।	७।३।५०७
राम		रबि
	राम नाम जहं राजा, सो पुर बरनि कि जाइ ।	७।१६।५०६
	+ + +	
	संत कंज बन रबि रन धीरहिं ।	७।४।५०७
राम		खगराजहिं - खगराज
	नाम नाम जहं राजा ।	७।१६।५०६
	+ +	
	काल कराल ब्याल खगराजहिं ।	७।५।५०७
राम		किरातहि - किरात
	राम नाम जहं राजा, सो पुर बरनि कि जाइ ।	७।१६।५०६
	+ + +	
	लोभ मोह मृग जूथ किरातहि ।	७।६।५०७

उपमेय | उपमान

राम — १. भानुहि - भानु
२. कृसानुहिं - कृसान

राम नाम जहं राजा, सो पुर बरनि कि जाइ । ७।२२।५०६

\+ \+ \+

संसय सोक निबिड़ तम भानुहि । ७।७।५०७
दनुज गहन घन दहन कृसानुहिं ।। ७।७।५०७

राम — हिम रासिहि - हिमराशि

राम नाम जहं राजा, सो पुर बरनि कि जाइ ।

\+ \+ \+

बहु बासना मसक हिम रासिहि । ७।८।५०७

राम — बलाहक

गावन लागे राम कल, कीरति सदा नवीन । ७।१५।५१६

\+ \+ \+

मुनि रसि नव बुंद बलाहक । ७।१६।५१६

राम — सुधाकर

गावन लागे राम कल, कीरति सदा नवीन । ७।१५।५१६

\+ \+ \+

जय दसरथ कुल कुमुद सुधाकर । ७।२१।५१६

उपमेय		उपमान
राम		कौटि दुर्गा
	राम काम सत कौटि सुभग तन ।	
	दुर्गा कौटि अमित अरि मर्दन ।।	७।२१।५३८
राम		१. सक्र कौटि सत
		२. सत कौटि नभ
	राम काम सत कौटि सुभग तन ।	
	दुर्गा कौटि अमित अरि मर्दन ।।	७।२१।५३८
	सक्र कौटि सत सरिस बिलासा ।	
	नभ सत कौटि अमित अवकासा ।।	७।२२।५३८
राम		१. सत कौटि मरुत
		२. रबि सत कौटि
	राम काम सत कौटि सुभग तन ।	७।२१।५३८
	+ + +	
	मरुत कौटि सत बिपुल बल ।	
	रबि सत कौटि प्रकास ।।	७।२२।५३८
राम		ससि सत कौटि
	राम काम सत कौटि सुभग तन ।	७।२१।५३८
	+ + +	
	ससि सत कौटि सुसीतल ।	७।२३।५३८

उपमेय		उपमान
राम		काल कौटि सत
	राम काम सत कौटि सुभग तन ।	७।२१।५३८
	+ + +	
	काल कौटि सत सरिस अति ।	७।१।५३६
राम		धूम केतु सत कौटि
	राम काम सत कौटि सुभग तन ।	७।२१।५३८
	+ + +	
	धूमकेतु सत कौटि सम ।	७।२।५३६
राम		तीरथ अमित कौटि
	राम काम सत कौटि सुभग तन ।	७।२१।५३८
	+ + +	
	तीरथ अमित कौटि सम पावन ।	७।४।५३६
राम		रामु - राम
	राम समान रामु निगम कहैं ।	७।११।५३६
राम		सिंधु
	राम सिंधु घन सज्जन धीरा ।	७।२२।५६०
राम आगमन		अरुनोदय

अरुनोदय सकुचे कुमुद, उडगन जोति मलीन ।
तिमि तुम्हार आगमन सुनि, भए नृपति बलहीन ।। १ ।२।१९६

उपमेय | उपमान

राम — सुधा समुद्र

सीय बिआहबि राम, गरबु दूरि करि नृपन्ह कौ । १।३।१२२

+ + +

सुधा समुद्र समीप बिहाई । १।६।१२२

रामु - राम — कूल

रामु लखनु दोउ बंधु बर १।८।१०६

+ + +

कूल जीव छब सहज सनेहू । १।१३।१०६

सीताराम — गिरा-अरथ

गिरा अरथ जल बीचि सम, कहियत भिन्न न भिन्न ।
बंदौ सीताराम पद, जिन्हहिं परम प्रिय खिन्न ।। १।१३।१३

सीताराम — जल-बीच

गिरा अरथ जल बीचि सम, कहियत भिन्न न भिन्न ।
बंदौ सीताराम पद, जिन्हहिं परम प्रिय खिन्न ।। १।१३।१३

राजकुंवर : राम : — बाल मराल

सौं पनु राजकुंवर कर देहीं ।
बाल मराल कि मंदर लेहीं ।। १।२०।१२६

राज समाज — उड्गान

राज समाज बिराजत रुर ।
उड्गान महुं जनु जुग बिधु पूर ।। १।३।१२०

उपमेय		उपमान
रामकथा		कालिका
	रामकथा कालिका कराला ।	१।१६।२८
रामकथा		ससि किरन
	रामकथा ससि किरन समाना ।	१।१७।२८
रामकथा		तरनी - तरणि
	उमापति राम कथा मैं बरनी ।	७।६।४६६
	+ + +	
	मोह नदी कहुं सुंदर तरनी ।।	७।७।४६६
राम कथा		बरनी
	रामकथा मुनिबर बहु बरनी ।	
	ज्ञान जोनि पावक जिमि बरनी ।।	७।१०।५०८
रामकथा		नाथा (नाप)
	राम कथा ता कहुं दृढ़ नाथा ।	७।२०।५१७
रामकथा		रुचिराकर
	रामकथा रुचिराकर नाना ।	७।१८।५६०

उपमेय — उपमान

रामकृपा — तृन - तृण

राम कृपा कपि दल बल बाढ़ा ।
जिमि तृन पाइ लाग अति डाढ़ा ।। ६।१७।४-५

रामचरित — राकेसकर (राकेशकर)

रामचरित राकेसकर सरिस सुखद सब काहु । १।६।२१

रामचरित — सर (जलाशय)

राम चरित सर सुंदर स्वामी । ७।१४।५४०

रामजननी — धेनु

रामजननि जब आइहि धाई ।
सुमिरि बच्छु जिमि धेनु लवाई ।। २।२।२४१

रामतिलक — मधु

देखि लागि मधु कुटिल किराती । २।१८।१८४

रामतिलक — बिपति का बीज

रामहिं तिलकु कालि जौं भयऊ ।
तुम्ह कहुँ बिपति बीजु बिधि बयऊ ।। २।१६।१८७

रामतिलक — जोगसिद्धि

जोग सिद्धि फल समय जिमि,
जतिहिं अविद्या नासा । — २।११।१९१

राम दरस (राम दर्शन) — बारी - वारि

राम दरस बस सब नर नारी ।
जनु करि करिनि चले तकि बारी ।। — २।३।२५६

रामनाम — बसन

राम नाम बिनु सोह न सोऊ । — १।१।८
बिधु बदनी सब भाँति सँवारी ।
सोह न बसन बिना बर नारी ।। — १।२।८

रामनाम — सोम

राम नाम सोइ सोम । — ३।२।३५०

राम प्रताप — दिनेसा - दिनेश

जबहिं राम प्रताप खगेसा ।
उदित भयउ अति प्रबल दिनेसा ।। — ७।१३।५०७

राम पेम (राम का प्रेम) — करनधार - कर्णधार

सोह न राम पेम बिनु ग्यानू ।
करनधार बिनु जिमि जलजानू ।। — २।१७।२६७

उपमेय		उपमान
राम बियोग		पयोधि
	राम बियोग पयोधि अपारू ।	२।१४।२४४
राम बिरह		सागर
	राम बिरह सागर महं ।	७।६।४८८
राम भगति (राम भक्ति)		सुरसरि धारा
	राम भगति जहं सुरसरि धारा ।	१।४।३
राम, लखन, सिय		मधु
	बिकल मनहुं माखी मधु छीनें ।	२।१२।२११
राम, लखन, सिय		दीया - दीप
	राम लखन सिय सुंदरताई ।	
	+ + +	
	मनहुं मृगी मृग देखि दिआ से ।	२।१।२२८
रामवर्ण		तमालबरन (तमालवर्ण)
	राम चंद मुख चंद चकोरा ।	२।१६।२२७
	+ + +	
	तरुन तमाल बरन तनु सोहा ।	२।२०।२२७

राम सखा : निषादराज : — सनेह - स्नेह

राम सखा रिषि बरबस भेंटा ।
जनु महि लुठत सनेह समेटा ।। — २।२९।२८२

राम सीता : प्रभु सिय : — पलक

जोगवहिं प्रभु सिय लखनहिं कैसे ।
पलक बिलोचन गोलक जैसे ।। — २।७।२३६

राम सैल (राम शैल) — तप फलु (तपफल)

राम सैल सोभा निरखि, भरत हृदयं अति ।
तापस तप फलु पाइ जिमि, सुखी सिराने नेमु ।। २।१२।२८०

रामहिं - राम — सिरिस सुमन

रामहिं प्रेम समेत लखि सखिन्ह समीप बोलाइ ।
सीता मातु सनेह बस, बचन कहइ बिलखाइ ।। १।१६।१२६

+ + +

बिधि केहि भाँति धरौं उर धीरा ।
सिरिस सुमन कन बेधिअ हीरा ।। — १।१६।१२७

रामहिं - राम — १. ससिहि - ससि
२. ससिहिं - ससि

रामहिं लखनु बिलोकत कैसें ।
ससिहि चकोर किसोरकु जैसें ।। — १।२०।१३०

+ + +

ससिहिं सभीत देत जयमाला ।। — १।२०।१३०

उपमेय		उपमान
रामहिं - राम		कमठ
	रामहिं बंधु सोच दिन राती ।	
	अन्हहिं कमठ हृदउ जैहि भांती ।।	२।१०।१८२
रामहिं - राम		भानु
	रामहिं भानु समान ।	५।१७।३७६
रामा - राम		बच्छ - वत्स
	येहि विधि सबहिं सुखी करि रामा ।	
	आगे चले सील गुन धामा ।।	६।५।४६२
	कौसल्यादि मातु सब धाई ।	
	निरखि बच्छ जनु धेनु लवाई ।।	६।६।४६२
रामु - राम		सूत्रधर - सूत्रधार
	रामु सूत्रधर अंतरजामी ।	१।२१।५७
रामु - राम		दसरथ सुकृत
	दसरथ सुकृत रामु धरें देही ।	१।८।१५१
रामु - राम		ब्रह्म
	आगे रामु अनुज पनि पाछे ।	३।११।३२४
	+ + +	
	ब्रह्म जीव बिच माया जैसे ।।	३।१२।३२४

उपमेय		उपमान
रामु - राम		नर केहरि
	चले रामु त्यागा बन सोऊ ।	
	अतुलित बल नरकेहरि दोऊ ॥	३।२६।३४६
रामु - राम		नट
	नट मर्कट इव सबहिं नचावत ।	
	रामु खगेस बेद अस गावत ॥	४।१।३५८
रामु - राम		घनु - घन
	राजत रामु सहित भामिनी ।	
	मेरु सृंग जनु घनु दामिनी ॥	६।११।४८३
रामु - राम		नट
	नट इव कपट चरित कर नाना ।	
	सदा स्वतंत्र रामु भगवाना ॥	६।२।४४७
रामु - राम		ब्याध
	बहुरि रामु सब तन चितइ ,	६।५।४६०
	+ + +	
	बधेहु ब्याध इव बालि बिचारा ।	६।११।४६०
रामु - राम		दिनकर बंस भूषन
	बैठे रामु द्विजन्ह सिर नाई ।	७।१४।४६५
	+ + +	

श्री सहित दिनकर बंस भूषन काम बहु छबि सोहई । ७।३।४६६

उपमेय		उपमान
रामु - राम		अमित गुन सागर
	रामु अमित गुन सागर ।	७।१५।५३६
रामु लखनु बैदेही (राम,लक्ष्मण एवं सीता)		मनि - मणि
	जौं कह रामु लखनु बैदेही ।	
	हिंकर हिंकर हित हेरहिं तेही ।।	२।२४।२३६
	बाजि बिरह गति कहि किमि जाती ।	
	बिनु मनि फनिक बिकल जेहि भाँती।।	२।२४।२३६
रावन - रावण		ससि - शशि
	चले जहाँ रावन ससि राहू ।	३।६।३४०
रावन (अप्रस्तुत)		कृपाध
	करति बिलाप जाति नभ सीता ।	
	कृपाध बिबस जनु मृगी सभीता ।।	३।२३।२४१
रावन - रावण		भृंग
	बिहंसि बामकर लीन्ही रावन ।	५।१०।३६६
	+ + +	
	प्रभु पद पंकज भृंग ।	५।१३।३६६
रावन		सुनासीर सत (सत इन्द्र)
	बैठ जाइ तेहिं मंदिर रावन ।	६।८।४०८
	+ + +	
	सुनासीर सत सरिस सो ।	६।१०।४०८

उपमेय		उपमान
रावन एवं राक्षस गण		मेढुकन्हि - मंडूक
	जौ असि सुभट सराहेहु रावन ।	६।४।४१७
	+ + +	
	जौ मृगपति बध मेढुकन्हि ।	६।१७।४१६
रावन		महानल
	सुनत बचन रावन परजरा ।	
	जरत महानल जनु घृत परा ।।	६।१।४१६
रावन		मत्त गज
	जय राम रावन मत्त गज ।	६।२।४५२
रावन दस माला		गिरि खुगन्ह
	गिरि खुगन्ह जनु प्रविसहिं ब्याला ।	६।१७।४५४
रावन		सैल
	परेउ सैल जनु बज्र प्रहारा ।	६।८।४५५
रावन		बक
	बैठे रावन भवन असंका ।	६।१।४५६
	+ + +	
	इहाँ बाइ बक ध्यानु लगाया ।।	६।११।४५६

राजागण — करि बरूथ

सभा माँझ जेहि तव बल मथा ।
करि बरूथ महुँ मृगपति जथा ।। ६।७।४२५

रिधि (करि) — नदी

रिधि सिधि संपति नदी सुहाईं ।। २।१३।१७६

रिपुदल — गजराज घटा

देखि राम रिपुदल चढ़ि आवा ।
बिहँसि कठिन कोदंड चढ़ावा ।। ३।७।३३
+ + +
चितवत मनहुँ मृगराज प्रभु,
गजराज घटा निहारि कै । ३।११।३११

रुधिर — अंगार रासिन्ह (अंगारराशि)

रुधिर गाड़ भरि भरि जम्यौ, ऊपर धूरि उड़ाइ ।
जिमि अंगार रासिन्ह पर, मृतक धूम रह छाइ ।। ६।४।४३५

रुधिरकन - रुधिरकण — रायमुनी

भुजदंड सर कोदंड फेरत, रुधिर कन तन अति बने ।
जनु रायमुनीं तमाल पर बैठीं बिपुल सुखआपने ।। ६।२१।४७१

रूप (राम का)   चंद - चन्द्र

सहज बिराग रूप मनु मौरा ।
थकित होत जिमि चंद चकौरा ।।   १।२।१०६

रूप : विश्वामित्र का :   पयोनिधि

कौशिक रूप पयोनिधि पावन ।   १।१६।१२६

रूपपीयूष   सुअसनु - सुअसन

पिअत नयन पुट रूप पियूषा ।
मुदित सुअसनु पाइ जिमि भूखा ।।   २।४।२२६

रैनु - सुरसरि रैनु   सुरधेनु

भरत कहेउ सुरसरि तव रैनू ।
सकल सुखद सेवक सुरधेनू ।।   २।७।२६३

रौम राजि (राम की)   अष्टादस भारा (अठारह प्रकार की वनस्पतियाँ)

रौमराजि अष्टादस भारा ।   ६।५।४११

रौमावली (रावण की)   लता

रौमावली लता जनु नाना ।   ६।१४।४१३

उपमेय		उपमान
लखन		बिधु
	लखन कहा जस भाजनु सोई ।	१।१६।११६
	+ + +	
	राज समाज बिराजत रूरे ।	
	उडगन महुँ जनु जुग बिधु पूरे ।।	१।३।१२०
लखन		कालकूट
	कहि कछु लखन बहुरि मुसुकाने ।	१।२०।१३६
	+ + +	
	कालकूट मुख पयमुख नाहीं ।	१।२।१३७
लखन		मीनु - मीन
	समाचार जब लछिमन पाए ।	२।१७।२०८
	+ + +	
	कहि न सकत कछु चितवत ठाढ़े ।	
	मीनु दीनु जनु जल तें काढ़े ।।	२।१६।२०८
लखन		रितुराज - ऋतुराज

लखन जानकी सहित प्रभु, राजत रुचिर निकेत ।
सोह मदनु मुनि बेष जनु, रति रितुराज समेत ।।२।२०।२३६

लखन		परछाहीं (प्रतिबिम्ब)
	छबि सिय लखनु बिकल होइ जाहीं ।	
	जिमि पुरुषहिं अनुसर परछाहीं ।।	२।२।२३६

लखन		वीर रस
लखन लखेउ प्रभु हृदयं खभारु ।	२।१०।२७६
+ + +
उठ कर जौरि रजायेसु मांगा ।
मनहुं बीर रस सोवत जागा ।।	२।११।२७७
लखन		१. मृगराजु - मृगराज २. बाजु - बाज
लखन लखेउ प्रभु हृदयं खभारू ।
कहत समय सम नीति विचारु ।।	२।१०।१७६
+ + +
जिमि करि निकर दलइ मृगराजू ।
लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू ।।	२।१६।२७७
लखन		खेलारू (खिलाड़ी) - पंग के खिलाड़ी
सुकवि लखन मन की गति भनईं ।	२।१।२८२
रहै रासि सैवा पर भारू ।
चढ़ी पंग जनु खेंच खेलारू ।।	२।२।२८२
लखनहिं		गोलक
जोगवहिं प्रभु सिय लखनहिं कैसे ।
पलक बिलोचन गोलक जैसे ।।	२।७।२३६

उपमेय		उपमान
लखनु		जीव
	रामु लखनु दोउ बंधुबर ।	१।८।१०६
	+ +	
	बृत जीव इव सहज सनेहू ।	१।१३।१०६
लखनु		सिंघ किसोरहिं
	लखनु राम उर बोलि न सकहीं ।	
	+ + +	
	मनहुं मत्त गज गन निरखि, सिंघ किसोरहि चोप ।	१।६।१३२
लखनु		पुरुष सिंघ
	रामु लखनु जाके तनय ।	
	+ +	
	पुरुष सिंघ तिहुंपुर उजियारे ।	१।१०।१४२
लखनु		हरि किसोर
	राजत रामु बतुल दल जैसें ।	
	तेजनिधान लखनु पुनि तैसें ।।	१।२२।१४३
	कंपहिं भूप बिलोकत जाकें ।	
	जिमि गज हरिकिसोर के ताकें ।।	१।१।१४४
लखनु		तामरस
	सुनत लखनु भए ब्याकुल भारी ।	२।८।२०६
	सिथरे बचन सूखि गए कैसें ।	
	परसत तुहिन तामरस जैसे ।।	२।६।२०६

उपमेय		उपमान
लखनु		मराला
	सुनत लखनु भए ब्याकुल भारी ।	२।८।२०६
	+ + +	
	मैं प्रभु सिसु सनेह प्रतिपाला ।	
	मंदरु मेरु कि लेहिं मराला ।।	२।१५।२०६
लखनु		बंध
	सुनत लखनु भए ब्याकुल भारी ।	२।८।२०६
	+ + +	
	हरषित हृदय मातु पहिं आए ।	
	मनहुं अंध फिरि लोचन पाए ।।	२।२५।२०६
लखनु		दामिनि
	दामिनि बरन लखनु सुठि नीके ।	
लखनु		जीव
	आगें रामु लखनु बने पाछें ।	२।२१।२३०
	उभय बीच सिय सोहति कैसें ।	
	ब्रह्म जीव बिच माया जैसें ।।	२।१।२३१
लखनु		मधु (बसंत)
	आगे रामु लखनु बने पाछें ।	
	+ + +	
	मनु मधु मदन मध्य रति लसई ।।	२।२।२३१

उपमेय	उपमान

लखनु बुध

आगे रामु लखनु बने पाछें ।

\+ \+ \+

जनु बुध बिधु बिच रोहिनि सोही । २।३।२३१

लखनु अबिबेकी पुरुष

सेवहिं लखनु सीय रघुबीरहिं ।

जिमि अबिबेकी पुरुष सरीरहिं ।। २।८।२३६

लछिमन मीनु

समाचार जब लछिमन पाए । २।१७।२०८

\+ \+ \+

कहि न सकत कछु चितवत ठाढ़े ।

मीनु दीनु जनु जल तें काढ़े ।। २।१६।२०८

लखराम बिधु

लता भवन तें प्रगट भे, तेहि अवसर दोउ भाइ ।

निकसे जनु जुग बिमल बिधु, जलद पटल बिलगाइ ।। १।२।११६

लखराम (दोउ भ्राता) इष्टदेव

हरिषानन्द देखे दोउ भ्राता ।

इष्टदेव इव सब सुख दाता ।। १।१५।१२०

लखन राम (दोउ बंधु) — कोटि काम

लैन आइहहिं बन्धु दोउ,
कोटि काम कमनीय । — १।१७।१५१

लखन राम (दोऊ) — नरकेहरि

अतुलित बल नरकेहरि दोऊ । — ३।१६।३४६

लतामवन — जलद पटल

लतामवन तें प्रगट में तेहि अवसर दोउ माइ ।
निकसे जनु जुग बिमल बिधु, जलद पटल बिलगाइ ।। १।२।११६

लीला सगुन (सगुण लीला) — स्वच्छता

लीला सगुन जो कहहिं बखानी ।
सोइ स्वच्छता करै मल हानी ।। — १।२३।२२

लोकपाल — ससि - शशि

लोकपाल बल बिपुल ससि । — ६।१२।११५

लोकमान्यता — अनल

लोकमान्यता अनल सम। — १।१६।८२

लोग — चित्र

राम बिलोके लोग सब,
चित्र लिखे से देखि । — १।२९।१२८

लोग (अयोध्या के) — दादुर मोर

बिहरहिं बन चहुं ओर, प्रतिदिन प्रमुदित लोग सब ।
जल ज्यों दादुर मोर, भए पीन पावस प्रथम ।। २।२।२८७

लोग (अयोध्या तथा जनकपुर) — मीनगन - मीनगण

सुनि सुधि सोच बिकल सब लोगा ।
मनहुं मीनगन नव जल जोगा ।। २।२२।३०४

लोग (सभा के) — नलिन

तुलसी बिकल सब लोग सुनि ।
सकुचे निसागम नलिन से ।। २।२।३०८

लोग — मृग

मृग लोग कुभोग सरेन हिये । ७।५।४६८

लोचन (शंभु के) — नलिन

लोचन नलिन बिसाल । १।११।५८

लोचन (बिना संत देखे) — मोर पंख

लोचन मोर पंख कर लेखा । १।६।६९

उपमेय		उपमान
लोचन (राम का)		सरसीरुह
	सुभग सोन सरसीरुह लोचन ।	१।१२।११०
लोचन (लषरा के)		सरसीरुह
	सुभग सोन सरसीरुहलोचन ।	१।१२।११०
लोचन (राम के)		नव सरोज
	नव सरोज लोचन रतनारे ।	१।६।११६
लोचन (लषरा के)		नव सरोज
	नव सरोज लोचन रतनारे ।	१।६।१:६
लोचनि - लोचन (भामिनियों के)		(मृग बालक के लोचन)
	बिधु बदनी मृग बालक लोचनि ।	१।१४।१४५
लोचन नारियों के)		मृग के लोचन
	विधुबदनी सब सब मृगलोचनि ।	१।५।१५५
लोचन (देवों के)		चकोर
	रामचंद्र मुख चंद्र छवि, लोचन चारु चकोर ।	१।१०।१५७

उपमेय		उपमान
लोचन सीता के)		मृगलोचन
	मृगलोचनि तुम्ह भीरु सुभाएं।	२।२४।२०५
लोचन (भक्तों के)		चातक
	लोचन चातक जिन्ह करि राखे।	२।१२।२३३
लोचन (भरत के)		सरोरुह

सानी सरल रस मातु बानी, सुनि भरत व्याकुल भए।
लोचन सरोरुह स्रवत सींचत, बिरह उर अंकुर नए। २।५।२५४

लोचन (राम के)		बारिज
	बारिज लोचन मोचत बारी।	२।१५।३१४
लोचन (राम का)		कंज
	प्रफुल्ल कंज लोचनं।	३।१३।३२१
लोचन (मुनि के)		भृंग
	मुनिबर लोचन भृंग।	३।१८।३२४
लोचन (राम के)		सरसिज
	सरसिज लोचन बाहु बिसाला।	३।७।३४५

उपमेय		उपमान
लोचन (राम के)		राजीव
	राजीव लोचन स्रवत जल ।	७।६।४६१
लोचन (राम के)		कंजारुन
	भुज प्रलंब कंजारुन लोचन ।	५।२४।३६३
लोचन (राम के)		राजिव दल
	स्रवत सलिल राजिव दल लोचन ।	६।८।४३६
लोचन (राम के)		सरसीरुह
	स्याम गात सरसीरुह लोचन ।	६।१२।४४०
लोचन (राम के)		राजीव
	श्रम बिन्दु मुख राजीव लोचन ।	६।११।४४५
लोचन (राम के)		जलजारुन
	जलजारुन लोचन भूपबरं ।	६।७।४७८
लोचन (राम के)		कलकंज
	कारुणीक कल कंज लोचनम् ।	७।८।४८७
लोचन (राम के)		सरोरुह
	स्यामल गात सरोरुह लोचन ।	७।१५।५०८

लोचन (राम के) — पंकज

मामवलोकय पंकज लोचन । — ७।१६।५१६

लोचन (स्त्रियों के) — सर

मृगलोचनि लोचन सर । — ७।२।५२७

लोचन (राम के) — नीलकंज

नीलकंज लोचन भव मोचन । — ७।१६।५३०

लोचन (सीता के) — नील नलिन

नील नलिन लोचन भरि नीरा । — २।१७।२८४

लोचन लोल — मनसिज मीन

प्रभुहिं चितै पुनि चितव महि, राजत लोचन लोल ।
खेलत मनसिज मीन जुग, जनु बिधु मंडल डोल ।। १।२।१२८

लोचन जलु - लोचन जल — सोना

लोचन जलु रह लोचन कोना ।
जैसे परम कृपन कर सोना ।। — १।४।१२८

लोम — बात

लोम बात नहिं ताहि बुझाना । — ७।६।५६०

उपमेय		उपमान
लोभ		कफ
	काम बात कफ लोभ अपारा ।	७।१२१।५६२
लोभ		मृगजूथ (मृगयूथ)
	लोभ मोह मृगजूथ किरातहिं ।	
लोलुप		काक
	जे कामी लोलुप जग माहीं ।	
	कुटिल काक इव सबहिं डेराहीं ।।	१।१८।६६
लंका		गूलरिफल (गूलर का फल)
	गूलरि फल समान तव लंका ।	६।१६।४२२
सक्ति प्रचंड (प्रचण्ड शक्ति)		काल कर दंड (काल दण्ड)
	पुनि रावन अति कोप करि, छांडिसि सक्ति प्रचंड ।	
	चली बिभीषन सन्मुख, मनहुं काल कर दंड ।।	६।८।४६३
सकल जग स्वामी		कुंजरगामी
	सहजहिं चले सकल जग स्वामी ।	
	मत्त मंजु बर कुंजर गामी ।।	१।११।१२६

उपमेय		उपमान
सकल महीप		लवा
	देखि महीप सकल सकुचाने ।	
	बाज झपट जनु लवा लुकाने ।।	१।१२।१३२
सकल लोग (अयोध्या के)		बनिक समाजू (वणिक समाज)
	जागे सकल लोग भए भोरू ।	२।१५।२१५
	+ +	
	भयउ बिकल बड़ बनिक समाजू ।।	२।१७।२१५
सखा (हनुमान आदि)		बेरे (बेड़े)
	ये सब सखा सुनहु मुनि मेरे ।	
	भए समर सागर कहुं बेरे ।।	७।६।४६३
सखिन्ह - सखी		छबिगन (छबिगण)
	सखिन्ह मध्य सिय सोहति कैसी ।	
	छबिगन मध्य महाछबि जैसी ।।	१।१४।१३०
सगुन (सगुण)		हिम
	जो गुन रहित सगुन सोइ कैसें ।	
	जलु हिम उपल बिलग नहिं जैसें ।।	१।१२।६२

उपमेय		उपमान
सज्जन		सिंधु
	सज्जन सकृत सिंधु सम कोई ।	१।४।७
सज्जन		१. हंसहि - हंस
		२. चातक
	सज्जन सकृत सिंधु सम कोई ।	१।४।७
	+ + +	
	हंसहिं बक दादुर चातक ही ।।	१।८।७
सज्जन		धनु - धन
	बस सज्जन मम उर बस कैसें ।	
	लोभी हृदयं बसइ धनु जैसे ।।	५।१०।३६५
सज्जन		घन
	राम सिंधु घन सज्जन धीरा ।	७।२२।५६०
सठ		कुधातु (लोहा)
	सठ सुधरहिं सतसंगति पाई ।	
	पारस परस कुधातु सोहाई ।।	१।२०।३
सत्य		रजु - रज्जु
	झूठेउ सत्य जाहि बिनु जाने ।	
	जिमि भुजंग बिनु रजु पहिचाने ।।	१।१७।६०

उपमेय		उपमान
सत्य सुबानी		रजु
	दम बघार रजु सत्य सुबानी ।	७।५।५५८
सत्य श्री		इंदिरा
	सब अमल भूसुर रूप कर गहि, सत्य श्री स्तुति बिधि तजी । जिमि क्षीर सागर इंदिरा रामहिं समर्पी आनि सो ।।	७।१२।४७६
सतरूपा		भगति (भक्ति)
	स्वायंभू मनु अरु सतरूपा ।	१।१।७४
	+ + +	
	ज्ञान भगति जनु धरे सरीरा ।।	१।१४।७४
सत संगति		पारस
	सठ सुधरहिं सत संगति पाई । पारस परस कुधातु सोहाई ।।	१।२०।३
सदगुर (सद्‌गुरु)		करनधार
	करनधार सद्‌गुर दृढ़ नावा ।	७।१८।५१३
सदगुर (सद्‌गुरु)		बैद
	सदगुर बैद बचन बिस्वासा ।	७।८।५६३

उपमेय		उपमान
संत		कंजवन
	संतकंज बन रबि रनधीरहिं ।	७।४।५०७
संत		चंदन
	संत असंतन्हि कै असि करनी ।	
	जिमि कुठार चंदन आचरनी ।।	७।१७।५१०
संत		कपिलहि
	संत असंतन्हि कै असि करनी ।	
	जिमि कुठार चंदन आचरनी ।।	७।१७।५१०
	+ + +	
	तिन्ह कर संग सदा दुखदाई ।	
	जिमि कपिलहिं घालइ हरहाई ।।	७।८।५११
संत		समीरा - समीर
	चंदन तरु हरि संत समीरा ।	७।२२।५६०
संत		सुर
	ज्ञान संत सुर आहिं ।	७।१।५६१
संत		भूर्जतरु
	भूर्ज तरू सम संत कृपाला ।	७।२०।५६१

संत | इंदु

संत उदय संतत सुखकारी ।
बिस्व सुखद जिमि इंदु तमारी ।। ७।१२१।६२

सनेह (स्नेह) | बन

तुलसी सुमन सनेह बन १।१५।२०

सनेह - स्नेह (भरत का) | बिंधि - विन्ध्याचल

कुसमउ देखि सनेहु संभारा ।
बढ़त बिंधि जिमि घटज निवारा ।। २।२।३०६

सब नृप | बिनु बिराग सन्यासी (बिना वैराग्य के संन्यासी)

सर्बनृप भए जोगु उपहासी ।
जैसे बिनु बिराग सन्यासी ।। १।१५।२४

सब रानी (जनकपुर की) | सूखत धानु (सूखता हुआ धान)

सखिन्ह सहित हरषीं सब रानी ।
सूखत धानु परा जनु पानी ।। १।६।१३०

समासद (रावरा के) मत्त गज जूथ (मत्तगज यूथ)

उठेउ समासद कपि कहुं देखी ।
रावन उर भा क्रोध बिसेषी ।। ६।१७।४१३
जथा मत्त गज जूथ महुं,
पंचानन चलि जाइ । ६।१८।४१३

समता दिआहि (दीपक रखने का स्थान)

समता दिआटि बनाइ । ७।१०।५५८

समर (लंका का) सागर

भए समर सागर कहुं बेरे । ७।६।४६३

श्याम वर्ण (वासुदेव का) नील सरोरुह

नील सरोरुह नील मनि, नील नीरधर स्याम ।१।४।७६

श्याम वर्ण (वासुदेव का) नील नीरधर

नील सरोरुह नील मनि, नील नीरधर स्याम । १।४।७६

श्याम वर्ण (वासुदेव का) नील मनि

नील सरोरुह नील मनि, नील नीरधर स्याम । १।४।७६

श्रद्धा — अनूपान - अनुपान

अनूपान श्रद्धा मति पूरी । ७।६।५६३

श्रवन रन्ध्र (दुष्टों के) — अहि भवन

श्रवन रन्ध्र अहि भवन समाना । १।५।६१

श्री (सीता) — माया

उभय बीच श्री सोहइ कैसी ।
ब्रह्म जीव बिच माया जैसी ।। ३।१२।३२४

स्यामता (विष्णु की) — नील सरोरुह स्याम (नील कमल के समान)

नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन बारिज नयन । १।५।२

स्याम सरीरा (श्याम शरीर) - :राम का: — नीलकंज

काम कोटि छबि स्याम सरीरा ।
नील कंज बारिद गंभीरा ।। १।१६।१००

स्याम सरीरा - श्याम शरीर (राम का) — बारिद

काम कोटि छबि स्याम सरीरा ।
नील कंज बारिद गंभीरा ।। १।१६।१००

उपमेय		उपमान
स्याम सरीरा - श्याम शरीर (राम का)		कोटि काम
	काम कोटि छबि स्याम सरीरा ।	
	नील कंज बारिद गंभीरा ।।	१।१६।१००
स्रम बिंदु		सौनित कनी (शोणित कणी)
	स्रम बिंदु मुख राजीव लोचन, रुचिर तन सौनित कनी ।	६।११,४४५
स्रवन (श्रवण)		समुद्र
	जिन्हके स्रवन समुद्र समाना ।	२।१०।२३३
स्रवन - श्रवण (राम के)		दिसा दस - (दसों दिशायें)
	स्रवन दिशा दस बेद बखानी ।	६।२।४११
स्वरूप (अप्रस्तुत) : राम का :		केकी कंठाभ
	केकी कंठाभ नीलं ।	७।१।४८७
स्वास - श्वास (सीता की)		समीरा - समीर
	बिरह अगिनि तनु तूल समीरा ।	
	स्वास जरइ छन माहिं सरीरा ।।	५।५।३८७

उपमेय	उपमान
स्वास - श्वास (रावण की)	समीर
रावन क्रोध अनल निज स्वास समीर प्रचंड ।	५।२४।३६५
स्वास - श्वास (राम की)	मारुत
मारुत स्वास निगम निज बानी ।	६।२।४११
संसय	सर्प
संसय सर्प ग्रसेउ मोहि ताता ।	७।४।५४०
संसय सोक - संशय शोक	निबिड़ तम
संसय सोक निबिड़ तम मानुहिं ।	७।७।५०७
संसार	बिटप
संसार बिटप नमामहे ।	७।१४।४६७
संसृति	सरि
देहि भगति संसृति सरि तरनी ।	७।१६।५०६
सपथ - शपथ (दशरथ की)	मृगु - मृग

यह सुनि मन गुनि सपथ बड़ि, बिहँसि उठी मति मंद ।
मृगन सजति बिलोकि मृगु, मनहुँ किरातिनि फंद ।।२।१०।१६०

उपमेय	उपमान
सब (गांव के स्त्री पुरुष)	चकोरा - चकोर
एकटक सब सोहहिं चहुं ओरा ।	
रामचन्द्र मुख चंद चकोरा ॥	२।१६।२२७
सबहिं (सभी प्राणी)	मर्कट
नट मर्कट इव सबहिं नचावत ।	
रामु खगेस बेद अस गावत ॥	४।१।३५८
सबहि (सभी प्राणी)	दारु जोषित (कठपुतली)
उमा दारु जोषित की नाईं ।	
सबहिं नचावत रामु गोसाईं ॥	४।५।३६०
सभा (अयोध्यावासियों की)	तुषार हत कमलवन
सोक मगन सब सभा खभारू ।	
मनहुं कमल बन परेउ तुषारू ॥	२।१८।२६१
समीहा = चेष्टा	उतपति
उतपति पालन प्रलय समीहा ।	६।७।४११
सर (परशुराम के)	आहुति
चाप सुवा सर आहुति जानू ।	१।१२।१३६

उपमेय		उपमान
सर = तालाब		निर्गुण ब्रह्म
	फूले कमल सोह सर कैसा ।	
	निर्गुन ब्रह्म सगुन भए जैसा ।।	४।४।४६३
सर (राम का)		अनल
	होंहि कि राम सरानल ।	५।१४।३६६
सर (राम के)		दामिनि - दामिनी
	तनु महुँ प्रबिसि निसरि सर जाहीं ।	
	जनु दामिनि घन माँझ समाहीं ।।	६।१।४४४
सर (लक्ष्मण के)		ब्याला - ब्याल
	सत सत सर मारे दस भाला ।	
	गिरि सृगन्ह जनु प्रबिसहिं ब्याला ।।	६।१७।४५४
सर (रावण के)		कुलिस
	कुलिस समान लाग छाँड़ै सर ।	६।३।४४१
सर (रावण के)		मनोरथ
	निफल होंहि रावन सर कैसे ।	
	खल के सकल मनोरथ जैसे ।।	६।८।४६१
सर (रावण के)		पावक
	सर पावक तेज प्रचंड दहे ।	७।२।४६८

उपमेय	उपमान
सरदरितु - शरद ऋतु	सदगुरु

भूमि जीव संकुल रहे, गए सरद रितु पाइ ।
सदगुरु मिले जाहिं जिमि, संसय भ्रम समुदाइ ।। ४।१२।३६३

सरदातप	पातक

सरदातप निसि ससि अपहरई ।
संत दरस जिमि पातक टरई ।। ४।८।४६३

सरन्हि भरा मुख (बाणों से परिपूर्ण मुख)	कालत्रौन

सरन्हि भरा मुख सन्मुख धावा ।
कालत्रौन सजीव जनु आवा ।। ६।२२।४४४

सरलच्छा - लक्षशर	सपच्छा कालसर्प

सत्यसंघ छाँड़े सर लच्छा ।
कालसर्प जनु चले सपच्छा ।। ६।५।४४३

सर समूह (रावण के)	सपच्छ नाग

सर समूह सो छाड़ै लागा ।
जनु सपच्छ धावहिं बहुनागा ।। ६।७।४३३

सरित - सरिता	ज्ञानी

रस रस सूख सरित सर पानी ।
ममता त्याग करहिं जिमि ज्ञानी ।। ४।१७।३६२

उपमेय		उपमान
सरिता		संत हृदय
	सरिता सर निर्मल जल सोहा ।	
	संत हृदय जस गत मद मोहा ।।	४।१६।३६२
सरीरा - शरीर (राम का)		नील जलजात
	सोभा सींव सुभग दोउ बीरा ।	
	नील पीत जलजात सरीरा ।।	१।३।११६
सरीरा - शरीर		पीत जलजात
	सोभा सींव सुभग दोउ बीरा ।	
	नील पीत जलजात सरीरा ।।	१।३।११६
सरीरा - शरीर		दारु
	कीट मनोरथ दारु सरीरा ।	७।७।५२७
सरीर छवि (शरीर की छवि) : राम के :		कोटि अनंग की छवि
	अग सरीर छवि कोटि अनंगा ।	१।११।१४०
सलिल		सुधा
	सलिल सुधा सम मनि सोपाना ।	१।१०।१०७
ससि (सीता के लिए)		भानु - भानु
	कालनिसा सम निसि ससि भानू ।	५।१४।३७६

उपमेय		उपमान
ससि संपन्न महि (शशि से सम्पन्न महि)		उपकारी के संपति (उपकारी की संपति)
	ससि संपन्न सोह महि कैसी ।	
	उपकारी के संपति जैसी ।।	४।१।३६२
ससिहि - शशि		मृगपति
	कहत सबहि देखहु ससिहि, मृगपति सरिस असंक ।	६।४।४०६
सात्विक श्रद्धा - सात्विक श्रद्धा		धेनु
	सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई ।	७।२०।५५७
नाथ मिलने की आशा (अप्रस्तुत)		लोचन
	मनहुं अंध फिर लोचन पाए ।	२।२५।२०६
साथरी		मंजु मनोज तुराई
	कुस किसलय साथरी सुहाई ।	
	प्रभु संग मंजु मनोज तुराई ।।	२।४।२०७
साथरी		मयन सयन सय
	नाथ साथ साथरी सुहाई ।	
	मयन सयन सय सम सुखदाई ।।	२।१६।२३८

उपमेय		उपमान
साधारण जन (अप्रस्तुत)		सिंधु
	और करिहि को भरत बड़ाई ।	
	सरसी सीपि कि सिंधु समाई ।।	२।८।२८८
साधु		सुधा
	सुधा सुरा सम साधु असाधू ।	१।२३।४
साधु कर्म (अप्रस्तुत)		सुधा
	नर तनु पाइ बिषय मन देहीं ।	
	पलटि सुधा ते सठ बिष लेहीं ।।	७।१२।५१३
साधु चरित		कपासू - कपास
	साधु चरित सुभ चरित कपासू ।	१।१।३
साधु महिमा		मनि गुन गण
	कहत साधु महिमा सकुचानी ।	१।२२।३
	सो मौसन कहि जात न कैसे ।	
	साक बनिक मनि गुन गन जैसे ।।	१।२३।३
सायक (राम के)		मघा मेघ
	रहे दसहुं दिसि सायक छाई ।	
	मानहुं मघा मेघ झरि लाई ।।	६।१२।४१६

उपमेय		उपमान
सायक (राम के)		काल फनीस (काल फणीश)
	रघुनायक सायक चले, मानहुं काल फनीस ।	६।२।४७१
सारद : सरस्वती :		स्वाती
	स्वाती सारद कहहिं सुजाना ।	१।२४।८
सारद : सरस्वती :		दारु नारि (कठपुतली)
	सारद दारु नारि सम स्वामी ।	१।२१।५७
सारद : सरस्वती :		ग्रहदसा (ग्रहदशा)
	सारद बोलि बिनय सुर करहीं । + + + हरषि हृदयं दसरथ पुर आई । जनु ग्रहदसा दुसह दुखदाई ।।	२।१२।१८४
सासु : कौशल्या :		फनिकन्ह - फणिक
	सुंदरि बधु सासु लै सोई । फनिकन्ह जनु सिरमनि उर गोई ।।	१।१३।१७६
सिअरे बचन (शीतल बचन)		तुहिन
	सिअरे बचन सूखि गए कैसें । परसत तुहिन तामरस जैसे ।।	२।१०।१०६

उपमेय		उपमान
सिंघासनु - सिंहासन		रबि
	रबि सम तेज सो बरनि न जाई ।	७।१४।४६५
सिय		महाछबि
	सखिन्ह मध्य सिय सोहति कैसी ।	
	छबिगन मध्य महाछबि जैसी ॥	१।१४।१३०
सिय		परछाहीं
	लखि सिय लखनु बिकल होइ जाहीं ।	
	जिमि पुरुषहि अनुसर परछाहीं ॥	२।२।२३६
सिय मुख		ससि
	प्राची दिसि ससि उयउ सुहावा ।	
	सिय मुख सरिस देखि सुखु पावा ॥	१।१४।११८
सिर(राम का)		नीलगिरि
	सिर जटा मुकुट प्रसून बिच, बिच मनोहर राजहीं ।	
	जनु नीलगिरि पर तड़ित पटल, समेत उडुगन भ्राजहीं ॥	६।१६।४७१
सिलीमुख (राम के)		भ्रमर
	चलि रघुबीर सिलीमुख धारी ।	६।२।४६२
सिव - शिव		भगवान
	तुम्ह माया भगवान सिव ।	१।१६।४४

उपमेय		उपमान
सिव कृपा - शिवकृपा		ससि समाज - शशि समाज
	मनिनि गौरि सिव कृपा बिमाती ।	
	ससि समाज मिलि मनहुं सुराती ।।	१।१।१२
सिव धनु - शिव धनु		राहू - रहू
	नृप भुज बल विधु सिव धनु राहू ।	१।३।१२४
सिंहासन		मेरु सृंग - मेरु शृंग
	सिंघासनु अति उच्च मनोहर ।	६।१८।४८३
	+ + +	
	मेरु सृंग जनु घनु दामिनी ।।	६।११।४८३
सिर (गुरु चरणों में न झुकने वाला)		तुंबरि
	ते सिर कटु तुंबरि सम तूला ।	१।७।६१
सिर (रावण का)		सृंग - शृंग
	भुजा बिटप सिर सृंग समाना ।	६।१४।४१३
सिर (रावण के)		सरोज
	सिर सरोज जिन करन्ह उतारी ।	६।१८।४१७

उपमेय	उपमान
सिर (रावण के)	कंदुक

लै त्रय सिर कंदुक इव नाना । ६।१८।४१८

सिर (कुंभकरण का)	मनि - मणि

सौ सिर परेउ दसानन आगे ।
बिकल भयउ जिमि फनि मनि त्यागे ।।६।२।४५

सिर (रावण का)	सरोज बन

रावन सिर सरोज बन चारी । ६।२।४६२

सिर (राक्षसों के)	केतु

रहे छाइ नभ सिर अरु बाहू ।
मानहुं अमित केतु अरु राहू ।। ६।६।४६२

सिर (राक्षसों के)	केतु

जनु राहु केतु अनेक नभ । ६।१०।४६२

सिर (राक्षसों के)	बिधुंतुद

जनु कोपि दिनकर कर निकर, जहं तहं बिधुंतुद पोहहीं । ६।१३।४६२

सिर (रावण के)	मार : कामदेव :

जिमि जिमि प्रभु हर तासु सिर, तिमि तिमि होहिं अपार ।
सेवत बिषय बिबिध जिमि, नित नित नूतन मार ।। ६।१५।४६२

उपमेय	उपमान
सीतल बानी - शीतल वाणी (राम की)	पावस पानी

सहमि सूखि सुनि सीतल बानी ।
जिमि जवास परे पावस पानी ।। २।७।२०२

सीतल सिख (राम की) (शीतल शिक्षा)	चंदिनि (चांदनी)

सिख सीतल हित मधुर मृदु, सुनि सीतहिं न सोहानि ।
सरद चंद चंदिनि लगत, जनु चकई अकुलानि ।। २।६५।२६२

सीतल सिख (राम की) (शीतल शिक्षा)	सरद चंद निसि (शरद चंद निशि)

सीतल सिख दाहक भइ कैसें ।
चकइहि सरद चंद निसि जैसें ।। २।८।२०६

सीतहिं - सीता	चकई

सिख सीतल हित मधुर मृदु, सुनि सीतहिं न सोहानि ।
सरद चंद चंदिनि लगत, जनु चकई अकुलानि ।। २।६५।२६२

सीता	१. गिरा २. जल

गिरा अरथ जल बीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न ।
बंदौ सीताराम पद, जिन्हहिं परम प्रिय खिन्न ।।१।१८।१३

उपमेय — उपमान

सीता — चकोरी

चितवति चकित चहुं दिसि सीता ।
कहं गए नृप किसोर मन चीता ।। १।८।२२५

\+ + +

अधिक सनेह देह भै भोरी ।
सरद ससिहिं जनु चितव चकोरी ।। १।१८।११५

सीता — मृगजलु – मृगजल

जगदम्बा जानहु जिअं सीता । १।६।१२२

\+ + +

सुधा समुद्र समीप बिहाई ।
मृगजलु निरखि मरहु कत धाई ।। १।६।१२२

सीता (अप्रस्तुत) — नयन पुतरि

नयन पुतरि करि प्रीति बढ़ाई । २।८।२०४

सीता (अप्रस्तुत) — कलप बेलि – कल्पबेलि

कलप बेलि जिमि बहुबिधि लाली । २।६।२०४

सीता (अप्रस्तुत) — १. मराली
२. कोकिल

मानस सलिल सुधा प्रतिपाली ।
जिअइ कि लवन पयोधि मराली ।। २।२।२०६
नव रसाल बन बिहरन सीला ।
सोह कि कोकिल बिपिन करीला ।। २।३।२०६

सीता — सिंघ बधुहिं - सिंहनी

को प्रभु संग मोहि चितवनि हारा ।
सिंघ बधुहिं जिमि ससक सियारा ।। २।६६।२०७

सीता — कपिला गाई (कपिला गाय)

सीता के विलाप सुनि भारी ।
भये चराचर जीव दुखारी।। ३।५।३४१

+ + +

अधम निसाचर लीन्हे जाई ।
जिमि मलेछ बस कपिला गाई ।। ३।७।३४१

सीता — मृगी

करति बिलाप जाति नम सीता ।
ब्याध बिबस जनु मृगी समीता ।। ३।२३।३४१

सीता — सीत निसा - शीत निशा

सीता सीत निसा सम आई । ५।४।३६०

सीता :भामिनी: — दामिनी

राजत रामु सहित भामिनी ।
मेरु सृंग जनु घनु दामिनी ।। ६।१६।४८३

उपमेय		उपमान
सीता के नयन		मृग के नयन
	तुम देखी सीता मृग नयनी ।	३।१५।३२
सीय		मृगी
	सुमिरि सीय नारद बचन, उपजी प्रीति पुनीत । चकित बिलोकति सकल दिसि, जनु सिसु मृगी सभीत ॥	१।२६।११४
सीय		दीपसिखा
	देखि सीय सोभा सुखु पावा ।	१।२९।११४
	+ + + सुंदरता कहुं सुन्दर करई । छवि गृहं दीपसिखा जनु बरई ॥	१।२३।११५
सीय		चातकी
	सीय सुखहिं बरनिअ केहि भांती । जनु चातकी पाइ जलु स्वाती ॥	१।६।१३०
सीय		छवि
	सोहति सीय राम एक ठौरी । छवि सिंगारु मनहुं एक ठौरी ॥	१।७।१३१
सीय		चकोर कुमारी
	बिगत भाव भइ सीय सुखारी । जनु बिधु उदयं चकोर कुमारी ॥	१।२१।१४०

सिय - सीय | बाल बच्छ

पुनि पुनि मिलति सखिन्ह बिलगाई ।
बाल बच्छ जिमि धेनु लवाई ।। २।१५।१६७

सिय | रसिक चकोरी

सोइ सिय चलन चहति बन साथा ।। २।१३।२०४
+ + +
चंद किरन रस रसिक चकोरी । २।१४।२०४

सिय | हंसकुमारी

सिय बन बसिहि तात केहि भांती ।
+ + +
डावर जोगु कि हंस कुमारी ।। २।२१।२०४

सिय | चकइहिं - चकई

सुनि मृदु बचन मनोहर पिय कें ।
लोचन ललित भरे जल सिय के ।। २।७।२०६
सीतल सिख दाहक भइ कैसे ।
चकइहि सरद चंद निसि जैसे ।। २।८।२०६

सिय | कोकी

सुनि मृदु बचन मनोहर पिय के ।
लोचन ललित भरे जल सिय के ।। २।७।२०६
+ + +
छिनु छिनु प्रभु पद कमल बिलोकी ।
रहिहौं मुदित दिवस जिमि कोकी ।। २।६।२०७

उपमेय		उपमान
सिय		माया
	उभय बीच सिय सोहति कैसे ।	
	ब्रह्म जीव बिच माया जैसे ॥	२।१।२३१
सिय		१. रति
		२. रोहिनी
	उभय बीच सिय सोहति कैसे ।	२।१।२३१
	+ + +	
	जनु मधु मदन मध्य रति लसई ।	२।२।२३१
	+ + +	
	जनु बुध बिधु बिच रोहिन सोही ।	२।३।२३१
सिय		१. चकोर कुमारी
		२. कोकी
	राम संग सिय रहति सुखारी ।	२।१०।२३८
	+ + +	
	प्रमुदित मनहुं चकोर कुमारी ।	२।११।२३८
	+ + +	
	हरषित रहति दिवस जिमि कोकी ॥	२।१२।२३८
सीय		कौमुदी
	लखीं सीय सब प्रेम पियासीं ॥	
	मधुर बचन कहि कहि परितोषीं ।	
	जनु कुमुदिनीं कौमुदी पोषीं ॥	२।२२।२२८

उपमेय		उपमान
सीय		रति
	सीय सहित राजत रघुराजू ।	२।१५।२८८
	+ + +	
	जनु मुनि वेषु कीन्ह रति काया ।।	२।१६।२८८
सीय		भगति - भक्ति
	लसत मंजु मुनि मंडली, मध्य सीय रघुचंदु ।	
	ज्ञान सभा जनु तनु धरे, भगति सच्चिदानंदु ।।	२।१६।२८८
सीय		मराली
	सासु सकल जब सीय निहारी ।	
	+ + +	
	परीं बधिक बस मनहुं मराली ।।	२।१५।२८४
सीस (राक्षसों के)		लोभ
	काटत बढ़हिं सीस समुदाई ।	
	जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाई ।।	६।५।४७०
सीस (राम का)		वजधामा - वनधाम
	पद पाताल सीस वजधामा ।	६।२१।४१०
सीस भुजा (रावण की)		कर्म शुद्ध कर पाप
	तब रघुपति लंकेस के, सीस भुजा सर चाप ।	
	काटे भए बहोरि जिमि, कर्म शुद्ध कर पाप ।।६।६।४६६	

उपमेय		उपमान
सील निधि - शीलनिधि		सत सुरेस
	तेहि पुर बसै सीलनिधि राजा।	१।१७।६८
	+ + +	
	सत सुरेस सम बिभव बिलासा ।।	१।१८।६८
सुकरमा - सकर्म		समाज (तीर्थराज के)
	तीरथ राज समाज सुकरमा ।	१।७।३
सुकृत		मेघ
	सुकृत मेघ बरसहिं सुख बारी ।	२।१२।१७६
सुख (मृग का)		बिहंग समाजु - बिहंग समाज
	सुख सुबिहंग समाजु ।	२।७।१६१
सुख		बारी - वारि
	सुकृत मेघ बरसहिं सुख बारी ।	२।१२।१७६
सुख (अयोध्या के) (अप्रस्तुत)		चंदकिरन रस (चन्द्र किरण रस)
	चंदकिरन रस रसिक चकोरी ।	२।१४।२०४

उपमेय		उपमान
सुख		कोक
	सुख संतोष बिराग बिबेका ।	
	बिगत सोक ये कोक अनेका ।।	७।२०।५७
सुखहिं - सुख (सीता का)		जलु स्वाती
	सीप सुखहिं बरनिअ केहि भाँती ।	
	जनु चातकी पाइ जलु स्वाती ।।	२।६।१३०
सुख संपति		सरिता
	जिमि सरिता सागर महुं जाहीं ।	
	+ + +	
	तिमि सुख संपति बिनहिं बोलाएँ ।	१।६।२९४
सुखु - सुख (जनक का)		थाह
	जनक लहेउ सुखु सोचु बिहाई ।	
	परत थकें थाह जनु पाई ।।	१।७।२३०
सुजन		फनि - फणि
	बिधि बस सुजन कुसंगति परहीं ।	
	फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं ।।	१।२१।३
सुत चारी (चारों पुत्र)		सकल अपबरग
	सोहत साथ सुभग सुत चारी ।	
	जनु अपबरग सकल तनुधारी ।।	१।१६।१५३

उपमेय	उपमान

सुत चारी (दशरथ के चारों पुत्र) — धन धरमादिक

नृप समीप सोहहिं सुत चारी ।
जनु धन धरमादिक तनु धारी ।। १।२२।१५०

सुलक्षित मीतु — जमदूता - यमदूत

सुलक्षित मीतु मनहुं जमदूता । २।१५।२१४

सुंदरी — चारिउ अवस्था

सुंदरी सुंदर बरन्ह सह, सब एक मंडप राजहीं ।
जनु जीव उर चारिउ अवस्था, बिभुन्ह सहित बिराजहीं ।।१।२२।१६०

सुनयना — मयना

जनक बाम दिसि सोह सुनयना ।
हिमगिरि संग बनी जनु मयना ।। १।२४।५८

सुमाणा (सचिव की) — सुसासा

नृपहिं मोदु सुनि सचिव सुमाणा ।
बढ़त बौंड़ जनु लही सुसासा ।। २।१५।१८२

सुमंत्र — फनि - फणि

सुनि सुमंतु सिय सीतल बानी ।
भयउ बिकल जनु फनि मनि हानी ।। २।३।२२१

उपमेय		उपमान
सुमंत्र		कृपन - कृपरा
	सोच सुमंत्र बिकल दुख दीना ।	२।५।२४०
	+ + +	
	मनहुं कृपन धन रासि गवांईं ।।	२।६।२४०
सुमंत्र		सुभट
	सोच सुमंत्र बिकल दुख दीना ।	२।५।२४०
	+ + +	
	चलेउ समर जनु सुभट पराईं ।।	२।१०।२४०
सुमंत्र (शोचयुक्त)		बिप्र (धौखे से मदिरा पान करनेवाला)

बिप्र बिबेकी बेद बिद, संमत साधु सुजाति ।
जिमि धौखे मद पान कर, सचिव सोच तेहि भांति ।।२।१२।१४०

उपमेय		उपमान
सुमंत्र		कुलीन तिय
	जिमि कुलीन तिय साधु सयानी ।	
	पति देवता करम मन बानी ।।	
	रहै करमबस परिहरि नाहू ।	
	सचिव हृदय तिमि दारुन दाहू ।।	२।१४।२४०
सुमंत्र		माता पिता का घातक
	सोच सुमंत्र बिकल दुख दीना ।	२।५।२४०
	+ + +	
	बिप्रस्म भस्उ न जाइ निहारी ।	
	मारेसि मनहुं पिता महतारी ।।	२।१७।२४०

सुमंत्र पापी (यमपुर जाता हुआ)

सोच सुमंत्र बिकल दुख दीना ।

\+ \+ \+

हानि गलानि बिपुल मन ब्यापी ।
जमपुर पंथ सोच जिमि पापी ।। २।१८।२४०

सुमति भूमिथल

सुमति भूमि थल हृदय अगाधू । १।२१।२२

सुमति कुदारी

मर्मी सज्जन सुमति कुदारी । ७।११।५६०

सुमति छुधा - क्षुधा

सुमति छुधा बाढ़इ नित नई । ७।१०।५६३

सुमित्रा (मातु) मृगी

गई सहमि सुनि बचन कठोरा ।
मृगी देखि दव जनु चहुँ ओरा ।। २।८।२११

सुमंत्र बनिक

सुनि सुमंत्र सिय सीतलि बानी ।
भयउ बिकल जनु फनि मनि हानी ।। २।३।२२१

\+ \+ \+

राम लखन सिय पद सिरु नाई ।
फिरेउ बनिकु जनु मूरु गंवाई ।। २।८।२२१

सुरपतिहि - सुरपति स्वान - श्वान

सूल छाड़ै भाग सठ, स्वान निरखि मृगराज ।
छीनि लेइ जनि जानि जड़, तिमि सुरपतिहि न लाज ।। १।१६।६६

सुरपति सुत पिपीलिका

सुरपति सुत धरि बायस बेखा ।
सठ चाहत रघुपति बल देखा ।।
जिमि पिपीलिका सागर थाहा ।
महा मंदमति पावन चाहा ।। ३।१६।३१६

सूख (सूखना) त्याग (त्यागना)

रस रस सूख सरित सर पानी ।
ममता त्याग करहिं जिमि ग्यानी ।। ४।१७।३६२

सूपनखा - सूपणखा) अहिनी

सूपनखा रावन कै बहिनी ।
दुष्ट हृदय दारुन जिमि अहिनी ।। ३।२३।३३१

उपमेय	उपमान
सूपनखा (सूपर्णखा)	सैल - शैल
सूपनखा रावन कै बहिनी ।	
दुष्ट हृदय दारुन जिमि अहिनी।।	३।१३।३३१
+ + +	
नाक कान बिनु भइ बिकरारा।	
जनु स्रव सैल गेरु कै धारा ।।	३।१४।३३२
सेंदुर	अरुन पराग (अरुण पराग)
राम सीय सिर सेंदुर देहीं ।	
सोभा कहि न जाति बिधि केहीं ।।	१।४।१६०
अरुन पराग जलजु भरि नीके ।	
ससिहिं भूष अहि लोभ अमी के ।।	१।५।१६०
सेना (भरत की)	१, करि निकर २, लवा - लावा (पक्षी)
जिमि करि निकर दलइ मृगराजू ।	
लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू ।।	२,१६।२७७
सैन - सेना	करुना सरित (करुणा रूपी सरिता)
सैन मनहुँ करुना सरित, लिए जात रघुनाथ ।	२।२४।२६६

सेवक (राम का) — नयन

पलक नयन इव सेवक त्रातहिं । — ७।३।५०७

सेवकाई (राम सेवक की) — कामधेनु

सीतापति सेवक सेवकाई ।
कामधेनु सम सरिस सुहाई ।। — २।२४।२६२

सेवा (राम की) — चंग = पतंग

रहै राखि सेवा पर भारू ।
चढ़ी चंग जनु खेंच खेलारू ।। — २।२।२८२

सैल (शैल) — जनु – जन

सोह सैल गिरिजा गृह आएं ।
जिमि जनु राम भगति के पाएं ।। — १।१०।३७

सोक – शोक — समीर

काहि न सोक समीर डोलावा । — ७।५।५२७

सोहमस्मि — दीपसिखा–दीपशिखा

सोहमस्मि इति वृत्ति अखंडा ।
दीपसिखा सोइ परम प्रचंडा ।। — ७।१६।५५८

उपमेय		उपमान
सौनित (शोणित)		निर्भर
	स्रवहिं सैल जनु निर्भर भारी ।	
	सौनित सरि कादर भयकारी ।।	६।६।४५८
सौनित स्रवन		गैरु पनारे
	सौनित स्रवन सोहत्तन कारे ।	
	जनु कज्जल गिरि गैरु पनारे ।।	६।२।२४४
संकुल		संसय भ्रम समुदाइ
	भूमि जीव संकुल रहे, गए सरद रितु पाइ ।	
	सदगुर मिले जाहिं जिमि संसय भ्रम समुदाइ ।।	४।१२।३६३
संग्राम		पुर
	संग्राम पुर बासी मनहुं ।	३।१२।३३५
संग्राम		बट
	संग्राम बट पूजन चलीं ।	६।६।४६३
संत		जलज
	बंदौं संत असज्जन चरना ।	
	दुखप्रद उभय बीच कछु बरना ।।	१।२०।४
	+ + +	
	उपजहिं एक संग जग माहीं ।	
	जलज जोंक जिमि गुन बिलगाहीं ।।	१।२२।४

संत मधुकर

मधुकर सरिस संत गुनग्राही । १।४।८

संत चकोर

संत चकोर करहिं जेहि पाना । १।१७।२८

संत समाजू - संत-समाज तीरथ राजू -तीर्थराज

मुद मंगल मय संत समाजू ।
जो जग जंगम तीरथराजू ।। १।२।३

संत-समाज सुरलोक

संत समाज सुरलोक सब को । १।१३।६१

संतोष कोक

सुख संतोष बिराग बिबेका ।
बिगत सोक ये कोक अनेका ।। ७।२०।५७

संभु चाप - शम्भुचाप बोहितु - बोहित

संभु चाप बड़ बोहितु पाई । १।२६।१२८

संभु सरासनु - शंभुशरासन सतीमनु - सतीमन

डौ न संभु सरासनु कैसें ।
कामी बचनु सती मनु जैसें ।। १।२४।१२४

उपमेय		उपमान
संसारु - संसार		जम जातना (यमयातना)
	जम जातना सरिस संसारु ।	२।२०।२०६
संसार		सिंधु
	संसार सिंधु अपार पार ।	६।४।४७४
संसय		बिपिन
	संसय बिपिन अनल सुर रंजन ।	६।२।४८२

: ह :

हनुमाना - हनुमान		गजराजा - गजराज
	सुनि रावन पठए भट जाना ।	
	तिन्हहिं देखि गरजा हनुमाना ।।	५।७।३८२
	+ + +	
	तिन्हहिं निपाति ताहि सब बाधा ।	
	गिरे जुगल मानहुं गजराजा ।।	५।१६।३८२
हनुमाना - हनुमान		अमोघ बाना - अमोघ बाण
	जिमि अमोघ रघुपति कर बाना ।	
	येही भाँति चला हनुमाना ।।	५।२।३७२

हनुमाना - हनुमाना | जलयाना - जलयान

बूड़त बिरह जलधि हनुमाना ।
भएहु तात मो कहुं जलयाना ।। ५।२।३७९

हनुमाना - हनुमान | बारी - वारि

हरषै सब बिलोकि हनुमाना । ५।१७।३८५
\+ \+ \+
तलफत मीन पाव जनु बारी । ५।१९।३८५

हनुमाना - हनुमान | सुमेरु - सुमेर पर्वत

पुनि फिरि भिरेउ प्रबल हनुमाना ।
\+ \+ \+
कज्जलगिरि सुमेरु जनु लरही ।। ६।११।४६४

हय (राम के) | बिहग

देखि दखिन दिसि हय हिंहिनाहीं ।
जनु बिनु पंख बिहग अकुलाहीं ।। २।१४।२३९

हरष बिषाद (हर्षविषाद) | गरह - गृह

हरष बिषाद गरह बहुताई । ७।१५।५६२

हरि | पावक

दहन पावक हरि स्वयं । ६।१६।४७२

उपमेय		उपमान
हरि		मधुप
	हृदय कंज मकरंद मधुप हरि ।	७।१७।५१६
हरि कीरति (हरिकीर्ति)		सेतु
	मुनिन्ह प्रथम हरि कीरति गाई ।	
	तेहि मग चलत सुगम मोहि भाई ।।	
	अति अपार जे सरित बर,	
	जौं नृप सेतु कराहिं ।	
	चढ़ि पिपीलिको परम लघु,	
	बिनु श्रम पारहिं जाहिं ।।	१।६।१०
हरि भगति (हरिभक्ति)		थल - स्थल
	जिमि थल बिनु जल रह न सकाई ।	७।१७।५५६
	+ + +	
	रहि न सकइ हरि भगति बिहाई ।	७।१६।५५६
हरि भगति (हरिभक्ति)		जय
	जय पाइअ सो हरि भगति ।	७।४।५६१
हरिहरकथा		बेनी - त्रिवेणी
	हरि हर कथा बिराजति बेनी ।	१।६।३

उपमेय		उपमान
हास - हास्य		माया
	माया हास बाहु दिगपाला ।	६।३।४१२
हासा - हास्य		ससिकर - शशिकर
	सकल सुखद ससिकर सम हासा ।	७।८।५३०
हिमत्रासा - हिमत्रासा		द्विज द्रोह
	मसक दंस बीते हिम त्रासा ।	
	जिमि द्विज द्रोह किएं कुल नासा ।।	४।१०।३६३
हिय - (अपकर्ता के)		पाषान (पाषाण)
	तिन्ह के हिय पाषान ।	७।२२।५१२
हृदय		अगाधू - अगाध
	सुमति भूमि थल हृदय अगाधू ।	१।२२।२१
हृदय (कौशिल्या का)		सत कुलिस
	मोर हृदय सत कुलिस समाना ।	२।१५।२४६
हृदय (कैकेयी का)		पाक बरतोरू
		(पका हुआ बालतोड़)
	दलकि उठेउ सुनि हृदय कठोरू ।	
	जनु छुइ गयउ पाक बरतोरू ।।	२।१४।१६०

उपमेय		उपमान
हृदय		कमल
	तिनके हृदय कमल महुं ।	३।१०।३३९
हृदय (जटायु का)		पंकज
	मम हृदय पंकज भृंग अंग ।	३।६।३४४
हृदय		सिंधु
	हृदय सिंधु मति सीपि समाना ।	१।२४।८
हृदय (शंकर का)		कंज
	हृदय कंज मकरंद मधुप हरि ।	७।१७।५१६

: त्र :

त्रिविधि ईषणा		तिआरी
	त्रिविधि ईषणा तरु तिआरी ।	७।१८।५६२
त्रिविधि पुरुष		पाटल, रसाल, पनस
	संसार महुं पुरुष त्रिविध, पाटल, रसाल, पनस सम ।	६।१८।४६०

त्रिविध क्यारि — क्सीठी

त्रिविध क्यारि क्सीठी लाईं । — ३।१५।३४७

त्रिविध समीरा - त्रिविध समीर — उरग स्वास - उरग-स्वास

जे हित रहे करत तेइ पीरा ।
उरग स्वास सम त्रिविध समीरा ।। — ५।१६।३७६

त्रिय - तिय — बनसी - वंशी

बनसी सम त्रिय कहहिं प्रबीना । — ३।१।३५१

: ज्ञ :

ज्ञान — पंकज

धरम तड़ाग ज्ञान बिज्ञाना ।
ये पंकज बिकसे बिधि नाना ।। — ७।१६।५०७

ज्ञान — घृत

बुद्धि सिरावइ ज्ञान घृत । — ७।८।५५८

उपमेय		उपमान
ज्ञान		काकु - काक
	सोजत काकु फिरहिं पय लागी ।	७।४।५५६
ज्ञान		नयन
	ज्ञान बिराग नयन उरगारी ।	७।११।५६०
ज्ञान		मंदर
	ब्रह्म पयोनिधि मंदर, ज्ञान संत सुर आहिं ।	७।१।५६१
ज्ञान		असि
	छिति कर्षिं असि ज्ञान मद ।	७।३।५६१
ज्ञानजौति - ज्ञानज्योति		पावक
	ज्ञान जौति पावक जिमि अरनी ।	७।१०।५०८
ज्ञान पंथ		कृपान के धारा (कृपाण की धार)
	ज्ञान पंथ कृपान के धारा ।	७।१३।५५६
ज्ञानु - ज्ञान		जलजानु - जलयान
	सोह न राम पेम बिनु ज्ञानु । करनधार बिनु जिमि जलजानु ।।	२।१७।२६७

उपमान - उपमेय

उपमान	उपमेय
अकाल कुसुम	खल के प्रिय बानी (खल की प्रिय वाणी) ३।२।३३८
अकास (आकाश)	गुन गन - गुण गण ६।२।४७०
अगाधू	हृदय १।२१।२२
अगिनि (अग्नि)	जोग (योग) ७।७।५५८
अगिन (अग्नि)	बिरह ५।५।३८७
अघ	परनिन्दा ७।४।५६२
अघ उदधि	भरत २।२३।२६४
अंकुस	नयनि नीच के (नीच का नम्र होना) ३।१।३३८
अंगार	मुद्रिका (राम की) ५।१०।३७८

उपमान	उपमेय
अंगार रासिन्ह (अंगार राशि)	रुधिर (राक्षसों का) ६।४।४३५
अज	बुद्धि (राम की) ६।७।४११
अजधामा (अजधाम)	सीस (राम का) ६।२१।४१०
अतिथि	गुनग्राम १।२०।२३
अति प्रबल दिनेसा (अति प्रबल दिनेश)	राम प्रताप ७।१३।५०७
अदिति	कथा (राम की) १।१३।२०
अर्बंल परे शव	घायल भट ६।१६।४५८
अधारा (आधार)	मंथरा २।१८(१८८

उपमान	उपमेय
अंधार (आधार)	दम - दमन (इन्द्रिय का) ७।५।५५८
[illegible]	पद (राम का) ३।७।३२२
अकुल कुटुम्बी	मीना - मीन ४।२०।३६२
अन्डा (अण्डा)	बन्धु (भरत) २।१०।१८२
अंजन	पद रज (गुरु का) १।२।२१
अंध	रानियां (जनकपुर की) १।३।१७३
अंध	लछमण २।२५।२०६
अंध	गुर - गुरु ७।१२।५४३

उपमान	उपमेय
अनल	गुनग्राम (राम के) १।५।२१
अनल	लोकमान्यता १।१६।८२
अनल	कुमति (कैकेयी की) २।८।१६३
अनल	सर (राम का) ५।१४।३६६
अनल	नूतन किसलय ५।७।३७८
अनल	क्रोध (रावण का) ५।२४।३६५
अनल	आनन (राम का) ६।४।४११
अनल	प्रभु (राम) ६।४।४५७

उपमान	उपमेय
अनल	कुठारा (कुठार) (परशुराम का) ६।५।४१८
अनल	अकाम ७।३।५५८
अनंग	अंग (राम के) ६।१७।४७१
अनुरागु (अनुराग)	भरत २।२।२६३
अनुपान	भक्ता ७।६।५६३
अपर लोक	अंग अंग ६।२१।४२०
अबुज	पाद (पद) (प्रभु का) ७।१।६८७
अबला	मति (मुनि की) २।६।२८६

उपमान	उपमेय
अविवेकी पुरुष (अविवेकी पुरुष)	लखनु (लक्ष्मण) २।८।२३६
अविद्या	कैकेयी २।१६।१६१
अंबु	अवधि (वन में रहने की) २।१२।२०३
अंबु	भव ३।१२।३२१
अंबुज	चरना (चरण) (शंभु के) १।६।५८
अंबुज	अंबक १।८।७६
अंबुज	पद (वसिष्ठ के) २।५।२६०
अंबुज	पद (राम के) ३।११।३२१

उपमान	उपमेय
अंबुज	पद (राम के) ५।१७।३६५
अम्बुज	चरन (चरण) ६।१६।४८७
अंबुधि	अवध ५।१३।१७६
अंबुपति	जीहा - जिह्वा (राम की) ६।४।४११
अंभोज	अंबक १।१६।१५५
अंभोज	नयन (राम के) ७।६।४६६
अमित कोटि तीरथ (अमित कोटि तीर्थ)	राम ७।४।५३६
अमित कोटि सारदा	भगवाना - भगवान ७।७।५३६

उपमान	उपमेय
अमित गुन सागर (अमित गुण सागर)	रामु - राम ७।१५।५३६
अमिअ - अमिय	पदरज (गुरु की) १।२।२१
असनु अमिअ (असन अमिय)	कंद मूल फल २।१५।२३८
अमिअ - अमिय	कंद मूल फल २।२।२६६
अमिअ - अमिय	तीरथ तोय - तीर्थ तोय २।१२।३११
अमिअं - अमिय	आहार (वन के) २।५।२०७
अमिअ	जस - यश (भरत का) २।१६।२६८
अमी (अमृत)	कंद मूल फल २।१२।२२४

उपमान	उपमेय
अमोघ बाना - अमोघ बाण (राम का)	हनुमाना - हनुमान ५।२।३७२
अर्कफलन्हि - अर्कफल	गिरि सिखर - गिरि शिखर ६।१०।४४१
अर्णव - अर्णव	मव ३।२३।३२१
अरघ	राम १।१३।१३
अरनी	कथा (राम की) १।५।२०
अरनी	राम कथा ७।१०।५०८
अरबिंद	पद (राम के) ७।२।५०४
अरबिन्दु - अरविन्द	पद (राम के) ७।३।४८८

उपमान	उपमेय
अरुन - अरुणा	सेंदुर १।५।१६०
अरुनोदय (अरुणोदय)	राम आगमन १।१।११६
अरुन वारिज - अरुण वारिज	नयन (विष्णु का) १।२।५
अरुनारी - अरुणाई (सन्ध्या की)	कबीर १।३।६६
अठान	राजु - राज्य (अवध का) २।८।२०१
अवगुन - उदधि - अवगुण-उदधि	भरत २।८।२६४
अवगुन सिंधु - अवगुण-सिन्धु	(बसंतसिंह) ७।२३।५११
पहारू - पहाड़ (जंगल के)	अवध सौध सत (अवध के सैकड़ों महल) २।५।२०७

उपमान	उपमेय
अवां	छाती १।३।८२
अष्टादस भारा	रोम राजि (राम की) ६।५।४११
अस्विनी कुमारा - अश्विनी कुमार	घ्रान - घ्राणा (राम नाम की) ६।१।४११
असि	ज्ञान ७।३।५६१
असुर सैन	कथा (राम की) १।८।२०
अहि	खल ७।२२।५६१
अहिगति	चित्त (कुमित्र का) ४।८।३५७
अहिगन - अहिगणा	बान - बाणा (राम के) ५।६।३६८

उपमान	उपमेय
अहिगन - अहिगण	निशिचर (गण) 5।5।382
अहिनी	सूपनखा - शूर्पणखा 3।13।339
अहिभवन	स्रवन रंध्र - श्रवणरन्ध्र 1।5।61
अहीर	मन 7।2।558
अहेरी	चित्रकूट 2।14।235
आकु - आक	ज्ञान
आखर जुग - अक्षर युग्म	चरन पीठ - चरण पीठ (राम की) 2।5।314
आमलक	तीनि काल - तीन काल (भरद्वाज आदि के लिए) 6।14।16

उपमान	उपमेय
आस्रमी चारि - आश्रमी चार	नृप, तापस, बनिक, भिखारी ४।२।३६३
आसा - आशा	घन ४।२१।३६२
आहुति	सर (परसुराम का) १।१२।१३६
इंद्रिय गन - इन्द्रियगण	पथिक ४।२।३६२
इन्द्र जाल	माया ३।६।३४८
इंद्रधनु	कपि लंगूर ६।१।४५८
इंदिरा	सत्य श्री ६।१२।४७६
इंदु	कलस (नृप गृह) १।४।६६
इंदु	गौर सरीरा - गौर शरीर (शिव का) १।८।५८

उपमान	उपमेय
इंदु	राम ३।८।३२८
इंदु	संत ७।३।५६२
इष्टदेव	राम १।१५।१२०
इष्टदेव	छलन - छलराग १।१५।१२०
ईंधन	कपट १।५।२१
ईंधन	कलि १।५।२१
ईंधन	कुचाल १।५।२१
ईंधन	कुतरक - कुतर्क १।५।२१
ईंधन	कुपथ १।५।२१

उपमान	उपमेय
ईंधन	दंभ १।५।२१
ईंधन	पाखंड १।५।२१
उकठ कुकाठु (उकठा काठ)	कैकेयी २।६४।१८७
उडगन - उडुगण	राजसमाज १।३।१२०
उडगन - उडुगण	नृपति १।१।११६
उडुगन - उडुगण	गुन ग्राम - गुण ग्राम (राम के) १।६।२९
उडुगन - उडुगण	अपर नाम ३।३।३५०
उडुगन - उडुगण	प्रसून ६।१६।४७९

उपमान	उपमेय
उतपति	समीहा ६।४।४११
उद्यम	पात ४।२१।३६१
उदधि	बेद पुरान - वेद पुराण १।२१।२२
उदधि	उदर (राम का) ६।६।४११
उदरबृद्धि	तृस्ना - तृष्णा ७।१८।५६२
उपकारी के संपति (उपकारी की सम्पति)	ससि सम्पन्न मही ४।१।३६२
उपजै	बरसै ४।६।३६२
उरग	नवनि नीच कै (नीच व्यक्ति का झुकना) ३।१।३३८

उपमान	उपमेय
उरगा - उरग	बान - बाण (राम के) ६।१७।४६१
उरग स्वास - उरग श्वास	त्रिविध समीरा (तीनों प्रकार की समीर) ५।१६।३७६
उरगाद (गरुड़)	राम ३।६।३२७
उलूक	रामद्रोण ५।१६।३६४
उलूक	विभीषन - विभीषण ५।४।३६४
उलूक	बघ ७।१६।५०७
ऊंट	ढेंक ३।११।३४७
ऊमरि तरु	माया (राम की) ३।६।३२६

उपमान	उपमेय
कठोरपनु - कठोरपन	कैकेयी २।१७।१६६
कद्रू	कौशिल्या २।१६।१८७
कदली	कैकेई २।१२।१८७
कनककसिपु	कलिकालु - कलिकाल १।१७।१७
कनकतरु	मुनि (सुतीक्ष्ण) ३।१८।३२६
कंदुक	ब्रह्मांड १।१२।१२५
कंदुक	सिर (रावण के) ६।१८।४१८
कंज	पद (गुरु के) १।१।२
कंज	'रा' (अक्षर) १।१०।१४
कंजा - कंज	कर (राम के) १।२३।७६

उपमान	उपमेय
कंजा - कंज	पद (राम का) १।९४।९४
कंज	बिलोचन (राम के) १।५।१११
कंज	लोचन (राम के) ३।१३।३२१
कंज	पद (राम के) ५।१२।३८६
कंज	पद (राम के) ५।३।३६५
कंज	पद (राम के) ६।८।४१३
कंज	पद (राम के) ६।४।४२४
कंज	पद (राम के) ६।१८।४५२
कंज	पद (राम के) ६।६।४७४

उपमान	उपमेय
कंज	पद (राम के) ६।२०।४७६
कंज	पद (राम के) ६।२०।४७६
कंज	पद (राम के) ७।५।४८७
कंज	पद (राम के) ७।१०।४६७
कंज	पद (राम के) ७।५।५११
कंज	हृदय (कामारि का) ७।१७।५१६
कंजा - कंज	पद (राम के) ७।४।५६६
कंजारुन - कंजारुणा	लोचन - राम के) १।१।३
कंज बन	बिषाय मनोरथ ६।५।४८९

उपमान	उपमेय
कंज बन	संत ७।४।५०७
कंडु	इरषा - ईर्ष्या ७।१५।५६२
कनक घट	तनु - तन (लषराा का) १।१३।१३७
कंठ (केकी का)	कंठ (राम का) १।२४।१५३
कपाट	चरनपीठ (राम की चरराा-पादुका) २।६।३१४
कपाट	ध्यान (राम का) ५।२१।३८६
कपास	साधु १।१।३
कपास	(क) तीन अवस्था - स्वप्न,जागराा, सुषुप्ति (ख) तीन गुराा-सत,रज तम. ७।११[५५८

उपमान	उपमेय
कपिलहिं (कपिला गाय)	संत ७।८।५११
कपिलागाई - कपिलागाय	सीता ३।७।३४१
कपूत	मारुत ४।१०।३६२
कफ	लोम ७।१२।५६२
कबुली	कैकेयी २।७।१८८
कमठ	'रा' (अक्षर) १।६।१४
कमठ	राम २।१०।१८२
कंबु	कंठ (बालकों का) १।२२।१००
कंबु	ग्रीवा (राम की)

उपमान	उपमेय
कंबु	ग्रीवा (राम की) १।८।११६
कंबु	ग्रीवा (राम की) १।६।१२१
कंबु	ग्रीवा (लषण की) १।६।१३१
कमल	चरन (रघुनन्दन के) १।११।१३
कमल	पद (सब जनों के) १।११।६
कमल	चरन - चरण (कवियों के) १।११।१०
कमल	पद (शत्रुघ्न के) १।२४।१२
कमल	पद (जानकी के) १।१०।१३
कमल	पद (शिव का) १।४।५५

उपमान	उपमेय
कमल	पद (प्रभु राम का) १।२४।६३
कमल	पद (राम के) १।४।७७
कमल	पद (भगवंत के) १।१४।८६
कमल	पद (हरि का) १।२१।६५
कमल	चरन - सरोज (रघुबीर का) १।१०।१०६
कमल	पद (रघुबीर के) १।२२।१०६
कमल	पद (विश्वामित्र के) १।५।११३
कमल	पद (पार्वती के) १।६४।११७

उपमान	उपमेय
कमल	पद (विश्वामित्र का) १।१२।१२१
कमल	पद (राम का) १।८।१२५
कमल	पद (राम का) १।४।१६२
कमल	नयन (राम के) १।१०।१६२
कमल	पद (वसिष्ठ के) १।३।१७४
कमल	कर (राम के) २।१।१८३
कमल	दसरथ १।१४।१६५
कमल	चरन - चरण (सीता के) २।१६।२०५
कमल	पद (राम के) २।६।२०७

उपमान	उपमेय
कमल	पद (कौशल्या के) २।२०।२०३
कमल	पद (राम के) २।१२।२२०
कमल	पद (राम के) २।१६।२२१
कमल	पद (राम के) २।१६।२२१
कमल	चरन - चरण (राम के) २।१४।२२१
कमलनि - कमल	कर (राम के) २।२१।२२७
कमलनि - कमल	कर (लक्ष्मण के) २।२१।२२७
कमल	पद (राम लक्ष्मण एवं सीता के) २।४।२३०

उपमान	उपमेय
कमल	कर (रघुराई के) २।२५।२३१
कमल	कर (भरत के) २।८।२५४
कमलनि - कमल	कर (राम के) २।१७।२८९
कमल	कर (सीता के) २।२०।२८२
कमल	पद (वसिष्ठ के) २।२१।२८७
कमल	पद (राम के) २।२१।३०७
कमल	पद (मुनि का) २।२४।३१०
कमल	पद (राम के) २।१४।३१२
कमल	पद (मुनियों का) ३।१०।३२४
कमल	चरन - सरोज (राम के)

उपमान	उपमेय
कमल	पद (अगस्त्य मुनि के) ३।१८।३२८
कमल	हृदय (भक्तों का) ३।१०।३३९
कमल	पद (राम के) ३।१०।३४२
कमल	चरन - चरण (रघुपति के) ३।४।३४५
कमल	पद (रघुनाथ के) ४।२४।३६६
कमल	पद (राम के) ५।२१।३६४
कमलन्हिं - कमल	कर (रावण के) ६।१३।४१३
कमल	पद (राम के) ६।६।४०६

उपमान	उपमेय
कमल	पद (राम के) ६।११।४३०
कमल	पद (राम के) ६।१।४४६
कमलन्हि (कमल)	कर (रावरा के) ६।४।४६७
कमल	पद (राम के) ६।१४।४६७
कमल	भानुकुल ७।११।४६०
कमल	मुख (रघुपति का) ७।१७।४६२
कमल	मुख (राम का) ७।४।५०४
कमल	चरन - चररा (राम का) ७।१८।५०३

उपमान	उपमेय
कमल	चरन - बरण (राम के) ७।१७।५०६
कमल	पद (राम के) ७।४।५१६
कमल	कर (राम के) ७।२२।५५४
कमल नाल	चाप (शंकर का) १।१६।१२५
कमल बन	करन्हि - कर (रावण के) ६।१४।४६६
कमल बिपिन	रघुकुल ७।२२।४६३
कमान	जीभ (कैकेयी की) २।१६८।१६६
कर्म मूढ़ कर पाप	सीस भुजा (रावण की) ६।६।४६६

उपमान	उपमेय
करम नासु जलु (कर्मनाश नदी का जल)	गुह २।१।२६२
करनधार - कर्णधार	राम पेम - राम-प्रेम २।१७।२६७
करनधार - कर्णधार	सदगुर - सद्गुरु ७।१८।५१३
करतारी	कथा (राम की) १।१४।६१
करि	भरत २।२५।२४६
करि	मनसिज ७।६।५०७
करिकर	भुजदण्डा (राम) २।१३।७६
करिकर	प्रभुभुज ५।२१।३७६
करिनिकर	सैना (भरत की) २।१६।२७७

उपमान	उपमेय
करि बरूथ	सभा (रावरा की) ६।७।४२५
करुना - करुरा	शोकयुक्त महिलायें (रनिवास की) २।१२।२६६
करुना - करुरा	बिकल बानर निकर ६।११।४३६
करुना सरित (करुरा रूपी सरिता)	सेन - सेना (जनक की) २।२४।२६६
करुन रस कटकई (करुरा रस की कटक)	वियोग (राम का) २।२।१६६
करील बन	बन २।३।२०६
कलकंज	लोचन (राम के) ७।८।४८७
कलंकू - कलंक	बालकु - बालक १।१०।१३५

उपमान	उपमेय
कल्पतरु	नामु - नाम (राम का) १।७।१७
कल्पपादप	राम ३।५।३२२
कल्प पादप	राम ३।१०।३२७
कलपबेलि - कल्पबेलि	सीता २।६।२०४
कलिहि - कलि	वर्षाऋतु ४।५।३६२
काक	खल १।७।७
काक	कामी १।८।६६
काक	लौलुप १।१८।६६

उपमान	उपमेय
काकरीति	पाकरिपु रीति २।६।३०८
काचे घट	ब्रह्मांड २।१३।१२५
कांजी सीकरनि	बिधि हरि हर पद २।७।२७८
कानन	जनमन ६।४।४८१
काम	बाजि १।७।१५४
कामा - काम	तून - तुरा ४।६।३६२
काम	छवी - छवि (राम की) ६।१७।४७७
काम	गज ६।४।४८१

उपमान	उपमेय
कामतरु	नाम (राम का) १।१३।१७
कामद गाई	कथा (राम की) १।६।२०
कामदघन	गुनग्राम १।२३।२०
कामधेनु	भूमि १।२०।७६
कामधेनु (सेवकों के लिये)	रेनु - रेणु (सुरसरि की) २।७।२६३
कामधेनु	सेवकाई (राम के सेवक की) २।२४।२६२
कामधेनु	भगवाना - भगवान ७।६।५३६
कामधेनु	भक्ति ७।४।५५६

उपमान	उपमेय
काल	प्रभु १।७।१२०
काला - काल	भृकुटि-विलास (राम का) ६।२२।४१०
काला - काल	पवनसुत ६।१३।४३३
काल	निशिचर ६।१८।४३६
काल	कपि भालु ६।६।४४६
काल	मर्कट भालु ६।२१।४५१
काल	बलीमुख ६।८।४५३
काल	बिभीषनु - बिभीषण ६।४।४६५

उपमान	उपमेय
काम कलभ कर	भुज - भुजा (लक्ष्मण की) १।६।११६
काम कलभ कर	भुज - भुजा (राम की) १।६।११६
कालकूट मुख	लखन - लक्ष्मण १।२।१३७
कालकर दंड (कालदण्ड)	सक्ति प्रचंड - शक्ति प्रचण्ड ६।८।४६३
कालनेमि	बंचक १।२२।५
काल फनीस (काल फणीश)	सायक (राम के) ६।२।४७१
कालनिसा - कालनिशा (सीता के लिये)	निसि- निशा ५।१४।३७६
कालराति - कालरात्रि	अवध २।१३।२१४

उपमान	उपमेय
कालत्रौन	सरन्हि मरा मुख ६।२२।४४४
कालिका	राम कथा १।१६।२८
कारि सांपिनि - काली सर्पिरिा	बैरी (मंथरा) २।२२।१८४
कासी - काशी	कथा (राम की) १।१०।२०
कृतांत	जटायु ३।११।३४१
कृतांत	कपि ६।३।४५३
कृतांत	रावरा ६।२५।४५६
कृपन (कृपरा)	सुमंत्र २।३।२४०
कृपान कै धारा (कृपारा की धार)	ज्ञानपंथ (७।१३।५५६

उपमान	उपमेय
कृपा बारिधर - कृपावारिधर	राम ६।६।९१४
कृसानु	खलगन - खलगरा १।६।४
कृसानु	कोप (भृगुवर का) १।१४।१३६
कृसानु - कृसानु	कोपु - कोप (परशुराम का) १।१२।१३६
कृसानु - कृसानु	राम १।८।१४०
कृसानु	राम ३।२।३२७
कृसानु	नव तरु किसलय ५।१४।३७४
कृसानु	बान - बाण (रघुपति का) ५।१।३८०

उपमान	उपमेय
कृसानुहिं - कृसानु	राम
किरात	मनजात ७।५।४६८
किरातिनि - किरातिनी	कैकेयी २।१०।१६०
किराती - किरातिनी	कैकेयी २।१६।२४६
किरातिनि - किरातिनी	कैकेई २।१६।२१४
किरातहि - किरात	राम ७।६।५०७
कीचनीन	भरत २।१२।२८७
कीट	मनोरथ ७।७।५२७
करिनि	कैकेई २।१६।१६१

उपमान	उपमेय
करि एवं मर्कट	जीव ७।१४।५५७
कुराळी - कुचाली	मंथरा २।१५।१८७
कुठार	असंतन्हि - असंत ७।१७।५१०
कुठारी	कथा (राम की) १।१५।६१
कुठारी	कैकेई २।२०।१६३
कुठारी	कैकेई २।३।२१८
कुदारी	सुमति ७।१६।५६०
कुधातु	सठ १।२०।३
कुंजरगामी	सकल जग स्वामी १।११।१२६

उपमान	उपमेय
कुंजरहिं - कुंजर	कपि (अंगद) ६।१२।४१३
कुंलवन (मालों का वन)	कुवलय बिपिन ५।१५।३७६
कुन्द	देह (शिव की) १।७।२
कुंद	गौर सरीरा (गौर वर्ण का शरीर)का (शंकर का) १।८।५८
कुंभज	गुनग्राम (राम के) १।२१।२०
कुंभज	रघुनायक ७।१३।५०६
कुविहंग	कुमति (कैकेई) २।६।१११
कुपथ्य	विषय ७।६।५६३

उपमान	उपमेय
कुबेर	(क) बजाज (ख) सराफ (ग) बनिक (वणिक) ७।३।५०६
कुमुद	नृपति १।१।११६
कुमुद	दशरथकुल ७।२१।५१६
कुमुदगन - कुमुदगण	भुआल - भूपाल १।२३।१३०
कुमुद चकोरा (कुमुद एवं चकोर)	रघुबर किंकर २।११।२६८
कुमुदिनी	नारि (अवध की) ७।३।४६४
कुरंग बिहंगा - कुरंग बिहंग	परिवार २।१४।२३८
कुलिश	छाती (जो हरि कथा ... प्रसन्न नहीं होती) १।१०।६१

उपमान	उपमेय
कुलिस	कपाट (जनकपुर के) १।४।१०८
कुलिस	बचनु - बचन (परशुराम के) १।६।१३५
कुलिस	उर (भरत का) २।१२।२६१
कुलिस	सर (रावरा के) ६।३।४६१
कुलीन तिय	सुमंत्र २।१४।२४०
कुष्ट	(क) दुष्टता (ख) कुटिलई - कुटिलता ७।१६।५६२
कुसंग	निविड़तम ४।१२।३६२
कुसुमित किंसुक तरु	घायल बीर ६।५।४३५

उपमान	उपमेय
कूपा - कूप	मद ३।१४।३३०
कैकी कंठाभ	स्वरूप (राम का) ७।१।४८७
केतु	सलगन (का उदय) १।१०।४
केतु	सिर (राक्षसों के) ६।८।४६२
केतु	सिर (राक्षसों के) ६।१०।४६२
केतु - केतु	दुष्ट (उदय) ७।२।५६२
केहरि	गुनग्राम (राम के) १।२२।२०
केहरी - केहरि	कपि (हनुमान) ६।१०।४२४
केहरि कटि	कटि (राम की) १।१२।११६

उपमान	उपमेय
केहरि कंधर	कंधर (राम के) १।११।७६
केहरि कंधर	कंधर (राम के) १।११।११०
केहरि कंधर	कंधर (लछमण का) १।११।११०
केहरि नादा - केहरि नाद	बयन (कैकेई के) २।२५।२४६
कैरव	रघुकुल २।१७।१८३
कैरव	(क) काम (ख) क्रोध (७।१६।५०७
कैरवबिपिन	रविकुल (पति) २।६।२०४
कोक कोकी	नर नारी (अवध के) २।२३।२१५

उपमान	उपमेय
कोकू - कोक	भूप (दशरथ) 2।12।191
कोका - कोक	बिबुध 2।11।305
कोक	(क) सुख (ख) संतोष (ग) बिराग - वैराग्य (घ) बिवेका - विवेक 7।20।507
कोकिल	सीता 2।3।206
कोकिल के स्वर	बयनी (बैन वाली) (रानियां) 2।19।182
कोकिल बयन	बयन (सुमुखियों के) 1।19।140
कोकी (दिन में)	सिय 2।6।207

उपमान	उपमेय
कोकी (दिन में)	सिय २।१२।२३८
कोटि अमरपुर	बनवास (सीता राम के साथ) २।२२।२६८
कोटि काम	स्याम सरीरा -श्याम शरीर (राम का) १।१६।१००
कोटि काम	लखन - लगारा १।१७।१५१
कोटि काम	राम १।१७।१५१
कोटि दुर्गा	राम ७।२१।५३८
कोटि हिमगिरि	रघुबीरा - रघुबीर ७।५।५३६
क्रोध	बणाकेतु ४।२२।३६१
कौमुदी	सीय २।२२।२२८

उपमान	उपमेय
:ख:	
खगनाथ	राम ६।१८।४७७
खग मृग	नर नारी (अवध के) २।१५।२१४
खग मुखर	बेद धुनि (वेद ध्वनि) १।५।६६
खगराजहिं - खगराज (गरुड़)	राम ७।५।५०७
खगगन - खगगरा	अघ ३।१।३५०
खद्योत	मति (सुतीक्ष्ण की) ३।२३।३२६
खंजन नयन	नयन (सीता के) २।१५।२२८
खरारी - खरारि	द्विज (क्षमाशील) ७।७।५५०

उपमान	उपमेय
खल	छुडनदी ४।१३।३६१
खल	अर्क जवास ४।२१।३६१
खल	रावन - रावण ६।८।४६१
खल के बचन	बूंद अघात ४।१२।३६१
खल के प्रीति (खल की प्रीति)	दामिनि दमक (दामिनी की दमक) ४।१०।३६१
खेलार - खिलाड़ी	लखन - लखण २।२।२८२

: ग :

उपमान	उपमेय
गगन	बन ६।६।४०६
गज	राम १।१६।१४३

उपमान	उपमेय
गज	मुनिगन १।१।१४४
गज	कुंभकरन - कुंभकरण ६।१०।४४१
गजगामिनी	कैकेई २।२६।१८६
गजमाते	पिक (कूजत) ३।११।३४७
गजराजा (गजराज)	हनुमान ५।१६।३८१
गजराजा (गजराज)	मेघनाद ५।१६।३८१
गजराज	कुंभकरण ६।५।४४४
गजराजघटा	रिपुदल ३।११।३३३
गजारि	राम ६।६।४२०

उपमान	उपमेय
गत मद मौह (व्यक्ति)	निर्मल जल ४।१६।३६२
गंग गौरि (गंगा एवं गौरी)	गरतिय एवं बिप्रतिय - गुरु तिय एवं विप्रतिय २।२।२८४
गंगा	कथा (राम की) १।२३।६०
गंगतरंग	गुनग्राम (राम के) १।३।२१
गमन (कुंजर का)	गमन सखियों का ६।२१।१५७
गयन्दु - गयन्द	मनु - मन (राम का) २।८।२०१
गयादिक तीरथ (गयादिक तीर्थ)	बचन (कैकेई के) २।१७।१६७
गृहदसा (गृहदशा)	सारदा -(शारदा) २।१२।१८४

उपमान	उपमेय
गरह (गृह)	(क) हरण (हर्ष) (ख) विषाद ७।१५।५६२
गृह	उर ७।१६।५५८
गृह	उर ७।५।३८२
गरुड़	कपि (हनुमान) ५।५।३८२
गरुड़	राम ६।४।४३४
गरुड़	रघुपति ६।१७।४४१
गहन	भुज (भुजायें) (सहस्रबाहु की) ६।५।४१८
गहन घन	दनुज ७।७।५०७

उपमान	उपमेय
गारुड़ि (गारुड़ी)	रघुनायक (राम)
गिरत सुमन माल	तनु त्याग ४।२४।३५६
गिरा प्रसादु (गिरा प्रसाद)	बचन (राम के) २।१०।३१०
गिरा	सीता १।१३।१३
गिरि	रावरा ६।१७।४५४
गिरि	मुख (कुंभकरण का) ६।१५।४१३
गिरि नन्दिनि (गिरि नन्दिनी)	कथा (राम की) १।८।२०
गृही बिरह रत	मोर मन (मोर गरा) ४।८।३६१
ग्रीसम (ग्रीष्म)	नारी ३।१६।३५०

उपमान	उपमेय
घनु (घन)	प्रभु (राम) १।१३।१५४
घन	तन (राक्षस का) ६।११।४४४
घन	भट (बलवंत) ६।१०।४५३
घनु (घन)	रामु - राम ६।१६।४८३
घन	सज्जन ७।२२।५६०
घन गरजनि (घन गर्जन)	दुंदुभि धुनि १।१६।१७९
घन गाजहिं - घन गर्जन	निसान रव ४।१४।४५१
घन घट्टा (प्रलय घन)	कपि भट्टा - कपि भट्ट ६।१८।४५७
घन पटल	मोह ६।२।४८९

उपमान	उपमेय
घनमाला	कच (राम के) ६।२२।४१०
घनसमुदायी - घन समुदाय	निसाचर निकर ६।३।४२८
घृत	मृदु बचन (दशरथ के) २।८।१६३
घृत	मृदु बचन (अंगद के) ६।१।४१६
घृत	ज्ञान ७।८।५५८

: च :

चकई	सिय २।८।२०६
चकई	सीता २।१५।२१२
चकोर	संत १।१७।२८

उपमान	उपमेय
चकोर	मुनि (विश्वामित्र) १।१०।१०४
चकोरा (चकोर)	मनु (मनँ) (जनक का) १।२।१०६
चकोरा (चकोर)	नयन (राम के) १।१६।११४
चकोर	लोचन (देवों के)
चकोरु (चकोर)	मन (दशरथ का) २।४।१६०
चकोरा (चकोर)	स्त्रीपुरुष (गांवों के) २।१६।२२७
चकोर कुमारी	सिय २।११।२३८
चकोरी	सीता १।१८।११५

उपमान	उपमेय
चकोरी	गिरिवर राज किसोरी (पार्वती) १।७।११७
चंग	सेवा (राम की) २।२।२८२
चंचरीक	भरत २।१०।३१७
चंद (चन्द्र)	रूप (राम का) १।२।७६
चंद (चन्द्र)	रूप (लक्ष्मण का) १।२।१०६
चंद (चन्द्र)	मुख (राम का) १।१०।१५७
चंद (चन्द्र)	राम १।६।१७३
चन्द्र (चन्द्र)	मुख (राम का) २।१६।१७६

उपमान	उपमेय
चंद (चन्द्र)	आनन (कैकेयी का) २।४।१६०
चंद (चन्द्र)	बदनि - बदन (सीता का) २।४।२०६
चंद (चन्द्र)	मुख (राम का) २।१६।२२७
चन्दु (चन्द्र)	राजा (दशरथ) २।२३।२४१
चंदू (चन्द्र)	रघुनन्दु - रघुनन्दन
चंद किरन रस (चन्द्र किरण रस)	सुख (अयोध्या के) २।१४।२०४
चबेना	बरू (वर) २।३।१६३
चंपक बागा (चंपक बाग)	अवधपुरी २।१०।३१७

उपमान	उपमेय
चर्मू	बिरति (वैराग्य) ७।३।५६१
चन्दन तरु	हरि ७।२२।५६०
चन्दन	संत ७।१७।५१०
चातक	सज्जन १।८।७
चातक	भरतु (भरत) २।१३।३१७
चातक	जाचक (याचक) १।१६।१७१
चातक	लोचन (भक्तों के) २।१२।२३३
चातक चातकि (चातक-चातकी)	नर नारि (अवध के) २।१६।२०१

उपमान	उपमेय
चातकी	सीय १।६।१३०
चंदिनि (चांदनी)	कैक्यनंदिनि - कैक्यनन्दिनी २।१३।२४६
चांदनी	सिख सीतल - (शीतल शिक्षा) २।१५।२९२
चांदनि रात (चांदनी रात्रि)	बधावा (अवध का) २।१।१८४
चारिउ अवस्था (चारों अवस्थायें)	सुन्दरी (चारों पत्नियां) १।२२।१६०
चाल (गज की)	चाल (नारियों की) १।४।१५५
चिकनाई	ममति (भक्ति) ७।२०।५३७
चिन्तामनि (चिन्तामणि)	चरित (राम का) १।१६।२०
चित्र	लोग १।२१।१२२

उपमान	उपमेय
चित्र	मुनि (सुतीक्ष्ण) ३।१६।३२६
चित्रकूट	चित ६।१५।१२०
चोरहिं (चोर)	देव २।१।१८४
चोरा (चोर)	(क) मत्सर (ख) मान (ग) मोह (घ) मद ७।१८।५०७
चौथि चंद	परनारि लिलार ५।२४।३६०
छाई (छाय)	जरनि (जलन) ७।१६।५६२
छलय	नयन (लक्ष्मण के) ६।१७।४३४
छमा (क्षमा)	कथा (राम की) १।६।२०

उपमान	उपमेय
छबि (छवि)	सीय १।७।१३१
छबि (छवि) (अनंग की)	छवि (राम की) १।११।१४०
छबिगन (छविगण)	सखिन्ह (सखियां) १।१४।१३०
छवि ललना	बनिता बृंद १।२।१५८
छत्र	'रा' (अकार) १।११।१४
छत्रक दंड	चाप (शंकर का) १।१७।१२५
छीर समुद्र (क्षीर समुद्र)	भरत २।७।२७८
छीर सागर (क्षीर सागर)	अग्निदेव ६।१२।४७६
छुधा (क्षुधा)	सुमति ७।१०।५६३

उपमान	उपमेय
छुधिता (क्षुधिता)	भरत 2।197।279
छूरी	कपट (मंथरा का) 2।7।188

: ज :

उपमान	उपमेय
जगमय	कल्पना (राम की) 6।6।41?
जगनृपती (जगनृपति)	असंत 7।116।511
जनु (जन)	सैल (शैल) 1।10।37
जनक सुकृति मूरति	बैदेही 1।8।151
जंतु	नरनारी (अवध के) 2।14।214
जतिहिं (यति)	दशरथ 2।19।191

उपमान	उपमेय
जम (यम)	जनक १।१८।८८
जम जातना (यम यातना)	संसारु (संसार) २।२०।२०६
जमदूता (यमदूत)	सुतहित मीतु (सुतहित मित्र) २।१५।२१४
जमुना (यमुना)	कथा (राम की) १।१०।२०
जम (यम)	हरि भगति (हरि भक्ति) ७।४।५६१
जल	सीता १।१३।१३
जलु (जल)	गुन रहित (निर्गुण) १।१२।६२
जल	बचन (राम के) १।१५।१३६
जलु (जल)	कपट (कैकेयी का) २।२२।१८८

उपमान	उपमेय
जल	राम २।२६।२१६
जल	पेम भगति (प्रेम भक्ति) ७।२२।५१५
जल	बल (रावण का) ६।६।४१६
जल	भगति (राम की) ७।१७।५५२
जल	मोक्ष ७।१७।५५६
जल	बिमल ज्ञान ७।१३।५६३
जलचरगन (जल चर गण)	प्रजा (अयोध्या की) २।५।२०१
जलज	संत १।२२।४
जलज	पद (प्रभु राम के) २।१३।५०

उपमान	उपमेय
जलजु (जलज)	कर (राम के) १।५।१६०
जलज	बिलोचन (राम के) ७।३।५०७
जलजाता (जलजात)	पद (लषण के) १।२०।१२
जलजाता (जलजात)	पद (माधव के) १।६।२७
जलजाता (जलजात)	पद (राम के) १।८।११३
जलजाता (जलजात)	चरन - चरणा (राम के) ५।१८।३६२
जलजाता (जलजात)	हनुमाना (हनुमान) ५।२।३७६
जलजात	नयन (भरत के) ७।१२।४८८
जलजाता (जलजात)	पद (राम के) ७।१६।५००

उपमान	उपमेय
जलजानू (जलयान)	ज्ञानू (ज्ञान) २।१७।२१७
जलजारुन (जलजारुणा)	लोचन ६।७।४७८
जलद घटा	मेघडंबर ६।३।४१०
जलद पटल	लतामवन १।२।११६
जलधर	गुनग्राम (राम के) १।२५।२०
जलधारा	धूरि ६।२।४५८
जलधि	मोह ७।११।५६५
जलनिधि	नारि चरित २।१३।११[०]
जम (यम)	दशन (राम के) ६।३।४११
जलहीन मीन जनु धरनी (जलरहित भूमि पर मछली का चलना)	भरत का चरित वर्णन (सभी के लिए) २।१६।३०२

उपमान	उपमेय
जलु स्वाती	मुख (सीता का) १।३।१३०
ज्वर	जौबन (यौवन) ७।४।५२७
जवास	कौसल्या २।७।२०२
जातना (यातना)	अकरी (नीचे की इन्द्रियां) ६।५।४११
जामिक (पहरेदार)	चरनपीठ (चरणपीठ) (राम की)
जावनु (जावन)	बुति ७।४।५५८
जिअन मूरि (सजीवन मूल)	सीय २।११।२०७
जिय	कठ ४।१५।३६१
जीव	लखन (लक्ष्मण) १।१३।१०६

उपमान	उपमेय
जीव	बरन्ह (बर) (चार) १।२२।१६०
जीव	लखरारा २।१।२३१
जीव	अनुज (लखरारा) ३।१२।३२४
जुआरिहि (जुआरी)	बासलोग (अयोध्या के) २।१५।२७८
जुग जलज (जलजयुग्म)	जुगलकर (युगलकर) (सीता के) १।२०।१३०
जुग जलज (जलजयुग्म)	जुगहाथ (हस्तयुग्म) (भरत के) २।७।२६३
जुग बिबि ज्वर (दो प्रकार के ज्वर)	मत्सर अविवेका (मत्सर एवं अविवेक) ७।९९।५६२

उपमान	उपमेय
जुग बिधु पूरे	राम तथा लक्ष्मण १।३।१२०
जुग मधुप (मधुपयुग्म)	नलनील ६।१४।४६६
जनु जूड़ी आई (जूड़ी ग्रस्त व्यक्ति)	बसंत ७।१८।५११
जोंक	असज्जन १।२१।४
जोंक	कैकेयी २।१०।१६७
जोगी (योगी)	प्रमुदित रानियां (दसरथ की) १।२।१७३
जोगी (योगी)	भरत २।१२।१८१
जोगसिद्धि (योगसिद्धि)	रामतिलक २।१६।१६१

उपमान	उपमेय
: झ :	
झरोखा नाना (झरोखे)	इंद्री द्वार ७।३।५५६
: ट :	
टिट्टिभ	रावनहिं (रावण) ६।३।४२७
टीडी	कोटि कोटि कपि ६।३।४२७
: ड :	
अमलबा (विशिष्ट रोग)	अहंकार ७।१७।५६२
डाकिनि (डाकिनी)	मंदाकिनि (मंदाकिनी) २।६।२३५
: त :	
तजहिं (त्यागना)	निरावहि (निराना) ४।४।३६२

उपमान	उपमेय
तड़ाग	धरम (वर्षा) ७।१६।५०७
तड़ित पटल	मुकुट (रावण का) ६।१६।४७१
तन	अवध (अवध) २।२०।२००
तपस्या का फल	राम सैल (राम शैल-दर्शन) २।१२।२८०
तम	जातुधान बरूथ ५।४।३८०
तम	मत्नाग ६।६।४०६
तम	माया (रावण की) ६।१३।४६५
तम	भ्रम ६।३।४८२
तम	मोह आदि ७।१८।५५८

उपमान	उपमेय
तम	अविद्या ७।१०।५६०
तमारि	राम २।२३।२१५
तमाला (तमाल)	कृपाला (कृपाल) (राम) ३।१८।३२६
तमाल	कौसल राज ६।२०।४६१
तमाल	तन (राम का) ६।२१।४७१
तमाल बरन (तमालवर्ण)	तनु (राम का) २।२०।२२७
तमी अंधियारी	ममता ५।१६।३६४
त्यान	सूल (सूलना) ४।१७।३६२

उपमान	उपमेय
तरनी (तरणी)	कथा (राम की) १।३।२०
तरनी	रामकथा ७।७।४६६
तरनी (तरणी)	भगति (भक्ति) ७।१६।५०६
तरवारि (तलवार)	कैकेयी २।८।१६२
तरु तालू ([illegible])	नरपालू (नरपाल) (दशरथ) २।१४।१६१
तरंग	नारि (नारियां) (अयोध्या की) ७।१०।४६०
ताजी (घोड़े)	पारावत ३।११।४४७
ताजी (घोड़े)	मराल ३।१२।३४७

उपमान	उपमेय
तारा	मनि समूह (मणियाँ) १।४।६६
तारे	नृप १।१६।१२१
तापस (तपस्वी)	भरत २।१२।२८०
तामरस	लषण (लक्ष्मण) २।६।२०६
तिवारी	त्रिबिधि ईषना ७।१८।५६२
तिमिर निकाया	माया ६।१३।४३४
तून (तूण)	तनु (तन) २।७।२४१
तून (तूण)	रामकृपा ६।१७।४४५
तृणावंत	भरत ७।१८।४८८

उपमान	उपमेय
तीर तरु	बीर ६।११।४५८
तीरथ (तीर्थ)	वेदक्रिया २।६।२८५
तीरथ (तीर्थ)	सर ५।२०।३७३
तीरथ राजू (तीर्थराज)	संत समाजू (संत समाज) १।३।३
तुंबरि	सिर १।७।६१
तुलसी	कथा (राम की) १।११।२०
तुसारू (तुषार)	रघुपति १।१०।१२
तुहिन	सिअरे बचन (शीतल बचन) २।१०।२०६
तूल	तनु (सीता का) ५।५।३८७

उपमान	उपमेय
तूल	तुरीय (तुरीयावस्था) ७।१२१।५५८
थल (स्थल)	हरि-भक्ति ७।१७।५५९
थाह	सुखु (सुख) (जनक का) १।७।१३०
दधि कुंड	मुंह ६।१८।४२९
दामिन्ह	खद्योत ४।२।३६२
दर	गौर सरीरा (गौर शरीर) १।८।५८
दर	ग्रीवा (राम की) १।६।७६
दर	ग्रीवा (राम की) ७।१६।५३०

उपमान	उपमेय
दारिद्	मोह ७।६।५६०
दावारि (दावाग्नि)	बात (राम बन गमन की) २।२४।१६८
दव (दावाग्नि)	बिरह (राम का) २।३।२१३
दव (दावाग्नि)	बिरहागी (बिरहाग्नि) (राम बियोग की) २।१६।२१५
दसन	बर २।२३।१६६
दसरथ-सुकृत	रामु (राम) १।८।१५१
दादु (दाद)	ममता ७।१५।५६२
दादुर	खल १।८।७

उपमान	उपमेय
दादुर	लोग सब (अयोध्या के) २।२।२८७
दादुर जीह	जीह (बिना राम गुण गान के) १।६।६१
दंड	जस (यश) १।२१।१२
दाम	प्रभु-भुज (प्रभु की भुजा) ५।२१।३७६
दाम	नारि (नारी) ७।२३।५६८
दामिनि (दामिनी)	भामिनि (भामिनी) १।१३।१४५
दामिनि (दामिनी)	भामिनि (भामिनी) १।१८।१७९
दामिनि (दामिनी)	बचन (कैकेई के) २।१४।१६१

उपमान	उपमेय
दामिनि (दामिनी)	लगन (लगण) २।२९।२२७
दामिनि (दामिनी)	सर (राम के) ६।१।४४४
दामिनी	(क) कृशान (कृपाण) (ख) तरवारि (तलवार) ६।१६।४५७
दामिनी	सीता ६।१६।४८३
दामिनी	ताटंका (ताटंक) (मंदोदरी) ६।४।४१०
दारु	सरीरा (शरीर) ७।७।५२७
दारु जोषित	सबहिं (लोग) ४।५।३६०
दारु नारि (कठपुतली)	सारद (शारदा) १।२१।५७

उपमान	उपमेय
दिवटि (दियटि)	समता ७।१०।५५८
दिवा (दीपक)	चित ७।१०।५५८
दिगपाला (दिगपाल)	बाहु (राम के) ६।३।४११
दिनकर कर	गुनग्राम (राम के) १।२५।२०
दिनकर	मुकुट (रावरा का) ६।१८।४२१
दिनकर	राम ६।१३।४३४
दिनकर	रथ दंड (राम के) ६।११।४६२
दिनकर	रघुबीर ६।१३।४६२
दिनकर कुल टीका	राम २।२२।१६५

उपमान	उपमेय
दिनकर वंस भूषन (दिनकर वंश भूषण)	राम ७।३।४६६
दिनैसा (दिनेश)	राम १।१४।६२
दिनेसु (दिनेश)	राम २।१४।२६६
दिनेसू (दिनेश)	बाभरनू (बाभरण) (भरत का) २।६।३१८
दिनैस (दिनेश)	बिरह (रघुपति का) ७।३।४६४
द्विज दोह	हिम त्रासा (हिम त्रास) ४।१०।३६३
दिवाकर	नयन (राम के) ६।२२।४१०
दिवाकर	राम ७।११।४६०

उपमान	उपमेय
दिसा दस (दश दिशायें)	भुवन (संसार) ६।२।४१७
दिसि प्राची (पूर्वदिशा)	कौसल्या १।६।१२
दीआ (दीपक)	राम २।१।२२८
दीप	भूप १।८।१३०
दीप	विज्ञान ७।५।५५६
दीपक	रघुनाथ २।१५।३०५
दीप सिखा (दीपशिखा)	सीप १।२३।११४
दीप सिखा (दीप शिखा)	जुवति तनु (युवती का तन) ३।७।३५२
दीप सिखा (दीपशिखा)	सोहमस्मि ७।१६।५५८

उपमान	उपमेय
दुकाल	निशिचर ६।८।४४
दुंदुभी	फरना ३।१४।३४७
दुर्जन	चक्रवाक ४।६।३६३
दुर्बलता	आस (आशा) ७।१२।५६३
दुइ मंदर (दो मंदर पर्वत)	द्वौ कपि ६।८।४३०
दूध कइ माखी	भामिनि (कैकेयी) २।७।१८७
देखनिहारे (दर्शक)	राम २।१६।२३२
देव तरु	स्वभाव (राम का) २।१५।२६३
देवतरुवर	गुनग्राम (राम के) १।२६।२०

उपमान	उपमेय
देवसरि	अयोध्यावासी २।१०।२८६
देस (देश)	कपि-कुल ६।८।४४४
देह	नारी २।२२।२०६
दो दल (दो पत्ते)	बर दोउ (दोनों वर) २।२२।१८८
धनद	धनिक बनिक (धनी व्यापारी) १।१७।१०७
धनद	कौशल्या २।१४।२०१
धनद कोटि	भगवाना (भगवान) (राम) ७।६।५३६
धन धरमादिक - धन धर्म आदि (शरीर)	सुत चारी (राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न) १।२२।१५०

उपमान	उपमेय
धन हीना (धनहीन)	जल संकोच ४।२०।३६२
धनुष	नारा (नाला) २।१२।२३५
धनु	नवनि नीच कै (नीच व्यक्ति की नम्रता) ३।१।३३८
धनु (धन)	सज्जन ५।१०।३६५
धनु (धनुष)	वक्र उक्ति ६।१४।४१६
धनेसा	लगन १।६।४
धर्म	चक्रवाक ४।५।३६२
धर्म	निशिचर ६।१८।४४५
धर्म धीठन्ह (धर्मढीठ)	मीन ३।१४।३४८

उपमान	उपमेय
घामहि (घर्म)	धूरी - धूल ४।२२।३६१
धार	निठुराई २।६।१६२
धूम केतु (धूमकेतु)	राम ७।२।५३६
धेनु	राम जननी (कौशल्या) २।२।२४१
धेनु	मातु (माता) (कौशल्या आदि) ७।६।४६२
धेनु	सात्विक सृद्धा (सात्विक श्रद्धा) ७।२०।५५७
धोखे से मदिरा पान करने वाला ब्राह्मण	सुमंत्र २।१२।२४०
नखत (नक्षत्र)	नृप १।३।११६
नगरू (नगर)	बन २।१।२०७

उपमान	उपमेय
नट	राम ३।६।३४८
नट	राम ४।१।३५८
नट	रामु (राम) ६।२।४४७
नट	नारि (नारी) ७।७।५४३
नटी	माया ७।१६।५२७
नदी	मोह ७।७।४११
नयन	सेवक (राम का) ७।३।५०७
नयन	सेवक (राम का) ७।३।५०७
नयन	(क) ज्ञान (ख) बिराग (वैराग्य) ७।११।५६०

उपमान	उपमेय
नयन पुतरि	सीता २।८।२०४
नर	'रा' (अक्षर) १।७।१४
नर केसरी (नृसिंह)	नाम (राम का) १।१७।१७
नरकेहरि	राम एवं लक्ष्मण ७।३।५५७
नलिन	लोचन (शंभु के) १।११।५८
नलिन	लोग (सभा के) २।२।३०८
नलिन	नयन (शंकर के) ६।२१।४८०
नलिन	चरन (चरण) (राम के) ७।२१।५०९
नव अंबुधार	गात (राम का) ७।४।४६६

उपमान	उपमेय
नवनीता (नवनीत)	बिराग (वैराग्य) ७।६।५५८
नव रसाल बन	अयोध्या एवं मिथिला २।३।२०६
नव राजीव	नयन (भरत एवं राम के) ७।८।४११
नव राजीव	मृदु चरना (मृदु चरण) (राम के) ७।१०।५३०
नव बिधु	जसु (यश) (भरत का) २।११।२६८
नव ससि (नवशशि)	मूसुर ७।१६।५१६
नहरुआ (रोग विशेष)	(क) दंभ (ख) कपट (ग) मद (घ) मान ७।१७।५६२

उपमान	उपमेय
नाग	बालि ४।२४।३५६
नाग	रावन (रावरा) ६।१८।४७७
नारी	किआरी (क्यारी) ४।३।३६२
नारि	माया भगति (माया एवं भक्ति) ७।२।५५७
नावा (नौका)	राम कथा ७।२०।५१७
नावरि (नाविक)	श्रम ६।१८।४५८
निकर चकोर (चकोरों का समूह)	मनि समूह (मणि समूह) ३।२३।३२८
निगम	बानी (वाणी) (राम की) ६।२।४११
निर्झर	सौनित (शोणित) ६।६।४५८

उपमान	उपमेय
निबिड़ तम	संसय शोक ७।७।५०७
निठुरता	कैकेयी २।१२।१८६
निर्गुन कुल (निर्गुण कुल)	जल ३।१२।३४८
नारि	निबिड़ रजनी ३।२४।३५०
निर्गुन कुल (निर्गुण कुल)	सर ४।४।३६३
नृप	मुनिन्ह (मुनि) १।८।१०
नृप	धरनी (धरणी ४।१६।३६२
निशेश (पूर्ण चन्द्र)	राम ३।४।३२७
निसा (निशा)	मोह ७।८।५६२

उपमान	उपमेय
निसा (निशा)	अविषा ७।१५।५०७
निसि	दीण १।८।१६
निसि	दुरासा (दुराशा) १।८।१६
निसि	दुख १।८।१६
निसि	महामोह ६।१।४३६
निसि अरु दिवस	निमेष ६।१।४११
निसेनी	बेनी (त्रिवेणी) ६।१८।४८९
निहार (नीहार)	बरषि बान (बाण वर्षा) ६।११।४६२
नीति	भूमि ६।१।४२३

उपमान	उपमेय
नींद	पुरट घाट १।१०।१७९
नीरज	नयन (राम तथा लछमन के) १।२२।१२०
नीरज	नयन (भरत के) २।१२।२६०
नीरज	राम ६।१४।४७६
नील कंज	स्याम सरीरा (श्याम शरीर) (राम का) १।१६।१००
नील कंज	तनु स्यामा (श्याम तनु) ६।८।४३६
नील कंज	लोचन (राम के) ७।१६।५३०
नील जलज	तनु (तन) (राम का) १।६।१०५

उपमान	उपमेय
नील जलद	तनु स्याम (श्याम तन) (राम का) ३।६।३२५
नील जलजात	सरीर (शरीर) (राम का) १।३।११६
नील नीरधर	स्याम बरन (श्यामवर्ण) १।४।७६
नील नलिन	लोयन (लोचन) (सीता के) २।१७।२८५
नील गिरि	सिर (राम का) ६।११।४७१
नीलोत्पल	तनस्याम (श्यामतन) (राम का) ४।११।३७०
नील मनि (नीलमणि)	स्यामबरन (श्यामवर्ण) (राम का) १।४।७६

उपमान	उपमेय
नीड़	निवृत्ति ७।२।५५८
नौका	पट ६।१८।४५८

: प :

उपमान	उपमेय
पच्छयुत गिरिन्दा	कपिंदा ७।३।५५९
पट	तनु ७।३।५५९
पतंगा (पतंग)	नाम (राम का) १।१३।६२
पतंगा (पतंग)	राम १।१७।५३
पतंगा (पतंग)	परसुराम १।११।१३२
पतंग	निसिचर निकर ५।१।३८०

उपमान	उपमेय
पतंग	रावरा ५।१४।३९९
पतंग	रजनीचर ७।२।४९८
पदचर जूथा (पदचर यूथ)	तीतर लावक ३।१३।३४७
पदुम (पद्म)	पद (गुरु के) १।२।११
पदुम (पद्म)	पद (कौशल्या के) २।१६।२०८
पदुम (पद्म)	गुरुपद (वसिष्ठ) २।१३।२१३
पदुम (पद्म)	पद (रघुपति के) २।१८।२२०
पदुम (पद्म)	पद (राम के) २।१८।२२१
पदुम (पद्म)	पद (राम के) २।२।२२७
पदुम (पद्म)	पद (वसिष्ठ के) २।१२।२४३

उपमान	उपमेय
पद्म (पद्म)	पद (सीता के) २।२३।२७४
पद्म (पद्म)	पद (सीता के) २।१६।२८२
पद्म (पद्म)	पद (राम के) २।२०।२८६
पद्म (पद्म)	पद (राम का) २।१६।३०७
पद्म (पद्म)	पद (प्रभु राम के) २।२।३१५
पद्म पत्र (पद्मपत्र)	मुनिगन (मुनिगण) २।१७।३१४
पंकज	चरन (चरण) (राम के) १।१६।१२
पंकज	पद (गुरु का) १।१८।२१

उपमान	उपमेय
पंकज	चरन (चरणा) (शंकर के) १।१६।५५
पंकज	पद (शिव का) १।२०।५८
पंकज	चरन (चरणा) (राम का) १।१७।१००
पंकज	पद (रघुबीर के) १।२४।१०६
पंकज	पद (राम का) १।२५।१११
पंकज	पद (विश्वामित्र का) १।२४।११२
पंकज	मुख (सीता का) १।३।१२८
पंकज	पानि (पाणि) (कामदेव) १।३।१२८

उपमान	उपमेय
पंकज	पाय (पैर) (सीता के) १।५।१५६
पंकज	पाय (पैर) (राम के) १।५।१५६
पंकज	पद (राम के) १।११।१६३
पंकज	चरन (चरण) (राम के) २।२।२१५
पंकज	पद (राम के) २।१५।२१६
पंकज	पद (दशरथ के) २।५।४३
पंकज	पद (राम के) २।१२।२६०
पंकज	पद (भरत के) २।११।२६२

उपमान	उपमेय
पंकज	पाएं (पैर) (भरत के) २।८।२६६
पंकज	पद (राम का) २।१३।३०३
पंकज	मुख (भरत का) २।७।३०६
पंकज	मुख (राम का) ३।२।३२४
पंकज	बदन (राम) ३।४।३२६
पंकज	मुख (राम का) ३।१८।३४४
पंकज	हृदय (जटायु) ३।६।३४४
पंकज	पद (राम के) ३।१।३५२

उपमान	उपमेय
पंकज	चरन (चरणा) (संतोके) ३।५।३३९
पंकज	पद (गुरु का) ३।२१।३४५
पंकज	पद (राम के) ३।१३।३४६
पंकज	चरन (चरणा) (राम के) ५।७।३८३
पंकज	कर (प्रभु राम का) ५।२१।३८७
पंकज	पद (प्रभु राम के) ५।१८।३८८
पंकज	पद (प्रभु राम के) ५।१३।३९९
पंकज	चरन (चरणा) (राम का) ६।१७।४२५

उपमान	उपमेय
पंकज	चरन (चरण) (राम के) ६।७।४६०
पंकज	पद (राम के) ६।२५।४७८
पंकज	पद (राम के) ६।१६।४८५
पंकज	(क) ज्ञान (ख) बिज्ञाना (विज्ञान) ७।१६।५०७
पंकज	लोचन (राम) ७।१६।५१६
पंकज	मुनि मानस ६।१५।४६८
पंकज	पद (राम के) ७।८।४६८
पंकज	पद (भगवान के) ७।६।४६८
पंकज	पद (राम के) ७।१३।४६८

उपमान	उपमेय
पंकज	पद (राम के) ७।६।४६१
पंकज	पद (राम के) ७।६।४६६
पंकज	पद (राम के) ७।१६।५००
पंकज	पद (राम के) ७।५।५०१
पंकज	पद (राम के) ७।२०।५१५
पंकज	पद (राम के) ७।३।५६०
पंकज	पद (राम के) ५६३
पंकज नाल	बापु (बाप) १।१६।१४३
पंकरुह	पद (राम का) १।३।२७

उपमान	उपमेय
पंकरुह	पानि (पाणि) १।२४।६३
पंकरुह	पद (वासुदेव का) १।२०।७४
पंकरुह	पद (वासुदेव का) १।२०।७४
पंकरुह	पानि (पाणि) १।२६।१६८
पंकरुह	पानि (पाणि) २।११।३१०
पंख	राम २।२१।१६४
पंख	राम, लक्ष्मण एवं सीता २।१३।२११
पंचानन	अंगद ६।१८।४१३

उपमान	उपमेय
पनसफल	पुलक शरीर (सुतीक्ष्ण का) ३।१०।३२६
पबि (पवि)	खग (जटायु) ३।१।३४१
पबि (पवि)	बाना (बाण) ६।१३।४४६
पयागू (प्रयाग)	मन (जनक का) २।१४।३०१
पयोधि	रामबियोग २।१४।२४४
पयोनिधि	पाप १।१२।१७
पयोनिधि	रूप (कौशिक का) १।१६।१२६
पयोनिधि	कृपा ७।१।५६१
फूलै (फूल)	पुलक ४।१४।३६२

उपमान	उपमेय
पर उपकारी पुरुष	बिटप ३।३।३४६
प्रकास (प्रकाश)	भगवाना (भगवान) १।१५।६२
प्रजा	बन सम्पत्ति २।२०।२७६
प्रजावाद	जन्तु संकुल ४।७।३६२
प्यासे हाथी हथिनी	नर नारी (अयोध्या के) २।३।२५६
प्रभंजन	विनाय ७।५।५५६
परछाहीं (प्रतिच्छाया)	सिय (सीय) २।२।२३६
परछाहीं (प्रतिच्छाया)	लखन (लक्ष्मण) २।२।२३६
परद्रोह	गृह

उपमान	उपमेय
प्रलय पयोद	मेघनाथ ६।६।४४६
प्रलय गर्जन	घहरात ६।१८।४३२
पविपात	घहरात ६।१८।४३२
परमतत्वमय	प्रभु (राम) १।१४।१२०
परमारथु (परमार्थ)	आश्रम (राम का) २।१२।२८९
परमिति	कथा (राम की) १।१३।२०
पर संपति	निसि (निशि) ४।६।३६४
प्रह्लाद	बापक जन १।१८।१७
परिजन	खगमृग २।१।२०७

उपमान	उपमेय
पद्दी निधि	परनिंदा ७।१०।५११
पलक	राम सीता २।७।२३६
पलक	राम ७।३।५०६
पसु - पशु	महीप १।१३।१३६
पसु - पशु	नर (राम भजन हीन) ७।१६।५३१
पत्ता	भुजा (रावरा की) ६।१६।४४४
पत्तहीन संपाती	राजा दशरथ २।२।२४२
पाक बरतोड़ - बालतोड़	हृदय (कैकेयी का) २।१४।१६०

उपमान	उपमेय
पाकरिपु चाप	बंदनवारे १।१७।१७१
पाखंड बाद	तुन संकुल - तुरग संकुल ४।१८।३६१
पाटल	त्रिविध पुरुष ६।१८।४६०
पाठीनु	राह २।२।१६४
पातक	सरदातप ४।८।३६३
पाताल	पद (राम के) ६।२१।४१०
पाथोज	पद (शंकर का) १।१८।५५
पाथोद	गात (राम) ३।२१।३४३
पानी	धनुषभंग १।६।१३०

उपमान	उपमेय
पानी	प्रिय बानी (प्रिय वाणी) (दशरथ की) २।१२।१८२
पापी	सुमंत्र २।१८।२४०
प्राबिट जलद	गजजूथ (गजयूथ) ६।६।४५१
प्राबिट सरद पयोद	जुगल दल (युगल दल) ६।१६।४३०
पारस	सर संगति १।२०।३
पारसु (पारस)	पद अंका (पदांक) (राम के) २।२।२८२
पावक	पवन कुमार १।१।१३
पावक	कुल बिबेकू (कुल विवेक) १।१६।१५

उपमान	उपमेय
पावक	हरि ६।१६।४७२
पावक	सर (बाण) ७।२।४६८
पावक	ज्ञानजोति (ज्ञानज्योति) ७।१०।५०८
पावन पर्वत	(क) वेद (ख) पुरान (पुराण) ७।१८।५६०
पावस पानी	सीतल बानी (शीतल वाणी २।७।२०२
पावन पाथ	कविता सरित १।१०।८
पाखान (पाषाण)	हिय (अभक्तों के) ७।२२।५१२
पाहन	उर (मंथरा का) २।७।१८८
पाहनकृमि	स्वभाव (कोल किरात की बालाओं २।१८।२०४

उपमान	उपमेय
पाहरू	नाम (राम का) ५।२१।३८६
पात्र	विस्वासा (विश्वास) ७।२।५५८
पिवासें	विस्वामित्र (विश्वामित्र) १।८।१५०
पिकबयन	बचन (सीता के) २।१२।२२८
पित्त	क्रोध ७।१२।५६२
पिता	बनदेव २।३।२०३
पिपीलिका	सुरपति सुत ३।१६।३१६
पियूषा (पीयूष)	बचन (हनुमान के) ७।१८।४८८
पृथुराज	नल १।१३।५

उपमान	उपमेय
पीत जलजात	सरीरा (लक्ष्मण का) १।३।११६
पीपर पात	मनु (मन) २।१०।१९८
पुंज दिवाकर	राम ७।४।४९८
पुन्य पयोनिधि	भूप दोउ (दसरथ एवं जनक) १।६।१५२
पूरब दिसि (पूर्व दिशा)	गिरि गुहा ६।५।४०६
पुर	संग्राम ३।१२।१३५
पुरंदर	नृप (दसरथ) १।२०।१४७
पुरुष सिंह	दोउ बीर (राम एवं लक्ष्मण) १।७।१०५
पुरुष सिंघ (पुरुष सिंह)	लखनु (लक्ष्मण) १।१०।१४३

उपमान	उपमेय
पुरुष सिंघ (पुरुष सिंह)	राम १।१०।१४३
पैरत थके (तैरकर थका हुआ व्यक्ति)	जनक १।७।१३०
पोत	पवन सुत ७।१०।४८८
फनि (फणि)	सुजन १।२१।३
फनि (फणि)	सुमंत्र २।३।२२१
फनिकन्ह (फणिक)	सासु (सास) २।१३।१७६
फनि (फणिक)	दसानन (दशानन) ६।२।४४५
फनिक (फणिक)	नृप (दशरथ) २।२३।१६७
फल	दुःख २।२२।१८८

उपमान	उपमेय
फल	कुम्हांड ३।६।३२१
फेन	मज्जा ६।११।४५८
फंद	मृनाल (मृणाल) २।१०।११०
बक	खल १।८।७
बक	रावण ६।११।४५६
बकिहिं	मंथरा २।१५।१८७
बच्छ (वत्स)	राम २।२।२४१
बच्छ (वत्स)	राम ७।६।४६२
बच्छ (बत्स)	माय ७।२।५५८

उपमान	उपमेय
बज्र	मुठिका (मुष्टिका) ६।८।४५५
बज्रपात	पर्बत प्रहार ६।३।४५८
बट्ट (बट)	बिस्वास (विश्वास) १।७।३
बट	संग्राम ६।६।४६३
बट्ट समुदाई	दादुर ४।१६।३६१
बड़वानल	प्रभु प्रताप ६।४।४०३
बतासा	बिषय ७।६।५५६
बदर	बिस्व (विश्व) २।१४।२५६
बधिका	राम नाम ३।१।३५०

उपमान	उपमेय
बन	सनेह (स्नेह) २।१५।२०
बनु (बन)	मनोरथ (दशरथ का) २।७।१६१
बन	खल ६।५।४३२
बन गह्वर	नगर (अयोध्या) २।२०।२१४
बनज बनु (बनज बन)	परिवारु (परिवार) (रघुकुल) २।१५।२४६
बनज बन	अयोध्या २।२१।२७४
बन मृग	घोरे (घोड़े) २।२१।२३६
बनसी	त्रिय ३।१।३५१
बनसी	गीध ६।१७।४५८

उपमान	उपमेय
बंदी	चातक ३।९४।३४७
बनिकु (वणिक)	सुमंत्र २।८।२२१
बनिक समाज (वणिक समाज)	सकल लोग (अवध के) २।९७।२१५
बमन	रमाबिलासु (रमाविलास) २।११।३१७
ब्याध	रावण ३।२३।३४९
ब्याध	राम ६।९९।४६०
ब्योम	भगत उर (भक्तों का उर) ३।३।३५०
ब्याल	काम १।१८।८८
ब्यालु (व्याल)	भुआलु (भूपाल) (दशरथ) २।१०।२४४

उपमान	उपमेय
व्याल	मार्गन ६।१६।४६१
व्याला (व्याल)	घर (लक्ष्मण के) ६।१७।४५४
व्याल	काल ७।५।५०७
बयन (कोकिल के)	बयन (जनकपुर की रानियों के) १।१४।१३१
बयारी	बिषय ७।४।५५९
ब्रह्म	'रा' (अक्षर) १।६।१४
ब्रह्म	राम १।१३।१०९
ब्रह्म	राम २।१।२३१
ब्रह्म	रामु (राम) २।१२।३२४

उपमान	उपमेय
ब्रह्मानंद	पुत्रजन्म १।३।१८
बरवारी	उपाय २।१२।१८६
बर बाजी	चकोर ३।१२।३४७
बर बाजी	कोर ३।१२।३४७
बर बाजी	मोर ३।१२।३४७
बर्षा	नारी ३।२०।३५०
बरषारितु (वर्षा ऋतु)	भगति (भक्ति) (रघुपति की) १।१।१४
बरषा ऋतु (वर्षा ऋतु)	चेरी (मंथरा) २।२१।१८८
बल	बिराग (बैराग्य) ७।११।५६३

उपमान	उपमेय
बलाहक	राम ७।१६।५१६
बरहि	बाज १।१२।१५४
बलिपसु (बलिपशु)	रानी (कैकेयी) २।८।१८८
बसन	राम नाम १।२।८
बसंता	नारि (नारी) ३।१८।३५०
बसीठी	त्रिबिध बयारि ३।१५।३४७
बहे जात (बहते व्यक्ति)	कैकेयी २।१७।१८८
बाग बिभूषन (वाग्विभूषण)	बचन (राम के) २।२०।१६६
बाघिनि	कैकेयी २।२४।२००

उपमान	उपमेय
बाज	मृगकुल कमल पतंग (परशुराम) १।१२।१३२
बाजु (बाज)	बचनु (बचन) (कैकेयी के) २।८।१६१
बाज	राम ३।३।३२७
बाँझ	नारद १।२२।५२
बात	तौम ७।६।५६०
बात	काम ७।१२।५६२
बाज (बाना)	बचन (पुर बधुओं के) २।३।२००
बान (बाना)	बचन (कैकेयी के) २।२१।२१२

उपमान	उपमेय
बान (बाण)	बचन ६।८।४३२
बान (बाण)	बुंद बृष्टि ६।२।४५८
बाणों सर्वस्व	बचन (राम के) २।७।३०६
बानैत	तरु ३।६।३४७
बायस	खल १।११।४
वारिज	लोचन (राम के) २।१५।३१४
बारिज (वारिज)	चरन (चरण) (राम का) ७।२६।५५१
बारिद	स्याम सरीरा (श्याम शरीर) (राम का) १।१६।१००
बारिद (वारिद)	तनु (तन) (राम का) ६।६।४५७

उपमान	उपमेय
बारिधि (वारिधि)	रनिवास (अवध का) २।१२।१८२
बारिधि (वारिधि)	भव ७।१३।५०६
बारिधि (वारिधि)	भव ७।१७।५१३
बारी	सुख २।१२।१७६
बारी (वारि)	राम दरस (राम दर्शन) २।३।२५६
बारी	हनुमान ५।२६।३८५
बारिस	बिरह (राम का) ७।१६।४६१
बाल केहरि	कंध (राम के) ७।१६।५३०
बाल बयन	मति की मति (राम की) २।२२।३०८

उपमान	उपमेय
बालक सुत	दास कमानो ३।१३।३५०
बाल कच्छ	सिय १।१५।१६७
बाल मराल	राजकुंवर (राम) १।२०।१२६
बाल मराल	राम ३।५।३२७
बाल मराल	बारु जोटा (राम एवं लक्षण) १।३।१११
बाल मराल गति	सीता को गति १।१३।१३०
बाल मृग नयन	नयन (सीता के) २।१२।२२८
बाल रबिसिं	राम ३।१३।३३३
विटप	भुजा (रावण की) ६।१४।४१३

उपमान	उपमेय
बिटप	संसार ७।१४।४६७
बिंधि (विन्ध्याचल)	सनेहु (स्नेह) (भरत का) २।२।३०६
बिधि सत कोटि (बिधि शत कोटि)	भगवाना (भगवान) ७।७।५३६
बिधु	रा (वदार) १।८।१४
बिधु	लखन (लक्ष्मण) १।२।११६
बिधु	राम १।२।११६
बिधु	भुजबल १।३।१२४
बिधु	बदन (भामिनियों के) १।१४।१४५
बिधु	बदन (नारियों का) १।५।१५५

उपमान	उपमेय
बिधु	मुख (सीता का) ७।२१।५५६
बिधुंतुद	सिर ६।१३।४६२
बिधु बदनी	भनिति (कविता) १।२।८
बिज्जु कोटि) बिद्युत् कोटि)	भगवाना (भगवान) ७।८।५३६
बिंजन (व्यंजन)	गुन (गुण) ७।१।५३५
बिनती	नूपुरध्वनि (सीता की) २।२।२०४
बिनु जल बारिद	भगति हीन नर (भक्तिहीन नर) ३।१८।३४५
बिनु बिराग सन्यासी (बिना वैराग्य के सन्यासी)	सब नृप १।१५।१२४
बिहग	हय २।१४।२३६

उपमान	उपमेय
बिपिन	संसार ६।२।४८१
बिबेका (बिवेक)	नवपल्लव ४।२०।३६१
बिबुध बृंद	गुनग्राम (राम के) १।१८।२०>
बृक	कुंभकरन (कुंभकरण) ६।६।४४४
बिष	बिषय ७।१२।५१३
बिष रस	मन मलीन (लषण का) १।१३।१३७
बष बाटिका	बन २।१६।२०४
बृषभकंध	कंध (परशुराम का) १।१६।१३२
रामबिं	बिष्णु (विष्णु) ६।१२।४७६

उपमान	उपमेय
बिष्णु भगत (विष्णु भक्त)	बारिद (वारिद) ४।८।३६१
बिपति	कैकेयी २।११।१९५
बिपति बीज (विपत्ति का बीज)	राम तिलक २।६।१८७
बिबेक सागर (विवेक सागर)	गुरु (वसिष्ठ) २।१४।२५६
बृद्ध गजराज	नरपति (दशरथ) २।४।१९६
बिभूषन (विभूषण)	मंगल २।४।१९५
बिमल दुकूल	बलकल (वल्कल) २।१।२०७
निषादहिं (निषाद)	बिषय २।२।२६३
बिषाद	दसरथ २।११।१९५

उपमान	उपमेय
बिलाई	नवनि नीच कै (नीच की नम्रता) ३।१।३३८
बृषभ कंध	कंध (लछमन के) १।८।१२१
बृषभ कंध	कंध (राम के) १।६।१२१
बिसाल सैल (बिशाल शैल)	देह (राक्षसों का) ५।१५।३७३
बिहंग	भुआलु (भूपाल) (दशरथ) २।२१।१६४
बिहंग	नरनारी (अवध के) २।१३।२११
बिहंग समाजु (बिहंग समाज)	मुख (भूप का) २।७।१६१
बिग्यान रूपिनी - बिज्ञान निरूपिनी - बिज्ञान निरूपन	बुद्धि ७।६।५५८

उपमान	उपमेय
बीचि	राम १।१३।१३
बीछी	बात २।२३।१९८
बीजु (बीज)	बिपति (बिपत्ति) (बनगमन की) २।२१।१८८
बीर रसु (बीर रस) (सशरीर)	प्रभु (राम) १।५।१२०
बीर रस (सशरीर)	लखन (लक्ष्मण) २।११।२७७
बीर रस	हनुमान ६।११।४३६
बीर बसंत सेन	बाहिनी ६।११।४५१
बुढ़ाई	काम ४।१४।३६२

उपमान	उपमेय
बुध	लछिमन २।३।२३१
बुध	चतुर किसाना
बुध विद्या पाएं (विद्या प्राप्त विद्वान)	बरषहिं जलद ४।११।३६१
बेरागि	हरि हर कथा १।६।३
बेतस	अनुज २।१६।३१७
बेनु बन	रघुबंस (रघुवंश) २।६।१६६
बेनु बन आगि	भरत २।२०।२५८
बेरे (बेड़े)	सखा (हनुमान आदि) ७।६।४६३
बेरो (बेड़ा)	नर तनु (नर तन) ७।१७।५१३

उपमान	उपमेय
बेलि बिटप	नर नारी २।२४।१६८
बेली	मनोरथ २।१७।१७६
बेसरात (खच्चर)	महोख (पक्षी) ३।११।३४७
बेद (वैद्य)	सद्गुर (सद्गुरु) ७।८।५६३
बोहित्त	चारिउ बेद (चारों वेद) १।६।११
बोहित	संभु चाप १।१६।१२८
बोहित	उपल ६।१०।४०४
बोहै	मोद (नृप का) २।१५।१८१

उपमान	उपमेय
: भ :	
(भक्तगण)	मीन ४।३।३६३
भगति (भक्ति) (सशरीर)	सतरूपा १।१४।७४
भगति (भक्ति)	धीय २।१६।२८१
भगति (भक्ति) (राम की)	वृष्टि सारदी (शारदीय वृष्टि) ४।२२।३६२
भगवान	सिव (शिव) १।१६।४४
भट	बिटप ३।१०।३४७
भट	(क) दंभ (ख) कपट (ग) पाखण्ड ७।१२।५२७
भयानक मूरति (भयानक मूर्ति)	प्रभु (राम) १।६।१२०

उपमान	उपमेय
भरत (दुष्यन्त सुत)	भरतु (भरत) (दशरथ सुत) २।१४।३०२
भरनी	कथा (राम की) १।५।२०
भ्रमर	सिलीमुख ६।२।४६२
भानू (भानु)	राम १।११।१२५
भानू (भानु)	राम १।८।१४०
भानू (भानु)	राम २।२४।२८७
भानु	राम २।२०।२००
भानु	(राम) ३।२।३२७
भानु	रामहि (राम) ५।१७।३७६

उपमान	उपमेय
भानू (भानु)	ससि (शशि) ५।१४।३७९
भानुहि (भानु)	राम ७।७।५०७
भानुकुल कैरव चंदू	राम २।१३।२३०
भानु	राम २।१९।१९६
भानु	दशरथ २।११।२४५
भारू (भार)	भूषन (भूषण) २।२०।२०६
बागुर	सुमित्रा का बंधन २।८।२११
भृंग	लोचन (मुनिवर के) ३।१८।३२४
भृंग	रावण ५।१३।३९९

उपमान	उपमेय
भृंग	मन (भक्तों का) ७।६।४८७
भृंग	राम ७।१५।४६८
भुअंगिनि (भुजंगिनी)	कथा (राम की) १।७।३०
भुअंग भामिनी	रानी (कैकेयी) २।२२।१८९
भुंई (भूमि)	कुमति (कैकेयी) २।२१।१८८
भुअंग	कुठेउ १।१७।६०
भूमि थल	कुमति १।२१।२२
भूसा (व्यक्ति)	निषाद २।४।२२६
भूमितल	खल ७।२०।५६१

उपमान	उपमेय
भूता (भूत)	परिजन २।१५।२१४
भूधर	चारिदस भुवन (चौदह भुवन) २।१२।१७६
भूधर	दुइ खंडा (दो खण्ड) (कुंभकरण के) ६।४।४४५
भेषज	नाम (राम) ७।५।५६५
भोग	गुनग्राम (राम के) १।२।२१
मकरंद	छवि (मुख की) १।१२।११५
मघा मेघ	सायक छाई (बाणों का छा जाना) ६।१२।४४६
मत्त गज	रावण ६।२२।४१७
मत्त गज गन	नृपन्ह (नृप) १।६।१३२

उपमान	उपमेय
मत्त गज	रावन (रावण)
मत्त गज जूथ	सभा (रावण की) ६।१८।४१३
मथइ (मथना)	मुदिता (मुदित) ७।५।५५८
मथानी	बिचार ७।५।५५८
मद	कुणी ४।४।३६२
मदन	राम २।२।२३१
मदनु (मदन)	परिछाहीं (प्रतिच्छाया) १।२५।१५६
मदनु (मदन)	राम २।२।२३५
मधु	रामतिलक २।१८।१८४

उपमान	उपमेय
मधु	राम, लखण, सीता २।१२।१६१
मधु - मधुमास (बसंत)	लखण २।२।२३१
मधुकर	संत १।४।८
मधुकर	दास तुलसी ४।८।३७०
मधुकरा (मधुकर)	मालु ६[illegible]।४६७
मधु माहुर घोरी	बात मधु अंत कठोरी २।६।१८८
मध्य दिवस का शशि	रावण ६।१३।४२३
मधुप	मन (भरत का) १।१६।१२
मधुप	मन (मुनि का) १।१६।७६

उपमान	उपमेय
मधुप	मनु - मन (बावरा का) १।१२।११५
मधुप	मन १।११।१५६
मधुप	हरि ७।१७।५१६
मधुप समाजा (मधुप समाज)	केस (केश) १।१०।७६
मधुरता	प्रेम १।२४।२२
मधुरता	भगति (भक्ति) ७।२।५६१
मंदर	धनु १।२०।१२६
मंदर	नाथ (राम) ३।१२।३२१
मंदर	बंदर ६।१६।४४६

उपमान	उपमेय
मंदर	ज्ञान ७।१।५६१
मंदाकिनी	कथा (राम को) १।१४।२०
मंदरगिरि	खल (कुंभकरन) ६।१६।४४४
मंजु मनोज तुराई	साथरी २।४।२०७
मंत्र	गुनगाम (राम के) १।२४।२०
ममता	पानी ४।१७।३६२
मनसिज	नर १।१६।६८
मनसिज-मीन	लोचन लोच (सीता) १।२।१२८
मन	तुरग ६।११।४५६

उपमान	उपमेय
मनि (मणि)	गुन (गुण) १।२१।३
मनि (मणि)	कबित्त १।१७।८
मनि (मणि)	बधू १।१३।१७६
मनि (मणि)	राम, लक्ष्मण एवं सीता २।२४।२३९
मनि (मणि)	राम २।२३।१९७
मनि (मणि)	राम ६।१६।४१०
मनि (मणि)	सिरु (शिर) (कुंभकरण का)
मनि (मणि)	भगति (भक्ति) ७।२०।५६०
मनिगन (मणिगण)	नरनारि (पुर की) २।१४।१७९

उपमान	उपमेय
मनिगुनगन (मणि गुण गण)	साधु महिमा १।२३।३
मनि बिनु ब्यालहिं (मणिहीन सर्प)	नरपाल (जनक) २।१।२६५
मनि हीन भुजंगू (मणिहीन भुजंग)	नरपति (दशरथ) २।५।१६६
मनोभवफंद	बंदनिवारे १।३।१४२
मनोरथ	सर ६।८।४६१
मम (मैल)	ममता ७।८।५५८
मयंक	बदन (वासुदेव का) १।६।७६
मयंक	बदन (लक्ष्मण का) १।१२।११०
मयंक	बदन (राम का) १।१२।११०

उपमान	उपमेय
मयना	सुनयना १।२४।१५८
मराल	गुनग्राम (राम के) १।३।२१
मयन समयन सम (कामदेव की शय्या)	साथरी (राम के साथ सीता के लिए) २।१६।२३८
मरकत सयल	कोदंड कठिन ३।६।३३३
मरकत	कलेवर (राम का) ७।६।५३०
मर्कट	सबहि (सभी लोग) ४।१।३५८
मराला (मराल)	लखराा २।१५।२०६
मराली	सीय २।१५।२०५
मराली	सीता २।२।२०६

उपमान	उपमेय
मराली	भरत भारती २।८।३०६
मरुत	अनुग्रह (राम का) ७।१७।५१३
मरुत	तोष (संतोष) ७।४।५५८
मरु प्रदेश	कोल किरात २।१०।२८६
मसक	बहु वासना (बहु वासना) ७।६।५०७
मसान	घर (अवध के) २।१५।२१४
मसानु (श्मशान)	कैकेयी २।२०।१६४
मसान की मूर्ति (श्मशान की मूर्ति)	कविता १।१२।८
मलायतन	कलिकाल ६।७।४८६

उपमान मसक	उपमेय तुलसीदास
मसक	बानर ६।७।४८३
महाछबि (महाछवि)	सिव (शिव) १।१४।१३०
महान	चित (राम का) ६।७।४११
महानल	रावन (रावण) ६।१।४१६
महिष्मेसा (महिष्मेश)	लखन (लक्ष्मण) १।६।४
महिष्मेसा (महिष्मेश)	लखन (लक्ष्मण) १।६।४
माली	मन (लखन के) १।८।४
माखी (मधुमक्खी)	नर नारी (अवध के २।१२।२११
मानस	मुनिमन ७।१७।५०६

उपमान	उपमेय
मानस मराल	कवि (कोविद) १।८।११
माना (मान)	कृपी ४।४।३६२
मानस सर	अयोध्या २।२।२०६
मानिक (माणिक्य)	कवित १।१७।८
माता पिता का घातक	सुमंत्र २।१७।२४०
माया	सीय २।१।२३१
माया	सी (सीता) ३।१२।३२४
माया	हास (हास्य) (राम का) ६।३।४११
माया	नारि (नारी) ७।२२।५५६

उपमान	उपमेय
माया कोटि	भगवाना (भगवान) (राम) ७।६।५३६
मायाछन्न	पुरइन सघन ओट ३।१२।३४८
मार (कामदेव)	सिर (रावण का) ६।१५।४६२
मारुत	स्वास (श्वास) (राम की) ६।२।४११
माहुर	बात (मंथरा की)
माहुर	कटु बचन (कैकेयी के) २।३।१६४
मिला (मिलना)	बिराजा ४।२।३६२
मृग	जीव १।२२।२६

उपमान	उपमेय
मृगु (मृग)	सपथ (शपथ) (दशरथ को) २।१०।१६०
मृग	लषारा २।८।२११
मृग	राम ३।६।३४४
मृग	लोग ७।५।४६८
मृगजलु (मृगजल)	सीता १।६।१२२
मृगनयन	नारि (नारी) ७।२१।५५६
मृगजूथ (मृगयूथ)	लोग, मोह ७।६।५०७
मृगपति	ससिहि (शशि) ६।४।४०६
मृगपति	राम

उपमान	उपमेय
मृग बालक लोचन (मृगशावक के नेत्र)	लोचन (भामिनियों के) १।१४।१४५
मृगराज	देवरिषि (देवर्षि) १।१६।६६
मृगराऊ (मृगराज)	प्रयाग २।१।२२४
मृगराजू (मृगराज)	लखराम २।१६।२७७
मृगराजू (मृगराज)	बाहुराम. (भरत का) २।७।३१८
मृगराज	राम ३।३।३२७
मृगराज	प्रभु (राम) ३।११।३३३
मृगराज	राम ६।२।४५२
मृगलोचन	लोचन (सीता के) २।२४।२०५

उपमान	उपमेय
मृगलोचन	लोचन (मंदोदरी के) ६।१७।४११
मृगछावक नयन (कृशावक नयन)	नयन (रानियों के) २।१६।१८२
मृगी	सीय १।१६।११४
मृगी	कौशल्या २।८।२०२
मृगी	सुमित्रा २।२।२१०
मृगी मृग	नरनारि (गांवों के) २।१।२८८
मृगी	सीता ३।२३।३४१
मृतक धून (मृतक कुन)	धूरि (धूल) ६।४।४३५
मीचु (मृत्यु)	मौर्षी १।३।१३७

उपमान	उपमेय
मीचु (मृत्यु)	कैकेयी २।६।१९६
मीना (मीन)	जनमन १।१२।१७
मीना (मीन)	परिजन (अवध के) २।१२।२०३
मीनु (मीन)	लदामरा २।१६।२०८
मीना (मीन)	मन ७।१७।५५२
मीनगन (मीनगरा)	लोग (जनकपुर तथा अयोध्या के) २।२२।३०४
मुकुता (मुक्ता)	कवित १।१७।८
मुकुताहल	तारा ६।७।४०९
मुकुट	मन (तुलसी का) २।९।१७९

उपमान	उपमेय
मूठि	कुबुद्धि २।६।१६२
मूलक	मेरु (सुमेरु) १।१३।१२५
मूलक	दसन (दिग्गजों के) ६।२१।४१७
मूरतिवंत तपस्या (मूर्तिवती तपस्या)	गौरि (गौरी) १।२१।४२
मेकल सैल सुता (नर्मदा)	कथा (राम की) १।१२।२०
मेघ	सुकृत २।१२।१७६
मेढुकन्ह (मंडूक)	रावन (रावण) ६।११।४१६
मेरु (सुमेरु)	धूरि (धूलि) १।१८।८८
मेरु (सुमेरु)	दुखरेण (मित्र का) ४।२।३५७

उपमान	उपमेय
मेरु शृंग (सुमेरु शृंग)	सिंहासन ६।१६।४८३
मेघ बल्या	भालु बली मुख ६।६।४४४
मोती	नख १।१७।१००
मोर पंख	लोचन १।६।६१
मौरा (मौर)	कंत ७।१४।५११
मौह	कृष्णी ४।४।३६२
मौह विटप	चरन (चरणा) (अंगद का) ६।७।४२३
रजनी	(क) मद (ख) मौह (ग) ममता ७।३।४६८

उपमान	उपमेय
रघुकुल केतू (रघुकुलकेतु)	राम २।१२।२३२
रघुकुल दीप	राम २।१।१६६
रघुराया	नर ४।२४।३६४
रज	निज दुख गिरि ४।२।३५७
रजु (रज)	सत्य १।१७।६०
रजु (रज्जु)	सत्य सुबानी (सत्य सुबारानी) ७।५।५५८
रति	नारी १।१६।६८
रति	परिछाई १।२१।१५६
रति	सिय २।२।२३१
रथ	गिरि सिला (गिरि सिला) ३।१४।३४७

उपमान	उपमेय
रंग	मन (तुलसी का) १।१६।६
रंक	मति (तुलसीका)
रंक	रानियां १।३।१७३
रंका (रंक)	भरत २।२।२८१
रवि	नाम (राम का) १।८।१६
रवि	रघुबर १।२३।१३०
रवि	राम १।७।१५६
रवि	बन २।१४।२०४
रवि	राम २।२९।२३०

उपमान	उपमेय
रवि	महिमा (राम की) ३।२३।३२६
रवि	बान (बाण) (राम का) ५।४।३८०
रवि	प्रभु प्रताप ५।२०।३६५
रवि	प्रभु (राम) ६।१३।४६५
रवि	सिंहासनु (सिंहासन) ७।१४।४६५
रवि	राम (अप्रस्तुत) ७।४।५०७
रवि	प्रताप (राम का) ७।१।५०८
रवि आतप	अखंड (राम रूप)
रविकर	भव १।२२।२६

उपमान	उपमेय
रविकर	बचन (शंकर के)
रविकर निकर	बचन (गुरु के) १।१०।२
रविकुलरवि	नृपु (नृप) (दशरथ) २।१२।२४४
रविनन्दिनि (यमुना)	करम कथा (कर्मकथा) १।५।३
रवि मनि (रविमणि)	नारी ३।१६।३३१
रवि सत कोटि	राम ७।२२।५३८
रबिहिं (रवि)	पुरुष मनोहर ३।१६।३३१
रमा	कथा (राम को) १।६।२०

उपमान	उपमेय
रचना	बीज वासना (दशरथ तथा कैकेयी की वासना) २।२३।१८६
रसिक चकोरी	सीय २।१४।२०४
राजिव (राजीव)	नयन (राम के) २।१८।२३१
राजिव (राजीव)	नयना (नयन) (राम के) ४।५।२७०
राजिव (राजीव)	नयना (नयन) (राम के) ५।१०।३८७
राजिव (राजीव)	नयना (नयन) (राम के) ५।१०।३८७
राजिव (राजीव)	नयना (नयन) (राम के) ५।१६।३८८

उपमान	उपमेय
राजिवदल (राजीवदल)	लोचन (राम का) ६।८।४३९
राजिव (राजीव)	नयन ६।२।४४३
राजीव	पद (भगवान राम के) १।१६।७६
राजीव	नयना (नयन) (राम के) ३।१८।३२७
राजीव	लोचन (राम के) ३।२१।३४३
राजीव	लोचन (राम के) ६।११।४४५
राजीव	नयन (राम के) ६।१८।४७९
राजीव	विलोचन ६।७।४८१
राजीव	लोचन (राम के) ७।९।४९१

उपमान	उपमेय
राजीव	नयन (राम के) ७।२२।५०१
राती (रात्रि)	अवधपुरी १।१।६६
रामु (राम)	राम ७।११।५३६
रामभगति (रामभक्ति)	गिरिजा १।१०।३७
राम एवं सीता के स्नेह की मूर्तियां	जनक के रनिवास की महिलायें २।१२।२६६
राय मुनी	रुधिरकन (रुधिरकण) ६।२१।४७१
रावन	कंचक १।२२।५
राहु (राहु)	कंचक १।२२।५
राहु	लखन (लक्ष्मण) १।७।४
राहु (राहु)	बराह १।८।८०

उपमान	उपमेय
राहु (राहु)	सिवधनु (शिवधनु) १।३।१२४
राहु	मन २।१६।२०२
राहु	बाहु (रावण को) ६।१२।४१५
राहु (राहु)	राम ३।६।३४०
राहु (राहु)	बाहु (बाहु) (राक्षसों को) ६।१०।४६२
राहु (राहु)	बाहु (बाहु) ६।९।४६२
रिछुराज (ऋछुराज)	लखन (लक्ष्मण) २।२०।२३५
रिपु	(क) मद (ख) लोभ (ग) मोह ७।३।५६१

उपमान	उपमेय
लच्छ (लक्ष्य)	महिपु (महीप) २।१६।१६६
लता	रोमावली (रावरा की) ६।१४।४१३
लवा	सकल महीप १।१२।१३२
लावा	दशरथ २।१३।१६१
लवन (लवरा)	भगति (भक्ति) ७।१।५३५
लोचन (मृग के)	लोचन(नारियों के) (अवधपुर की) १।५।१५५
लोन	कटु बचन (कैकेयी के) २।५।१६२
लोमहिं	पंथ जल ४।१५।३६२
लोम	अम्बर (राम का) ६।३।४११

उपमान	उपमेय
लोभ	सीस (शशि) (राजाओं के) ६।५।४७०
लोभी	राम ५।१०।३६५
लोभिहि (लोभी)	कामिहि (कामी) ७।२३।५६८
सक्र (इन्द्र)	खल १।१४।४
सक्र कोटि सत	राम ७।२२।५३८
सकल अपबरग (सम्पूर्ण अपवर्ग)	सुत चारी (चारों पुत्र) (दसरथ के) १।१६।१५३
सगुन (सगुण)	फूले कमल सर (पुष्पित कमल से युक्त सरोवर) ४।४।३६३
सचान	बचन (कैकेयी के) २।१३।१६१

उपमान	उपमेय
सचिव	गुनग्राम (राम के) १।२१।२०
सज्जन	तलावा (तालाब) ४।१५।३६१
सजीवनि मूरि (सञ्जीवन मूल)	कथा (राम की) १।६।२०
सजीवन बूटी	सीय २।१६।२०४
सजीवनि (संजीवनी)	भगति (भक्ति) ७।११।५६३
सजीवन (सजीवनमूल)	कथा (राम की) ७।१२।५६७
सड़सिन्ह	प्रतिउत्तर ६।१५।४१६
सत कुलिस	हृदय (कौशल्या) २।१५।२४६
सत सुरेस (शत सुरेश)	सीलनिधि (शीलनिधि) १।१८।६८

उपमान	उपमेय
सत कोटि अहीसा (शत कोटि अहीश)	जगदीसा (जगदीश) ७।१०।५३६
सत कोटि कराला (शत कोटि कराल)	राम ७।३।५३६
सत कोटि काल (शत कोटि काल)	राम ७।१।५३६
सत कोटि नभ (शत कोटि नभ)	राम ७।२२।५३८
सत कोटि मरुत (शत कोटि मरुत)	राम ७।२२।५३८
सत कोटि ससि (शत कोटि शशि)	राम ७।२३।५३८
सत कोटि सिन्धु (शत कोटि सिन्धु)	रघुबीर ७।५।५३६
सती मनु (सती का मन)	संभु सरासनु (शम्भु शरासन) १।१४।१२४
सद्ग्रन्थ	पंथ ४।१८।३६१

उपमान	उपमेय
सद्गुन (सद्गुण)	जल ४।१५।३६९
सद्गुन सिन्धु (सद्गुण सिन्धु)	भरत ७।१२।४८९
सद्गुर (सद्गुरु)	सरदरितु (शरदऋतु) ४।१२।३६३
सद्धर्म	मेघ ४।१०।३६२
धन	जल ७।२१।५६१
संबुक (घोंघे)	बिषय कथा १।७।२४
संकर द्रोही (शंकर द्रोही)	चातक ४।७।३६३
संगाम बारी (संगाम का जल)	मनोदशा (प्रजा की) २।१०।३०८
संत	गिरि ४।१२।३६१

उपमान	उपमेय
संत	निसि ससि (निशि शशि) ४।८।३६३
संत कर मन (संत का मन)	कपित्थरन (कपित्थरस) (कांद का) ६।६।४२३
संत हृदय	निर्मल बारी (निर्मल जल) ३।६।३४८
संत हृदय	सरिता ४।१६।३६२
संतोषा (संतोष)	कारित (अगस्त्य मुनि) ४।१५।३६२
संसय	संकुल (संकुलता) ४।१२।३६३
संसय (संशय)	तम ६।६।४३१
संसार बिटप	राम ७।१४।४६७

उपमान	उपमेय
सनेह (स्नेह)	नृप (दशरथ) २।१३।१८६
सनेह (स्नेह)	रामसखा (निषादराज) २।२१।२८२
सनेह सुरतरु के फूला (स्नेह रूपी कल्पतरु के पुष्प)	बचन (कौशल्या के) २।२२।२०१
संपुट	चरनपीठ (पादुकायें राम की) २।५।३१४
सपच्छ कज्जल गिरि	निसिचर निकर (राक्षस समूह) ३।१७।३३२
सपच्छ कालसर्प (पंखों से युक्त काल सर्प)	सर लच्छा (लाखों बाण) ६।५।४४३
सतकाम	बन (राम का) ७।२१।५३८
सपच्छ नाग	सर समूह (शर समूह) (रावण के) ६।७।४३३
समाज	सुकरमा (सुकर्म) १।७।३

उपमान	उपमेय
समाजा (समाज)	निसि तम घन (रात्रि का गहन अंधकार) ४।२।३६२
समिधि (समिधा)	चतुरंग सेन (चतुरंगिणी सेना) १।१३।१३६
समीर (पवण्ड)	स्वास(श्वास) (रावण की) ५।२४।३९५
समीरा (समीर)	स्वास (श्वास) (सीता की) ५।५।३८७
समीर	सोक (शोक) ७।५।५२७
समीर	बिस्मय ७।८।५५६
समीरा (समीर)	संत ७।२२।५६०
समुद्र	अम्ना (अवगा) २।१०।२३३

उपमान	उपमेय
स्याम तमाल (श्याम तमाल)	तनु (तन) (राम का) १।६।१०५
स्यामता (श्यामता) (नील सरोरुह की)	स्यामता (श्यामता) (विष्णु की) १।५।२
स्याम सरोज (श्याम सरोज)	नयन (मैना के) १।११।५२
स्याम सुरभि (श्याम सुरभी)	ग्राम्य गिरा १।१५।८
स्रम (श्रम)	नगर ४।२।३६३
सर्प	संसय (संशय) ७।४।५४०
सर	नर १।३।७
सर (शर)	बचन (कैकेयी के) २।१६।१६६
सर	समय ७।३।४६४

उपमान	उपमेय
सर	बचन (अंगद के) ६।१४।५१६
सर (शर)	बचन (अंगद के) ६।१४।५१६
सर (शर)	लोचनि (लोचन) ७।२।२२७
सर	रामचरित ७।१४।५४०
सरद बिमल बिधु (शरदकालीन स्वच्छ चन्द्रमा)	बदनु (बदन) (राम का) १।२।१५४
सरद सरोरुह (शरद सरोरुह)	नयन (राम के) २।४।२७६
सरद ससि (शरद शशि)	रघुपति १।१८।११५
सरतातप (शरदातप)	भौंह (गिरिजा का) १।१।६४
सरसइ (सरस्वती)	मतिबिचार १।४।३

उपमान	उपमेय
सरद चन्द्र (शरदकालीन चन्द्रमा)	सीतल सिल (शीतल शिला) २।८।२०६
सरद सर्वरी नाथ (शरद शर्वरी नाथ)	मुख (राम एवं लक्ष्मण के) २।८।२२८
सरद (शरद)	नारी ३।२१।३५०
सरद इंदु (शरद इन्दु)	राम ३।२३।३२८
सरसिज	पद (राम के) २।१८।२२४
सरसिज	लोचन (राम के) ३।७।३४५
सरसिज बन बिनु बारी (जलहीन कमल वन)	इंद्री (इन्द्रियां) (दशरथ की) २।११।२४४
सरसीरुह	लोचन (लक्ष्मण के) १।१२।११०
सरसीरुह	लोचन (राम का)

उपमान	उपमेय
सरसीरुह	लोचन (राम के) ६।१२।४४०
सरसीं सीपि (तालाब की सीप)	साधारण जन २।८।२२६
सरि (सरिता)	नर १।३।७
सरि (सरिता)	संसृति ७।१६।५०६
सरिता	कविता १।२।२५
सरिता	सुख संपति (सुख एवं सम्पत्ति) १।६।१४४
सरिता	नय (राम की) ६।५।४११
सरि नाना (सरितायें)	राम कथा २।१०।२३३
शरीर सम स्याम (शरीर के समान श्याम) (राम के)	जमुनजल (यमुनाजल) २।१४।२२५

उपमान	उपमेय
घौन (घ्रौण)	कुमौग ७।५।४६८
सरोज	पद (राम के भक्तों के) १।६।१२
सरोज	कर १।२२।७०
सरोज	मुख १।१२।११५
सरोज	लोचन (लक्ष्मण का) १।६।११६
सरोज	चरन (चरण) (विश्वामित्र के) १।२२।११८
सरोज	चरन (चरण) (विश्वामित्र के) १।१०।११६
सरोज	पानि (पाणि) (सीता के) १।६।१२२

उपमान	उपमेय
सरोज	पद (रघुपति का) १।६।१२७
सरोज	कर (सीता का) १।१५।१३०
सरोज	पद (परशुराम का) १।६।१३३
सरोज	पद (राम का) १।७।१५६
सरोज	पद (सीता का) १।७।१५६
सरोज	पद (सीता का) १।७।१५६
सरोज	चरन (चरण) (जनक का) १।१०।१६८
सरोज	चरन (चरण) (गुरु का) २।६।१७६
सरोज	चरन (चरण) (राम के) २।१३।२०७

उपमान	उपमेय
सरोज	चरन (चरण) (राम के) २।७।२२२
सरोज	पानि (पाणि) २।२०।२८०
सरोज	पद (राम का) ३।६।३४५
सरोज	कर (राम का) ३।३।३४३
सरोज	मुख (राम का) ३।२१।३४३
सरोज	चरन (चरण) (राम का) ३।१४।३५१
सरोज	पद (राम का) ५।१३।३७५
सरोज	भुज (भुजा) (राम की) ५।२१।३७६

उपमान	उपमेय
सरोज	पद (राम का) ५।२१।३६२
सरोज	सिर (रावण के) ६।१८।४१७
सरोज	चरन (चरण) (राम के) ६।३।४३६
सरोज	पद (राम के) ७।२०।४६८
सरोज	चरन (चरण) (राम के) ७।४।५००
सरोज	पद (राम के) ७।२।५१६
सरोज	कर (राम का) ७।१०।५३४
सरोज	पद (राम का) ७।१२।५५५
सरोज	लोचन (राम का) १।६।११६

उपमानड	उपमेय
सरोज बन	सिर(रावण का) ६।२।४६२
सरोज बिपिन	अयोध्यावासी २।५।१८४
सरोरुह	चरन (चरण) (राम के) १।४।११३
सरोरुह	चरन (चरण) (राम के) २।३।२०३
सरोरुह	नयन (राम एवं लक्ष्मण के) २।८।२२८
सरोरुह	लोचन (भरत के) २।५।२५४
सरोरुह	नयन (भरत के) २।८।२६६
सरोरुह	चरन (चरण) (राम के) ३।११।३२२

उपमान	उपमेय
सरोरुह	चरन (चरण) (राम के) ३।११।३२६
सरोरुह	चरन (चरण) (वसिष्ठ के) ७।३।४६१
सरोरुह	लोचन (राम के) ७।१५।५०८
सरोवर	दसरथु (दशरथ) १।८।१५०
सलभ	कुल (रावण का) ३।१६।३४१
सलभ	खल (राक्षसगण) ६।४।४५७
सलभ	मदादिक ७।१४।४५८
सलिल सुधा	उपमा मीन (सीता के) २।२।२०६

उपमान	उपमेय
स्वच्छता	लीला सगुन (सगुण लीला) १।२३।२२
सबरी (शबरी)	मंथरा २।५।१८६
स्वल्प सपेला (सर्प का बच्चा)	माया ६।४।४३४
स्वाती (नक्षत्र)	सरस्वती १।२४।८
स्वाद	रां १।३।१५
स्वान (श्वान)	सुरपति १।१६।६६
स्वान (श्वान)	मघवा २।१२।३०८
सव (शव)	प्रानी (प्राणी) (बिना हरि भक्ति के) १।८।६१
सलिल सर	रघुपति बिरह ६।१७।४६७

उपमान	उपमेय
ससक सिआरा (शशक एवं सियार)	कुदृष्टि वाले व्यक्ति। २।१६।२०७
ससि (शशि)	रघुपति १।१०।१२
ससि	सिय मुख १।१४।११८
ससि	मुख (राम का) १।१०।१०४
ससि	मुख (सीता का) १।१८।११४
ससि	राम १।१०।१३०
ससि	राम १।२०।१३०
ससि	बदनु (बदन) (परशुराम का) १।१४।१३२

उपमान	उपमेय
ससि	रावन (रावण) ३।६।३४०
ससि	केसरी (केशरी) ६।६।४०६
ससि	मन (राम का) ६।७।४११
ससि	लोकपाल ६।१२।४१५
ससि	आनन (राम का) ७।१६।५१७
ससिकर	गिरा (शिव की) १।१।६४
ससिकिरन (शशिकिरण)	मृदु बचन (कैकेयी के) २।१२।१६१
ससिकर	हासा (हास्य) (राम का) ७।१८।५३०
ससिकिरन (शशि किरण)	रामकथा १।१७।२८

उपमान	उपमेय
ससि दुति हरना (चन्द्रकान्ति को हरने वाली)	नख (राम के) ७।१०।५३०
ससि समाज	सिव किरपा (शिवकृपा) १।१।१२
ससुर (श्वसुर)	वनदेव २।३।२०७
ससुर	मुनिवर २।१५।२३८
सहस अवध (सहस्त्र अवध)	वन (सीता के लिये राम के साथ) २।१३।२३८
सहस नाम (सहस्त्र नाम)	नाम (राम का) १।२०।१३
सहसबाहु (सहस्त्रबाहु)	लखन (लक्ष्मण) १।७।४
सहसबाहु (सहस्त्रबाहु)	राम १।२।१३४

उपमान	उपमेय
साक बनिक (सब्जी का व्यापारी)	तुलसी १।२३।३
सागरु (सागर)	बाहुबल (राम का) १।१३।१२६
सागर	धरमसील (धर्मशील) १।६।१५४
सागर	आस्रम (आश्रम) २।२३।२६६
सागर	भरत के गुरा २।६।३००
सागर	रघुपति बल ३।१६।३१६
सागर	भुज (भुजा) (रावरा की) ६।६।४१६
सागर	भव ६।२।४०३
सागर	विरह (राम का) ७।६।४८८

उपमान	उपमेय
सागर	समर (लंका का) ७।६।४६३
सागर	भव ७।१६।५१३
सागर	भव ७।२०।५१७
सागर खर धारा (सागर की तीव्र धारा)	परसु (फरसा) ६।६।४१८
साढ़साती (शनिश्चर की दशा)	मंथरा २।८।१८६
सांपिनि (सर्पिणी)	चिंता ७।६।५२७
सांतरसु (शान्तरस)	कामरिपु १।१३।५८
साधक मन	विटप ४।२०।३६१
साधू	धन १।२१।२२

उपमान	उपमेय
साधुलोग	गुनग्राम (रामके) १।२।२१
सायक	गुनगान (गुणगान) (दशरथ का) २।१।१६५
सावन (श्रावण)	'रा' (रकार) १।२।१४
सावनघन (श्रावण घन)	मत्त गज १।१।१४७
सावन घन (श्रावण घन)	धूम १।१५।१७१
सासु (सास)	बनदेवी २।२।२०७
सासु (सास)	मुनितिय (मुनिस्त्रिय) २।१५।२३८
सिखर (शिखर)	बराह (वाराह) १।१२।८०
सिंगारु (श्रृंगार)	चरित्र १।१६।२०

उपमान	उपमेय
सिंगारु (शृंगार)	राम १।७।१२१
सिंगार (शृंगार)	भरत ७।१२।४६१
सिखिनि (शिखिरानी)	रानी (दशरथ की) १।२०।१४४
सिंघ (सिंह)	राम २।१६।२०७
सिंघिनिहिं (सिंहनी)	कैकेयी २।४।१६६
सिंघवधुहिं (सिंहिनी)	सीता २।१६।२०७
सिंधु (सिन्धु)	सज्जन १।४।७
सिंधु (सिन्धु)	हृदय १।२४।८
सिंधु (सिन्धु)	चरित्र (शंकर का) १।५।५७

उपमान	उपमेय
सिंधु (सिन्धु)	भरत बड़ाई (भरत की बड़ाई) २।८।२८६
सिंधु (सिन्धु)	संसार ६।४।४७४
सिंधु (सिन्धु)	राम ७।२२।५६०
सिंधु (सिन्धु)	भव ७।८।४६८
सिंधु (सिन्धु)	पुर (अयोध्या) ७।६।४६०
सिंधुर गामिनी(	भामिनी (अवध की) ७।२२।४८६
सिरिस सुमन (शिरीष का सुमन)	राम १।१६।१२७
सिव (शिव)	अहंकार (राम का) ६।७।४११
सिसिर रितु (शिशिर ऋतु)	नारि (नारी) ३।२४।३५०

उपमान	उपमेय
सिसु (शिशु)	प्रभु (राम) १।१३।१२०
सिंह किसोर (सिंह किशोर)	लखन (लक्ष्मण) १।६।१३२
सृंग (श्रृंग)	सिर (रावण का) ६।१४।४१३
सृंगनि (श्रृंग)	कंगूरन्हि (कंगूर) ६।१०।४२७
सृंगन्ह (श्रृंग)	माला (माल) ६।१७।४५४
सीतल बारि (शीतल वारि)	बचन (कैकेयी के) २।१६।२४५
सीपी	मति (शारदा की) २।६।३००
सीतनिसा (शीतनिशा)	सीता ५।४।३६०
सिंधु (सिन्धु)	रघुराउ (रघुराज) (राम) २।१०।२६६

उपमान	उपमेय
श्रीखण्ड	पावक ६।७।४७६
सुअसनु (अच्छा भोजन)	लघु पियूषणा (राम का) २।४।२२६
सुकू ल	खंजन ४।१८।३६२
सुखकांदा (सुखकंद)	राम ३।२१।३२८
सुतंत्र (स्वतंत्र)	महावृष्टि ४।३।३६२
सुधा	साधु १।२३।४
सुधा	जस (यश) (राम का) १।७।२३
सुधा	गिरा (शंकर की) १।२१।६०
सुधा	जस (यश) १।७।२३

उपमान	उपमेय
सुधा	वचन (राम के) १।१७।७५
सुधा	सलिल (जनकपुर के कूप आदि के) १।१०।१०७
सुधा	पकवान (जनक के) १।५।१४६
	पकवान १।१८।१६३
	मधु (वन का) २।४।२८६
	कंदमूल-फल २।१७।२६८
सुधा	चरित (राम का) ३।२१।३२०
सुधा	बानी (वाणी) (राम की) ६।१।४७७

उपमान	उपमेय
सुधा	बानी (वाणी) (भरत की) ७।१४।४८८
सुधा	साधुकर्म ७।१२।५१३
सुधा	बचन (राम के) ७।२१।५१४
सुधा	कथा (राम की) ७।१६।५१७
सुधा	कथा (राम की) ७।२।५६१
सुधाकर	राजतिलक (राम का) २।१६।२०२
सुधाकर	राम ७।२१।५१६
सुधाकर सारु (चन्द्रमा का सार)	आचरन (आचरण) (भरत का) २।८।१९८

उपमान	उपमेय
सुधा तरंगिनि (सुधा तरंगिणी)	कथा (राम की) १।७।२०
सुधा समुद्र	राम १।६।१२२
सुनाजू (सुनाज)	बनसैल (बन शैल) २।१७।२७६
सुनासीर सत (शत सुनासीर)	रावन (रावण) ६।१०।४०८
सुर	संत ७।१।५६१
सुराज	वर्षा ऋतु ४।२१।३६१
सप्रेम पयोधि	भरत २।५।२७२
सुमेरु	हनुमाना (हनुमान) ६।११।४६४
सुरलोक	संत समाज २।१३।६१

उपमान	उपमेय
सुरसरि	राम २।१।२६२
सुरसरि	बानी (वाराणी) (कौशल्या की) २।१०।३००
सुरसरि	कीर्ति सरि (कीर्तिसरिता) २।२२।३०१
सुरसरि गत सलिल	बचन (कैकेयी के) २।१८।१६७
सुरसरि धारा	राम भगति (रामभक्ति) १।४।३
सुराजा	राम २।२०।२७६
सुराजा	वर्षाऋतु ४।७।३६२
सुरतरु	मनोरथु (मनोरथ) (दशरथ का) २।१६।१६१

उपमान	उपमेय
सुरपति	मेघनाथ ६।१६।४४६
सुर सदन	परनसाल (पर्णशाला) २।२।२०७
सुबेलि	महतारी (मातायें) (राम की) २।१६।२८३
सुषमा	बटु (बट) २।१७।२८०
सुषमा तिय	सीय १।२।१५८
सुषाला	सुभाषणा (सचिव सुमंत्र की) २।१५।१८१
सुभट	गुनग्राम (राम के) १।२१।२०
सुरति	मनिवि १।१।१२
सूल (शूल)	बयन (वचन) (कैकेयी के) २।२२।२४६

उपमान	उपमेय
सूल (शूल)	विषय मनोरथ ७।१४।५६२
सूखत धान	रानियाँ (दशरथ की) १।६।१३०
सुशीतलता	भक्ति १।२४।२२
सूर (शूरवीर)	प्रमुदित रानियाँ (दशरथ की) १।४।१७२
सुरगुरु	वसिष्ठ १।२०।१४७
सुरतरु	वासुदेव १।१६।७५
सुरधेनु	कथा (राम की) १।१२।६१
सुबधेनु (सुरधेनु)	वासुदेव १।१६।७५
सुरपुर	वास (आवास) (जनक द्वारा रास्ते में निर्मित कराये गये) १।२१।१५८

उपमान	उपमेय
सुरा	असाधु १।२३।४
सूत्रधार (सूत्रधार)	रामु १।२१।५७
स्रुति छंदा (सशरीर)	विप्र बर बृंदा १।३।१४७
स्रुवा (परशुराम का)	चाप १।१२।१३६
सेतु	हरिकीरति (हरिकीर्ति) १।८।१०
सेतु	राम २।१०।२१६
सेतु	राम ३।११।३२७
सेनापति	कामादि ७।१२।५२७
सेवी	खगमृग २।३।२०३

उपमान	उपमेय
सेष (शेषनाग)	लल १।१२।४
सैल (शैल)	(सूपनखा) ३।१४।३३२
सैल (शैल)	वसिष्ठ (राम को) ६।५।४११
सैल (शैल)	रावन (रावण) ६।८।४५५
वीचि	वितर्क ३।२३।३२१
सोना (स्वर्ण)	लोचन जल १।४।१२८
सोम	राम नाम ३।२।३५०
सोन सुगंध (स्वर्ण सुगन्धि)	भरत व्यवहारु (भरत का व्यवहार) २।६।३०२
सोनित कनी (शोणित कण)	स्रम बिंदु (श्रमबिन्दु) ६।११।४४५

उपमान	उपमेय
हंसहि (हंस)	सज्जन १।८।७
हंसा (हंस)	बासुदेव (वासुदेव) १।२३।७५
हंसा (हंस)	राम १।१२।१४०
हंसा (हंस)	राम १।११।१६६
हंसकुमारो	सीय २।२१।२०४
हंसगवनि	तुम्ह (सीता की चाल) २।११।२०६
हंसो (हंसिनी)	बिनय (भरत की) ४।१०।३१३
हनुमानू (हनुमान)	नाम (राम का) १।१६।१७
हर	गुनग्राम (राम के) १।३६।२०

उपमान	उपमेय
हरि	'रा' (रकार) १।१०।१४
हरि	गुनग्राम (राम के) १।२६।२०
हरि	जलनिधि ४।१६।३६१
हरि	इंदु (इन्दु) ४।९।३६३
हरि किशोर	लखन (लखनराम) १।१।१४४
हरिजन	अकासा (आकाश) ४।२१।३६२
हरिजन	चकोर ४।९।३६३
हरिजन प्रिय	ऊसर ४।६।३६२
हरुआई	अंत ७।८।५११

उपमान	उपमेय
हरित तृन (हरित तृरा)	(क) जप (ख) तप (ग) नियम ७।१।५५८
हरिसरन (हरिशररा)	नीर अगाधा (अगाध नीर) ४।३।३६३
हिम उपल	लखन (लक्षरा) १।११।४
हिम	सगुन (सगुरा) १।१२।६२
हिम	नारी ३।२२।३५०
हिम	खल ७।१।५६२
हिमगिरि	जनक १।२४।१५८
हिमगिरि	तनु (तन) (लछमरा का) ६।१७।४३४

उपमान	उपमेय
ज्ञान	पतंग ४।१२।३६२
ज्ञान	प्रकास (प्रकाश) ६।६।४३१
ज्ञानी	सरित ४।१७।३६२

——ooo——